साहित्य अमृत
मासिक

वर्ष-२१ अंक-९ ❖ पृष्ठ १०० चैत्र-वैशाख, संवत्-२०७२-७३ अप्रैल २०१६

संस्थापक संपादक
स्व. पं. विद्यानिवास मिश्र

पूर्व संपादक
स्व. डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी

संपादक
त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी

प्रबंध संपादक
श्यामसुंदर

संयुक्त संपादक
डॉ. हेमंत कुकरेती

कार्यालय
४/१९, आसफ अली रोड,
नई दिल्ली-११०००२
फोन : २३२८९७७७ • फैक्स : २३२५३२३३
इ-मेल : sahityaamrit@gmail.com

शुल्क
एक अंक —₹ ३०
वार्षिक (व्यक्तियों के लिए)—₹ ३००
वार्षिक (संस्थाओं/पुस्तकालयों के लिए)—₹ ४००
विदेश में
एक अंक—चार यू.एस. डॉलर (US$4)
वार्षिक—पैंतालीस यू.एस. डॉलर (US$45)

प्रकाशक, मुद्रक तथा स्वत्वाधिकारी श्यामसुंदर द्वारा
४/१९, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२
से प्रकाशित एवं ग्राफिक वर्ल्ड, १६८६,
कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली-२ द्वारा मुद्रित।

साहित्य अमृत में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

आवरण : **संदीप राशिनकर**

इस अंक में

संयुक्त संपादकीय
कुंभ के बहाने अमृत की खोज ४

प्रतिस्मृति
दो जादूगर/ *सत्यजित रे* ५

सिंहस्थ-पर्व पर विशेष
सनातन परंपरा है…/ *सुशील शर्मा* ११
उज्जैन सिंहस्थ पर्व कब और क्यों ?/ *मोहन यादव* १४
अमृत की एक बूँद, जिसने धन्य किया इस धरा को/ *सिद्धार्थ शंकर गौतम* १८
उज्जैन से अमर है सनातन संस्कृति का वैभव/ *सीमा शर्मा* २२
ऐतिहासिक होगा उज्जैन…/ *निर्जला शर्मा* २७
पर्व के बहाने प्रकृति से जुड़ाव/ *राजेश कुमार व्यास* ३०
रेखांकनों में सिंहस्थ/ *संदीप राशिनकर* ३४

आलेख
'भारतीय आत्मा' माखनलाल की पाठशाला/ *नर्मदा प्रसाद सिसोदिया* ४०
चापेकर बंधुओं का बलिदान/ *ऊषा निगम* ४९
न्यायी पुरुषोत्तम राम/ *योगेंद्र शर्मा* ५६
नवसंवत्सर : भारतीय नववर्ष/ *अवधेश कुमार चंसौलिया* ७६

कहानी
माटी की ढलान/ *सुरेश्वर त्रिपाठी* ३६
गंध-माधव/ *वासुदेव* ४४
पिघलती आइस्क्रीम/ *महेश शर्मा धार* ५३
निपूती/ *विजय कुमार सिंह* ६०
गुरु दक्षिणा/ *शकुंतला शर्मा* ८९

लघुकथा
दोषी कौन ?/ *विनोद शंकर गुप्त* १७
सार्थक बनो/ *विनोद शंकर गुप्त* ५५
चप्पल की कील/ *विनोद शंकर गुप्त* ६४

कविता
इस अर्थ युग में/ *सूर्य नारायण गुप्त 'सूर्य'* २१
सागर भी सीमाएँ जानते हैं/ *बलदेव वंशी* ३३
नील गगन/ *बसंता* ५१
बुना भाव का…/ *शिवानंद सिंह 'सहयोगी'* ५९
महामना मालवीय/ *विनोद चंद्र पांडेय* ६७
पानी के अनुवाद/ *अशोक 'अंजुम'* ७०
उस कृषक का गान कर लूँ/ *दिनेश भारद्वाज* ७५
करो सम्मान बेटी का/ *राजेंद्र सिंह ढैला* ७७
प्रीत बावरी/ *राधा जनार्दन* ९१

राम झरोखे बैठ के
स्मार्ट भारत की परिकल्पना/ *गोपाल चतुर्वेदी* ६२

स्मरण
खड़ी बोली के शब्द…/ *रुद्रदत्त चतुर्वेदी* ६५

व्यंग्य
असली साहित्यकार/ *पूरन सरमा* ६८

साहित्य का भारतीय परिपार्श्व
मेरा देश कहाँ/ *प्रतिभा वसु* ७१

साहित्य का विश्व परिपार्श्व
एक सुखांत/ *एंटन चेखव* ७८

पुस्तक-अंश
नवरात्र/ *राजेश्वरी शांडिल्य* ८१

यात्रा-संस्मरण
स्याम देश का भ्रमण…/ *ऋता शुक्ल* ८४

बाल-संसार
न टूटे मन/ *मनोहर चमोली 'मनु'* ९०

पाठकों की प्रतिक्रियाएँ ९२
वर्ग-पहेली ९३
साहित्यिक गतिविधियाँ ९४

संयुक्त संपादकीय

कुंभ के बहाने अमृत की खोज

दुनिया की तमाम दीर्घजीवी सभ्यताएँ नदी-किनारे ही अस्तित्व में आईं और वहाँ तक विकसित हुईं, जहाँ आज दृश्य-नदी नहीं है। इन सभ्यता-पुरुषों ने खोज लिया था कि एक अदृश्य नदी तो हर जगह है। इस दृष्टि से देखें तो उन्नत प्रगतिगामी और संवेदनशील संस्कृतियाँ वहीं फली-फूलीं, जहाँ नदी हैं; नदियों को बचाने का भाव है। इससे यह संवेदना उपजती है कि नदी की आवश्यकता प्राणिमात्र को है। वैसे भी हर व्यक्ति की एक नदी होती है। कोई उस नदी को ढूँढ़ता रहता है, कुछ उसे अपने भीतर ही पा जाते हैं।

भारतीय संस्कृति नदी-जीवी है। आगत के आने पर सबसे पहले उसका आतिथ्य जल देकर किया जाता है। इसका एक गहरा प्रतीकात्मक अर्थ-संदर्भ भी है। मनुष्य के भीतर ७० प्रतिशत जल है। पृथ्वी और उसे घेरे हुए जलराशि का अनुपात भी लगभग इतना ही है।

मनुष्य के क्षरित जल-तत्त्व की पूर्ति के लिए यह मानवीय विधान किया जाता है। भद्र व्यक्ति किसी की अमनुष्यता बताने के लिए अपनी पीड़ा इन शब्दों में व्यक्त करता है कि 'उसने पानी के लिए भी नहीं पूछा', इस मायने में पानी अमृत का पर्याय बन जाता है।

हम अपने-अपने हिस्से का अमृत पाने के लिए कई उद्यम करते हैं। लोक-विश्वास है कि अमृत पाने के लिए देव-दानव भी बारह दिन तक लगातार लड़ते रहे। अमृत के लिए बारह दिन तक युद्ध हुआ था। इस छीनाझपटी में प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में कलश से अमृत बूँदें गिरीं। देवताओं के बारह दिन मनुष्यों के बारह वर्ष के बराबर होते हैं। इसलिए कुंभ भी बारह होते हैं। जिस समय चंद्र-सूर्य आदि ने अमृत कलश की रक्षा की थी, उस समय की वर्तमान राशियों पर रक्षा करनेवाले ग्रह जब आते हैं, तो उस समय कुंभ का योग होता है, यानि जिस वर्ष जिस राशि पर सूर्य-चंद्रमा और बृहस्पति का संयोग होता है, उसी वर्ष उस राशि के योग में, जहाँ-जहाँ अमृत बूँद गिरीं, वहाँ-वहाँ कुंभ पर्व मनाया जाता है।

अपार जन समूह के मेले के रूप में आयोजित होनेवाला कुंभ भारत का एक महत्त्वपूर्ण पर्व है। इस वर्ष २२ अप्रैल से २१ मई, २०१६ के मध्य उज्जैन में सिंहस्थ कुंभ का आयोजन हो रहा है। क्षिप्रा नदी के पूर्वी तट पर स्थित उज्जैन आध्यात्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण प्राचीन नगर है। ६०० ई.पू. ही उज्जैन एक विकसित और आत्मनिर्भर सांस्कृतिक महाजनपद के रूप में प्रतिष्ठित था। इसे उज्जयिनी, अवंती, अवंतिकापुर भी कहा जाता रहा है।

मालवांचल का यह उर्वर पठारी भू-भाग साहित्यिक धरातल पर भी अनिवार्य महत्त्व रखता है। कालिदास, शूद्रक और 'कथासरित्सागर' के अमर रचनाकार सोमदेव तथा आधुनिक काल के महत्त्वपूर्ण कवि मुक्तिबोध सरीखे रचनाकारों की भावभूमि का निर्माण इस नगर ने किया है। कई रचनाकारों की कर्मभूमि या जन्मभूमि होने के गर्व से प्रदीप्त उज्जैन के बारे में कहा जाता है कि इस नगर की रचना स्वयं देवशिल्पी विश्वकर्मा ने की थी। गढ़कालिका पर्वतमाला पर अवस्थित इस नगर में आध्यात्मिक और ऐतिहासिक महत्त्व के अनेक स्थल हैं। काल भैरव तथा विक्रांत भैरव के मंदिर और महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग जैसे भारतीय आस्था के केंद्र उज्जैन की धार्मिक पहचान हैं।

सुजलां क्षिप्रा की लहरों को छूकर आई पवन शीतल मलयज जैसी लगती है। मालवी बोली की सुवासित मिठास में डूबकर लगता है कि काल ठहर गया। यहाँ भाव, भाषा और जल जिस इत्मीनान से परस्पर मिलते हैं, वह अनुभव अनिवर्चनीय है! बेतहाशा भागता महानगरीय मन जो सुकून अनुभव करता है, उसे बड़े-से-बड़े सृजक शब्दों का अनुभव बनाने में असमर्थ हैं, फिर हमारी बिसात ही क्या?

व्यर्थ के संघर्षों से शरीर क्षीण हो जाता है, अपूरणीय इच्छाओं से मन परास्त हो जाता है, तब बुद्धि स्तब्ध हो जाती है। ऐसे में कुंभ जैसे पर्व राहत का काम करते हैं, लेकिन आज नदियों में अमृत से अधिक विष प्रवाहित हो रहा है। जीवन में बेकार की विषयासक्ति बहुत है। अगर हम अमृत के आकांक्षी हैं तो विषपान भी हमें ही करना होगा, अत: विष फैलाने से बचना होगा।

भारत की दृश्य नदियों सहित भीतर की अदृश्य नदियों की स्वच्छता का संकल्प लेने का इससे अच्छा अवसर और कब मिलेगा? महापर्व सिंहस्थ-केंद्रित इस अंक के माध्यम से पाठकों को सिंहस्थ, नवसंवत्सर और नवरात्र की हार्दिक शुभकामनाएँ।

संपादक त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी का स्वास्थ्य पहले से काफी ठीक है; लेकिन डॉक्टरों के परामर्श पर वे अभी लिख पाने की स्थिति में नहीं हैं।

साअ

—हेमंत कुकरेती
(संयुक्त संपादक)

दो जादूगर

● सत्यजित रे

'पाँच, छह, सात, आठ, नौ, दस, ग्यारह।' सुरपति ने संदूकों की गिनती पूरी की और अपने सहायक अनिल की ओर मुड़ा। 'ठीक है।' उसने कहा, 'इनको ब्रेक बैन में रखवा दो। सिर्फ पच्चीस मिनट बचे हैं।'

'मैंने आपका आरक्षण देख लिया है सर', अनिल ने कहा, 'यह एक कूपे में है। दोनों बर्थ आपके नाम में आरक्षित हैं। यह सही रहेगा।' फिर वह थोड़ा हँसा और आगे बोला, 'गार्ड आपका प्रशंसक है। उसने न्यू एंपायर में आपका शो देखा है। यहाँ सर, इस तरफ आइए!'

गार्ड बीरेन बक्शी एक हाथ आगे बढ़ाए और एक चौड़ी मुसकान लिए आगे आया।

'मुझे उस मशहूर हाथ से हाथ मिलाने की अनुमति दें।' उसने कहा, 'जिस हाथ ने वे सारे करतब दिखाए और मुझे बहुत अधिक खुश होने का अवसर दिया। यह वास्तव में गर्व की बात है।'

सुरपति मंडल की ग्यारह संदूकों में से किसी भी संदूक को देखकर सहज ही समझ में आ जाता कि वह कौन है। प्रत्येक संदूक के दोनों तरफ और उसके ढक्कन पर भी बड़े-बड़े अक्षरों में 'मंडल के चमत्कार' लिखा हुआ था। उसे और किसी परिचय की आवश्यकता नहीं थी। उसका पिछला शो करीब दो माह पहले कलकत्ता स्थित 'न्यू एंपायर' थिएटर में हुआ था, जहाँ बड़ी संख्या में मौजूद दर्शकों ने उसके मैजिक शो से सम्मोहित होकर बार-बार तालियों की गड़गड़ाहट से उसकी वास्तविक प्रशंसा की थी। अखबारों में भी उसके शो की बहुत तारीफ छपी थी। जनता की माँग पर, सप्ताह भर के शो की अवधि बढ़ाकर चार सप्ताह करनी पड़ी थी। अंततः, सुरपति को यह वादा करना पड़ा कि वह क्रिसमस की छुट्टियों के दौरान दुबारा शो करने आएगा।

'यदि आपको कोई मदद चाहिए तो मुझे जरूर बताएँ।' गार्ड ने सुरपति को कूपे में दाखिल कराते हुए कहा। सुरपति ने चारों तरफ निगाह डालकर देखा और राहत की साँस ली। वह छोटा डिब्बा उसे पसंद आया।

'तो फिर ठीक है, सर। क्या मुझे जाने की इजाजत है?'

'बहुत-बहुत धन्यवाद।'

गार्ड चला गया।

सुरपति खिड़की के पास बैठ गया और फिर उसने सिगरेट की एक डिब्बी निकाली। उसने सोचा, यह तो अभी उसकी सफलता की शुरुआत है। उत्तर प्रदेश, दिल्ली, आगरा, इलाहाबाद, वाराणसी, लखनऊ। अभी उसे अनेक दूसरे राज्यों में जाना था, बहुत स्थानों का दौरा करना था। एक पूरी नई दुनिया उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। वह विदेश यात्रा पर जाएगा और उन्हें दिखा देगा कि कैसे बंगाल से आया एक युवक विश्व में कहीं भी सफल हो सकता है—अमेरिका जैसे देश में भी, जिस देश ने मशहूर हूदिनी को जन्म दिया। अरे हाँ, वह उनको सब दिखाएगा। यह तो शुरुआत ही है।

अनिल हाँफता हुआ आया। 'सबकुछ ठीक हैं।' उसने कहा।

'क्या तुमने ताले देखे?'

'हाँ, सर।'

'अच्छा किया।'

'मैं आपके डिब्बे से तीसरी बोगी में हूँ।'

'क्या उन्होंने 'रास्ता साफ' का सिग्नल दे दिया है?'

'वे सिग्नल देनेवाले हैं। मैं अब जाऊँगा, सर। क्या आप बर्दवान में एक चाय लेना चाहेंगे?'

'हाँ, वह अच्छा रहेगा।'

'तब मैं ले आऊँगा।'

अनिल चला गया। सुरपति ने सिगरेट सुलगाई और यूँ ही खिड़की के बाहर देखने लगा। धक्कम-धक्का करती भीड़, इधर-उधर दौड़ते कुली और फेरी लगाने वालों की चीख-चिल्लाहट की आवाज जल्दी पीछे छूट गई। उसका मन अपने बाल्यकाल में लौट गया। अब वह तैंतीस वर्ष का था। उस विशेष दिन वह आठ वर्ष से अधिक का नहीं रहा होगा। वह जिस गाँव में रहता था, उस गाँव में सड़क किनारे एक बूढ़ी औरत अपने सामने एक बोरा लिये बैठी रहती थी, उसके चारों ओर एक बड़ी भीड़ जुटी हुई थी। उसकी उम्र कितनी रही होगी? साठ? नब्बे वर्ष? कुछ भी हो सकती थी। उसकी उम्र से कोई फर्क नहीं पड़ता। महत्त्वपूर्ण वह था, जो वह अपने हाथों से करती थी। वह कोई भी एक वस्त—एक सिक्का, एक पत्थर का गोला, एक शकोरा, एक सुपारी या एक अमरूद भी हाथ में लेती—और वह वस्तु उन सबकी आँखों के सामने गायब हो जाती। वह बूढ़ी तब तक लगातार पटर-पटर बोलती रहती जब तक कि गायब हुई वस्तु न जाने कहाँ से दुबारा सामने न आ जाती। उसने कालू काका से एक रुपया लिया और वह गायब हो

गया। बहुत परेशान कालू काका को गुस्सा आने लगा। बूढ़ी औरत हँसी और हे छूमंतर! वह रुपया सबके सामने मौजूद था। कालू काका की आँखें हैरान रह गईं।

उसके बाद सुरपति किसी चीज पर ज्यादा ध्यान नहीं लगा सका। उस बूढ़ी औरत को उसने फिर कभी नहीं देखा। न ऐसी आश्चर्यजनक करामात उसने कहीं और देखी।

सोलह वर्ष का होने पर वह आगे की पढ़ाई के लिए कलकत्ता चला आया था। कलकत्ता आने पर उसने सबसे पहला काम यह किया कि जादू पर जितनी भी पुस्तकें वह खरीद सकता था, उसने खरीद लीं और उन पुस्तकों में बताई गई युक्तियों का अभ्यास करना शुरू कर दिया। अभ्यास करने के लिए ताश-पत्तों के कई बंडल लेकर किसी दर्पण के सामने घंटों खड़ा रहना पड़ता, और लिखे हुए एक-एक अनुदेश के अनुसार काम करना पड़ता। लेकिन बहुत जल्द, उसने सब कुछ सीख लिया। उसने छोटी-छोटी सभाओं और दोस्तों द्वारा आयोजित पार्टियों में अपने करतबों का प्रदर्शन शुरू कर दिया।

जब वह कॉलेज के द्वितीय वर्ष का छात्र था, उसके एक मित्र गौतम ने सुरपति को अपनी बहन के विवाह में बुलाया। वह शाम, बाद में एक जादूगर की हैसियत से सुरपति के प्रशिक्षण के इतिहास में सबसे अधिक स्मरणीय शाम सिद्ध हुई, क्योंकि उस दिन सुरपति की भेंट पहली बार त्रिपुर बाबू से हुई।

स्विन्हो स्ट्रीट में एक घर के पीछे एक बहुत बड़ा शामियाना लगा हुआ था। त्रिपुरचरन मलिक उस शामियाने के नीचे बैठे हुए थे और विवाह में उपस्थित दूसरे मेहमानों ने उन्हें घेरा हुआ था। एक नजर देखने में वह बहुत साधारण लगते थे। अड़तालीस वर्ष की उम्र, घुँघराले बाल— एक तरफ माँग निकालकर कढ़े हुए, होंठों पर मुसकान, मुँह के दोनों कानों पर चमकते पान के रस की धार। ऐसे लाखों लोग रोजाना देखने को मिलते हैं, त्रिपुरचरन उनसे कतई भिन्न नहीं था। लेकिन उनके सामने बिछे गद्दे पर जो हो रहा था उसे देखकर कोई भी उनके बारे में अपनी राय बदलने में एक क्षण भी नहीं लगाता। सुरपति को पहले तो अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। चाँदी का एक सिक्का लुढ़कता हुआ करीब एक गज की दूरी पर रखी सोने की अँगूठी के पास गया अैर उसकी बगल में जाकर रुक गया, और फिर दोनों लुढ़कते हुए त्रिपुर बाबू के पास लौट आए। सुरपति आश्चर्य से निकल कर सँभल पाता, उससे पहले ही गौत के अंकल के हाथ से माचिस की डिब्बी छूट कर जमीन पर गिर गई। सारी तीलियाँ बाहर बिखर गईं।

'उन्हें उठाने की परेशानी मत उठाओ।' त्रिपुर बाबू ने कहा। 'तुम्हारी ओर से मैं उन्हें इकट्ठा कर दूँगा।' उन्होंने सिर्फ एक बार अपना हाथ फिराया और सारी तीलियों का ढेर गद्दे पर रख दिया। फिर माचिस की खाली डिब्बी अपने बाएँ हाथ में लेकर उन्होंने पुकारना शुरू किया, 'मेरे पास आओ, प्रिय। आओ, आओ, आओ।' एक-एक तीली हवा में उठती और वापस डिब्बी के अंदर चली जाती, मानो वे तीलियाँ न होकर उनके पालतू जानवर हों और अपने मालिक की आज्ञा का पालन कर रहे हों।

डिनर के पश्चात् सुरपति सीधा उनके पास चला गया। त्रिपुर बाबू को उसकी रुचि देखकर बड़ी हैरानी हुई। 'मैंने कभी किसी को जादू सीखने में रुचि दिखाते नहीं देखा है। अधिकतर लोग तमाशा देखने में खुश रहते हैं।' उन्होंने कहा।

दो-चार दिन के बाद सुरपति उनके घर गया। वास्तव में उसे घर कहना अतिशयोक्ति होगी। त्रिपुर बाबू एक पुराने और जीर्ण-शीर्ण बोर्डिंग हाउस में एक छोटे से कमरे में रहते थे। घर के हर कोने से गरीबी झाँक रही थी। त्रिपुर बाबू ने उसे बताया कि अपना जादू दिखा-दिखाकर वह किस तरह अपनी गुजर-बसर किया करते हैं। प्रत्येक शो के लिए वह पचास रुपए लेते हैं, लेकिन फिर भी उन्हें बहुत अधिक निमंत्रण नहीं मिलते हैं। इसका मुख्य कारण सुरपति की जानकारी के अनुसार, त्रिपुर बाबू के अपने उत्साह का अभाव था। सुरपति कल्पना नहीं कर सका कि इतना प्रतिभाशाली कोई व्यक्ति अपनी महत्त्वाकांक्षी के प्रति पूर्णतया उदासीन कैसे हो सकता है। इस बात का जिक्र करने पर त्रिपुर बाबू ने एक आह के साथ कहा, 'अधिक शो करने की कोशिश का क्या लाभ होगा? कितने लोग हैं, जो एक सच्चे कलाकार की प्रतिभा की कद्र करते हैं? तुमने देखा नहीं, उस विवाह में डिनर की घोषणा होते ही कैसे सब लोग दौड़ गए? सिर्फ एक तुमको छोड़कर, क्या कोई भी लौटकर मेरे पास आया?'

इसके बाद सुरपति ने अपने दोस्तों से बात की और कुछ शो कराने का इंतजाम कर दिया। त्रिपुर बाबू संभवत: कुछ तो कृतज्ञता के कारण और कुछ उस लड़के के प्रति वास्तविक स्नेह के कारण उसे अपनी कला सिखाने के लिए राजी हो गए।

'मुझे कोई फीस नहीं चाहिए।' उन्होंने दृढता से कहा, 'मुझे खुशी है कि मेरे चले जाने के बाद कोई तो मेरी विरासत को आगे बढ़ाएगा। लेकिन याद रहे, तुम्हें धैर्य रखना होगा। जल्दबाजी में कुछ नहीं सीखा जा सकता है। अगर तुम अच्छी तरह कुछ सीख जाते हो तो तुम जान जाओगे कि सृजन में कितना आनंद प्राप्त होता है। बहुत अधिक सफलता या प्रसिद्धि तत्काल पाने की अपेक्षा मत रखना। लेकिन मैं कह सकता हूँ कि तुम जीवन में मेरे मुकाबले कहीं अधिक नाम कमाओगे, क्योंकि तुम्हारे अंदर महत्त्वाकांक्षा है, जो मेरे पास नहीं है।'

कुछ-कुछ घबराए हुए सुरपति ने पूछा, 'क्या आप मुझे वह सब सिखा देंगे जो आप जानते हैं? वह सिक्के और अँगूठीवाला खेल भी?'

त्रिपुर बाबू हँस पड़े। 'तुमको धीरे-धीरे एक-एक कदम चलकर सीखना होगा। इस कला को सीखने के लिए धैर्य और अध्यवसाय की बहुत आवश्यकता होती है। इस कला का विकास प्राचीन समय में हुआ, जब इनसान की इच्छा शक्ति और एकाग्रता बहुत तीव्र हुआ करती थी। आधुनिक इनसान के लिए वहाँ जाना आसान नहीं है। तुमको नहीं पता, मुझे कितना परिश्रम करना पड़ा था।'

सुरपति ने त्रिपुर बाबू के पास नियमित रूप से जाना शुरू कर दिया। लेकिन करीब छह माह बाद ही कुछ ऐसी घटना हुई, जिसके कारण उसका जीवन पूरी तरह बदल गया।

एक दिन कॉलेज के रास्ते में सुरपति ने चौरंधी की दीवारों पर बहुत सारे रंगीन पोस्टर लगे हुए देखे। 'शेफालो द ग्रेट' बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था। थोड़ा करीब से देखने पर पता चला कि शेफालो एक इतालवी जादूगर है। वह कलकत्ता आ रहा था अपनी सहायक मैडम पलर्मो के साथ।

उन्होंने 'न्यू एंपायर' में अपना जादू का खेल दिखाया। सुरपति एक रुपए वाली सीट पर बैठा और प्रत्येक खेल को पूरी तरह डूबकर देखता रहा। इन करामातों के बारे में उसने सिर्फ किताबों में पढ़ा था। उसकी आँखों के सामने लोग देखते-ही-देखते धुएँ के बादल में गायब हो गए और फिर उसी सर्पिल धुएँ से दुबारा प्रकट हो गए, अल्लादीन के जिन की तरह। एक लड़की को लकड़ी के बक्से में बंद कर दिया गया। शेफालो ने उस बक्से को आरी से दो हिस्सों में काट दिया, लेकिन वह लड़की एक दूसरे बक्से से हँसती हुई बाहर निकल आई, पूरी तरह सुरक्षित। उस रात सुरपति की हथेलियों में बहुत दर्द हुआ। उसने इस कदर तालियाँ जो बजाई थीं।

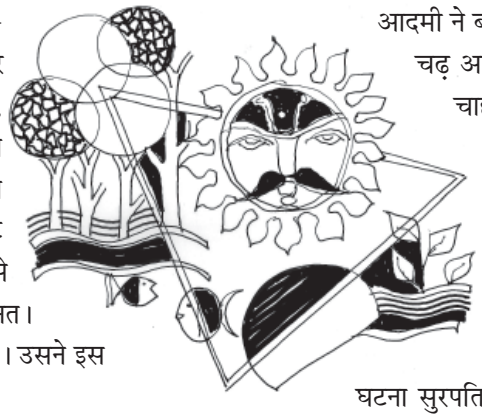

उसने शेफालो को बहुत ध्यान से देखा। वह जितना अच्छा जादूगर था उतना ही अच्छा एक अभिनेता भी था। उसने एक चमकीला काला सूट पहना हुआ था। उसके हाथ में एक जादुई छड़ी थी और उसके सिर पर एक हैट था। उस हैट से तरह-तरह की वस्तुएँ बाहर आने का सिलसिला रुकता ही नहीं था। एक बार उसने हैट में अपना हाथ डाला और एक खरगोश को कानों से पकड़कर बाहर खींच लिया। इससे पहले कि खरगोश अपने कानों को सहलाता, एक के बाद एक कबूतर बाहर आने लगे—एक, दो, तीन, चार। वे स्टेज के चारों ओर फड़फड़ाने लगे। इस बीच शेफालो ने अपने हैट से ढेर सारी चॉकलेट निकालकर दर्शकों की तरफ फैलाना शुरू कर दिया।

सुरपति ने एक और चीज देखी। शेफालो अपना खेल दिखाते समय बराबर बोलता रहा, एक क्षण के लिए भी रुका नहीं। बाद में सुरपति को पता चला कि इसे जादूगर की बड़बड़ाहट कहते हैं। दर्शक उसके निरंतर शब्द प्रवाह से बँधे रहते हैं, और जादूगर चुपचाप अपनी कलाकारी का प्रदर्शन करता रहता है, हाथ की सफाई, थोड़ा छल-कपट।

लेकिन मैडम पलर्मो अलग थी। वह एक शब्द भी नहीं बोली। फिर, कैसे वह हर एक को ठग सकी? सुरपति को इसका जवाब बाद में मिला। स्टेज पर कुछ करतब ऐसे भी दिखाए जा सकते हैं, जहाँ जादूगर के हाथों को कुछ भी करने की खास जरूरत नहीं होती है। सब-कुछ यंत्र चालित उपकरण के जरिए नियंत्रित किया जा सकता है, जिसे चलाने वाले परदे के पीछे रहते हैं। किसी आदमी को धुएँ में गायब होते दिखाना या किसी लड़की को दो हिस्सों में काटना, दोनों इसी प्रकार की चालाकियाँ हैं, जो पूरी तरह उपकरण के प्रयोग पर निर्भर करती हैं। बहुत पैसे वाला कोई भी व्यक्ति उस उपकरण को खरीद सकता है और स्टेज पर खेल दिखा सकता है, लेकिन निस्संदेह प्रस्तुत करने की कला आना भी बहुत जरूरी है। कला की पूर्ण प्रस्तुति में व्यक्ति की सहज प्रवृत्ति एवं उचित आंतरिक प्रेरणा, मोहित करने की कला का बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है। यह कर सकना हर किसी के वश की बात नहीं है। हर कोई नहीं···

सुरपति चौंक कर अपने दिवास्वप्न से बाहर आ गया। गाड़ी ने झटके दे-देकर अभी स्टेशन से निकलना शुरू ही किया था कि एक आदमी ने बाहर से उसके डिब्बे का दरवाजा खोला और अंदर चढ़ आया। सुरपति ने जैसे ही यह कहकर विरोध करना चाहा कि ये सीटें आरक्षित हैं, उसी व्यक्ति के चेहरे पर नजर पड़ते ही वह हैरान रह गया। शुक्रिया ईश्वर का—यह तो त्रिपुर बाबू निकले।

त्रिपुरचरन मलिक!

विगत में भी कई दृष्टांत हो चुके हैं, जब सुरपति को इसी का अनुभव हुआ। किसी व्यक्ति के बारे में सोचते ही उसके साक्षात् हो जाने की घटना सुरपति के साथ पहले ही घट चुकी थी। लेकिन त्रिपुर बाबू को इस प्रकार अपने डिब्बे में पाने जैसी घटना के आगे पिछली सभी घटनाएँ फीकी पड़ गईं।

सुरपति अवाक् बना रहा। त्रिपुर बाबू ने अपनी धोती के छोर से अपना माथा पोंछा, साथ में लाई पोटली को उन्होंने सामनेवाली सीट पर रखा और बैठ गए। फिर उन्होंने सुरपति को देखा और हँसे, 'आश्चर्य, क्या तुम···नहीं हो?'

सुरपति ने मुश्किल से कंठ निगला। 'मैं···हाँ, मैं चकित हूँ। असल में, मुझे पक्का पता नहीं था कि आप अभी तक जीवित हैं।'

'वास्तव में?'

'हाँ। कॉलेज समाप्त होने के बाद ही मैं आपके बोर्डिंग हाउस गया था। आपके कमरे पर ताला लगा हुआ था। मैनेजर ने मुझे बताया कि आप एक कार के नीचे आ गए थे···।'

त्रिपुर बाबू हँसे। 'वह बल्कि ज्यादा अच्छा होता। मैं कम-से-कम अपनी सारी चिंताओं एवं परेशानियों से तो मुक्त हो जाता।'

'इसके अलावा,' सुरपति ने कहा, 'कुछ देर पहले तक मैं आपके विषय में ही सोच रहा था।'

'अरे हाँ!' त्रिपुर बाबू के चेहरे के ऊपर से एक छाया गुजर गई। 'क्या तुम वास्तव में मेरे बारे में सोच रहे थे? तुम्हारा मतलब है, तुम अभी भी मुझे याद करते हो? आश्चर्य की बात है।'

सुरपति ने लज्जा से अपना होंठ काट लिया।

'ऐसा मत कहिए, त्रिपुर बाबू! मैं आपको कैसे भूल सकता हूँ? क्या आप मेरे पहले गुरु नहीं थे? मैं उन दिनों को याद कर रहा था, जब हम साथ थे। मैं पहली बार बंगाल के बाहर अपना खेल दिखाने जा रहा हूँ, अब मैं एक पेशेवर जादूगर हूँ—क्या आपको पता था?'

त्रिपुर बाबू ने सहमति में सिर हिलाया। 'हाँ, मुझे तुम्हारे बारे में सब मालूम है। इसीलिए मैं आज तुमसे मिलने आया हूँ। देखो, मैं पिछले बारह वर्ष से तुम्हारे कैरियर को करीब से देखता आ रहा हूँ। जब 'न्यू एंपायर' में तुम्हारा शो था, मैं पहले दिन ही वहाँ गया था और अंतिम पंक्ति में बैठा था। मैंने सबको तालियाँ बजाते देखा। हाँ, मुझे तुम पर गर्व महसूस हुआ। लेकिन…'

बोलते-बोलते वह रुक गए। सुरपति समझ नहीं पाया कि क्या कहा जाए। वैसे भी कहने के लिए कुछ खास था नहीं था। अगर महसूस कर रहे थे कि उन्हें ठेस लगी है और उपेक्षित छोड़ दिया गया है तो इसमें त्रिपुर बाबू का कोई दोष नहीं। बहरहाल, अगर उन्होंने शुरू में ही सुरपति की मदद नहीं की होती तो सुरपति उस जगह कभी न पहुँच पाता, जहाँ वह आज है। लेकिन उसने बदले में त्रिपुर बाबू के वास्ते क्या किया? कुछ भी नहीं। उलटे यह जरूर हुआ कि त्रिपुर बाबू और उनके आरंभिक दिनों की याद उसके मन में बहुत धुँधली पड़ गई थी। इसी प्रकार, कृतज्ञता की भावना भी मिट चली थी।

त्रिपुर बाबू फिर बोलने लगे, 'हाँ, मैंने उस दिन तुम्हारे बारे में गर्व का अनुभव किया, यह देखकर कि तुमने कितनी सफलता हासिल कर ली है। लेकिन मुझे थोड़ा खेद भी हुआ। जानते हो 'क्यों? इसलिए' क्योंकि तुमने जो रास्ता चुना है, वह एक सच्चे जादूगर के लिए सही रास्ता नहीं है। उन जुगतों के प्रयोग से तुम दर्शकों का मनोरंजन कर सकते हो और उन्हें बहुत हद तक प्रभावित करने में भी सफल हो सकते हो; लेकिन कोई भी सफलता तुम्हारी अपनी नहीं होगी। क्या तुम्हें याद है, मैं किस प्रकार का जादू दिखाया करता था?'

सुरपति भूला नहीं था। उसे यह भी याद था कि त्रिपुर बाबू उस समय बहुत हिचकिचाहट में थे, जब उन्हें अपनी सबसे बढ़िया बाजीगरी या हाथ की सफाई उसे सीखनी थी। 'तुम्हें अभी थोड़ा और समय चाहिए,' वह कहते। लेकिन सही समय कभी नहीं आया। उसके कुछ समय बाद ही शेफालो का आगमन हुआ और दो माह बाद त्रिपुर बाबू स्वयं लुप्त हो गए।

सुरपति को आश्चर्य के साथ-साथ बहुत निराशा भी हुई, जब त्रिपुर बाबू वहाँ नहीं मिले, जहाँ वह रहते थे। लेकिन ये भावनाएँ अधिक समय तक नहीं रहीं। उसके मन में शेफालो भरा हुआ था और अपने भविष्य के सपने थे—कि वह हर जगह की यात्रा करेगा, हर जगह अपना खेल दिखाएगा। उसके नाम से लोग उसे पहचानेंगे और वह जहाँ भी जाएगा, तालियों से उसका स्वागत होगा और प्रशंसा प्राप्त होगी।

त्रिपुर बाबू विचारमग्न थे और खिड़की के बाहर ताक रहे थे। सुरपति ने उन्हें थोड़ा और निकट से देखा। देखकर लगता था कि उन्हें कठिन समय से गुजरना पड़ा है। उनके सारे बाल सफेद हो गए थे उनकी खाल धँस गई थी और उनकी आँखें गड्ढों में चली गई थीं। लेकिन, क्या उनकी आँखों की दृष्टि जरा भी मंद हुई थी? नहीं। उनकी दृष्टि आश्चर्यजनक रूप से आज भी उतनी ही पैनी थी।

उन्होंने आह भरी।

'सचमुच, मैं जानता हूँ, तुमने यह रास्ता क्यों चुना? मैं जानता हूँ, तुम मानते हो—और इसके लिए शायद मैं भी अंशत: उत्तरदायी हूँ कि सादगी को प्राय: यथायोग्य सम्मान नहीं मिलता है। स्टेज पर खेल-तमाशा दिखाने के लिए तड़क-भड़क और कुछ छल की आवश्यकता होती है। होती है न?'

सुरपति असहमत नहीं हुआ। शेफालो के हुनर का वह कायल हो गया था। सच में, थोड़ी-बहुत चकाचौंध से कोई नुकसान नहीं होता। आज स्थितियाँ बदल गई हैं। शादी-विवाह में साधारण खेल-तमाशा दिखाकर कोई कितना हासिल कर सकता है? बिना किसी काट-छाँटवाली विशुद्ध जादूगरी के प्रति सुरपति के मन में अगाध सम्मान था। लेकिन उस प्रकार के जादू का कोई भविष्य नहीं था। सुरपति यह समझता था और इसी कारण उसने एक अलग रास्ते पर चलने का फैसला किया था।

उसने त्रिपुर बाबू को यह सब कह डाला और त्रिपुर बाबू अचानक उत्तेजित हो गए। बेंच पर पालथी मारकर बैठे-बैठे वह उसी आक्रोश में थोड़ा आगे की ओर झुक आए—'सुनो, सुरपति!' उन्होने कहा, 'अगर तुम्हें पता होता कि असल जादू क्या होता है तो तुम नकली जादू के पीछे नहीं भागते। जादू सिर्फ हाथ की सफाई नहीं है, हालाँकि उसे सीखने लिए भी सालों अभ्यास करना पड़ता है। उसके आगे भी बहुत कुछ है। सम्मोहन! जरा सोचो इसके बारे में। तुम एक व्यक्ति को पूरी तरह वश में कर सकते हो—सिर्फ उस पर अपनी दृष्टि गड़ाकर। फिर अतींद्रिय दृष्टि है, दूरानुभूति (टेलीपैथी) है और पर-विचार ज्ञान है। अगर तुम चाहो तो किसी दूसरे के विचारों में प्रवेश कर सकते हो। व्यक्ति की नाड़ी स्पर्श करके ही तुम बता सकते हो कि वह क्या सोच रहा है। अगर तुम इस कला को पूरी तरह आत्मसात् कर लो तो तुम्हें व्यक्ति को छूने की भी जरूरत नहीं होगी। तुम्हें केवल एक मिनट उस व्यक्ति को घूरकर देखना होगा और तुम उसके विचारों को जान सकोगे। यह सबसे बड़ा जादू है। उपकरण और जुगत की इसमें कोई जगह नहीं है। इसमें सिर्फ समर्पण, अध्यवसाय और गहन एकाग्रता चाहिए।'

त्रिपुर बाबू साँस भरने के लिए रुके। फिर वह सुरपति के और निकट खिसक आए और कहने लगे, 'मैं तुमको यह सब सीखाना चाहता था। तुम प्रतीक्षा नहीं कर सके। विदेश से आए एक छली ने तुम्हारा दिमाग पलट दिया। तुमने सही रास्ता त्याग दिया और भटक गए आडंबर की दुनिया में जल्दी पैसा कमाने के उद्देश्य से।'

सुरपति खामोश रहा। वह किसी भी बात से इनकार नहीं कर सका।

त्रिपुर बाबू कुछ नरम पड़ गए। उन्होंने सुरपति के कंधे पर हाथ रखा और नरमी के साथ आगे बोलने लगे, 'आज मैं सिर्फ एक अनुरोध करने आया हूँ। अब तक तुम्हें अंदाजा हो गया होगा कि मेरी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। मुझे अनेक करतब आते हैं, लेकिन पैसा कमाने की चालबाजी मैंने अभी तक नहीं सीखी है। मैं जानता हूँ, मुझमें महत्त्वाकांक्षा की कमी है, वही एकमात्र कारण है। आज मैं घोर निराशा में डूबा हुआ हूँ, सुरपति। मुझमें अब इतनी सामर्थ्य एवं शक्ति नहीं है

कि अपने जीवन-निर्वाह के लिए फिर से कोशिश कर सकूँ। मुझे बस, इतना भरोसा है कि तुम मेरी मदद करोगे, भले ही इसके लिए तुम्हें कोई त्याग क्यों न करना पड़े। मेरे वास्ते यह कर दो सुरपति, और मैं वादा करता हूँ कि फिर कभी मैं तुमको परेशान नहीं करूँगा।'

सुरपति उलझन में पड़ गया। वह किस प्रकार की मदद चाहते हैं?

त्रिपुर बाबू आगे बोले, 'मैं अब आगे जो कहने जा रहा हूँ, तुमको धृष्टता लग सकती है। लेकिन कोई दूसरा उपाय नहीं है। देखो, यह मेरे लिए सिर्फ धन चाहने की बात नहीं है। इस वृद्धावस्था में मेरी एक विलक्षण इच्छा है। मैं स्टेज पर, दर्शकों की एक बड़ी भीड़ के सामने अपना खेल दिखाना चाहता हूँ। मैं उनको अपनी सबसे श्रेष्ठ बाजीगरी, जो मैं जानता हूँ, दिखाना चाहता हूँ। यह पहला और अंतिम अवसर हो सकता है, लेकिन मैं इस चाह को अपने मन से निकाल नहीं सकता।'

एक ठंडे हाथ ने सुरपति के दिल को जकड़ लिया। त्रिपुर बाबू अंततः मुद्दे पर आ गए—'तुम लखनऊ में शो करने जा रहे हो। जा रहे हो न? मान लो कि तुम अंतिम क्षण में बीमार हो जाते हो? निस्संदेह, तुम अपने दर्शकों को निराश नहीं करना चाहोगे। मान लो, कोई दूसरा व्यक्ति तुम्हारा स्थान ले लेता है...'

सुरपति पूरी तरह हक्का-बक्का रह गया। वह कहना क्या चाहते हैं। वह असल में बहुत निराश होंगे, अन्यथा ऐसा अजीब प्रस्ताव लेकर वह कभी नहीं आते।

सुरपति पर अपनी दृष्टि गड़ाए हुए त्रिपुर बाबू ने कहा, 'तुम्हें सिर्फ यह कहना होगा कि किसी अपरिहार्य कारण से तुम अपना खेल नहीं दिखा सकते; लेकिन यह कि तुम्हारी जगह तुम्हारे गुरु आ रहे हैं अपना करतब दिखाने। क्या लोगों को इस बात से अफसोस होगा और उनका दिल टूट जाएगा? मैं ऐसा नहीं मानता। मैं सोचता हूँ, उन्हें मेरा प्रदर्शन पसंद आएगा। इसके बावजूद तुम पहली शाम की कमाई में से आधा अपने पास रख सकते हो। बाकी रकम से मेरा काम चल जाएगा। उसके पश्चात् तुम अपने रास्ते जा सकते हो। मैं तुमको दुबारा कभी तंग नहीं करूँगा। लेकिन यह एक मौका तो तुमको मुझे देना ही होगा, सुरपति—केवल एक बार।'

'असंभव!' सुरपति को गुस्सा आ गया' 'आप जो कह रहे हैं वह एकदम नामुमकिन है। आपको पता नहीं, आप क्या कह रहे हैं। मैं बंगाल के बाहर पहली बार अपनी बाजीगरी का प्रदर्शन करने जा रहा हूँ। क्या आप समझ नहीं सकते कि लखनऊ में मेरा यह शो मेरे लिए क्या अर्थ रखता है? क्या आप वास्तव में चाहते हैं कि मैं अपने नए पेशे की शुरुआत एक झूठ से करूँ? आप ऐसा सोच भी कैसे सकते हैं?'

त्रिपुर बाबू ने उस पर एक ठंडी व सपाट दृष्टि डाली। फिर उनकी आवाज सारे शोर व गुल से ऊपर उठ गई। लगता था जैसे डिब्बे को चीर डालेगी—'क्या तुम अभी भी सिक्के और अँगूठी के उस पुराने दाँव में रुचि रखते हो?'

त्रिपुर बाबू ने अपनी जेब से ताश के पत्तों का एक बंडल निकाला। 'देखते हैं, तुम कितने होशियार हो। क्या तुम इस गुलाम को पीछे से ले सकते हो और आगे लाकर इसे चिड़ी की इस तिक्की के ऊपर रख सकते हो, अपने हाथ की सिर्फ एक हरकत से?'

सुरपति चौंक गया। लेकिन त्रिपुर बाबू की आँखों का भाव नहीं बदला।

'क्यों?' सुरपति ने पूछा।

त्रिपुर बाबू बुजदिली से हँसे, 'अगर तुम मेरा सुझाव मानोगे तो मैं तुम्हें वो हुनर सिखा दूँगा। अगर तुम नहीं...'

उस क्षण उनकी आवाज हावड़ा जा रही ट्रेन की सीटी की तेज आवाज में डूब गई। गुजरती हुई ट्रेन की तेज रोशनी ने उनकी आँखों में विचित्र चमक को पकड़ लिया।

'और अगर मैं न मानूँ?' सुरपति ने नम्रता से पूछा, जब शोर जा चुका था।

'तुम पछताओगे। यह कुछ ऐसी बात है, जो तुम्हें पता होनी चाहिए। अगर मैं दर्शकों के बीच बैठा होऊँ तो मैं अपनी शक्ति से एक जादूगर किसी भी जादूगर को बड़ी परेशानी में डाल सकता हूँ। यहाँ तक कि मैं उसे पूरी तरह असहाय बना सकता हूँ।'

त्रिपुर बाबू ने अपनी जेब से ताश के पत्तों का एक बंडल निकाला। 'देखते हैं, तुम कितने होशियार हो। क्या तुम इस गुलाम को पीछे से ले सकते हो और आगे लाकर इसे चिड़ी की इस तिक्की के ऊपर रख सकते हो, अपने हाथ की सिर्फ एक हरकत से?'

सुरपति ने पहले-पहले जो करामात सीखी थीं, उनमें से एक यह करामात भी थी। सोलह वर्ष की आयु में उसने यह हुनर केवल सात दिनों में पूरी तरह सीख लिया था।

और आज?

सुरपति ने ताश का पैकेट लिया और उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे उँगलियाँ सुन्न होने लगी हैं। फिर उसकी कलाई, उसकी कुहनी सुन्न पड़ गई और अंततः पूरी बाँह को जैसे लकवा मार गया। सुरपति ने हैरानी में त्रिपुर बाबू की ओर देखा। उन्होंने एक विचित्र-सी मुसकान के साथ मुँह टेढ़ा किया हुआ था और उनकी आँखें सीधे सुरपति की आँखों में घूर रही थीं। उनकी आँखों में अमानवीय दृष्टि थी। सुरपति के माथे पर पसीने की छोटी-छोटी बूँदें निकल आईं। उसका सारा बदन काँपने लगा।

'क्या अब मेरी शक्ति में तुम विश्वास करते हो?'

ताश के पत्तों की ढेरी सुरपति के हाथों से छूट गई। त्रिपुर बाबू ने उसे बड़ी सफाई से उठा लिया और कहा, 'क्या अब तुम मेरे सुझाव को मानने के लिए तैयार हो?'

सुरपति को अब कुछ बेहतर लगने लगा। 'क्या आप वास्तव में मुझे वह पुरानी करामात सिखाएँगे?' सुरपति ने थकावट महसूस करते हुए पूछा।

त्रिपुर बाबू ने एक उँगली उठाई, 'तुम्हारा गुरु त्रिपुरचरन मलिक लखनऊ में तुम्हारी जगह खेल का प्रदर्शन करेगा; क्योंकि तुम अचानक

बीमार हो जाते हो। क्या यह ठीक है?'

'हाँ।'

'उस शाम की आधी कमाई तुम मुझे दोगे। ठीक?'

'ठीक।'

'तो फिर, ठीक···'

सुरपति ने अपनी जेब से पचास पैसे का एक सिक्का निकाला और अपनी मूँगे की अँगूठी उतारी। एक शब्द भी बोले बिना उसने दोनों चीजें त्रिपुर बाबू को सौंप दीं।

जब ट्रेन बर्दवान स्टेशन पर रुकी, अनिल चाय का प्याला लिये आ गया और उसने अपने बॉस को गहरी निद्रा में पाया।

'सर!' अनिल ने कुछ पल के संकोच के बाद कहा।

सुरपति तुरंत जाग गया।

'कौन···क्या है यह?'

'आपकी चाय सर। सॉरी, मैंने आपको परेशान किया।'

'लेकिन··· ?' सुरपति ने बेताबी से चारों तरफ नजर घुमाई।

'बात क्या है?'

'त्रिपुर बाबू··· वह कहाँ हैं?'

'त्रिपुर बाबू!' अनिल उलझन में पड़ गया।

'अरे नहीं, नहीं। वह तो गाड़ी के नीचे आ गए थे, क्या उन्हें गाड़ी मार कर नहीं चली गई? बहुत पहले—१९५१ में। लेकिन मेरी अँगूठी कहाँ है?'

'कौन सी अँगूठी, सर? मूँगेवाली अँगूठी तो आपकी उँगली पर है।'

'हाँ, हाँ, सचमुच। और···'

सुरपति ने अपनी जेब में हाथ डाला और एक सिक्का निकाला। अनिल ने गौर किया कि उसके मालिक के हाथ काँप रहे हैं।

'अनिल', सुरपति ने पुकारा, 'जल्दी आओ। खिड़कियाँ बंद कर दो, ओके। अब यह देखो।'

सुरपति ने अँगूठी को बेंच के एक सिरे पर रखा और सिक्के को दूसरे सिरे पर। 'ईश्वर मेरी मदद करो!' उसने मौन प्रार्थना की और एक गहरी सम्मोहक दृष्टि पूर्णतया सिक्के पर टिकाए रखी, ठीक उसी तरह जैसा कुछ क्षण पहले उसे सिखाया गया था। सिक्का अँगूठी की तरफ लुढ़कने लगा और फिर दोनों—सिक्का एवं अँगूठी दो आज्ञाकारी बच्चों की तरह लुढ़कते हुए सुरपति के पास लौट आए।

अनिल के हाथ से प्याला छूटकर फर्श पर गिर गया होता, अगर सुरपति ने अंतिम क्षण में चमत्कारिक रूप से अपना हाथ बढ़ाकर उसे बीच में ही न लपक लिया होता।

सुरपति ने लखनऊ में अपना शो अपने स्वर्गीय गुरु त्रिपुरचरन मलिक को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आरंभ किया।

उस शाम सुरपति ने जो अंतिम खेल प्रस्तुत किया, उसका परिचय असली भारतीय जादू के रूप में दिया गया। वही, सिक्का और अँगूठी का खेल।

('सत्यजित रे की लोकप्रिय कहानियाँ' पुस्तक से उद्धृत)

लेखकों से अनुरोध

- मौलिक तथा अप्रकाशित-अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें।
- रचना फुलस्केप कागज पर साफ लिखी हुई अथवा शुद्ध टंकित की हुई मूल प्रति भेजें।
- पूर्व स्वीकृति बिना लंबी रचना न भेजें।
- केवल साहित्यिक रचनाएँ ही भेजें।
- प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, पता एवं दूरभाष संख्या अवश्य लिखें; साथ ही लेखक परिचय एवं फोटो भी भेजें।
- डाक टिकट लगा लिफाफा साथ होने पर ही अस्वीकृत रचनाएँ वापस भेजी जा सकती हैं। अतः रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें।
- किसी अवसर विशेष पर आधारित आलेख को कृपया उस अवसर से कम-से-कम तीन माह पूर्व भेजें, ताकि समय रहते उसे प्रकाशन-योजना में शामिल किया जा सके।
- रचना भेजने के बाद कृपया दूरभाष द्वारा जानकारी न लें। रचनाओं का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय होगा।

सनातन परंपरा है सिंहस्थ कुंभ-महापर्व

● सुशील शर्मा

उज्जयिनी—वर्तमान उज्जैन—भारत का अनादि नगर है। क्षिप्रा के तट पर स्थित युग-युगीन वैभव के प्रकाश में जगमगाती उज्जयिनी अनेक नामों से विख्यात हुई है। उदाहरण के लिए अमरावती, कनकशृंगा, कुशस्थली, भोगवती, पद्मावती, प्रतिकल्पा और अवंतिका आदि कुछ ऐसे संबोधन हैं, जो यहाँ की पौराणिक अथवा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में चमकने लगते हैं। सांदीपनि और कृष्ण, उदयन और वासवदत्ता, महावीर और अशोक, विक्रमादित्य और कालिदास, हर्ष और बाणभट्ट, शंकराचार्य और वल्लभाचार्य तथा जद्रूप की मनोरम स्मृतियाँ आज भी जन-भावना में प्रेरणा की स्रोत हैं। इतना ही नहीं, राष्ट्रीय इतिवृत्ति के पूर्ण रूपायन के लिए उज्जैन के इतिहास में अभी भी अनेक पक्ष अछूते हैं।

उज्जैन इतिहास के अनेक परिवर्तनों का साक्षी है। क्षिप्रा के अंतर में इस पारंपरिक नगर के उत्थान-पतन की निराली और सुस्पष्ट अनुभूतियाँ अंकित हैं। क्षिप्रा के घाटों पर जहाँ प्राकृतिक सौंदर्य की छटा बिखरी पड़ी है, असंख्य लोग आए और गए; रंगों भरा कार्तिक मेला हो या जन-संकुल सिंहस्थ या दिन के नहान, सब कुछ नगर को तीन ओर से घेरे क्षिप्रा का आकर्षण है।

उज्जैन का सिंहस्थ

सिंहस्थ उज्जैन का महान् स्नान-पर्व है। बारह वर्षों के अंतराल पर यह पर्व तब मनाया जाता है, जब बृहस्पति सिंह राशि पर स्थित रहता है। पवित्र क्षिप्रा नदी में पुण्य-स्नान की विधियाँ चैत्र मास की पूर्णिमा से प्रारंभ होती हैं और पूरे मास में वैशाख पूर्णिमा के अंतिम स्नान तक भिन्न-भिन्न तिथियों में संपन्न होती हैं। उज्जैन के महापर्व के लिए पारंपरिक रूप से दस योग महत्त्वपूर्ण माने गए हैं।

पुराणों के अनुसार देवों और दानवों के सहयोग से संपन्न समुद्र-मंथन से अन्य वस्तुओं के अलावा अमृत से भरा हुआ एक कुंभ (घड़ा) भी निकला था। देवगण दानवों को अमृत नहीं देना चाहते थे। देवराज इंद्र के संकेत पर उनका पुत्र जयंत जब अमृत कुंभ को लेकर भागने की चेष्टा कर रहा था, तब कुछ दानवों ने उसका पीछा किया। अमृत-कुंभ के लिए स्वर्ग में बारह दिन तक संघर्ष चलता रहा और उस कुंभ से चार स्थानों पर अमृत की कुछ बूँदें छलक गईं; ये स्थान पृथ्वी पर हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक हैं। इन स्थानों की पवित्र नदियों को अमृत की बूँदें प्राप्त करने का श्रेय मिला। क्षिप्रा के पावन जल में अमृत-संपात की स्मृति में सिंहस्थ महापर्व उज्जैन में मनाया जाता है। अन्य स्थानों पर भी यह पर्व कुंभ-स्नान के नाम से मनाया जाता है। कुंभ के नाम से यह पर्व अधिक प्रसिद्ध है।

सुपरिचित पत्रकार एवं लेखक। ३२ वर्ष देश-विदेश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेखन, संपादन और रिपोर्टिंग; २२ वर्षों तक विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन की सतत शिक्षा अध्ययनशाला द्वारा संचालित जनसंचार और पत्रकारिता के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में संकाय सदस्य। प्रेस कौंसिल ऑफ मध्य प्रदेश के अध्यक्ष; नेशनल एकेडमी ऑफ पब्लिक रिलेशन के चेयरमैन। लॉ कौंसिल ऑफ मध्य प्रदेश के अध्यक्ष।

प्रत्येक स्थान पर बारह वर्षों का क्रम एक समान है। अमृत-कुंभ के लिए स्वर्ग की गणना से बारह दिन तक संघर्ष हुआ था, जो धरती के लोगों के लिए बारह वर्ष होते हैं। प्रत्येक स्थान पर कुंभ-पर्व के लिए भिन्न-भिन्न ग्रह स्थिति निश्चित हैं। उज्जैन के पर्व के लिए सिंह राशि पर बृहस्पति, मेष में सूर्य, तुला राशि का चंद्र आदि ग्रहयोग माने जाते हैं।

महान् सांस्कृतिक परंपराओं के साथ-साथ उज्जैन की गणना पवित्र सप्तपुरियों में की जाती है। महाकालेश्वर मंदिर और पावन क्षिप्रा ने युगों-युगों से असंख्य लोगों को उज्जैन यात्रा के लिए आकर्षित किया है। सिंहस्थ महापर्व पर करोड़ों की संख्या में तीर्थयात्री और भिन्न-भिन्न संप्रदायों के साधु-संत पूरे भारत का एक संक्षिप्त रूप उज्जैन में स्थापित कर देते हैं, जिसे देखकर सहज ही यह जाना जा सकता है कि यह महान् राष्ट्र किन अदृश्य प्रेरणाओं की शक्ति से एक सूत्र में बँधा हुआ है।

कुंभ की पौराणिकता

शिव पुराण में उल्लेख है कि देवताओं ने गंगावतरण के बाद गौतमी, गंगा, गोदावरी से प्रार्थना की कि जब-जब गुरु सिंह राशि में आएँगे, तब-तब हम सब यहाँ अवश्य आएँगे और आप भी महादेवजी के साथ लोक के ग्यारह वर्षों में किए गए पापों का प्रक्षालन करने के लिए यहाँ अवश्य उपस्थित रहना।

इसके अतिरिक्त तीर्थ दर्पण, तीर्थेंदुशेखर आदि पुस्तकों में स्कंद पुराण, ब्रह्मांड पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण आदि ग्रंथों से जो श्लोक उद्धृत किए गए हैं, वे सभी सिंहस्थ गुरु की स्थिति में तीर्थ नदियों में स्नान के महत्त्व को बताते हैं।

विष्णुयाग की कलशोत्पत्ति कथा के अनुसार उत्तर में हिमालय पर्वत के समीप क्षीर सागर को मथने के लिए देवों और दैत्यों ने मिलकर साहसिक अभियान संपन्न किया था। कच्छपावतार भगवान् विष्णु की

पीठ पर विराट् मंदराचल को मथानी बनाकर रखा गया। नागराज वासुकि को रस्सी बनाया गया और एक ओर से देवों ने तथा दूसरी ओर से दैत्यों ने सागर को मथना शुरू किया। इस मंथन में चौदह रत्न निकले—विष, वारुणी, पुष्पक विमान, ऐरावत हाथी, उच्चैश्रवा अश्व, लक्ष्मी, रंभा, चंद्रमा, कौस्तुभ मणि, कामधेनु, विश्वकर्मा, धन्वंतरि और अमृत कुंभ!

सबसे अंत में धन्वंतरि ही अमृत से पूरित कुंभ को लेकर अवतरित हुए। अमृत-कुंभ को देखते ही इंद्र का पुत्र जयंत झपटा और अमृत-कुंभ को धन्वंतरि के हाथों से छीनकर भाग निकला। देवता कुंभ की रक्षा के लिए सन्नद्ध हुए तो दैत्य इस घटना से बौखलाकर जयंत से कुंभ छीनने के लिए उसके पीछे भागे! जयंत बारह दिन तक (जो कि मनुष्यों के बारह वर्ष माने जाते हैं) कुंभ लिये-लिये भागता रहा। इस अवधि में उसने जिन बारह स्थानों पर यह कलश रखा, उन्हीं बारह स्थानों पर बाद में कुंभ-पर्व मनाया जाने लगा। उक्त बारह स्थानों में चार तो पृथ्वी पर, वह भी भारत में ही हैं; शेष आठ स्थान देवलोक में माने जाते हैं।

क्योंकि देवगुरु बृहस्पति, सूर्य और चंद्रमा ने उक्त बारह दिनों में अलग-अलग स्थितियों में कुंभ की रक्षा की थी, अत: बृहस्पति, सूर्य और चंद्रमा की विशिष्ट स्थितियाँ ही विभिन्न स्थानों पर कुंभ का योग बनाती हैं।

जयंत द्वारा अमृत-कुंभ लेकर भागने की घटनावाली पुराकथा के साथ-साथ एक किंवदंती इस संदर्भ में प्रचलित है कि गुरु द्वारा कुंभ (घड़ा) ले जाने की बात! हालाँकि इसका स्पष्ट उल्लेख नहीं मिला है, किंतु लोकचर्चा है कि सागर-मंथन के बाद अंत में धन्वंतरि अमृत-कुंभ लेकर प्रकट हुए तो उस कुंभ को लेकर छीना-छपटी हुई! देवों-दैत्यों के बीच विवाद बढ़ा तो भगवान् विष्णु मोहिनी रूप लेकर आए। उन्होंने मध्यस्थ बनकर अमृत-कुंभ स्वयं ले लिया और वितरण करना आरंभ किया। उन्होंने पहले से ही निश्चय कर रखा था कि यह अमृत केवल देवताओं को ही मिलना चाहिए, अत: उन्होंने देवताओं की पंक्ति में ही सारा अमृत बाँटकर खाली कलश फेंक दिया। इस कलश को गरुड़ ले उड़े और थोड़ी-बहुत शेष बची बूँदों को उन्होंने चार स्थानों पर गिरा दिया।

कुछ जनश्रुतियाँ कहती हैं कि गरुड़ भरा हुआ अमृत-कुंभ ले उड़े और चोंच में पकड़े होने के कारण कुंभ टेढ़ा हो गया, इसीलिए अमृत चार स्थानों पर छलक गया। गरुड़ और कुंभ का संबंध यों तो शतपथ ब्राह्मण में भी है। कहा गया है कि गायत्री श्येन होकर दिव से सोम को लाई इसी से वह श्येनभृत हैं! श्येन और सोम का यह संबंध प्रतीकार्थ में है और कुंभपर्व से तो नहीं ही जुड़ता!

श्रीमद्भागवत, विष्णुपुराण, महाभारत, वाल्मीकि रामायण आदि ग्रंथों में भी सागर-मंथन, अमृत-कुंभ का धन्वंतरि के हाथों में प्रकट होना और विश्वमोहिनी वेष में महाविष्णु द्वारा उसके वितरण की तो चर्चा है, पर कहीं भी जयंत या गरुड़ द्वारा उस अमृत-कुंभ को लेकर भागने या जगह-जगह रखने की चर्चा नहीं है।

कुंभ-पर्व की चर्चा अथर्ववेद (४-३४-७ और १९-५३-३) में आई है। इसमें ब्रह्माजी कहते हैं कि 'मनुष्यो! मैं भोजन वृद्धि एवं पोषण साधनों से पूर्ण पृथ्वी को पूर्ण करनेवाले चार कुंभों को (कुंभ-पर्वों को) चार स्थानों में प्रदान करता हूँ!'

कुंभ का खगोलीय महत्त्व

सामान्यत: यह माना जाता है कि बृहस्पति एक राशि में एक वर्ष रहता है और बारह वर्ष में घूमकर पुन: उसी राशि में पहुँचता है, परंतु वास्तविकता यह है कि बृहस्पति ४३३२.५ दिनों या ११ वर्ष ११ महीने और २७ दिनों में बारह राशियों की परिक्रमा पूरी करता है! इसी तरह १२ वर्षों में ५०.५ दिन कम हो जाते हैं। यह कमी बढ़ते-बढ़ते सातवें और आठवें कुंभ के बीच पूरे एक वर्ष के लगभग हो जाती है। इसीलिए हर आठवाँ कुंभ बारह के स्थान पर ११ वर्ष के अंतराल पर होता है। हर शताब्दी में ऐसा कम-से-कम एक बार हमेशा होता आया है।

कुंभ बारह कल्पित हैं, जिनमें से चार भारतवर्ष में होते हैं। इन चारों स्थानों पर बृहस्पति की विभिन्न राशियों में संक्रमण और उसमें उपस्थिति की स्थिति अधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रयाग में बृहस्पति का वृषस्थ आना सूर्य का मकरस्थ होना पर्वयोग लाता है, तो उज्जैन में बृहस्पति का सिंहस्थ एवं चंद्र-सूर्य का मेषस्थ होना पर्व का सुयोग बनता है! नासिक में बृहस्पति तो सिंहस्थ ही रहते हैं, परंतु सूर्य और चंद्रमा भी सिंहस्थ हो जाते हैं, इसीलिए उज्जैन और नासिक के कुंभ-पर्व के लिए कुंभ के स्थान पर सिंहस्थ नाम ही अधिक प्रचलित है।

इस दृष्टि से देखें तो सूर्य और चंद्र के साथ बृहस्पति को ही सर्वाधिक महत्त्व दिया गया है। पुराकथाओं में बृहस्पति देवताओं के गुरु भी हैं। उन्होंने ही दैत्यों से अमृत-घट की रक्षा भी की थी। लगता है, बृहस्पति का विभिन्न राशियों में संक्रमण का काल ज्योतिषीय दृष्टि से मांगलिक होता है और यह मांगलिकता नदी-तटों पर ही अधिक प्रभावकारी होती है।

ज्योतिषी पक्ष को लेकर दो प्रमुख बातों को ध्यान में रखना अनिवार्य है। मान्यता है कि देश के चार स्थानों पर हर तीसरे वर्ष कुंभ-पर्व होता है, लेकिन हरिद्वार में जिस वर्ष कुंभ होता है, उसके नवे वर्ष कोई पूर्ण कुंभ कहीं नहीं होता है। हरिद्वार के तीसरे बरस प्रयाग में वृषस्थ कुंभ

होता है, छठे वर्ष उज्जैन में सिंहस्थ कुंभ होता है और इसके पूर्व सर्दियों में नासिक में सिंहस्थ कुंभ होता है।

कुंभ का ऐतिहासिक संदर्भ

वैसे कुंभ पर्व शताब्दियों से भारत के चार नगरों में, जो कि चार दिशाओं में अलग-अलग पवित्र नदियों के किनारे बसे हुए हैं, धार्मिक स्नान-पर्व के रूप में मनाया जा रहा है। इसके संदर्भ में प्राचीन ऐतिहासिक और प्रामाणिक दस्तावेज उपलब्ध नहीं हैं, किंतु महंत लालपुरी ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि कुंभ मेलों के वर्तमान रूप में विकास के विषय में एक मत यह भी है कि भारतीय इतिहास के स्वर्ण युग गुप्त साम्राज्य (३२०-६०० ई.) के समय जैसे पुराण और आदिग्रंथ जैसे साहित्य पुन: संपादित होकर वर्तमान रूप में आए, उसी तरह पुराण और ज्योतिष साहित्य के आधार पर कुंभ-पर्वों के स्नान तथा काल स्थायी रूप से निर्णीत होकर वर्तमान रूप में विकसित हुए।

कुछ मत इन पर्वों की शुरुआत सम्राट् हर्षवर्धन (६१२-६४७ ई.) के काल से मानते हैं। इसके बाद का मत यह भी कहता है कि बौद्ध काल में कुंभ-पर्व का प्रचलित रूप बदलकर 'महादान पर्व' के रूप में आ गया होगा, जिसके बाद में आदि शंकराचार्य के आविर्भाव के बाद संन्यासियों की दशनाम परंपरा के द्वारा पुन: व्यवस्थित किया गया। इसके बाद संन्यासियों और अन्य साधु संप्रदायों के बीच अपने संप्रदायों-संगठनों के चुनाव और अन्य प्रमुख निर्णयों के लिए विभिन्न कुंभों की प्रतीक्षा की जाती है तथा जब कुंभ पर संपूर्ण देश का साधु समाज अपने-अपने अखाड़ों और विभिन्न संप्रदायों के साथ एक स्थल पर जुड़ता है तो आगे के बारह वर्षों के लिए धर्म, समाज व संस्कृति विषयक निर्णय लिये जाते हैं।

आदि शंकराचार्य ने जिस तरह चार दिशाओं में चार आम्नाय (मठ) स्थापित करके हिंदू जगत् को संगठित किया, वहीं अद्वैत मत के प्रचार के लिए संन्यासियों को भी संगठित किया, उसी तरह उन्होंने जोगियों के लिए यह अनिवार्य किया कि वे भोगियों से मिलने के लिए तथा उन्हें चिंतन-मनन से दिशा-दान देने के लिए बारह बरस में एक बार एक दिशा में अवश्य एकत्र हों। पूरब में प्रयाग, पश्चिम में उज्जैन, उत्तर में हरिद्वार और दक्षिण में नासिक में गंगा, क्षिप्रा और गोदावरी नदियों पर पूरे समाज के एक साथ जुड़ने की परंपरा को राष्ट्र की भावात्मक एकता की दृष्टि से आवश्यक माना होगा।

शंकराचार्य ने आसेतुहिमालय यात्राएँ करके विखंडित और विशृंखलित होते जा रहे भारत को भीतर से एकता के धर्म-सूत्र में बाँधने का जो उपक्रम एक हजार वर्ष पूर्व किया था, कुंभ-पर्व उनके अभियान में सहायक होकर उनके स्वरूप को प्राप्त हुए होंगे।

संन्यासियों और बैरागियों के बीच कुंभ स्नान को लेकर हमेशा द्वंद्व रहा है। हालाँकि इनके आराध्यों यानी शिव और राम के बीच कोई मतभेद नहीं, तो भी ये संप्रदाय एक-दूसरे से अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए संघर्षरत रहते आए हैं। वर्तमान में सभी अखाड़ों की एक संयुक्त परिषद् बन जाने से संन्यासियों और बैरागियों के संघर्ष लगभग समाप्त हो गए हैं और सभी साधु एकात्म भाव से क्रमानुसार स्नान करते हैं।

आदि शंकराचार्य ने चार दिशाओं में जो चार मठ स्थापित कर दिए थे, इन्हीं आम्नायों के साथ दशनामी परंपरा के संन्यासियों को जोड़ दिया गया। जन और अरण्य नामधारी संन्यासी जगन्नाथ पुरी स्थित गोवर्धन पीठ के साथ जुड़े तो तीर्थ और आश्रम नामधारियों को द्वारका स्थित शारदा पीठ के साथ जोड़ा गया। इसी तरह उत्तर की ज्योतिर्पीठ के साथ गिरि, पर्वत, सागर नामधारी संन्यासियों को रखा गया, जबकि शेष तीन यानी पुरी, भारती और सरस्वती नामधारी संन्यासियों को शृंगेरी पीठ के साथ जोड़ दिया गया। आरंभ में बावन मढ़ियों के अंतर्गत यह सभी संन्यास परंपरा समाजसेवा के लिए सामने आई। इनमें भी दंडी और गोसाई दो भेद हुए। तीर्थ, आश्रम, सरस्वती और भारती नामधारी संन्यासी दंडी कहलाए और शेष गोसाइयों में गिने गए।

बाद में दशनामी संन्यासियों के अनेक अखाड़े प्रसिद्ध हुए, जिनमें सात पंचायती अखाड़े आज भी अपनी लोकतंत्रीय व्यवस्था के अंतर्गत समाज में कार्यरत हैं। बाद में भक्तिकाल में इन शिवपूजक दशनामी संन्यासियों की तरह रामभक्त बैरागियों के भी संगठन बने। वर्तमान में बैरागियों के प्रमुखत: तीन अखाड़े कार्यरत हैं, जिनके अंतर्गत अनेक इकाइयाँ और भी हैं।

संन्यासियों और बैरागियों के बीच कुंभ स्नान को लेकर हमेशा द्वंद्व रहा है। हालाँकि इनके आराध्यों यानी शिव और राम के बीच कोई मतभेद नहीं, तो भी ये संप्रदाय एक-दूसरे से अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए संघर्षरत रहते आए हैं। वर्तमान में सभी अखाड़ों की एक संयुक्त परिषद् बन जाने से संन्यासियों और बैरागियों के संघर्ष लगभग समाप्त हो गए हैं और सभी साधु एकात्म भाव से क्रमानुसार स्नान करते हैं।

साधु परंपरा के बाद गुरुनानक देव के सुपुत्र श्री चंद्रजी के द्वारा उदासीन संप्रदाय चलाया गया, जिसके आज दो अखाड़े कार्यरत हैं। इसी तरह पिछली शताब्दी में सिक्ख साधुओं के एक नए संप्रदाय निर्मल संप्रदाय की भी शुरुआत हुई। इस तरह कुल मिलाकर तेरह अखाड़े कुंभ की विभिन्न तिथियों पर घोषित स्नान में शमिल होते हैं।

कुंभ की आधार-भूमि में भले ही पौराणिकता और खगोल शास्त्रीय एवं ज्योतिष पर आधारित तथ्य जुड़े हों, किंतु वास्तविकता यह है कि कुंभ जन-जन को जोड़ने के लिए प्रारंभ किया गया एक विराट् राष्ट्रीय पर्व है।

९/३ निजातपुरा, ईमलीवाली गली
उज्जैन-४५६००६ (म.प्र.)
दूरभाष : ०९८२७०७३३३९

उज्जैन सिंहस्थ पर्व कब और क्यों?

● मोहन यादव

१९ वीं शताब्दी का अंतिम सिंहस्थ मेला सन् १८९७ तदनुसार विक्रम संवत् १९५४ में महिदपुर में आयोजित हुआ था, जिसका उल्लेख ग्वालियर रियासत प्रकाशन 'तर्जुमा रियासत ग्वालियर' तथा 'ग्वालियर स्टेट गजेटियर' में मिलता है। सन् १८५० से १८९७ के मध्य आयोजित होनेवाले सिंहस्थ पर्वों विक्रम संवत् १९१९, १९३०, १९४२ तदनुसार सन् १८६२, १८७३, १८८५ का उल्लेख यद्यपि नहीं मिलता है। अवश्य ही इन वर्षों में भी स्नान पर्व आयोजित हुआ होगा। इसके बाद सन् १९०९ से सिंहस्थ आयोजन संबंधित विवरण का विधिवत् प्रमाण प्राप्त हैं। यहाँ पर उल्लेखनीय तथ्य यह है कि परिक्षेत्र पर शिंदेशाही का शासन चूँकि सन् १७३२ को औपचारिक दस्तावेज हो गया था। अत: इनके शासनावधि में यदि सिंहस्थ पर्व का आयोजन होता तो उसका उल्लेख महिदपुर के समान ग्वालियर प्रकाशन तर्जुमा रियासत ग्वालियर व ग्वालियर स्टेट गजेटियर में अवश्य ही होता।

शिप्रातट पर सिंहस्थ : स्नान का आधार

स्मृति ग्रंथों, पुराणों, पांडुलिपियों तथा शिप्राष्टकों में जिस सिंहस्थ स्नान पर्व का उल्लेख ही नहीं है, उसका आरंभ शिप्रा परिक्षेत्र में कैसे, कब हुआ, यह गंभीर चिंतन का विषय है। वैसे उपरिवर्णित पांडुलिपियों एव शिप्राष्टकों से सिद्ध है कि इस धार्मिक पर्व का प्रारंभ १८वीं शती का उत्तरार्द्ध या १९वीं शती का पूर्वार्द्ध होना चाहिए अर्थात् इस सांस्कृतिक पर्व को प्रारंभ करने का श्रेय मराठा युग को है। इस संबंध में स्पष्ट प्रमाण तो नहीं है, किंतु सांकेतिक प्रमाण अवश्य हैं। जिनके माध्यम से निर्णय पर पहुँचने में सुगमता हो सकती है। इन सांकेतिक प्रमाणों व निष्कर्षों का विवेचन निम्न प्रकारेण किया जा सकता है।

सिंहस्थ स्नान पर्व से संबंधित स्फुट सामग्री का उल्लेख दो ग्रंथों में मिलता है। प्रथम ग्रंथ तत्कालीन सूबेदार (कलेक्टर) श्री केशवलाल बलवंत डोंगरे का है। इन्होंने उज्जयिनी के अपने सेवाकाल में विद्वानों से ग्रंथ की विषयवस्तु संकलित करवाई थी। इस ग्रंथ का शीर्षक 'श्रीक्षेत्र अवंतिका माहात्म्य' अर्थात् उज्जयिनी मार्गदर्शिका है। इसका प्रकाशन वर्ष सन् १९३१ है। यह ग्रंथ मराठी भाषा में निबद्ध है। इसकी भूमिका ग्वालियर रियासत के तत्कालीन चीफ जस्टिस, भारत इतिहास मंडल पूना के अध्यक्ष तथा हिस्टरी ऑफ मिडिवल हिंदू इंडिया के लेखक श्री चिंतामणिराव विनायक वैद्य ने लिखी है। ग्रंथ को वर्तमान रूप देने में क्षेत्र के इतिहास से परिचित उज्जयिनी के जिन विद्वानों से सहयोग लिया है, उनका उल्लेख श्री डोंगरे ने ग्रंथ में किया है। अत: ग्रंथ में क्षेत्र संबंधी प्रतिपाद्य विषय के संबंध में विश्वसनीयता स्वीकार योग्य है।

संप्रति लोकप्रिय विधायक। अ.भा. विद्यार्थी परिषद् में नगर मंत्री, नगर प्रमुख, विभाग प्रमुख, प्रदेश मंत्री व प्रदेश सहमंत्री राष्ट्रीय मंत्री रहे। माधव विज्ञान महा. छात्रसंघ अध्यक्ष निर्वाचित। भारतीय जनता युवा मोर्चो में विभिन्न पदो पर, भारतीय जनता पार्टी नगर महामंत्री। म.प्र. राज्य पर्यटन विकास निगम के अध्यक्ष। सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों में विभिन्न रूपों में सेवा। कई पुस्तकें प्रकाशित एवं अनेक देशों की यात्राएँ।

सांस्कृतिक स्नान पर्व के संबंध में कथन है कि यह मेला प्रति बारहवें वर्ष में शिप्रातट पर आयोजित होता था। इस मेले के संबंध में एक वृद्ध गृहस्थ के घर में पुराने कागजों के बंडल में एक जीर्ण-शीर्ण कागज मिला। जिसमें यह श्लोक दिया था—

पूज्ये मेषादि याते प्रथम—भवतु सुरनदी यत्र याते नमस्ते।

यह श्लोक किस ग्रंथ का है और किसने लिखा है, इसका उल्लेख नहीं किया गया है। इस कारण इस पर कितना विश्वास किया जाए, कहा नहीं जा सकता। परंतु 'गुरु मेष राशि में हो (कागज के जीर्ण-शीर्ण होने के कारण और आगे वाचन करना संभव नहीं था), वृषभ राशि में गंडकी नदी (नेपाल तराई में), मिथुन राशि में काशी क्षेत्र, कर्क राशि में कावेरी नदी, सिंह राशि में गोदावरी, कन्या राशि में कृष्णा, तुला राशि में तुंगभद्रा; वृश्चिक राशि में विशाला क्षेत्र-शिप्रा तटवर्ती उज्जयिनी, धनु राशि में कुंभकोणम् तथा मीन राशि में गुरु में मानसरोवर में गंगा का वास रहता है, ऐसी मान्यता का उल्लेख किया गया है।

उपरि उल्लेख के अनुसार देश में बारह स्थानों पर मेला आयोजित होने का उल्लेख है। ये मेले गुरु के विभिन्न राशियों में रहने पर आयोजित होते थे। आज मात्र दो स्नान-पर्व ही ऐसे हैं, जिसका आयोजन उपरि कथन तथा धर्मशास्त्रानुसार हो रहा है। ये मेले हैं—सिंहस्थ गुरु में गोदावरी तट पर तथा कन्या राशि में गुरु में कृष्ण तट पर। इनमें से केवल प्रथम ही ख्यातिलब्ध स्नान पर्व है। जिसकी संज्ञा 'सिंहस्थ स्नान पर्व' या 'कुंभ पर्व' है। इसका आयोजन प्रति १२वें वर्ष में भव्य रूप में होता है। कृष्णा तट पर आयोजित होनेवाला मेला यद्यपि आज भी होता है, किंतु यह विशेष लोकप्रिय नहीं है।

उपर्युक्त कथानुसार पूर्व काल में शिप्रा तट पर वृश्चिक राशिस्थ

गुरु के अवसर पर स्नान पर्व का आयोजन होता था, जो कालांतर में सिंहस्थ गुरु के अवसर पर होने लगा। इसका कारा यह प्रतीत होता है कि शिप्रा नदी में वैशाख पूर्णिमा के स्नान का विशेष महत्त्व होने के कारण ही सिंहस्थ गुरु में गोदावरी स्नानार्थ गए साधु-संन्यासीगण अपनी वापसी यात्रा में शिप्रातट की उज्जयिनी नगरी में रुकने लगे होंगे, ताकि वे उज्जयिनी की शिप्रा में वैशाख स्नान तथा महाकाल की पूजा-अर्चना का लाभ ले सकें। साधु-संतों का शिप्रा तट पर वैशाख स्नान हेतु रुकना ही कालांतर में सिंहस्थ स्नान पर्व का कारण बन गया। इस प्रकार बारहवें वर्ष का वैशाख स्नान पर्व ही सिंहस्थ स्नान पर्व के रूप में पल्लवित एवं पुष्पित हो गया। शिप्रा तट पर सिंहस्थ स्नान पर्व-आयोजन का प्रतिफल रहा कि धीरे-धीरे वृश्चिक गुरु पर होनेवाला स्नान पर्व लुप्त हो गया।

इसके बाद श्री डोंगरे ने गुरु की बारह राशियों पर आयोजित होनेवाले मेले बारह मेलों के संबंध में स्पष्ट लिखा है कि तीन स्थानों के मेलों को छोड़, शेष स्थानों के मेले कैसे बंद हो गए। यह कहना संभव नहीं है। मेले की प्राचीनता के विषय में भी मत व्यक्त करते हुए कहा है कि यह परंपरा हजारों वर्ष पुरानी है। उनके मतानुसार, इन बारह मेलों का प्रारंभिक स्वरूप 'सरस्वती-सत्र' था, जिसका उल्लेख बृहदारण्यक, अश्वलायन, लाट्यायन आदि श्रौत सूत्रों में मिलता है। ये ही 'सरस्वती सत्र' कालांतर में मेला रूप में परिवर्तित हो गए और 'सरस्वती सत्र' बंद हो गए। कालांतर में इन मेलों की संख्या धीरे-धीरे कम हो गई। आज तो केवल चार मेले ही उल्लेखनीय रह गए हैं। श्री डोंगरे का कथन है कि 'सरस्वती सत्र' कुंभ पर्व का प्रारंभिक रूप है, तथ्यपरक नहीं है, क्योंकि सरस्वती सत्र व स्नान पर्व के स्वरूप में पर्याप्त भिन्नता है। श्रौत-सूत्र आदि में कतिपय स्थानों पर ही सरस्वती सत्र के आयोजन का उल्लेख है, न कि बारह स्थानों पर। बारह राशियों पर गुरु के आने का उल्लेख, सरस्वती सत्र का उल्लेख कहीं भी नहीं मिलता है। अत: उनका यह मत कि कुंभ पर्व का प्रारंभिक रूप सरस्वती सत्र है, स्वीकार करने योग्य प्रतीत नहीं होता है।

शिप्रातट पर सिंहस्थ पर्व आयोजन होने के श्री डोंगरे के मत का उल्लेख विक्रम स्मृति ग्रंथ (हिंदी) में श्री भालेराव ने किया है। श्री भालेराव ने श्री डोंगरे के मत को न केवल पुष्ट किया है वरन् उसे पूर्णता भी दी है। श्री भालेराव के अनुसार श्री राणोजी शिंदे से लेकर जनकोजीराव तक सभी मराठा शासकों के सत्प्रयासों से ही प्रारंभिक वर्षों में साधु-संत शिप्रा तट पर स्नानार्थ आने हेतु तैयार हुए थे। कालांतर में उस स्नान पर्व की भव्यता और महत्ता में श्रीवृद्धि हो गई।

कुंभ-पर्व सिंहस्थ गुरु के समय ही क्यों?

शिप्रा तट पर आयोजित होनेवाले कुंभ पर्व का यद्यपि अद्यतन कोई शास्त्रीय या पौराणिक आधार प्राप्त नहीं हो सकता है, फिर भी प्रति बारहवें वर्ष पर सिंहस्थ स्नान पर्व (कुंभ पर्व) का आयोजन हो रहा है। यह स्नान पर्व जन-सामान्य हृदय की अद्‌भुत सांस्कृतिक भावना है, जिसे कालांतर में विद्वानों ने शास्त्रीय परिधान या कह सकते हैं कि पौराणिक परिधान में आवेष्टित करने का सत्प्रयास किया है।

जन सामान्य की इस सांस्कृतिक भावना के उद्‌भव होने की पृष्ठभूमि में क्या कारण है तथा उस अद्‌भुत भावना का मूल रूप क्या यही था अथवा यह पर्व अपने मूल रूप का परिवर्तित या परिवर्धित रूप है। इन सभी अनुत्तरित प्रश्नों के उत्तर प्राप्त प्रमाणों के आधार पर अन्वेषण करने का यह विनम्र प्रयास है।

किसी भी कार्य की निष्पत्ति कारण के बिना संभव नहीं है। मूलरूप में कारण होना अनिवार्य है। कारण सूक्ष्म होता है, जबकि कार्य का रूप विस्तृत। प्रति १२वें वर्ष में होनेवाले भव्य स्नान पर्व की पृष्ठभूमि में भी कारण अवश्य होगा। उस कारणजन्य कार्य का पूर्व स्वरूप व संज्ञा क्या थी तथा उसमें क्या परिवर्तन हुए, इन प्रश्नों का समाधान यहाँ प्रस्तुत है :

स्नान पर्व माह का विवेचन

सिंहस्थ स्नान पर्व के लिए जिस योग का उल्लेख सभी ग्रंथकारों ने किया है, तदनुसार सूर्य का मेष राशि में होना अनिवार्य है। सामान्यत: सूर्य मेष राशि में वैशाख माह (अप्रैल-मई) में ही आता है। राशि चक्र में मेष प्रथम राशि है, जिसका स्वामी मंगल है। उज्जयिनी मंगल की जन्मभूमि है, इसका मंदिर शिप्रा पर कमेड गाँव के पास है। चौरासी लिंगों में इस लिंग की क्रम संख्या ४३ है। मंगल की राशि मेष सूर्य की उच्च राशि है। इसी कालावधि में स्नान पर्व का आयोजन होता है। स्कंद पुराण के अनुसार वैशाख मास में शिप्रा स्नान अधिक पुण्यदायी है। 'भगवंत भास्कर' आदि ग्रंथों के अनुसार सूर्य की मेषराशि में संक्रमण करने पर दान करने का विशेष महत्त्व है। वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया, एकादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी व पूर्णिमा में यात्रा, स्नान, दान, पुण्य करना अति शुभ माना गया है। शिप्रा की महिमा का उल्लेख करते हुए पुराणकार ने तो यहाँ तक कहा है कि भक्त को स्नान फल मिलता ही है, पर शिप्रा नदी ऐसी है, जिसका दर्शन भी स्नानवत् ही पुण्यदायी होता है। स्नानादि पुण्य कार्य के लिए यदि पद्यसकार का योग मिल जाए तो वह पुण्यदायी योग बन जाता है। यह पद्यसकार योग केवल शिप्रा तट को छोड़कर अन्यत्र दुर्लभ है। कथन है—

सर्वत्र दुर्लभा सिप्रा सोमंग्रहस्तथा।
सोमेश्वर: सोमवार: सकारा: पञ्च दुर्लभा: ॥

स्कंद पुराण में संपूर्ण वैशाख मास, विशेषकर शुक्ल पक्ष की पाँच तिथियों में शिप्रा स्नान का धार्मिक दृष्टि से विशेष महत्त्व प्रतिपादित है।

सूर्य अपनी निश्चित गति के कारण सामान्यत: चैत्र या वैशाख मास में मेषस्थ रहता है। मेषस्थ सूर्य के समय दान-पुण्य करना विशेष फलदायी माना गया है। अत: वैशाख मास में शिप्रा तट पर जन-संकुल रहता ही था, चाहे गुरु सिंहस्थ हो या न हो। वैसे सामान्यत: १२वें वर्ष में मेषस्थ सूर्य के समय गुरु भी सिंह राशिस्थ रहता है। गुरु की इस सिंह राशि का स्वामी भी सूर्य ही है। अत: स्नान पर्व पर सूर्य का ही विशेष प्रभाव रहता है। सूर्य व गुरु की विशिष्ट राशि तथा उन दोनों के योग में दान-पुण्य और स्नान करने का उल्लेख कर्मकांड से संबंधित किसी भी धर्म ग्रंथ में नहीं मिलता है।

सिंहस्थ स्नान की सामान्य तिथियाँ छह मानी जाती हैं—१. वैशाख स्नान प्रारंभ तिथि अर्थात् चैत्र शुक्ल पूर्णिमा, २. मेष सूर्य संक्रांति, ३. वैशाख अमावस्या, ४. अक्षय तृतीया, ५. श्री आद्य गुरु शंकराचार्य जयंती, ६. वैशाख पूर्णिमा।

चैत्र और वैशाख मास की ये ही छह तिथियाँ वैशाख स्नान के लिए पुण्यप्रद मानी गई हैं। इन छह तिथियों में से सिंहस्थ स्नान के लिए तीन तिथियों का ही विशेष महत्त्व है, क्योंकि मेले का प्रारंभ चैत्र शुक्ल पूर्णिमा से होता है तथा समापन वैशाख पूर्णिमा को होता है। इस दिन मुख्य स्नान अर्थात् शाही स्नान होता है।

कालांतर में महादजी, जनकोजी, जयाजीराव, जवाजीराव आदि शासकों के सहयोग एवं सत्प्रयास से स्नान पर्व की भव्यता में क्रमश: श्री वृद्धि हो गई। पूर्ण संभावना है कि सिंहस्थ स्नान की भव्यता तथा जन मान्यता के कारण ही कालांतर में पर्व संबंधी माहात्म्य का विशद विवेचन धर्माचार्यों ने श्लोकबद्ध कर पौराणिक ग्रंथों में समाहित कर दिया हो।

मान्यता यह भी है कि जन विश्वास से अद्‌भुत स्नान पर्व को धार्मिक गरिमा देने के उद्‌देश्य से कालांतर में समुद्र मंथन व अमृत विवरण की पौराणिक गाथा को विस्तार दे, उसकी नवीन सुष्टु प्रस्तुति कर दी गई। इस नवीन गाथा में स्मृति तथा पुराण सम्मत पवित्र नगरों की पवित्र नदियों के तट पर अमृत बूँदों के छलकने की घटना का भी समावेश कर दिया गया। अमृत विवरण की गाथा से प्रभावित हो विशिष्ट नदियों के तट पर विशिष्ट पर्व में स्नान हेतु एकत्र होने लगे। यह वस्तुत: धार्मिक जन-जागरण की दिशा में किया गया मनोवैज्ञानिक प्रयास था, जिसका परिणाम अनुकूल रहा। वैसे भी शिप्रा तो पौराणिक दृष्टि से 'विष्णुदेधेद्‌भवा, अमृतपूरित तथा गंगा की सखी है।' अत: इसमें स्नान करना, विशेष रूप से वैशाख मास व मेषस्थ सूर्य में अति फलदायी है।

सिंहस्थ स्नान का इतिहास

शिप्रा तट पर आयोजित होनेवाले सिंहस्थ स्नान पर्व का प्राप्त इतिहास सन् १८९७ का है, इसके पूर्व का इतिहास या स्नान पर्व का उल्लेख न तो ग्वालियर रियासत के किसी प्रकाशन में और न शिंदेशाही के प्रकाशित पत्रों में मिलता है। यहाँ यह तथ्य उल्लेखनीय है कि परिक्षेत्र पर शिंदेशाही का अधिकार सन् १७३२ में ही हो गया था तथा उज्जयिनी सन् १८१० तक सिंधिया राज्य की राजधानी रहा। यह अवश्य है कि अप्रैल सन् १८५० के मालवा अखबार में परिक्षेत्र में मेला आयोजन का उल्लेख मिलता है। अप्रैल सन् १८५० का यह मेला वैशाख मेला था या सिंहस्थ स्नान पर्व यह निर्णय करना कठिन है, क्योंकि उस समय वैशाख मास भी था तथा गुरु सिंह राशि में था। संभव है कि यह मेला सिंहस्थ मेला हो, क्योंकि इस मेले में सम्मिलित होने के लिए भक्तगण दूर-दूर से शिप्रा तटवर्ती उज्जयिनी में पधारे थे।

सिंहस्थ विधान का विधिवत् शासकीय रिकॉर्ड सन् १९०९ से है। इससे पूर्व का स्नान पर्व उज्जयिनी में नहीं हुआ था, क्योंकि समुचित व्यवस्था न होने के कारण साधु-संत समाज सिंहस्थ स्नान हेतु सिंधिया राज्य सीमा से बाहर होल्कर राज्य के शिप्रा तटवर्ती महिदपुर चले गए थे। महिदपुर में यह मेला धूलटेश्वर (धूर्जटेश्वर) महादेव मंदिर के समीप शिप्रातट पर लगा था। जब सिंधिया शासक ने अनुनय-विनय कर साधु-संतों के क्रोध को शांत किया, तब साधु-संतों ने वैशाख पूर्णिमा का स्नान उज्जयिनी में आकर किया। इसके पश्चात् १९०९ से सिंहस्थ पर्व का अवरिल रूप से आयोजन उज्जयिनी में हो रहा है।

सन् १९२१ तथा सन् १९३३ का मेला जन-संकुल की दृष्टि से बहुत ही सामान्य था। सन् १९४५ में द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् सिंहस्थ स्नान तिथि होने के कारण उज्जयिनी का स्नान पर्व जन-आकर्षण का केंद्र बन सका। सन् १९५६ में पर्व तिथि ११ वर्ष पश्चात् ही आने के कारण साधु-संत मेले में सम्मिलित नहीं हुए। सन् १९५७ (अर्थात् १२वें वर्ष) में साधु-संतों ने उज्जयिनी आकर स्नान किया। यह स्नान पर्व भी जन-समुदाय की सहभागिता की दृष्टि से सामान्य ही था।

सन् १९६८ एवं १९६९ में भी पूर्वानुसार सिंहस्थ तिथि पर्व पर विवाद बना रहा। जिसके फलस्वरूप बैरागियों ने सिंहस्थ पर्व सन् १९६६ में तथा शैव मतानुयायियों ने १९६९ में स्नान पर्व मनाया। सन् १९८० तथा सन् १९९२ का सिंहस्थ पर्व पूर्ण भव्यता के वातावरण में आयोजित हुआ। इसके पश्चात् सन् २००४ का सिंहस्थ पर्व सदी का प्रथम सिंहस्थ महापर्व रहा।

उज्जयिनी में आयोजित होनेवाले सिंहस्थ-पर्व की एक शताब्दी की यह विकास गाथा है, जो साक्ष्यों से अनुप्रमाणित है। सन् १९९२ के विशाल एवं भव्य आयोजन तथा इसमें समागत स्नानार्थियों के जन-समुदाय को देखने पर स्पष्ट था कि शिप्रा व उसकी तटवर्ती महाकाल की नगरी उज्जयिनी का देश की धार्मिक व सांस्कृतिक चेतना को जाग्रत् रखने में कितना अहम योगदान है।

यहाँ यह उल्लेख करना प्रसंग सम्मत ही होगा कि राज्य विलीनीकरण के पूर्व परिक्षेत्र में आयोजित हुए सभी सिंहस्थ पर्वों की आयोजन व्यवस्था सिंधिया राज्य ने ही की थी। सन् १९४८ में प्रथम सिंहस्थ-पर्व का आयोजन होना था। अत: पर्व तिथि के पूर्व सन् १९५५ में मध्यभारत राज्य विधानसभा द्वारा पारित किया गया। तदनुसार सिंहस्थ पर्व के आयोजन की व्यवस्था राज्य शासन द्वारा किए जाने का प्रावधान हो गया। इसी प्रावधान के अंतर्गत १९५६ से सभी सिंहस्थ पर्व आयोजित हो रहे हैं।

सिंहस्थ स्नान पर्व का श्रीगणेश एवं आद्य शंकराचार्य

भारत में चार स्थानों पर आयोजित होनेवाले कुंभ पर्व का श्रीगणेश

कब हुआ, इस संबंध में आज तक कोई शास्त्रानुमोदित या प्रमाणों से पुष्ट निश्चित मत नहीं प्राप्त हो सका है। प्रचलित मतानुसार, वेदों में 'कुंभ' शब्द का उल्लेख तथा पुराणों में वर्णित समुद्र मंथन व्याख्यान चूँकि कुंभ पर्व का आधार है, अत: वेदों तथा पुराणों के युग से ही इस धार्मिक पर्व का श्रीगणेश विद्वानों ने माना है। मत की पुष्टि किसी भी प्रमाण से नहीं होती है, किंतु कुछ विद्वानों का मत है कि कुंभ पर्व का श्रीगणेश महाभारत युग में ही हो गया था। वे अपने कथन की पुष्टि में शैव पुराण के पूर्व भाग की ईश्वर संहिता में वर्णित सांदीपनि के चरित १अध्याय को प्रस्तुत करते हैं। इसके द्वितीय श्लोक में उल्लेख है कि मुनि सांदीपनि कुंभ समय में अवंति पधारे थे। मुनि सांदीपनि संबंधी यह चरित अध्याय शिवपुराण की रचना या संकलन काल ही बहुत अर्वाचीन है। इसी शिवपुराण की रचना के पश्चात् रचित उपपुराण तो निश्चित रूप से और भी अर्वाचीन होना चाहिए। अत: यह ग्रंथ निश्चित रूप से उस समय रचा गया होगा, जब कुंभ मेले का आयोजन परिक्षेत्र में होने लगा होगा। अपने ग्रंथ की प्राचीनता हेतु या कुंभ पर्व की प्राचीनता सिद्ध करने हेतु मुनि सांदीपनि के कुंभ पर्व पर आने की घटना की श्लोक रूप में संरचना कर बाद में जोड़ दिया गया होगा। मुनि सांदीपनि का तीर्थयात्रा प्रसंग में उज्जयिनी आने का उल्लेख मिलता है।

भारत में चार कुंभ मेलों के भव्य आयोजन की परंपरा मध्यकाल से निरंतर मिलती रही है। हरिद्वार, इलाहाबाद, नासिक एवं उज्जैन के कुंभ मेले प्राचीनतम रहे हैं। इलाहाबाद के कुंभ मेले का तादात्म्य विद्वानों ने हर्षकालीन महासंस्कृति सम्मेलन से भी किया। प्राचीन वैभवकालीन कुंभ पर्व के चौथे स्थल उज्जयिनी के प्राचीन वैभवकालीन इतिहास के बारे में विद्वानों द्वारा निरंतर लेखन कार्य किया गया। यहाँ आयोजित कुंभ या सिंहस्थ मेले पर विस्तृत विवरण सर्वप्रथम जनश्रुतियों में एवं तदुपरांत मराठाकाल में ही प्राप्त होता है।

वैसे भी कुंभ अर्थात् घट हमारी प्राचीन धार्मिक शुभ प्रतीक के रूप में मान्य है। देव-दानव संघर्ष में समुद्र मंथन से प्राप्त अमृत कुंभ से इन्हीं चार स्थानों पर अमृत की बूँदें गिरने का उल्लेख पुराणों में वर्णित है। विद्वान् ज्योतिष और खगोलविद् इस कुंभ पर्व को भौगोलिक एवं ज्योतिषीय योग से जोड़ते हैं—कहा जाता है कि उज्जयिनी कर्क रेखा पर स्थित होने के साथ ही कुंभ पर्व के समय यहाँ की पवित्र नदी में स्नान करना मोक्षदायक माना गया है—

मेष राशि गते सूर्य सिहं राश्यौ वृहस्पति।
अवन्तिकायां भवेत्कुम्भ: सदा मुक्ति प्रदायक॥

९३/३३, तुलसी नगर
भोपाल (म.प्र.)

दोषी कौन?

लघु कथा

● **विनोद शंकर गुप्त**

हमारे पड़ोसी शर्माजी बहुत पूजा-पाठ करते हैं। रोज ऑफिस जाने से पहले अपने घर में बने मंदिर में पूजा के समय मूर्तियों पर फूल चढ़ाते हैं। वे सुबह जब घूमने जाते हैं तो अड़ोस-पड़ोस के बँगलों में लगे फूल पूजा के लिए तोड़ लेते हैं। एक दिन उनके घर के पास रहनेवाले वर्मा ने देख लिया कि शर्माजी ने उनके घर की बाउंड्री के पास लगे फूल तोड़ लिये। वर्माजी को अच्छा नहीं लगा, उन्होंने शर्माजी को टोक दिया कि आप हमारे घर के फूल क्यों तोड़ते हैं? बस इसी बात पर दोनों में कहा-सुनी हो गई। शर्माजी उच्च पद पर कार्य करनेवाले व्यक्ति हैं। इसी कहा-सुनी में वर्माजी ने शर्माजी पर हाथ उठा दिया। झगड़ा बढ़ गया। शर्माजी को कुछ चोट आई। उन्होंने थाने में वर्माजी के खिलाफ रपट लिखवा दी।

वर्माजी को जब पता लगा कि शर्माजी ने उनके खिलाफ रिपोर्ट लिखाई है तो वे डर गए, कोर्ट-कचहरी और पुलिस के द्वारा पकड़े जाने के कारण। वर्माजी भी इज्जतदार व्यक्ति हैं। उन्होंने इसी में भलाई समझी कि शर्माजी से क्षमा माँग लें। वर्माजी ने ऐसा ही किया। शर्माजी ने फूलों की चोरी भी की और वर्माजी को उनसे माफी माँगनी पड़ी तो दोषी कौन? जिसने चोरी की या जिसने माफी माँगी?

ए-३, ओल्ड स्टाफ कॉलोनी,
जिंदल स्टेनलेस लि., ओ.पी. जिंदल मार्ग
हिसार-१२५००५
दूरभाष : ९४१६९९५४२२

अमृत की एक बूँद, जिसने धन्य किया इस धरा को

● सिद्धार्थ शंकर गौतम

वह अमृत की एक बूँद थी, जिसने भारतवर्ष की इस भूमि को धन्य कर दिया। यही बूँद सिंहस्थ (कुंभ) में श्रद्धालुओं के समूह के रूप में नजर आती है। स्कंद पुराण के अवंति खंड में उल्लेख है कि देवताओं और दानवों ने वैमनस्य के बावजूद यह निश्चय किया कि पृथ्वी के वैभव को तो हम भोग ही चुके हैं, बस समुद्र ही एकमात्र हमारे अन्वेषण में बचा है। इसी समुद्र में अमरत्व प्रदान करनेवाला अमृत दबा हुआ है। परस्पर विचार-विमर्श के बाद रत्नाकर सागर को मथने की बात हुई। मंथन के लिए मंदराचल पर्वत को मथनी तथा सर्पराज वासुकी को रस्सी बनाने की योजना बनी। कच्छपरूपधारी भगवान् विष्णु मंदराचल के पृष्ठभाग थे (कूर्म पुराण)। दानवों ने रस्सी के रूप में सर्पराज का मुँह तथा देवताओं ने उनकी पूँछ पकड़ी और समुद्र मंथन शुरू किया। मंथन की भीषणता से तीनों लोक काँप उठे, समुद्र के जीव-जंतु व्याकुल हो उठे और समुद्र की स्थिति तो और बदतर हो रही थी। अंततः देव-दानवों की संगठित शक्ति के आगे समुद्र नतमस्तक हो गया और उस क्षीरसागर से चौदह रत्न श्री, लक्ष्मी, कौस्तुभमणि, पारिजात वृक्ष, सुरा, धन्वंतरि, चंद्रमा, विष, पुष्पक विमान, ऐरावत हाथी, पांचजन्य शंख, रंभा नामक अप्सरा, कामधेनु गौ, उच्चैःश्रवा अश्व और अंत में सुवर्ण कलश में बंद 'अमृत' निकला।

सुपरिचित साहित्यकार। स्वतंत्र लेखन।

अमृत कलश हड़पने के लिए दोनों पक्षों में कुटिल विचार आने लगे। इसी बीच देवराज इंद्र ने अपने पुत्र जयंत को इशारा दिया और वह अमृत कलश लेकर भाग निकला। जयंत को कलश लेकर भागता देख दानवों ने देवताओं पर आक्रमण कर दिया। यह संग्राम देवताओं के १२ दिन अर्थात् मनुष्यों के बारह वर्षों तक चला। इन १२ दिनों में ४ बार ऐसा हुआ कि जयंत दानवों के हत्थे चढ़ गया। आपसी छीना-झपटी में अमृत कलश से अमृत बूँदें छलकीं, जो कि चार स्थानों—हरिद्वार, प्रयाग, नासिक और उज्जैन में गिरीं और अमृत-प्राप्ति से ये नगरियाँ अमरत्व को प्राप्त हुईं। देवों में सूर्य-चंद्र और गुरु का अमृत कलश संरक्षण में विशेष सहयोग रहा था। चंद्र ने कलश को गिरने से, सूर्य ने फूटने से और गुरु ने असुरों के हाथों में जाने से बचाया था। इस कारण इन तीन ग्रहों की विशिष्ट स्थिति में उन्हीं चार तीर्थों में जहाँ अमृत बूँदें छलकी थीं, पर्व मनाए जाने की परंपरा है। धार्मिक मान्यता है कि अमृत बूँदों से ये चारों तीर्थ और यहाँ की पवित्र नदियाँ (गंगा-यमुना-सरस्वती, गोदावरी और शिप्रा) अमृतमयी हो गई हैं। अंततोगत्वा भगवान् विष्णु ने अपनी माया से मोहिनी रूप धारण कर देवताओं को अमृत पान करा दिया।

कुंभ पर्व की पृष्ठभूमि

पुराणों में समुद्र मंथन की कथा में स्पष्ट है कि अमृत कलश के संरक्षण में सूर्य-चंद्र और गुरु का विशेष सहयोग रहा है। अतः इन ग्रहों के उसी विशिष्ट योग के अवसर पर कुंभ पर्व मनाने की परंपरा है, जिस विशेष ग्रह योगों में चारों तीर्थों में अमृत बूँदें गिरी थीं। देवताओं के १२ दिन और मनुष्यों के बारह वर्षों में कुल १२ कुंभ पर्व होते हैं। पृथ्वी पर मनुष्यों के चार कुंभ पर्व तथा शेष आठ कुंभ पर्व देवलोक में देवताओं के होते हैं।

१. प्रयाग कुंभ : माघी अमावस्या को मकर राशि में सूर्य, चंद्र हो तथा वृष का गुरु हो, दूसरे प्रमाण में मेष का गुरु हो तो प्रयाग में कुंभ पर्व होता है। प्रयाग को तीर्थराज भी कहा जाता है। पद्म पुराण में प्रयाग का माहात्म्य बतलाते हुए कहा गया है कि सरस्वती, यमुना और गंगा का जहाँ संगम है, जहाँ स्नान करनेवाले ब्रह्मपद को पाते हैं, उस तीर्थराज प्रयाग की जय हो। कुंभ पर्व पर स्नान का फल अनेक गुना प्राप्त होता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार एक हजार अश्वमेध-यज्ञ, सौ वाजपेय-यज्ञ, एक लाख बार पृथ्वी की परिक्रमा करने का जो फल प्राप्त होता है, वह कुंभ पर्व में स्नान करने से तत्काल प्राप्त होता है।

२. हरिद्वार कुंभ : कुंभ राशि के गुरु में जब मेष का सूर्य आए तब हरिद्वार में कुंभ पर्व होता है। हरिद्वार में कुंभ पर्व मनाने के लिए साधु-संतों एवं श्रद्धालुओं का अपार जनसमूह एकत्र होता है। हरिद्वार की महिमा पद्म पुराण में भी उल्लिखित है। धार्मिक मान्यता है कि हरिद्वार में जिस दिन मेष राशि का सूर्य हो और गुरु कुंभ राशि पर हो तो गंगा स्नान करने से पुनर्जन्म मिट जाता है।

३. नासिक सिंहस्थ : सिंह राशि के गुरु में जब सिंह राशि का

सूर्य हो तब नासिक में गोदावरी के तट पर कुंभ पर्व (सिंहस्थ) होता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार, नासिक सिंहस्थ पर्व मुक्ति-भक्ति प्रदान करनेवाला है। नासिक भारत के प्रमुख तीर्थ स्थलों में से एक है। यहाँ पंचवटी में श्रीराम, लक्ष्मण और सीता मैया ने वनवास का अधिकांश समय व्यतीत किया था। सीता-हरण भी यहीं हुआ था। यहाँ बहनेवाली गोदावरी नदी भारत की सात पवित्र नदियों में से है। इसे दक्षिण की गंगा भी कहा जाता है। लोक मान्यतानुसार, महर्षि गौतम लोगों की प्यास बुझाने के लिए शिव की तपस्या करके इसे पृथ्वी पर लाए थे। नासिक सिंहस्थ में गोदावरी में स्नान के महत्त्व को शिवपुराण में विस्तार से बतलाया गया है।

४. उज्जैन सिंहस्थ : उज्जैन में कुंभ पर्व को 'सिंहस्थ' कहा जाता है। सिंहस्थ पर्व सिंह राशि के गुरु में मेष का सूर्य आने पर मनाया जाता है। नासिक और उज्जैन के कुंभ पर्व सिंहस्थ नाम से ही प्रचलित हैं। इसलिए दोनों स्थानों पर सिंह का गुरु छोड़कर पर्व की कल्पना ही नहीं की जा सकती। उज्जैन में कलकल बहती शिप्रा सर्वत्र पुण्यदायिनी और पापहारिणी है। सिंहस्थ पर्व पर शिप्रा में स्नान करने से व्यक्ति ब्रह्महत्या के पाप से भी मुक्त हो जाता है।

आधुनिक कुंभ पर्व का धार्मिक रूप से प्रचार-प्रसार आदिगुरु शंकराचार्य ने किया था। उन्होंने पर्व की शुरुआत धार्मिक मान्यताओं को बढ़ावा देने और हिंदुओं को अपनी सनातन संस्कृति की पहचान दिलाने के उद्देश्य से की थी। आज भी कुंभ पर्व मुख्यत: साधु-संत समाज का ही पर्व माना जाता है। वस्तुत: कुंभ पर्व सनातन है। अग्नि पुराण, गरुड़ पुराण, वराह पुराण, कूर्म पुराण, वामन पुराण, मत्स्य पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, पद्म पुराण, शिव पुराण, विष्णु पुराण, स्कंद पुराण, लिंग पुराण, हरिवंश पुराण, श्रीमद्भागवत, महाभारत, वाल्मीकि रामायण तथा अन्य प्राचीन ग्रंथों जैसे ऋग्वेद, अथर्ववेद, शतपथ ब्राह्मण में वर्णित आख्यानों से कुंभ पर्व की प्राचीनता का अनुमान लगाया जा सकता है। गौतम बुद्ध ने नदियों के तट पर आयोजित कुंभ पर्व को 'नदी पर्व' कहा है। चीनी यात्री ह्वेनसांग (ई.स. ६३३ से ६४४ तक) भारत के विभिन्न क्षेत्रों की यात्राएँ करता रहा, ने कुंभ पर्व पर काफी विस्तार से लिखा है। वहीं यूरोपीय यात्री टॉमस हार्डविक ने कुंभ पर्व के दौरान हुए खूनी संघर्ष को विस्तार से बताया है।

विष्णु पुराण के अनुसार हजारों स्नान कार्तिक में, सैकड़ों स्नान माघ मास में किए हों तथा करोड़ों बार वैशाख में नर्मदा स्नान से जो पुण्य प्राप्त होता है, वही पुण्य एक बार कुंभ पर्व में स्नान करने से प्राप्त होता है।

दक्षिण भारत का कुंभ कुंभकोणम्

यों तो कुंभ पर्व पृथ्वी में चार जगहों—हरिद्वार, प्रयाग, नासिक और उज्जैन में मनाए जाते हैं, किंतु दक्षिण भारत में कुंभकोणम् नामक एक कुंभ पर्व का आयोजन होता है। लोक परंपरा के अनुसार इसे सबसे पुराना कुंभ माना जाता है। कुंभकोणम् में कुंभ राशि के सूर्य में मघा नक्षत्र के चंद्रमा के योग में मुख्य स्नान होता है। तमिलनाडु के तंजौर जिले में स्थित कुंभकोणम् अर्थात् कुंभ (घड़े) की नासिका में महामहम् पर्व के पीछे एक विशिष्ट पौराणिक कथा है। अमृत से भरा कुंभ प्रलय के समय कुंभकोणम् में आकर ठहर गया, जिसे शिकारी वेश में भगवान् शंकर ने अपने तीर से फोड़ दिया। कुंभ की नासिका के फूटने से अमृत भूमि पर फैल गया। उससे निर्मित सरोवर अमृतमय होने के कारण सदियों से लोक आस्था का केंद्र बना हुआ है। इसे दक्षिण भारत का कुंभ कहा जाता है। उज्जैन में आयोजित सिंहस्थ पर्व के पहले फरवरी-मार्च महीने में कुंभकोणम् पर्व मनाया जाता है। १३ फरवरी को कुंभ संक्रांति होती है, जो कुंभकोणम् के विशेष महत्त्व को द्योतित करती है। इस पर्व को लेकर कुछ लोगों का यह भी मत है कि ब्रह्माजी के यज्ञ में स्वयं भगवान् शंकर यहाँ अमृत कुंभ लेकर प्रकट हुए थे। इसी से इसका नाम कुंभकोणम् पड़ा। यहाँ का मुख्य स्नान महाभैरव सरोवर में होता है।

अर्द्धकुंभ

हिंदू समाज में कुंभ पर्व की परिकल्पना अत्यंत प्राचीन है। हरिद्वार, प्रयाग, नासिक और उज्जैन में बारह-बारह वर्षों के अंतराल से कुंभ पर्व मनाने की व्यवस्था है, जबकि हरिद्वार और प्रयाग में उनके कुंभ पर्व के छठवें वर्ष में अर्द्धकुंभ पर्व भी आयोजित किए जाते हैं। नासिक और उज्जैन में अर्द्धकुंभ नहीं होते हैं। उक्त दोनों अर्द्धकुंभों का कोई पौराणिक या शास्त्रोक्त आधार नहीं है। इस दौरान न तो यहाँ शाही स्नान की परंपरा है और न ही शाही जुलूस ही निकलते हैं। अर्द्धकुंभ पर्व में मात्र सत्संग व स्नानादि कार्य ही संपन्न होते हैं। ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार मुगलों की हिंदू दमन नीति से दु:खी होकर संतों ने अर्द्धकुंभ की परिकल्पना की थी, ताकि सनातन संस्कृति को पल्लवित किया जा सके।

क्या उज्जैन में शुरू होगी अर्द्धकुंभ की परंपरा?

कुंभ पर्व और अर्द्धकुंभ पर्व के विषय में हम पीछे पढ़ चुके हैं। सदियों से उज्जैन में सिंहस्थ मनता आया है, न कि कुंभ। हालाँकि हरिद्वार और प्रयाग की भाँति यहाँ भी अर्द्धकुंभ हो, ऐसी परिकल्पना हमेशा प्रयासों में रही है। जब उज्जैन में सिंहस्थ मनता है तो हरिद्वार में

अर्द्धकुंभ मनता है। अर्द्धकुंभ को हम पर्व नहीं कह सकते। यह दो कुंभों के बीच का सत्र होता है। दरअसल, अर्द्धकुंभ धार्मिक, आध्यात्मिक व सांस्कृतिक चेतनावाले कुंभ महापर्व का मध्य सत्र है। उज्जैन में केवल एक बार १९५० में दत्त अखाड़ा के श्रीमहंत संध्यापुरीजी महाराज ने अर्द्धकुंभ मनाया था। यह तथ्य था कि सिंह राशि में सप्तम राशि कुंभ राशि के गुरु में मेष का सूर्य हो, तब वैशाख मास में उज्जैन में अर्द्धकुंभ का योग बनता है। वर्ष १९५० में संध्यापुरीजी महाराज द्वारा पहली बार मनाए गए अर्द्धकुंभ के तहत वैशाखी पूर्णिमा २ मई, १९५० को उन्होंने साधु-संतों सहित शिप्रा में स्नान व महारुद्र यज्ञ किया। इसके पश्चात् १९८६ में पं. आनंदशंकर व्यास ने वैशाख मास में अर्द्धकुंभ मनाने के लिए प्रयास व पहल की थी, परंतु उसे व्यापक जनसमर्थन नहीं मिल पाया था। इस तरह उज्जैन में अर्द्धकुंभ की परिकल्पना साकार रूप नहीं ले सकी।

सिंहस्थ पर्व का माहात्म्य

हरिद्वार, प्रयाग और नासिक के कुंभ पर्वों से बढ़कर उज्जैन का कुंभ पर्व (सिंहस्थ) इसलिए महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यहाँ इसके साथ सिंहस्थ भी सम्मिलित होते हैं। पुराणों में लिखा है, 'मेष राशि गते सूर्ये सिंह राश्यौ बृहस्पतो, अवंतिकायीभवेत्कुम्भः सदामुक्ति प्रदायकः।' ग्रंथों के इसी सम्मिलन के कारण महत्त्व के दस योग सिंहस्थ में बनते हैं। ये दस योग हैं—वैशाखमास, शुक्लपक्ष, पूर्णिमा, मेष राशि का सूर्य, सिंह राशि पर गुरु की स्थिति, तुला राशि पर चंद्र की स्थिति, स्वाति नक्षत्र, व्यातिपात योग, पवित्र तिथि सोमवार एवं मोक्ष प्रदायक अवंति क्षेत्र। ऐसी मान्यता है कि इस योग में देवगण भी पृथ्वी पर उतरते हैं और पुण्यसलिला शिप्रा में स्नान करते हैं। सिंहस्थ पर्व पर शाही स्नान के दौरान विभिन्न संन्यासी, अखाड़े, धर्मशास्त्री और शंकराचार्य शिप्रा स्नान करते हैं। अमृत मंथन की जिस कथा को आप पूर्व में पढ़ चुके हैं और जानते हैं कि भगवान् विष्णु ने मोहिनी रूप धारण कर देवताओं को अमृतपान करवाया था। वह अमृतपान उज्जैन की धरा पर ही हुआ था, इसलिए यहाँ सिंहस्थ की महिमा अपरंपार है। उज्जैन में प्रवाहित होने वाली शिप्रा नदी का माहात्म्य श्रेष्ठ है। लोक मान्यता है कि यह नदी भगवान् विष्णु के शरीर से उत्पन्न हुई है।

सिंहस्थ पर्व का काल निर्णय

हमारे धार्मिक कर्मानुष्ठान संकल्पादि का संबंध बार्हस्पत्य वर्ष को लेकर है। सिंहस्थ भी बार्हस्पत्य वर्ष के अनुसार मनाए जानेवाले पर्व हैं। इन पर्वों का संबंध गुरु चक्र भ्रमण के अनुसार रहा है। गुरु का एक मध्यम राशि भोगकाल ३६१ दिन १ घटी, ३६ पल दिया हुआ है। कुंभ पर्व के लिए सूर्य, चंद्र तो प्रतिवर्ष उपलब्ध हो जाते हैं, किंतु गुरु प्रायः १२ वर्ष में ही प्राप्त होते हैं। १२ वर्ष के लंबे अंतर के बाद प्राप्त होने से गुरु का संयोग ही कुंभ पर्व में विशिष्ट योग है। हालाँकि आपको जानकार आश्चर्य होगा कि ८५ वर्षों के अंतर से गुरु १२ वर्ष के बजाय ११ वर्ष में ही ११ राशियों का भ्रमण पूर्ण कर लेते हैं। इस कारण ८४ वर्ष में ६ कुंभ पर्व तक तो १२ वर्षों वाली परंपरा निभाई जा सकती है, किंतु सातवें कुंभ पर्व को हमें ११ वर्ष के अंतर से ही स्वीकार करना होगा। सन् १९५६ में उज्जैन सिंहस्थ पर्व के आयोजन को लेकर धर्माचार्यों में तिथि को लेकर जो विवाद हुआ था, वह गुरु की गति पर था। कुछ धर्माचार्यों के अनुसार सिंहस्थ पर्व सन् १९५६ में ही पड़ता था तो कुछ के अनुसार इसे १९५७ में पड़ना चाहिए था। अंततोगत्वा षड्दर्शन अखाड़ों ने १९५७ में सिंहस्थ मनाया, जबकि दंडी स्वामियों ने एक वर्ष पूर्व १९५६ में इसका आयोजन किया। इसी तरह भविष्य में संवत्सर २०९६ (सन् २०३९) या २०९७ (सन् २०४०) को लेकर संभवतः मतभेद आ सकते हैं, जिनका समाधान उसी वर्ष संभव होगा।

उज्जैन के भावी सिंहस्थ पर्व

सं. २०८५	चै.शु.	१५ रविवार	ता. ०९/०४/२०२८ से
	वै.शु.	१५ सोमवार	ता. ०८/०५/२०२८ तक
सं. २०९७	चै.शु.	१५ शुक्रवार	ता. २७/०७/२०४० से
	वै.शु.	१५ शनिवार	ता. २६/०५/२०४० तक

उज्जैन सिंहस्थ पर्व के परिप्रेक्ष्य में यदि १२ वर्ष वाली परंपरा को मान लिया जाए तो यहाँ का पर्व गुरु की सभी राशियों में होने लगेगा। यह १२ वर्ष का अशास्त्रीय पक्ष हमारे पर्व का इसलामीकरण कर देनेवाला है। जैसे यवनों के पर्व (मुहर्रम आदि) चंद्रमान से होने के कारण सभी मास ऋतुओं में होते रहते हैं, वैसी ही स्थिति कुंभ पर्वों की भी हो जाएगी। हालाँकि १९८० से सभी संतों ने ८४ वर्ष के संस्कार को समझा और सर्वसम्मति से सिंहस्थ पर्व मनाया।

विशेषः संवत्सर २०१३ में ११ वर्ष के अंतर से पर्व होकर सं. २०२५/२०३७/२०४९/२०६१/२०७३/२०८५ तक ६ पर्व १२-१२ वर्ष में होते हुए पुनः सं. २०९६ में ११ वर्ष के अंतर से यहाँ का पर्व मनाए जाने से गुरु की निर्दिष्ट राशि अनंतकाल तक साथ नहीं छोड़ेगी।

(पं. आनंदशंकर व्यास से बातचीत पर आधारित)

मोक्षदायिनी शिप्रा के तट पर सिंहस्थ का आयोजन

बारह वर्ष में एक बार मेष राशि में सूर्य और सिंह राशि में गुरु के

आने पर बने ग्रहों के दिव्य योग से उज्जैन में सिंहस्थ मनाया जाता है। एक माह तक चलनेवाले इस महापर्व के दौरान मोक्षदायिनी शिप्रा में स्नान के लिए लाखों श्रद्धालु उज्जैन आते हैं। स्कंद पुराण में शिप्रा को महत्त्व देते हुए उसे मोक्षदायिनी बताया गया है। ऐसी भी कथा आती है कि विष्णु भगवान् की उँगली को शिव द्वारा काटने पर उसका रक्त गिरकर बहने से यह नदी के रूप में प्रवाहित हुई। जो उत्तरवाहिनी होने से और भी महत्त्वपूर्ण हो गई। माना जाता है कि वेद-विक्रयी, संध्या-स्वाध्याय से रहित, नास्तिक, शैयादान लेनेवाला तथा देव, गुरु एवं ब्राह्मण के द्रव्य का हरण करनेवाला भी सिंहस्थ में स्नान करता है तो वह अपने पापों से छूट जाता है, क्योंकि शिप्रा नदी तीनों लोकों में दुर्लभ है। यह प्रेत मोक्षकारी एवं स्नानकर्ताओं की मनोवांछित कामना को पूर्ण करनेवाली नदी है। इस नदी में पूरे मास स्नान का महत्त्व है, किंतु यदि ऐसा संभव न हो तो मात्र पाँच दिन स्नान करने पर ही इच्छित फल प्राप्त होता है। सिंहस्थ और कुंभ दोनों पर्वों का मेल होने से उज्जैन में शिप्रा स्नान का विशेष महत्त्व है।

शिप्रा नदी के बारे में एक अन्य कथा भी है। अत्रि ऋषि ने एक बार घोर तप करने का निश्चय किया। वे अपना एक हाथ हमेशा ऊपर उठाए रखते थे। जब उनकी तपस्या पूर्ण हुई और ऋषि ने जब नेत्र खोले तो देखा कि उनके शरीर से प्रकाश की दो धाराएँ प्रवाहित हो रही हैं। एक आकाश की ओर गई, जो चंद्रमा बन गई, दूसरी जमीन की ओर, जो शिप्रा बनकर प्रवाहित हो रही है। कुल मिलाकर ये प्राकृतिक दैवीय शक्तियाँ हैं, जिन्हें हम पूजते हैं। भारतीय संस्कृति संरचना के आध्यात्मिक जीवन में जलजीवन का आधार है। जन्म से मृत्यु तक के सभी संस्कारों, उत्सवों एवं पर्वों में स्नान शुद्धि का महत्त्व है। आचमन, तर्पण, देवार्चन सबके लिए जल अपेक्षित है और इन्हीं सब के महत्त्व को प्रतिपादित करता है शिप्रा के तट पर सिंहस्थ स्नान पर्व।

शिप्रा की उत्पत्ति के विषय में एक अन्य कथा भी प्रचलित है। मुनि सनकादि कुमारों से शापित होकर श्रीविष्णु के दो द्वारपाल जय-विजय असुर योनि में जन्म लेकर प्रथम जन्म में हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष कहलाए। इनमें से हिरण्याक्ष बहुत बलशाली था। उसके अत्याचारों से चहुँओर हाहाकार मच गया। वह पृथ्वी को लेकर रसातल में चला गया। संसार की दुरवस्था देख भगवान् विष्णु ने वाराह रूप धारण कर पृथ्वी का उद्धार किया। उन्हीं भगवान् के हृदय से यह सनातन नदी मोक्षदायिनी शिप्रा प्रकट हुई है।

नारद पुराण में कहा गया है कि अवंति तीर्थ में 'कपाल योग' नाम का एक तीर्थ है, जहाँ स्नान करने से ब्रह्महत्यारा व्यक्ति भी इसके दोष से मुक्त हो जाता है। पुराणों में इस नदी के चार नाम पाए जाते हैं—शिप्रा, ज्वरघ्नी, पापहनी और अमृतसंभवा। शिप्रा की पवित्रता और माहात्म्य तो इन्हीं उदाहरणों से समझा जा सकता है कि सिंहस्थ का शाही स्नान यहाँ के मुख्य घाट 'रामघाट' पर होता है, सिद्धवट का स्थान नदी के तट पर है। भगवान् श्रीकृष्ण और बलराम ने अपने गुरु सांदीपनि से इसी नदी के तट पर शिक्षा ग्रहण की थी। गुरु मत्स्येंद्रनाथ अपने शिष्य भर्तृहरि के साथ इसी नदी के समीप निवास करते थे। भर्तृहरि के 'शतकत्रय' की रचना भी यहीं इसी नदी के तट पर हुई। कविकुलगुरु कालिदास द्वारा रचित 'शकुंतला', 'रघुवंश' और 'मेघदूत' की सुंदर रचनाएँ यहीं इसी नदी के तट पर हुईं। बाण की 'कादंबरी', चारुदत्त का 'मृच्छकटिक', कल्हण की 'राजतरंगिणी' इत्यादि ग्रंथ रत्न इसी नदी के तट पर साकार रूप ले सके। शिप्रा सनातन संस्कृति के वैभव की साक्षी रही है और यही कारण है कि इसकी गणना 'नदियों में श्रेष्ठ' के रूप में की जाती है। उज्जैन के सिंहस्थ पर्व का सर्वाधिक पवित्र स्नान स्वाति नक्षत्र में होता है और पवित्र स्नान मोक्ष की दिशा में आगे ले जानेवाला माना गया है।

गंगा निवास,
१० रघुवंशी कॉलोनी, मरीमाता चौराहा,
इंदौर-४५२००६ (म.प्र.)

इस अर्थयुग में

हाइकू

● सूर्य नारायण गुप्त 'सूर्य'

वीरगाथाएँ
इस अर्थयुग में
किसे सुनाएँ?

कैसा संयोग
आजादी के नाम पे
भटके लोग।

सूली जो चढ़े
उनका नाम आज
कोई न पढ़े।

चीर हरण
आज भी तो है जारी
मौन है नारी।

बारूदी हवा
देश में ऐसी चली
रो उठी गली।

आज की नारी
फैशन में फेंक दी
तन की साड़ी।

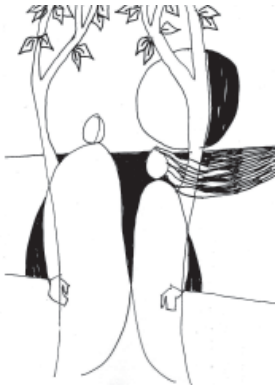

राजा व रंक
आएँगे व जाएँगे
एक ही संग।

गीता का सार
धर्म, कर्म, मर्म का
ज्ञान भंडार।

पाप का फल
हर कोई चखेगा
आज या कल।

जिंदगी खेल
सुख-दुःख को ढोती
चलती रेल।

नारी की व्यथा
द्रौपदी-मीरा-राधा
सीता की कथा।

ग्राम-पोस्ट : पथरहट (गौरीबाजार)
जिला : देवरिया-२७४२०२ (उ.प्र.)
दूरभाष : ०९४५०२३४८५५

उज्जैन से अमर है सनातन संस्कृति का वैभव

● सीमा शर्मा

कालगणना के केंद्र के रूप में प्रतिष्ठित, काल के अधिष्ठातृ देवता ज्योतिर्लिंग भगवान् महाकालेश्वर से अधिष्ठित, मंगलग्रह की जन्मस्थली, अमृतवाहिनी शिप्रा के पावन तट पर अवस्थित, कविकुलगुरु कालिदास की कर्मस्थली, योगी जगद्गुरु श्रीकृष्ण की शिक्षास्थली, न्यायप्रिय विक्रमादित्य की न्यायभूमि 'उज्जैन' नगरी सर्वविदित है। मोक्षदायिनी सप्त पुरियों में उज्जैन ज्योतिष शास्त्र की एक प्रमुख पीठ के रूप में प्रसिद्ध है। सिंहस्थ का आयोजन उज्जैन में होने से यह नगरी सनातन संस्कृति के वैभव की प्रतीक है। उज्जैन नगरी प्राचीनकाल से ही काल, शिक्षा, विद्या, धर्म, न्याय, तपस्या और संस्कृति का प्रतिष्ठित केंद्र रही है। उज्जैन को तीर्थत्रयी भी कहते हैं। ज्योतिर्लिंग के कारण शिवतीर्थ, शक्तिपीठ, हरसिद्धि के कारण शक्तितीर्थ और भगवान् श्रीकृष्ण की शिक्षास्थली होने से विष्णुतीर्थ। मालवा क्षेत्र में कर्क रेखा पर स्थित उज्जैन के गणितीय महत्त्व को अनदेखा नहीं किया जा सकता। भगवान् महावीर धर्म प्रवर्तन हेतु उज्जैन आए थे। उज्जैन नगरी हिंदू, बौद्ध, जैन धर्मावलंबियों की आस्था का केंद्र है। कालों के काल, भूतेश्वर महाकाल उज्जैन के अधिपति आदिदेव हैं। महाकालेश्वर की मान्यता भारत के प्रमुख बारह ज्योतिर्लिंगों में की जाती है। महाकालेश्वर का माहात्म्य विभिन्न पुराणों में विस्तृत रूप से मिलता है। महाकवि कालिदास से लेकर संस्कृत साहित्य के अनेक कवियों ने महाकालेश्वर का वर्णन भाव-विभोर होकर किया है।

आकाशे तारकं लिङ्गं, पाताले हाटकेश्वरम्।
मृत्युलोके महाकालं, लिङ्गत्रय नमोस्तुते॥

लोक-परंपरा में महाकाल की प्रतिष्ठा अनादि है। महाकालेश्वर लिंग स्थापना को लेकर स्कंद पुराण के ब्रह्मखंड में राजा चंद्रसेन व श्रीकर गोप का उल्लेख है। राजा चंद्रसेन शिवोपासक थे। वहीं श्रीकर गोप एक ग्वालिन का बेटा था। ऐसा कहा जाता है कि उज्जयिनी के राजा चंद्रसेन की शिवभक्ति से प्रसन्न होकर श्री मणिभद्र ने उन्हें एक चिंतामणि भेंट की। मणि के समक्ष चिंतन करने से ही मन की इच्छावाली वस्तु मिल जाती थी। इससे अन्य राजा मणिधारी चंद्रसेन से ईर्ष्या करने लगे। कई बार अन्य राजाओं ने उज्जयिनी को घेरा और मणि छीनने के लिए युद्ध किया। राजा युद्धों से परेशान होकर भगवान् शंकर की आराधना करने लगे। जब वे ऐसा कर रहे थे, तब एक विधवा ग्वालिन अपने पुत्र

विगत बारह वर्षों से नई दुनिया में वरिष्ठ उप-संपादक के पद पर कार्यरत। संप्रति नई दुनिया की महिला प्रधान पत्रिका 'नायिका' का संपादन।

के साथ वहाँ आ पहुँची। राजा द्वारा किए जा रहे विशेष पूजन को देखकर ग्वालिन घर वापस आ गई। वह दृश्य बालक भी देख रहा था। उसने एक पत्थर लिया और उसे शिवलिंग जानकार पूजने लगा। उसने पत्थर को नहलाया और पुष्प-गंध अर्पित किए। तत्पश्चात् वह शिव की साधना में लीन हो गया। अपने पुत्र को भोजन हेतु बुलाने गई ग्वालिन ने जब कई आवाजें दीं और पुत्र शिव-साधना से नहीं उठा तो वह झल्ला गई। उसने शिवलिंग रूपी पत्थर को फेंक दिया। इस पर पुत्र की साधना टूटी और वह रोने लगा। रोते-रोते वह बालक कुछ देर बाद मूर्च्छित हो गया। जब उसे होश आया तो उसने स्वयं को एक शिवालय में पाया, जहाँ मणि-स्फटिक के स्तंभ थे और उसके द्वार सोने के थे। इस पर बालक ने शिवलिंग को प्रणाम किया और मंदिर के बाहर आया। मंदिर के समीप वाले भवन में उसने अपनी माँ को रत्नाभूषण धारण किए सोते पाया। उसने माँ को जगाया। यह सब देखकर उसकी ग्वालिन माँ भी आश्चर्यचकित रह गई। इधर यह समाचार राजा चंद्रसेन तक पहुँचा तो वे तत्काल उस शिवालय में आए। उधर हमलावर राजाओं के मन से अपने आप बैरभाव समाप्त हो गया। इसी समय भगवान् शंकर प्रकट हुए। उनके साथ महाबली हनुमान भी थे। हनुमान ने बालक गोप को कहा कि उसकी आठवीं पीढ़ी में इंद्र पैदा होंगे। उनके यहाँ योगीश्वर श्रीकृष्ण भगवान् का जन्म होगा। गोप बालक 'श्रीकर' के नाम से प्रसिद्ध होगा। यह आशीर्वाद देकर महाबली हनुमान अंतर्धान हो गए। बालक गोप द्वारा स्थापित शिवलिंग में स्वयं भगवान् शंकर महाकालेश्वर के रूप में उज्जयिनी में विराजमान हो गए।

इतिहास के प्रत्येक युग में शुंग, कुषाण, सातवाहन, गुप्त, परिहार, परमार और आधुनिक मराठाकाल में महाकालेश्वर मंदिर का निरंतर

जीर्णोद्धार होता रहा है। १२३५ ई. में इल्तुतमिश ने इसे नष्ट कर दिया था। राणोजी सिंधिया के काल में मालवा के सूबेदार रामचंद्र बाबा शेणवी द्वारा वर्तमान मंदिर का पुनर्निर्माण करवाया गया था। मंदिर में प्रतिष्ठित महाकाल की प्रतिमा दक्षिण-मूर्ति है। तांत्रिक परंपरा में प्रसिद्ध दक्षिण-मूर्ति पूजा का महत्त्व बारह ज्योतिर्लिंगों में केवल महाकाल को ही प्राप्त है। मंदिर प्रांगण के तीसरे खंड में नागचंद्रेश्वर की प्रतिमा के दर्शन वर्ष में एक बार केवल नागपंचमी के दिन ही होते हैं। महाकाल के प्रति आस्था ऐसी थी कि मुगलकाल में भी भूतेश्वर की पूजा के लिए शासकीय सनदें मंदिर को प्राप्त होती रही हैं। वर्तमान में महाकाल मंदिर की देखरेख महाकाल मंदिर समिति करती है।

उज्जैन में प्राचीन और पवित्र स्थानों की कोई कमी नहीं है। शक्तिपीठ हरसिद्धि देवी का मंदिर ऐसा ही एक पवित्र स्थान है, हरसिद्धि वैष्णवी देवी हैं। शिवपुराण के अनुसार, दक्ष प्रजापति के यज्ञ में सती को यज्ञ-कुंड से उठाकर शिव जब ले जा रहे थे, तब सती की कोहनी यहीं गिरी थी। तांत्रिकों के ग्रंथों में इस स्थान को 'सिद्धपीठ' कहा गया है। स्कंद पुराण के अनुसार, प्राचीनकाल में चंड-प्रचंड नामक दो असुर थे। अपने प्रबल पराक्रम का आतंक इन्होंने तीनों लोकों में फैला रखा था। एक बार दोनों असुर कैलाश पर्वत पर गए, जहाँ शिव-पार्वती द्यूतक्रीड़ा में निरत थे। उन्होंने अंदर जाने का प्रयास किया, जिसे शिव के नंदीगणों ने विफल कर दिया। दोनों ने बड़ी ताकत से नंदीगणों पर आक्रमण किया और उन्हें शस्त्रों से घायल कर दिया। यह देखकर शिव ने चंडी का स्मरण किया। देवी के प्रकट होने पर शिव ने उन्हें असुरों का वध करने का आदेश दिया और देवी ने दोनों असुरों का वध कर दिया। शिव देवी से प्रसन्न हुए और उन्होंने प्रसन्नता से कहा कि हे चंडी, तुमने इन दुष्टों का वध किया है। अत: तीनों लोकों में तुम्हारा नाम 'हरसिद्धि' प्रसिद्ध होगा।

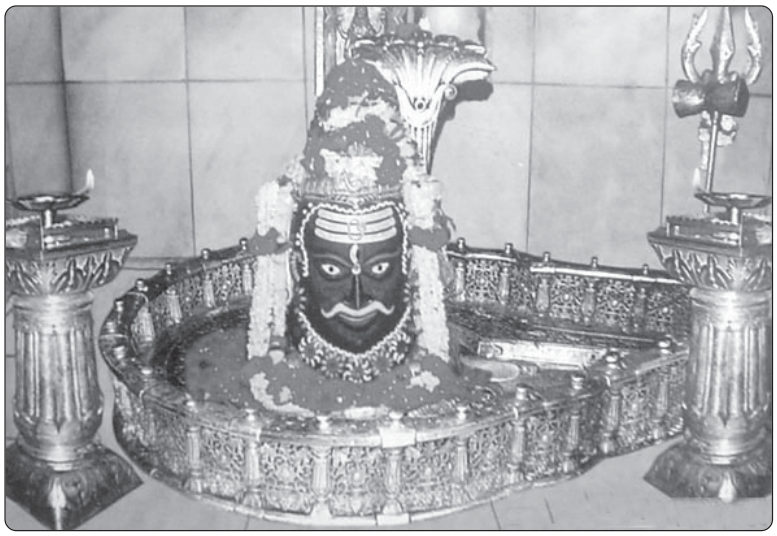

लोक परंपरा के अनुसार, हरसिद्धि सम्राट् विक्रमादित्य की आराध्य देवी हैं। वीर राजा विक्रमादित्य ने अपनी आराध्य देवी को प्रसन्न करने के लिए ग्यारह बार अपने मस्तक को अपने ही हाथों अर्पित किया और हर बार वह पुन: उनके शरीर से जुड़ गया। १३५ वर्षों तक विक्रमादित्य का उज्जयिनी पर शासन रहा। इस मंदिर का पुनर्निर्माण मराठाकाल में हुआ और प्रांगण में दोनों दीप-स्तंभ विशिष्ट मराठा कृति हैं। नवरात्रों में जब दोनों दीप-स्तंभों पर दीये की लौ जलती है तो वातावरण अपने आप आध्यात्मिक हो जाता है।

उज्जैन की धरा पर ही संसार के महान् योगीश्वर श्रीकृष्ण-बलराम और सुदामा ने शिक्षा ग्रहण की। श्रीमद्भागवत के अनुसार वासुदेव ने अपने पुरोहित गर्गाचार्य तथा अन्य ब्राह्मणों से दोनों पुत्रों का यज्ञोपवीत संस्कार करवाया। इसके बाद गुरुकुल में शिक्षार्थ दोनों भाई श्रीकृष्ण और बलराम अवंति में रहनेवाले आचार्य सांदीपनि के पास विधिपूर्वक रहने लगे। पुराणों में भी कहा गया है कि कृष्ण और सुदामा ने यहाँ शिक्षा ग्रहण की। महिदपुर तहसील के गाँव 'नारायणा' में दोनों सखा लकड़ियाँ चुनने आया करते थे। यहाँ का दामोदर कुंड बड़ा प्रसिद्ध है। किंवदंती के अनुसार, दामोदर कुंड पर कृष्ण और सुदामा नारायणा गाँव में लकड़ियों का गट्ठर लेने आए थे। भूख लगने पर कृष्ण-सुदामा को गुरुमाता ने खाने को चने दिए थे। उस दिन दोनों को लकड़ियाँ चुनते-चुनते रात हो गई। अत्यधिक थकान के कारण दोनों नारायणा गाँव में ही रुक गए। उस रात्रि कृष्ण को जल्दी नींद आ गई और वे सो गए। तभी सुदामा को भूख लगी। वे अपने हिस्से के चने तो खा ही गए, साथ ही उन्होंने अपने सखा कृष्ण के हिस्से के चने भी खा लिये। चने चबाते समय कृष्ण की नींद खुल गई और उन्होंने सुदामा से पूछा— यह आवाज कहाँ से आ रही है? तो सुदामा ने कहा कि ठंड लगने से मेरे दाँत किटकिटा रहे हैं। इससे ही यह आवाज आ रही है। सुदामा ने जब सारे चने खा लिये तो उन्हें प्यास लगी, पर वहाँ पानी का कोई प्रबंध नहीं था। तब उन्होंने कृष्ण से पानी के लिए कहा। कृष्ण ने अपनी छोटी उँगली से वहाँ की भूमि को कुरेदा, जिससे वहाँ पानी निकला और सुदामा ने वह पानी पिया। यही कुंड 'दामोदर कुंड' के नाम से जाना जाता है। अब तो यहाँ कृष्ण-सुदामा का भव्य मंदिर भी बना दिया गया है, जिसे देखने दूर-दूर से श्रद्धालु आते हैं। उज्जयिनी के जिस स्थान पर रहकर कृष्ण-बलराम लिखने की पट्टियाँ धोकर अंक मिटाते थे, कालांतर में उस स्थान का नाम 'अंकपात' पड़ा।

पुराणों में उज्जैन का माहात्म्य

उज्जयिनी संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ है उत्+जयनि, अर्थात् 'उत्कर्ष के साथ विजय करनेवाली'। इसका पाली सामानांतर 'उज्जैनी' है। स्कंद पुराण के अवंति खंड के २८वें अध्याय में इसका वर्णन आता है और इसी के अनुसार अवंति की राजधानी अवंतिपुर थी, जो उज्जयिनी कहलाती थी। पुराण इस बात को स्पष्ट करते हैं कि अवंति के लोगों ने त्रिपुरी की शासक जाति पर विजय स्मृति-स्वरूप इसका नाम उज्जयिनी रखा था। यह भी विदित होता है कि इसके पूर्व ६ कल्पों में इसके ६

नाम हो चुके हैं। यानी प्रत्येक कल्प में पृथक् नाम रहा है। इस कारण उज्जयिनी का नाम 'प्रतिकल्पा' भी है। प्रथम कल्प में उज्जयिनी को 'स्वर्णशृंगा' कहा गया। द्वितीय में कुशस्थली, तृतीय में अवंतिका, चतुर्थ में अमरावती, पंचम में चूड़ामणि और छठे कल्प में इसका नाम पदस्वती हुआ। महाभारत के विंद एवं अनुविंद के उल्लेख में उज्जयिनी का इतिहास ईसा के लगभग १४०० वर्ष पूर्व खिसक जाता है। प्राचीन इतिहासानुसार, उज्जयिनी शिप्रा नदी के तट पर बसी हुई थी, जोकि चर्मण्वती (चंबल) की सहायक नदी थी। मार्कंडेय पुराण के अनुसार, चर्मण्वती का उद्गम परीपातृ, परियात्र पर्वत है। यह पर्वत विंध्य पर्वतशाखाओं में से है, जिसे वर्तमान में 'जानापाव' कहते हैं। स्कंद पुराण के अनुसार, शिप्रा को उत्तरवाहिनी कहा जाता है, क्योंकि यह उत्तर की ओर बहती हुई चंबल में मिल जाती है।

अद्भुत है उज्जैन की धरा

उज्जैन की धरा अद्भुत है। यहाँ ऐसे-ऐसे मंदिर और पूजा के प्रकार हैं, जो संसार में कहीं देखने को नहीं मिलेंगे। शैव पूजा में अष्ठ-भैरवों की पूजा का महत्त्व माना जाता है। कालभैरव इनमें प्रमुख हैं। स्कंद पुराण के अवंति खंड में कालभैरव के मंदिर का उल्लेख मिलता है। प्राचीन परंपरा के अनुसार कापालिक तथा अघोर मत के अनुयायी शिव और भैरव की आराधना करते थे। इन पंथों की साधना का संबंध उज्जयिनी से भी रहा है। कहते हैं कि श्रीमंत बायजाबाई शिंदे की युद्ध में साक्षात् कालभैरव ने मदद की थी। उन्होंने ही कालभैरव के भव्य मंदिर का निर्माण करवाया था। यहाँ भैरव मदिरा (शराब) का प्रसाद ग्रहण करते हैं। पूरा विश्व इस बात पर आश्चर्यचकित था और पश्चिम के कई वैज्ञानिकों ने इस बात पर एतराज जताया, किंतु जब उन्होंने कालभैरव की प्रतिमा को मदिरापान करते देखा तो वे भी मंत्रमुग्ध हो गए। आषाढ शुक्ल पूर्णिमा और मार्गशीर्ष कृष्ण अष्टमी को यहाँ मेला लगता है। पुराण प्रसिद्ध कालभैरव मंदिर तांत्रिक साधना का प्रमुख केंद्र है। भैरव साधना का महत्त्व इस तथ्य से भी स्पष्ट है कि बिना भैरव पूजन के भगवान् शिव के पूजन की सिद्धि संदिग्ध रहती है। अन्य देवताओं के पूजन और मंत्र-विधान में भी भैरव पूजा का विधान है।

इसी तरह यहाँ भूखी माता को प्रसन्न करने के लिए भी मदिरा का भोग लगाया जाता है। किंवदंती है कि लगभग दो-ढाई हजार साल पहले अवंतिकापुरी का कोई भी राजा एक दिन से ज्यादा जिंदा नहीं बचता था। नगर में घूमनेवाली देवियाँ उसे अपना आहार बना लेती थीं। तब नगरवासियों ने तय किया कि बारी-बारी से प्रत्येक घर से एक व्यक्ति राजा बनेगा। एक दिन एक वृद्धा के इकलौते बेटे की राजा बनने की बारी आई। बेटे की मृत्यु निश्चित जान वृद्धा जोर-जोर से रोने लगी। उस वक्त युवा विक्रमादित्य वहाँ से गुजर रहे थे। रोने की आवाज सुनकर उन्होंने वृद्धा के विलाप का कारण पूछा। जवाब में वृद्धा ने सब सच उनसे कह दिया। विक्रमादित्य ने वृद्धा को आश्वस्त किया कि उसके पुत्र की जगह उस दिन के राजा वे खुद बनेंगे। चतुर विक्रमादित्य ने तरह-तरह के मिष्टान्न और अपना पुतला शयनकक्ष की शैया पर रखा और खुद दूसरे कक्ष में छुप गए। भूख से व्याकुल देवियाँ मिष्टान्न का आहार ग्रहण कर प्रसन्न हो गईं, पर भूखी माता की भूख समाप्त नहीं हुई। वे विक्रमादित्य के पुतले का भक्षण करने लगीं, लेकिन अन्य देवियों ने उन्हें रोक लिया। विक्रमादित्य की चतुराई से प्रसन्न होकर देवियों ने उनका आह्वान कर वर माँगने को कहा। विक्रमादित्य ने कहा—माँ, आप लोग यह नगर छोड़कर कहीं और बस जाएँ। देवियों ने 'तथास्तु' कहते हुए कहा कि सिंहस्थ में हम लोग अवश्य आएँगी। विक्रमादित्य ने उन्हें आने की अनुमति प्रदान करते हुए कहा कि आप सिर्फ एक पल के लिए ही यहाँ आ सकती हैं। एक पल में भूखी माता कितना कहर बरपा सकती हैं, इस बात से विक्रमादित्य अनजान नहीं थे। तब से ही सिंहस्थ पूर्व उन्होंने देवी पूजन की परंपरा प्रारंभ की। इसी परंपरा के परिपालन में राज्य शासन की तरफ से कलेक्टर एवं संभागायुक्त द्वारा प्रतिवर्ष भूत-पूजा आयोजित की जाती है, जिसमें शराब एवं अन्य सामग्रियों को नगर के मुख्य मार्गों में परोसा जाता है। सिंहस्थ पूर्व भी भूखी माता सहित अन्य देवी मंदिरों में भी विशेष पूजा-अर्चना की जाती है।

अधिपति आदिदेव भोलेनाथ भगवान् महाकालेश्वर की चिता भस्म से अर्चना होती है। वैसे शास्त्र में चिता-भस्म को अशुद्ध माना गया है, मगर भगवान् शिव के स्पर्श से भस्म पवित्र होती है। वर्षभर रोज सुबह चार बजे (सावन माह में समय परिवर्तित) महाकाल की भस्म आरती होती है, जिसे देखने के लिए विदेशों से भी लोग आते हैं और रात-रात भर जागते हुए उनके वैभव को ताकते हैं।

उज्जैन के प्रमुख मंदिर

१. गढ़कालिका : गढ़कालिका देवी को महाकवि कालिदास की आराध्य देवी माना जाता है। इन्हीं के वरदान से महामूर्ख कालिदास कवि 'शिरोमणि' कहलाए। इस मंदिर का जीर्णोद्धार ई.स. ६०६ के लगभग सम्राट् हर्षवर्धन ने करवाया था। यह तांत्रिक सिद्ध स्थान है। इस मंदिर की नींव में शुंगकाल-ई.पू. प्रथम शताब्दी, गुप्तकाल-चौथी शताब्दी ईस्वी तथा परमारकाल-दसवीं से बारहवीं शताब्दी ईसवी की प्रतिमाएँ और मंदिर की नींव प्राप्त हुई हैं। लिंगपुराण के अनुसार, रावण से युद्ध में विजयी होकर श्रीराम अयोध्या वापस लौट रहे थे और रास्ते में रुद्रसागर के निकट ठहरे थे। उसी रात कालिका भोजन की खोज में निकली हुई थी। उन्होंने हनुमान को पकड़ने का यत्न किया, किंतु हनुमान के भीषण रूप लेने पर वे भयभीत हो गईं। भागते समय जो अंग गलित होकर गिरा, वही स्थान कालिका देवी का है।

२. भर्तृहरि गुफा : भर्तृहरि गुफा अति प्राचीन व तपस्थली है। यहाँ ढाई हजार वर्ष पूर्व उज्जैन नगरी के राजा भर्तृहरि को सद्गुरु गोरखनाथ की शिक्षा से वैराग्य उत्पन्न हुआ और उन्होंने तपस्या प्रारंभ की। उनकी कठिन तपस्या से देवराज इंद्र को अपना राज्य छिन जाने का भय पैदा हुआ। तब इंद्र ने इस गुफा की शिला पर वज्र का प्रहार किया, जिससे शिला टूट गई। भर्तृहरि ने तपस्या की शक्ति के बल पर शिला को एक

हाथ से ऊपर ही रोक दिया और बारह वर्ष की तपस्या पूर्ण की और भगवान् श्रीविष्णु ने प्रसन्न होकर उन्हें दर्शन दिए। जिस हाथ के पंजे से भर्तृहरि ने गुफा की शिला को रोका था, उसके निशान आज भी वहाँ देखे जा सकते हैं। गोरखनाथ की धूनी भी यहाँ प्रज्वलित है। प्रबंध चिंतामणि में लिखा है कि भर्तृहरि विक्रमादित्य के बड़े भाई थे। यह भी कहा जाता है कि बारह वर्ष शासन करने के बाद भर्तृहरि ने अपना राज्य विक्रमादित्य को सौंपकर वैराग्य धारण कर लिया था। वे यहीं इसी गुफा में योग-साधना किया करते थे। भर्तृहरि के शृंगार शतक, वैराग्य शतक और नीति शतक प्रसिद्ध हैं।

३. बड़े गणेश : नगर के षट् विनायक प्रसिद्ध हैं। उनमें से एक हैं—बड़े गणेशजी। महाकालेश्वर मंदिर में कोटितीर्थ के ऊपर उत्तरी द्वार के निकट है यह प्राचीन मंदिर। मंदिर में भव्य, विशाल और कलात्मक महागणेश की मनोहारी प्रतिमा है। इतनी विशाल और कलात्मक प्रतिमा भारत में कहीं नहीं है।

षट् विनायक मंदिर : १. मोदि विनायक (बड़े गणेश), २. प्रमोद विनायक, ३. समुख विनायक, ४. दुर्मुख विनायक, ५. अविघ्न विनायक, ६. विघ्न विनायक।

४. मंगलनाथ : मत्स्य पुराण के अनुसार, यह मंगल ग्रह का जन्मस्थान है। प्राचीनकाल में यह स्थल मंगल ग्रह के दर्शन के लिए प्रसिद्ध था। मंगल दोष की शांति के लिए यह विश्व में एकमात्र स्थान है। यहाँ भातपूजा होती है, जो मंगलग्रह की शांति के लिए जरूरी है। जिन लोगों की शादी-ब्याह में मंगल की वजह से अड़चन आती है, उनकी भी यहाँ पूजा करवाई जाती है।

५. गोपाल मंदिर : महाराजा दौलतराव शिंदे की धर्मपत्नी बायजाबाई शिंदे ने अपने आराध्यदेव गोपाल कृष्ण का यह मंदिर सन् १८३३ के लगभग बनवाया था। मंदिर के गर्भगृह में चाँदी का द्वार विशेष दर्शनीय है। कहा जाता है कि यह द्वार सोमनाथ के प्रसिद्ध मंदिर से गजनी ले जाया गया था। वहाँ से मुहम्मदशाह अब्दाली इसे लाहौर लाया था। महादजी सिंधिया ने उसे प्राप्त किया और इस मंदिर में उसी द्वार की पुन: प्रतिष्ठा की गई। मंदिर में गोपालकृष्ण की मूर्ति के अलावा शिव-पार्वती और बायजाबाई की भी मूर्तियाँ हैं। गोपालकृष्ण की ड्योढ़ी में हीरा जड़ित है, जिसकी चमक अद्‌भुत है।

६. पीर मछिंदर : इस स्थान को नाथ संप्रदाय के प्रसिद्ध गुरु मत्स्येंद्रनाथ की समाधि माना जाता है। नाथ संप्रदाय में संतों को पीर कहने की परंपरा थी। मुसलमान भी अपने संतों को पीर कहते हैं, इसलिए हिंदू और मुसलमान दोनों समान श्रद्धाभाव से यहाँ पूजा करते हैं।

७. वेधशाला : वेधशाला का निर्माण सवाई राजा जयसिंह द्वारा सन् १७२५ से १७३० के मध्य किया गया था। राजा जयसिंह ने इसी प्रकार की चार अन्य वेधशालाओं का निर्माण दिल्ली, जयपुर, मथुरा और वाराणसी में भी कराया था। कर्क रेखा उज्जैन के ठीक ऊपर से गुजरती है, जिसके कारण इस स्थान का बड़ा महत्त्व है। इस वेधशाला में सम्राट् यंत्र, नाड़ीवलय यंत्र, दिगंश यंत्र और याम्योत्तर भित्ति यंत्र प्रमुख उपकरण हैं। इन यंत्रों से ग्रह-नक्षत्रों के वृत्त एवं संक्रमण का अध्ययन किया जाता है। राजा जयसिंह द्वारा निर्मित यही एकमात्र वेधशाला है, जहाँ खगोलीय अध्ययन के लिए आज भी इन यंत्रों का प्रयोग किया जाता है। नगर में इस वेधशाला की प्रतिष्ठा किसी मंदिर से कम नहीं है।

८. सिद्धवट : उज्जैन का सिद्धवट प्रयाग के अक्षयवट, वृंदावन के वंशीवट और नासिक के पंचवट के समान अपनी पवित्रता के लिए प्रसिद्ध है। सिद्धवट घाट पर अंत्येष्टि संस्कार संपन्न किया जाता है। स्कंद पुराण में इस स्थान को प्रेत-शिला-तीर्थ कहा गया है। यह नाथ संप्रदाय का भी पूजा स्थान रहा है। लोक मान्यता के अनुसार पार्वती ने यहाँ तपस्या की थी और वट के वृक्ष को अपने हाथों से रोपा था। कहा जाता है कि कभी इस वट को कटवाकर इसपर लोहे के तवे जड़ दिए गए थे, परंतु यह वृक्ष तवों को फोड़कर पुन: हरा-भरा हो गया। यहाँ तर्पण इत्यादि का कार्य भी किया जाता है।

९. रामघाट : पूर्वकाल में श्रीराम चित्रकूट से उज्जैन आए थे, तब उन्होंने स्नान करके अपने पिता दशरथ को अंजलि प्रदान की थी। इसी जगह एक शिवलिंग है, अत: उनकी स्मृति में देवताओं ने इस तीर्थ को 'रामतीर्थ' नाम दिया था, जो वर्तमान में रामघाट के नाम से प्रसिद्ध है। इसी घाट पर सनातन संस्कृति के सबसे बड़े पर्व का मुख्य स्नान होता है।

१०. चिंतामणि गणेश : नगर से दूर चिंतामण गणेश का यह स्थान अत्यंत प्राचीन है। मंदिर में गणेश की प्रतिमा के दोनों ओर रिद्धि-सिद्धि की प्रतिष्ठा की गई है। लोक परंपरा में इसे चिंताओं को हरने के स्थान के रूप में मान्यता मिली है। इस मंदिर का पुनर्निर्माण अहिल्या देवी होलकर ने करवाया था। चैत्रमास के प्रत्येक बुधवार को यहाँ मेला लगता है।

११. नगरकोट की रानी : यह स्थान नगर के कच्चे परकोटे पर स्थित है। नगरकोट की रानी प्राचीन उज्जयिनी के दक्षिण-पश्चिम कोने

की सुरक्षा देवी हैं। यह स्थान नाथ संप्रदाय की परंपरा से भी जुड़ा है। मंदिर में कार्तिकेय की प्रतिमा गुप्तकाल की है।

न्याय की धरा भी है उज्जैन

उज्जैन को 'न्याय की धरा' भी कहा जाता है। इस नगरी ने सम्राट् अशोक की न्यायप्रियता को देखा और न्यायप्रिय राजा विक्रमादित्य के न्याय को भी सराहा। किंवदंती है कि संवत् प्रवर्तक उज्जैन के राजा विक्रमादित्य का बत्तीस पुतलियों वाला सिंहासन, सिंहासन टेकरी नामक स्थान के नीचे कहीं दबा पड़ा है। इस सिंहासन और उसके पायों में जड़ी बत्तीस पुतलियों की गाथा को आधार बनाकर कई रचनाकारों ने विभिन्न भाषाओं में सिंहासन बत्तीसी लिखी है। सिंहासन बत्तीसी की कथा कुछ इस प्रकार है कि एक बार इंद्र की सभा में इस बात को लेकर विवाद छिड़ा कि नृत्य कला में प्रवीण रंभा और उर्वशी नामक अप्सराओं में से श्रेष्ठ कौन है? जब देवतागण इसका समाधान नहीं खोज सके तो इंद्र ने अवंति के न्यायप्रिय राजा विक्रमादित्य को स्वर्गलोक में आमंत्रित किया। अपने विवेक के आधार पर विक्रमादित्य ने उर्वशी को श्रेष्ठ नर्तकी घोषित किया। इंद्र ने प्रसन्न होकर विक्रमादित्य को सिंह की आकृतिवाला एक दिव्य सिंहासन भेंट किया, जिसमें बत्तीस पाये थे। प्रत्येक पाये में काठ की एक-एक पुतली जड़ी थी। इंद्र द्वारा दिए गए इस अद्‌भुत सिंहासन पर बैठकर विक्रमादित्य ने न्यायपूर्वक शासन किया। उनके देवलोकगमन के बाद कोई योग्य उत्तराधिकारी न होने से मंत्रियों के निर्णयानुसार उसे भूमि में गाड़ दिया गया। कहते हैं कि विक्रमादित्य के एक हजार साल बाद राजा भोज ने उस न्याय सिंहासन पर बैठने का प्रयत्न किया, परंतु जैसे ही भोज उसपर बैठने का उपक्रम करते, सिंहासन में जड़ी पुतलियों में से एक पुतली उन्हें विक्रमादित्य की न्यायप्रियता से जुड़ी कथा सुनाकर पूछती कि क्या उनमें विक्रमादित्य जैसा न्याय करने की योग्यता है? भोज अपने आप को उस योग्य न पाकर निरुत्तर हो जाते। अंत में जब बत्तीसों पुतलियाँ प्रश्न पूछ चुकीं और भोज उनके प्रश्नों का सही समाधान नहीं कर सके तो वे सभी पुतलियाँ उस दिव्य सिंहासन को लेकर आकाश मार्ग से इंद्रलोक को चली गईं। इस तरह विक्रमादित्य की न्यायप्रियता तीनों लोकों में प्रतिष्ठित हुई। महाराजा विक्रमादित्य बहुत प्रतापी, न्यायी, दानी और विद्वत्प्रेमी राजा हुए हैं। राजा विक्रमादित्य की भाँति उनके नवरत्न भी उनकी विशेष पहचान हैं। उनकी सभा में धन्वंतरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, बेतालभट्ट, घटखर्पर, कालिदास, वराहमिहिर, वररुचि—ये नवरत्न विद्वज्जन थे—

१. धन्वंतरि : भारतीय वैद्यों में धन्वंतरि का स्थान सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। क्षीरस्वामीकृत अमरकोष टीका के वनौषधि वर्ग के ५०वें श्लोक की व्याख्या से ज्ञात होता है कि धन्वंतरि का बनाया हुआ एक कोश था और इनके नाम पर 'धन्वंतरि-निघण्टु' नामक ग्रंथ प्रसिद्ध है।

२. क्षपणक : क्षपणक शब्द का अर्थ है—जैनयति। जैन विद्वानों का मत है कि प्रसिद्ध जैनाचार्य सिद्धसेन दिवाकर ही क्षपणक बनकर विक्रमादित्य की सभा में आए थे। इनका एक नाम कुमुदचंद्र भी मिलता है। ये जन्मत: वैदिकधर्मी ब्राह्मण थे। किंवदंती है कि एक दिन क्षपणक महाकालेश्वर मंदिर में कल्याण-मंदिर स्तव का पाठ कर रहे थे कि अकस्मात् स्तोत्र के प्रभाव से शिवलिंग दो भागों में विभक्त हो गया और उसमें से पार्श्वनाथ की मूर्ति प्रकट हो गई। इस चमत्कार को सुनकर राजा विक्रमादित्य प्रभावित हो उठे और उन्होंने तुरंत क्षपणक को गुरु मानकर उनसे जैन धर्म की दीक्षा ली।

३. अमरसिंह : अमरसिंह के धर्म को लेकर एक मान्यता नहीं है। कुछ लोगों का कहना है कि नाम में सिंह लगा होने की वजह से वे क्षत्रिय थे तो कइयों का मानना है कि उनका जन्म किसी बौद्ध धर्मानुयायी माता-पिता से हुआ था। उनके जैन धर्म को अंगीकार करने के भी प्रमाण मिलते हैं। ये राजा विक्रमादित्य के कोषाकार थे।

४. शंकु : शंकु को शिक्षाचार्य होने के नाते विक्रमादित्य के नवरत्नों में सम्मानित पद प्राप्त था। इनका वास्तविक नाम शंकुक था। कल्हण की 'राजरंगिनी' में शंकुक कवि का वर्णन मिलता है, जिन्होंने 'भुवनाभ्युदयम्' काव्य की रचना की थी। हालाँकि विक्रमादित्य के दरबार में शंकुक की उपस्थिति हमेशा विवादित रही है।

५. वेतालभट्ट : वेताल की कथाएँ घर-घर प्रचलित हैं। वेताल-पच्चीसी और सिंहासन-बत्तीसी में विक्रम और वेताल की शृंखलाबद्ध कथाएँ हैं। इनका समय ईसा की चौथी शताब्दी में बताया जाता है। इनका लिखा 'नीति-प्रदीप' ग्रंथ मिलता है। वेतालभट्ट को मंत्र विद्या में महारथ हासिल थी।

६. घटखर्पर : विक्रमादित्य के दरबार में कालिदास के बाद ये दूसरे कवि थे। इनके बारे में एक कथा प्रचलित है कि इन्होंने ऐसी प्रतिज्ञा घोषित की थी कि यमक में जो कवि मुझे पराजित कर देगा, उसके घर पर फूटे घड़े से मैं आजीवन पानी भरा करूँगा। उनकी इस कठिन प्रतिज्ञा के कारण इनका नाम घटखर्पर पड़ा। घटखर्पर ने दो लघु काव्यों की रचना की—नीतिसार और घटखर्पर काव्यम्।

७. कालिदास : महाकवि कालिदास के बारे में शायद ही कोई ऐसा हो, जो इन्हें न जानता हो। ये संसार प्रतिष्ठित कवि कुलगुरु केवल विक्रमादित्य की सभा के ही नहीं अपितु अखिल भारतीय विद्वत् कथा के प्रभावशाली रत्न हैं।

८. वराहमिहिर : ज्योतिर्विदों में इनका स्थान बहुत ऊँचा है। इनके ज्योतिष संबंधी ग्रंथ प्रमाणित माने जाते हैं। इन्होंने अपने पिता आदित्यदास से शिक्षा पाई थी।

९. वररुचि : वररुचि ने विक्रमादित्य के दरबार में रहकर उनकी आज्ञा से 'पत्र कौमुदी' की रचना की थी। कौमुदी में चिट्ठी-पत्री लिखने की पद्धति का संग्रह है। पतंजलि ने अपने महाकाव्य में इन्हीं की कथाएँ लिखी हुई हैं। इनके अनेक व्याकरण ग्रंथ हैं, जिनमें से पाली भाषा का व्याकरण प्रसिद्ध है।

गंगा निवास, १० रघुवंशी कॉलोनी,
मरीमाता चौराहा इंदौर-४५२००६ (म.प्र.)
दूरभाष : ०९८२७२११५३५

ऐतिहासिक होगा उज्जैन का 'सिंहस्थ'

● निर्जला शर्मा

मध्य प्रदेश की आध्यात्मिक नगरी उज्जैन में २२ अप्रैल से २१ मई तक 'सिंहस्थ महाकुंभ' आयोजित हो रहा है। सनातन संस्कृति के इस महान् पर्व में देश-विदेश के करोड़ों श्रद्धालु आएँगे। प्रदेश के मुखिया शिवराज सिंह चौहान ने सिंहस्थ की विदेशों में स्वयं भी जोरदार ब्रांडिंग की है। जनसंपर्क विभाग के अलावा मध्य प्रदेश पर्यटन विकास निगम भी अंतरराष्ट्रीय पर्यटन मेलों में सिंहस्थ २०१६ का प्रचार कर रहा है। पर्यटन निगम ने विदेशों से यात्रियों को मेले में लाने, ले जाने के साथ उनके ठहरने व मेले में घूमने का प्रबंध भी किया है। देश के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों पर होर्डिंग्स, हवाई जहाजों की सीट के पीछे स्टीकर, टिकटों पर सिंहस्थ के लोगो लगाए गए हैं। सिंहस्थ मेला अधिकारी अविनाश लवानिया के अनुसार, मेले की विदेश में ब्रांडिंग के लिए उपाय किए गए हैं। इससे विदेशी मेहमानों की भी भागीदारी होने की संभावना है। निगम मेले में अंतरराष्ट्रीय स्तर की आवासीय व्यवस्था की गई है। इसके लिए उज्जैन के पास इंदौर रोड पर टाउनशिप बनाई गई। यात्रियों को घूमने के लिए एसी बसों की व्यवस्था है। फ्लाइट मैगजिन, ट्रेवल्स मैगजिन, टी.वी. चैनलों पर विज्ञापन, यू.एस.ए., यू.के., ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, कनाडा के समाचार-पत्रों में विज्ञापन के जरिए सिंहस्थ २०१६ का प्रचार किया जा रहा है। एक स्थानीय समाचार-पत्र में छपी खबर के अनुसार, जनसंपर्क विभाग के संयुक्त संचालक पंकज मित्तल ने बताया है कि विभाग ने सिंहस्थ के प्रचार के लिए ५८ करोड़ रुपए की योजना बनाई। इसके तहत देश के बड़े शहरों में भी प्रचार माध्यमों से लोगों को सिंहस्थ का आमंत्रण दिया गया है। स्थानीय प्रशासन द्वारा भी इस बार सिंहस्थ को लेकर ऐतिहासिक तैयारियाँ की गई हैं। श्रद्धालुओं की भीड़ को लेकर तमाम दावे किए जा रहे हैं। आइए, एक नजर डालते हैं उज्जैन में सिंहस्थ से जुड़ी कुछ महत्त्वपूर्ण तैयारियों के बारे में।

सुपरिचित लेखिका। स्वतंत्र लेखन।

हाईटेक होगा इस बार का सिंहस्थ

श्रद्धालुओं को किसी तरह की कोई परेशानी न हो, इसके लिए मेला क्षेत्र को पूरी तरह हाईटेक बनाया गया है। श्रद्धालुओं को मेले से जुड़ी जानकारी अपने मोबाइल पर ही मिल जाएगी। सिंहस्थ २०१६ के सफल आयोजन में आई.टी. (इंफॉर्मेशन टेक्नॉलोजी) की बड़ी भूमिका रहेगी। संपूर्ण सिंहस्थ क्षेत्र को वाई-फाई किया जा रहा है, साथ ही एक मोबाइल एप भी तैयार किया गया है, जिसमें सिंहस्थ के पर्व स्नानों की जानकारी, अखाड़ों की जानकारी, दर्शनीय स्थलों की जानकारी, उनके नक्शे आदि तो रहेंगे ही, महिलाओं की सुरक्षा के लिए एक इमरजेंसी बटन भी इसमें डाला गया है, जिससे आपात स्थिति में इस बटन को दबाने से मदद माँगनेवाले की लोकेशन व फोन नंबर सीधे सुरक्षा एजेंसी को पहुँच जाएगा और तुरंत सहायता पहुँचाई जा सकेगी।

सुरक्षा और स्वास्थ्य पर अधिक जोर

सुरक्षा की दृष्टि से सिंहस्थ क्षेत्र व नगरीय क्षेत्र को मिलाकर १३४ पॉइंट पर कुल ६५० सी.सी.टी.वी. कैमरे लगाए जा रहे हैं। ये कैमरे रात-दिन क्षेत्र की गतिविधियों पर नजर रखेंगे। घाटों पर स्नान के दौरान ११ स्थानों पर विशेष निगरानी हेतु कैमरे लगाए गए हैं। सी.सी.टी.वी. कैमरे जहाँ एक ओर सड़कों से आ रहे ट्रैफिक पर नजर रखेंगे, वहीं सेटैलाइट टाउनों में कितने वाहन व भीड़ इकट्ठी हो रही है, इसकी पल-पल की जानकारी कंट्रोल रूम को देंगे। मेला क्षेत्र के ११ प्रवेश-द्वारों से सी.सी.टी.वी. कैमरों के माध्यम से सिंहस्थ में आनेवाले श्रद्धालुओं की गणना भी की जा सकेगी। इसके अलावा संपूर्ण मेला क्षेत्र में आई.टी. बेस्ड हेल्प सेंटर खोले गए हैं। इस सेंटर से आमजन जहाँ अपनी जरूरत की सूचनाएँ प्राप्त कर सकेंगे, वहीं पोर्टल से संबंधित कारवाई भी

सर्विस प्रोवाइडर द्वारा की जा सकेगी। इस हेल्प सेंटर से पानी, बिजली, दूध आदि की आपूर्ति के संबंध में शिकायतें भी दर्ज होंगी और उनका निराकरण भी तुरंत किया जाएगा।

'स्मार्ट' सिंहस्थ का खाका तैयार

म.प्र. राज्य शासन ने सिंहस्थ की व्यवस्था के लिए सिंहस्थ का पोर्टल भी बनाया है। यह पोर्टल डेस्कटॉप, लेपटॉप एवं मोबाइल पर भी चलेगा। इस पोर्टल के माध्यम से सिंहस्थ में तैनात किए जानेवाले लगभग एक लाख कर्मचारियों का मैनेजमेंट किया जाएगा। पोर्टल में किस सेक्टर में कौन व्यक्ति क्या काम कर रहा है, आदि जानकारी प्रबंध करनेवाले अधिकारियों को एक क्लिक पर उपलब्ध होगी। पोर्टल के माध्यम से कार्यरत अधिकारियों को दिशा-निर्देश, आदेश आदि प्रसारित किए जाते रहेंगे और रिपोर्टिंग की मॉनीटरिंग भी होती रहेगी। इसके अलावा सिंहस्थ मेला क्षेत्र के लिए डिजिटल जी.आई.एस. मैप तैयार किया गया है। यह मैप ५० लेयर में है। जी.आई.एस. मैप से मेला कार्यालय में मेला क्षेत्र की मॉनीटरिंग अधिक सुगम हो जाएगी। साथ ही अधिकारियों एवं वहाँ काम करनेवाले कर्मचारियों के लिए आसान रहेगा कि उनके विभाग की क्या-क्या गतिविधियाँ किस-किस स्थान पर चल रही हैं तथा किस तरह की सुविधाएँ उनके द्वारा उपलब्ध करानी हैं अथवा करा दी गई हैं? शासन द्वारा जियोग्राफिक इनफॉर्मेशन सिस्टम (जी.आई.एस.) तकनीक के माध्यम से भी स्मार्ट सिंहस्थ की व्यवस्था की गई है। इसमें यह प्लानिंग की गई है कि कहाँ से रोड निकलेंगे, कहाँ ड्रेनेज होगा, कहाँ से पीने के पानी की पाइप लाइन गुजरेगी व इलेक्ट्रिक लाइन कहाँ रहेगी? यह सब मल्टीलेयर में मैप पर उपलब्ध है। जी.आई.एस. टेक्नॉलोजी एक उम्दा टेक्नॉलोजी है, जिससे कार्यों की ओपरलेपिंग बचेगी।

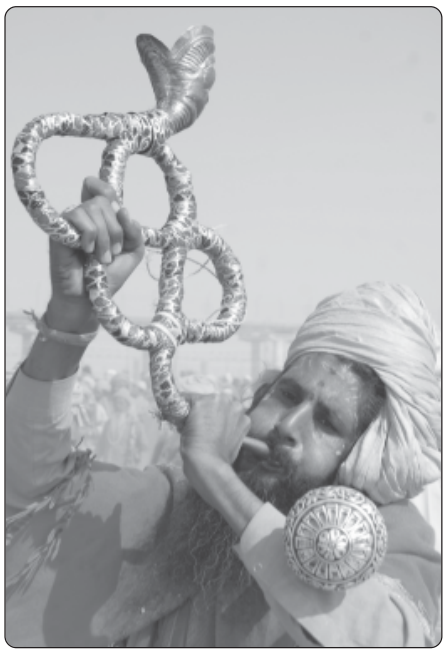

श्रद्धालुओं का बीमा

सिहंस्थ २०१६ के लिए मेला कार्यालय द्वारा मेले में आनेवाले प्रत्येक श्रद्धालु का दुर्घटना बीमा कराया जाएगा। यह बीमा २ लाख रुपए का होगा। इसी तरह मेला क्षेत्र में सेवा देनेवाले शासकीय कर्मचारियों का पाँच लाख रुपए का दुर्घटना बीमा करवाया जाएगा।

इस बार कोई नहीं बिछड़ेगा 'कुंभ' में

भारतीय फिल्मों में कई कहानी ऐसी हैं, जिनमें भाइयों-बहनों या माता-पिता को कुंभ मेले में बिछड़ते दिखाया गया है। यह खोने-बिछड़ने की बात कितनी सच है, इसका तो फिल्म बनानेवाले जानें, मगर उज्जैन में प्रशासन ने खोने-बिछड़ने की समस्या को गंभीरता से लिया है। इस बार सिंहस्थ में कोई अपनों से बिछड़ जाएगा तो इलेक्ट्रिक पोल के माध्यम से तुरंत उसका पता चल जाएगा कि वह कहाँ है और अपनों तक पहुँच जाएगा। मेला क्षेत्र के ३७०० पोल के माध्यम से गुमशुदा लोगों का पता लगाया जा सकेगा। दरअसल, सिंहस्थ २०१६ में करीब पाँच करोड़ श्रद्धालुओं के आने की संभावना है। भीड़ में कई लोग अपनों से बिछड़ भी सकते हैं। ऐसी स्थिति में बिछड़े व्यक्ति को केवल इलेक्ट्रिक पोल का नंबर ही देखना होगा। यह नंबर मेला क्षेत्र में उपस्थित अधिकारी या कर्मचारी को बताने मात्र से ही वह अपनी लोकेशन परिजनों या परिचितों तक पहुँचा सकेगा। इस तरह गुम व्यक्ति तुरंत मिल जाएगा। मेला प्रशासन ने सभी इलेक्ट्रिक पोल पर नंबरिंग की योजना बनाई है। कलशनुमा आकृति पर इलेक्ट्रिक पोल का नंबर लिखा जाएगा, जिससे व्यक्ति आसानी से नंबर भी पता लगा सकेगा। इस बार ३४१३ हेक्टेयर जमीन पर मेला लगेगा। इस क्षेत्र में इलेक्ट्रिक की सप्लाई के लिए कुल ३७०० इलेक्ट्रिक पोल श्रद्धालुओं के लिए मार्गदर्शक की भूमिका भी निभाएँगे।

संयुक्त राष्ट्र संघ की भी भागीदारी

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की जापान और कोरिया यात्रा के दौरान जहाँ सिंहस्थ २०१६ का प्रचार किया गया था, वहीं मध्य प्रदेश पर्यटन निगम ने लंदन के वर्ल्ड ट्रेवल मार्ट और बर्लिन के इंटरनेशनल ट्रेवल मार्ट में प्रदर्शनी लगाकर सिंहस्थ का प्रचार किया। यहाँ सिंहस्थ के बैनर, पोस्टर और पैंफलेट से आगंतुकों को सिंहस्थ की जानकारी दी गई। इसके अलावा यू.एस.ए. और यू.के. एयरपोर्ट पर होर्डिंग लगाए गए हैं। इसके अलावा सिंहस्थ पर्व में संयुक्त राष्ट्र संघ की भी भागीदारी होगी। मध्य प्रदेश के प्रतिनिधि नागेश्वर पाटीदार ने इस संबंध में मेला प्रशासन से संपर्क किया है। संघ के प्रतिनिधि पर्व के दौरान लोगों को स्वच्छता को लेकर जागरूक करने का काम करना चाहते हैं।

संन्यासियों के भी बनेंगे आई कार्ड

सिंहस्थ-१६ में शामिल होनेवाले श्री दिगंबर और दिगंबर संतों का अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद् आई कार्ड जारी करेगा। परिषद् ने पहचान-पत्र बनाने का काम शुरू कर दिया है। शिविर में पहचान-पत्र के बगैर किसी भी साधु को प्रवेश नहीं दिया जाएगा। परिषद् अखाड़ों में रहनेवाले साधुओं की सूची तैयार कर रही है। सूची की प्रति सभी अखाड़ों के साथ मेला प्रशासन को भी सौंपी जाएगी। आई कार्ड में साधुओं का पूरा विवरण दर्ज रहेगा। दरअसल, अखाड़ा परिषद् ने सुरक्षा की दृष्टि से सभी संतों का रिकॉर्ड रखने का निर्णय लिया है। आई कार्ड में साधु का नाम, उम्र एवं पद का विवरण दर्ज रहेगा, साथ ही अखाड़े में उनकी पूरी जानकारी रजिस्टर में अंकित रहेगी। परिषद् अखाड़ों में रहनेवाले

संतों की सूची तैयार कर रही है। सूची में संतों की जन्मभूमि और संन्यास परंपरा में आने का भी जिक्र रहेगा।

सिंहस्थ में ४०० साल बाद ग्रहों का दिव्य संयोग

सिंहस्थ २०१६ में ग्रहों का ऐसा दिव्य संयोग बन रहा है, जो करीब ४०० साल पहले १६वीं शताब्दी के महाकुंभ में बना था। ज्योतिष के अनुसार कुंभ के दौरान सात ग्रहों की स्थितियाँ एक समान रहेंगी। उच्च ग्रहों के प्रभाव से चांडाल योग कमजोर होगा तथा महापर्व के निर्विघ्न संपन्न होने की स्थिति बनेगी। धर्म-अध्यात्म में वृद्धि होगी तथा संत समाज तथा जनमानस में समरसता का प्रभाव नजर आएगा। पं. अमर डब्बावाला के अनुसार नक्षत्र मेखला की गणना तथा ग्रह गोचर में नवग्रहों के गतिक्रम के साथ उनके वक्री व मार्गीय होने की स्थिति तथा पंचांग के पाँच अंगों के आधार पर दुर्लभ संयोगों का गणित लगाया जाता है। इस दृष्टि से देखें तो सिंहस्थ २०१६ में ४२७ साल बाद विशिष्ट दुर्लभ संयोग बन रहा है, जिसमें ७ ग्रह अपनी उन्हीं राशियों में गोचर करेंगे। गणना के अनुसार सूर्य-बुध मेष राशि में (बुधादित्य योग), राहु-गुरु सिंह राशि में, शुक्र अपनी उच्च राशि मीन में, केतु कुंभ राशि में तथा चंद्रमा तुला राशि में रहेंगे। ग्रहों की यह स्थिति १६वीं शताब्दी अर्थात् १५८९ में बनी थी।

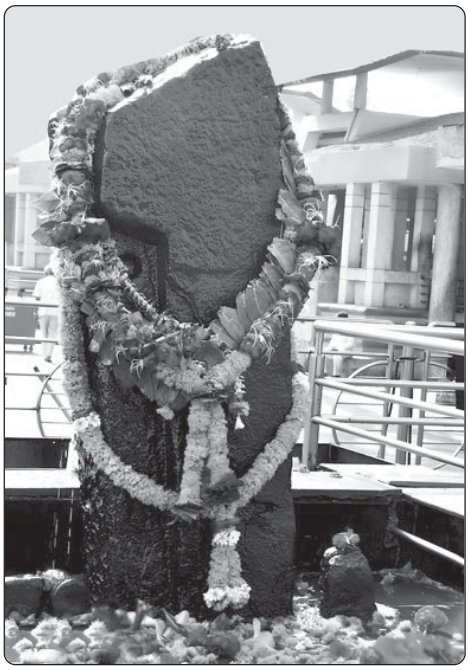

सिंहस्थ के दौरान शहर पर सबसे अधिक दबाव मुख्य शाही स्नान के दिन होगा। इसके अलावा ७ अन्य स्नान भी (विभिन्न तिथियों पर) प्रशासन को दिन-रात सक्रिय रखेंगे। सिंहस्थ मेला कार्यालय के अनुसार, ज्योतिषाचार्य पं. आनंद शंकर व्यास द्वारा दी जानकारी के अनुसार सिंहस्थ-२०१६ के स्नान इस प्रकार होंगे—

१. २२ अप्रैल, शुक्रवार (पर्व का आरंभ स्नान)
२. ३ मई, मंगलवार (वरूथिनी एकादशी)
३. ६ मई, शुक्रवार (वैशाख अमावस्या)
४. ९ मई, सोमवार (अक्षय तृतीया)
५. ११ मई, बुधवार (शंकराचार्य जयंती)
६. १५ मई, रविवार (वृषभ संक्रांति)
७. १७ मई, मंगलवार (मोहिनी एकादशी)
८. १९ मई, गुरुवार (प्रदोष व्रत)
९. २० मई, शुक्रवार (नृसिंह जयंती)
१०. २१ मई, शनिवार (प्रमुख शाही स्नान)

विवादों से परे बन रहा अनोखा मंदिर

उज्जैन में सिंहस्थ के दौरान साधु-संतों के कैंपों में श्रद्धालुओं को कई रोचक चीजें देखने को मिलेंगी। इनमें से एक होगा अनूठा गज शनि मंदिर, जो खाकचौक से भैरवगढ़ के बीच राम जनार्दन मंदिर के पीछे इंदौर के दादू महाराज के कैंप में बनेगा। यहाँ सबसे आकर्षण का केंद्र महिलाओं द्वारा शनिदेव की पूजा-आरती व तेल से अभिषेक करना होगा। महाराष्ट्र के शनि शिंगनापुर मंदिर में भले ही महिलाओं द्वारा शनि को तेल चढ़ाने पर रोक को लेकर देशभर में बवाल मचा हो, लेकिन सिंहस्थ के इस गजशनि मंदिर में सिर्फ महिलाएँ पूजा करती नजर आएँगी।

उषा नगर एक्सटेंशन इंदौर में वर्ष २०११ में बने गज शनि मंदिर में विराजित प्रतिमा की हूबहू प्रतिकृति अस्थायी रूप से कैंप में विराजित की जाएगी। दादू महाराज ने बताया कि हजारों श्रद्धालु इस अनूठे मंदिर में गज पर बैठी शनिदेव की ढाई फीट ऊँची सौम्य चेहरे वाली प्रतिमा के दर्शन करेंगे। शनि शिंगनापुर की तर्ज पर यहाँ सुबह तेल से अभिषेक और शाम को शनि आरती लोगों के बीच आकर्षण का केंद्र होगी। शनि ज्योत के दर्शन भी होंगे।

30 दिन तक निःशुल्क बँटेंगे शनि यंत्र

मंदिर में रोजाना ज्योतिष विद्वान् शनि से जुड़ी लोगों की भ्रांतियाँ दूर करेंगे। किसी भी आरती-पूजा, अनुष्ठान का शुल्क नहीं लिया जाएगा। शनि पीड़ा व बीमारियों के निदान हेतु भक्तों को शनि यंत्र और अभिषेक का तेल भी सिंहस्थ के ३० दिन नि:शुल्क बाँटेंगे। दादू महाराज ने बताया कि गुरु चांडाल योग शुरू होने के साथ वृश्चिक राशि में शनि-मंगल के योग भी बन रहे हैं, जो २९ फरवरी से शुरू होकर ११ सितंबर, २०१६ तक रहेगा। इस बीच सिंहस्थ भी संपन्न होगा। ज्योतिषाचार्य पं. आनंदशंकर व्यास के अनुसार यह योग धार्मिक नगरी में आगजनी, भगदड़ और रोग भय की स्थिति के संकेत दे रहे हैं। इसके निवारण व जनकल्याण हेतु वे उज्जैन सिंहस्थ कैंप के गज शनि मंदिर में शनि-मंगल योग निवारण हेतु विशेष अनुष्ठान करेंगे। आम लोग भी इसमें शामिल हो सकेंगे।

शनि के साथ बरसेगी लक्ष्मी की कृपा

धर्म-शास्त्रों में कहा गया है शनि जब गज पर सवार होकर निकलते हैं तो उनके साथ गज लक्ष्मी भी होती है, यानी सिंहस्थ में जब गज शनि की प्रतिमा उज्जैन में आएगी तो भक्तों पर शनिदेव के साथ धन के रूप में लक्ष्मी की कृपा भी बरसेगी।

बी-४०३, चंद्रेश सप्तगिरी सी.एच.एस.
लोढ़ा हेवन, निलजे स्टेशन रोड
डोंबीवली (ईस्ट)
मुंबई-४२१२०४ (महाराष्ट्र)

पर्व के बहाने प्रकृति से जुड़ाव

● राजेश कुमार व्यास

प्रकृति पल प्रतिपल अपना रंग बदलती है या यों कहूँ कि अपना परिष्कार करती है। हमारी धर्म की परंपराओं के मूल में भी प्रकृति का यही सूक्ष्म रूप छुपा हुआ है। प्रकृति के साथ व्यक्ति अपने आपको साधे। वह परंपराओं को ढोए नहीं, उनसे अपने आपको जोड़ता हुआ निरंतर अपना परिष्करण करे। कुंभ में स्नान का माहात्म्य नदी में नहाना भर नहीं है। नदी के पानी से शरीर को स्वच्छ करना भर नहीं है। शारीरिक शुचिता के साथ मानसिक शुचिता को प्राप्त करना भी है। मन को उदार बनाते हुए, उसकी शुद्धि करना है। पाप धुलने का अभिप्राय है, आप धुलें।

स्नान करने पर पुण्य मिलता है। धर्म यही कहता है, परंतु उसका मर्म धरित्रि की प्रार्थना से जुड़ा है। प्रार्थना सिर्फ अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए भी। पुण्य को सँजोना है, इस जन्म के लिए नहीं, अगले जन्म के लिए। यानी यह क्रम अनवरत चलना है। जाने-अनजाने हम जो कुछ गलतियाँ करते हैं, जो कुछ अनर्थ करते हैं, जो कुछ नहीं करनेवाला करते हैं, उसका प्रायश्चित्त कराता है नदी का स्नान। लोग भोर से पहले ही गंगा और दूसरी नदियों के तट पर एकत्र होने लगते हैं।

मन कुंभ में स्नान की याद से भी जुड़ा है। उसकी धुँधली सी याद भर है। हरिद्वार में अलस्सुबह ही गंगा तट पर परिवारजन एकत्र हो गए। दादी ने सभी को जगाया। कुंभ स्नान के लिए शायद रात भर वह सोई भी नहीं थीं। सभी को साथ ले नदी तट पर ले आई थीं। भीड़ का रेला लगा था, परंतु फिर भी जैसे हर व्यक्ति अकेला था। इस अकेलेपन में भाव था, अपने आपको शुद्ध करने का। मनसा, वाचा और कर्मणा से। तभी पहली बार लगा था, समूह में ऊँच-नीच के भाव तिरोहित हो जाते हैं। पहली बार भीड़ में होते हुए भी भीड़ से अलग अकेलेपन का भाव भी तभी लगा था। नदी पर स्नान की परंपरा में सम्मिलित होने की उस याद में पितरों के साथ आनेवाली पीढ़ी के कल्याण का हरजस भी दादी के मुँह से निकल रहा था। नदी तट पर कमर तक डूबे अभ्यर्थना में उठे हाथ हर ओर, हर छोर।

मुझे लगता है, कुंभ में भीतर और बाहर से शुद्ध करने की मंशा ही दूर-दराज से लोगों को एक स्थान पर खींच ले आती है। सूर्य को अर्घ्य देते हाथ। डुबकी लगाकर अपने आपको शुद्ध करने के साथ भविष्य के सद्कर्मों के लिए अपने आपको संकल्पबद्ध करते जन। किसी भी धर्म का यही सबसे बड़ा मर्म है। हम अपना मूल्यांकन करें, अपना आत्मविश्लेषण करें। कुंभ इसी का प्रतीक है। एक ही घाट पर जाति, संप्रदाय के भेदभाव से परे हर व्यक्ति इनसान होता है। सबके लिए उसके भाव सम होते हैं। जाति का वहाँ कोई बंधन नहीं है। गरीब और अमीर की कोई खाई नहीं है। वय का कोई बंधन नहीं है। सभी एक डुबकी लगाने को आतुर हैं। मन में उठनेवाले ईर्ष्या, द्वेष के भाव नदी तट पर आ जैसे तिरोहित हो जाते हैं। मनुष्य केवल मनुष्य रह जाता है। स्नान से पहले ही मन का मेल धुलने लगता है। डुबकी लगी नहीं कि उदात्तता के भाव अपने आप ही जगने लगते हैं। सांस्कृतिक अस्मिता की अर्थ-बहुल ध्वनियाँ यदि सुननी हों तो एक बार कुंभ पर्व पर जरूर सम्मिलित होना चाहिए। उत्सवधर्मिता के इस पर्व में मन में उमंग और उत्साह का नया प्रवाह होता है।

संस्कृतिकर्मी एवं निबंधकार। 'भारत में पर्यटन', 'कश्मीर से कन्याकुमारी' *(यात्रा वृत्तांत)* तथा 'सुर जो सजे', 'रंगनाद', 'सांस्कृतिक पर्यटन' और 'पर्यटन उद्भव एवं विकास', 'कलावाक्' आदि पुस्तकें प्रकाशित। उस्ताद गणेशीलाल व्यास पद्य पुरस्कार, राहुल सांकृत्यायन, माणक अलंकरण सहित विभिन्न पुरस्कार।

बहरहाल, नदियों में स्नान की परंपरा शायद इसलिए है कि नदी के प्रवाह से हम सीख लें। कहते हैं, जल यदि बहता नहीं है, एक ही जगह रुक जाता है तो सड़ाँध मारने लगता है। 'ऐतरेय ब्राह्मण' का बहुश्रुत मंत्र भी तो यही है, 'चरैवेति, चरैवेति···' अर्थात् चलते रहो, चलते रहो। नदी की तरह। नदियों का प्रवाह जीवन का पर्याय है। शून्य से आती अनंत में समाती नदी। वे बहती हैं तो अपने साथ बहुत कुछ बहाकर ले जाती हैं। धूल, कंकर, मिट्टी, बड़े पेड़ों के तने और तमाम गंदगी। मुझे लगता है कि पुण्य सरिताओं के प्रवाह को देखें नहीं, उसे सुनें और फिर गुनें। प्रवाह में कितने वेग, संवेग झेलती है नदी। उतार-चढ़ाव में पत्थरों की बाधाओं को पार करती नदियाँ बहती हैं, कभी मंद तो कभी तेज।

नदी का प्रवाह गति में आगे बढ़ता रहता है। जीवन में भी तो यही है। जीवन प्रवाह क्या नदी के समान नहीं है? कितने उतार-चढ़ाव आते हैं। आशाएँ-निराशाएँ उत्पन्न होती रहती हैं। संकट आते हैं। पीड़ा, दुःख से उत्पन्न

होती है, परंतु हम कई बार अपने प्रवाह को रोक देते हैं। दु:खों से घबरा जाते हैं। नदी नहीं घबराती। उसका प्रवाह कम नहीं होता। उसकी गति नदी की शक्ति है। हम गति को कम कर देते हैं। गति को समाप्त कर देते हैं। सोचिए, यदि जीवन में गति ही नहीं रहे तो क्या सबकुछ थम नहीं जाएगा। गति जीवन की सहजता है। गति का अर्थ है—चलते रहना। साँस भी तो चलती है। यदि उसका चलना रुक जाए तो! ···तो बहती नदी के प्रवाह को सुनें। उसमे भीगें। कुंभ से बड़ा और बहाना इसका और हो भी क्या सकता है! कुंभ स्नान कर जब लौटें तो अनुभूत करें, आप जो पहले थे, अब वह नहीं रहे। कवि घाघ ने कहा है—

क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति वदेव रूपं रमणीयाता: ।

अर्थात् क्षण-क्षण में जो वस्तु को अपूर्व सुंदरता अथवा नवीनता प्राप्त होती है, वही रमणीयता का सच्चा स्वरूप है। इसलिए हर पल, हर क्षण सुंदर है। उसे हाथ से न जाने दें। कुंभ में स्नान का हर क्षण, हर पल रमणीयता प्रदान करता है। कुंभ पर विचार करते ही रैदास का किस्सा स्मरण हो आया है। प्रयाग में कुंभ का मेला था। संत रैदास भी वहाँ पहुँचे। शिष्यों और उनके भक्तों ने उनका स्वागत किया, आदर-सत्कार किया। प्रयाग के पंडित चिढ़ गए। यह तय हुआ कि दोनों ओर के प्रतिनिधि हाथ में शालिग्राम लेकर गंगा में बहाएँगे। जो सच्चा होगा, उसके शालिग्राम तैरते रहेंगे। रैदास की शालिग्राम मूर्ति तैरने लगी। रैदास ने तभी कहा था, 'मूरती मांहि बसे परमेश्वर तो पानी मांहि तिरै रे!'

कुंभ यानी घड़ा, जिसमें जल भरा जाता है। कुंभ के बारे में विचारता हूँ तो बहुत से बिंब मन में तैरने लगते हैं। एक कुंभ वह, जो अमृत से भरा है, क्षीरसागर के मंथन से निकला। वह जिन-जिन स्थानों पर छलका और भूतल पर रखा गया और जिस-जिस ग्रह के कालबिंदु पर रखा गया, उन-उन स्थानों पर, उस ग्रहयोग के कालबिंदु पर प्रति बारह वर्ष के बाद कुंभ पर्व मनाया जाता है। एक कुंभ वह है, जिस प्रक्रिया में साँस भरकर रोकी जाती है। यह शरीर भी तो कुंभ ही है। तभी तो कबीरदासजी कहते हैं—

यह तन कच्चा कुंभ है, लियां फिरै या साथि।
धक्का लगा फुटि गया, कछु न आया हाथि॥

अर्थात् यह जो शरीर है, वह कच्चा कुंभ है, मिट्टी का बना, जिसे लिये तू यों ही फिर रहा है। धक्का लगते ही यह फूट जाएगा, फिर कुछ भी हाथ नहीं लगना है। भावार्थ यह कि भौतिक चीजें यहीं रह जानी हैं। मिट्टी का बना यह शरीर मिट्टी में ही मिल जाना है।

कुंभ जीवन-चक्र का प्रतीक है। एक फेरे से मुक्ति के बाद दूसरा चक्र प्रारंभ हो जाता है। अमृत का अर्थ है—न मरा होने का भाव। शरीर के मरने को एक स्नान के रूप में देखने का भाव। इसलिए कुंभ में स्नान किया जाता है। स्नान के बाद व्यक्ति वह नहीं रहता जो पहले था, वह नवीन हो जाता है। कुंभ का स्नान तन और मन दोनों की ही शुद्धि का पर्व है। आस्तिक ही नहीं, नास्तिक भी निस्पृह भाव से नदियों में स्नान करते हैं। स्नान करके अपने आपको नवीन करते हैं। पुराने भाव तिरोहित हो जाते हैं। नूतनता का संचार हो जाता है।

नवो नवो भवति जायमान: ।

लोक के अनहद नाद का यही मूल स्रोत है। नएपन में ही तो व्यक्ति की असल यात्रा प्रारंभ होती है। भीतर की यात्रा, अकेलेपन की यात्रा, खुद को खोजने की यात्रा। कुंभ-स्नान के बाद जब यह यात्रा करके व्यक्ति बाहर आता है तो वह पूर्वग्रहों से मुक्त हो जाता है। पंडित विद्यानिवास मिश्र कहते हैं, 'कुंभ पर्व एक निमंत्रण है अपने गाँव-घर, अपने जाति, कुल, अपने धन-वैभव को भूलकर एकदम अकिंचन बनकर जुड़ो एक-दूसरे से और जब जीवन की पवित्र धारा से रागी-वैरागी, सब एकत्र हों, काल के उस बिंदु को पहचानो, देश के उस बिंदु को पहचानो, जहाँ अमृत का कुंभ है। वह एक समय हरिद्वार में, दूसरे समय प्रयाग में है, तीसरे समय महाकाल की नगरी उज्जयिनी में है, चौथे समय गोदावरी के उद्गमस्थल नासिक में है। कोटि-कोटि आस्थाएँ जुड़ती हैं जीवन के इस मूर्त प्रवाह से, पत्थरों के हृदय से निकली हुई रसधार से, कोटि-कोटि साँसें एक महाश्वास बनती हैं, साँसों का मेला होता है तब एक पर्व बनता है। पर्व का अर्थ है—वह संधि, जो भरे हुए रस की रक्षा करती है, गन्ने की दो पोरों के बीच ही तो गन्ने की मिठास है। समष्टि जीवन का माधुर्य संचय ही पर्व है।'

कुंभ का शास्त्रीय पक्ष ज्योतिष शास्त्र से जुड़ा है। कुंभ शब्द की व्युत्पत्ति है कुं भूमिं, कु कुत्सितं उम्भति पूरयति इति कुम्भ:। अर्थात् दिन का वह भाग जब क्षितिज पर राशि चक्र का उदय होता है। अलग-अलग स्थानों पर कुंभ का अलग-अलग योग होता है।

कं जलं उम्भति पूरयति अवर्षणादि दुर्भिक्षेभ्यो दूरयति इति कुम्भ: ॥

यानी बारह वर्षों में घटित वह ग्रह योग, जो दुर्भिक्ष तथा अवर्षण को दूर करके सबको समृद्धि प्रदान करता है, वह कुंभ है। इसलिए हरिद्वार से ही कुंभ की परंपरा की शुरुआत मानी गई है। कुंभ लोकपर्व है। प्रकृति से जुड़ने का पर्व। कुंभ पर एकत्र जन समुदाय भीतर से खाली होता है। हरेक वहाँ मनुष्यता के भाव से ही खिंचा चला आता है। कुंभ महात्माओं के मिलन का पर्व है, बल्कि यों कहें कि जब पृथ्वी पर लोकहित के लिए एक स्थान पर महात्मा एकत्र होते हैं तो वह कुंभ योग होता है। कुंभ स्नान के अंतर्गत एकत्र होनेवाला जन समुदाय जो भाव लेकर वहाँ उपस्थित होता है, वह महात्मा का भाव ही तो होता है। इसलिए शायद कहा गया है—

कुं पृथ्वीं उम्भतेऽनुगृह्यते उत्तमोत्तम महात्म सङ्गमै:
तदीय हितोपदेशै यस्मिन् स कुम्भ: ॥

अर्थात् जब पृथ्वी पर अनेक महात्मा एकत्र होकर लोकहितकारी उपदेशों का प्रवचन करें, वह कुंभ योग है। लोक के बिना जीवन-सत्त्व का उद्घाटन कैसे हो! लोक में ही उत्सवधर्मिता और जीवनधर्म का उद्भव होता है। लोकतत्त्व का जब स्पंदन होता है तो संस्कृति और दूसरी कलाएँ मुखरित होते देखी जा सकती हैं। महाभारत के उद्योग पर्व में भी तो वेद व्यास कहते हैं—

प्रत्यक्षदर्शी लोकानाम् सर्वदर्शी भवेश्वरः।

अर्थात् जो लोकदर्शन में शामिल होकर खुद उसे अपने अंतर्मन से देखता है, वही मनुष्य सच्चे रूप में लोक को समझ सकता है। भारतीय संस्कृति विश्ववरणीय इसीलिए है कि उसमें लोक जीवन का साधकीय रूप है। लोक उत्सवधर्मिता की अपनी परंपरा के अंतर्गत निरंतर अपने आपको साधता है। निरंतर साधने के लिए तन और मन दोनों की ही शुद्धि जरूरी है।

कुंभ की पौराणिक कथाएँ! सहज ही मन में कथाओं की गूँज होती है। सागर मंथन से निकले अमृत कुंभ की कथा जेहन में सबसे पहले कौंधती है। अमृत की खोज में देवता और असुर दोनों ही साथ मिलकर जुट गए हैं। अमृत कलश जैसे ही हाथ में आया, दोनों में ही उसे पाने का युद्ध छिड़ गया। लड़ाई चलती रही, चलती ही रही। कहते हैं, जिन स्थानों पर यह लड़ाई चली, वहाँ कालांतर में पर्व मनाया जाने लगा। इन स्थानों पर स्नान को मोक्षकारक माना जाने लगा।

एक और भी कथा है 'मत्स्य पुराण' की। अमृत कलश लेकर गरुड़जी उड़ रहे हैं। उड़ान के दौरान अमृत कलश से बूँदें जहाँ-जहाँ छलकीं और जहाँ बूँदें गिरीं, वहाँ कुंभ पर्व विश्रुत हुआ।

आख्यान और भी हैं। गरुड़ नागमाता कद्रू से अपनी माता को दासत्व से मुक्ति दिलाने के लिए 'अमृत कलश' हठात् छीनकर ले आए हैं। नागलोक में वासुकि द्वारा रक्षित अमृत कलश को यों गरुड़ के छीनकर ले जाने पर नागों को बहुत क्रोध आता है। नाग उनका पीछा करते हैं। 'अमृत कलश' प्राप्ति के लिए नाग गरुड़ पर चार बार प्रहार करते हैं। चारों बार 'अमृत कलश' पृथ्वी पर रखकर गरुड़ को युद्ध करना पड़ा। कहते हैं, पृथ्वी पर जहाँ-जहाँ अमृत कलश रखा गया, वे ही स्थान 'कुंभ स्थली' के रूप में जाने गए।

विष्णुद्वारे तीर्थराजेऽवन्त्यां गोदावरी तटे।
सुधाविन्दु विनिक्षेपात् कुम्भ पर्वेति विश्रुतः॥

हरिद्वार का कुंभ प्रथम कुंभ है। प्रयाग, नासिक तथा उज्जैन में क्रमशः कुंभ घटित होता है। कुंभ अभावों को दूर करता है। जीवन में नवीनता का संचार करता है। यह जब घटित होता है तो मंगल होता है। पृथ्वी में समृद्धि व्याप्त होती है। हर ओर, हर छोर अनिष्टकारी प्रवृत्तियों का शमन होता है। मंगल कामनाओं के स्वर धरित्रि पर गूँज उठते हैं। अपने लिए नहीं बल्कि पूरे संसार के लिए मंगलकामना के स्वर—

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत्॥

३/३९, गांधीनगर, न्याय पथ,
जयपुर-३०२०१५ (राज.)
दूरभाष : ०९४६१५००२०४

साहित्य अमृत

भारत सरकार (गृह मंत्रालय) के राजभाषा विभाग के
पत्रांक ११०१४/८/९६-रा.भा. (प) द्वारा
केंद्रीय सरकार के मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/
सार्वजनिक उपक्रमों/बैंकों/स्वायत्त निकायों/संस्थाओं आदि के लिए
एक विशिष्ट मासिक साहित्यिक पत्रिका के रूप में अनुशंसित एवं अनुमोदित।
एक प्रति का शुल्क : तीस रुपए
एक वर्ष का शुल्क : चार सौ रुपए
शुल्क मनीऑर्डर अथवा बैंक-ड्राफ्ट द्वारा 'साहित्य अमृत' के नाम
४/१९ आसफ अली रोड, नई दिल्ली-११०००२ के पते पर भेजा जा सकता है।
राजभाषा हिंदी तथा सत्साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए
संस्थाओं का सहयोग अपेक्षित है।

सागर भी सीमाएँ जानते हैं

● बलदेव वंशी

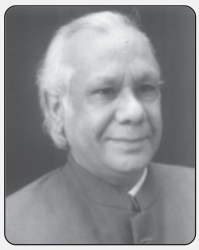

सुप्रसिद्ध कवि-आलोचक और चिंतक। अब तक बारह काव्य-संग्रह, बारह आलोचना पुस्तकें तथा बीस से अधिक संपादित पुस्तकें प्रकाशित। केंद्र व राज्य सरकारों तथा विभिन्न संस्थाओं द्वारा अनेक विशिष्ट पुरस्कार-सम्मान।

केंद्र और दिशाएँ

सब दिशाएँ
मुझ से शुरू होती हैं
जहाँ मैं खड़ा हूँ
वहीं से दसों दिशाएँ
आरंभ होती हैं
और वहीं पर खत्म होती हैं।

सभी रास्ते मुझ तक आते हैं
मैं केवल चुनता हूँ उसे
जिस पर मैं चलता हूँ
वह मुझ तक आकर समाप्त होता है।

देखना सिर्फ यह है
कि तुम मेरे दाएँ या बाएँ कहाँ खड़े हो
और कि तुम किस रास्ते पर हो?

आज तक कौन, कहाँ पहुँचा
किस राह से? वह वहीं तक
पहुँचा, जहाँ तक चला
जिस भी रास्ते पर अपनी तलाश में

दिशा वही सही जो दूसरों से जोड़े
रास्ता भी वही सही
जिस पर लोग मुझ तक आएँ
मैं लोगों तक जाऊँ।

धरती पर चींटी
और आकाश में पक्षी
खुद दिशा चुनते
और अपनी राह बनाते हैं
अन्य पक्षी फिर उधर से ही
आते-जाते हैं।

महत्त्व इस बात का है
कि कोई कैसे जीया और
क्या किया उसके लिए
कितने जोखिम उठाए और
उनके लिए क्या मूल्य दिया।

ऋत अभी शेष है

अब दिशाएँ ही टकराने लगी हैं
लोगों-समूहों के बाहर-भीतर।
अतियाँ चुनौती देतीं
अतियों को, दु:स्वप्नी
बाढ़ें एक हद तक ही डुबोती हैं
आबादियाँ, भूकंप के झटके
मापे जा सकते हैं पैमानों पर, शीत भी।
सागर भी सीमाएँ जानते हैं!

शुक्र है अभी
ऋत बचा हुआ है पेड़ों में
नदियों में, पहाड़ों में
पक्षियों की मैथुनी चहकों में
धरती के कंपनों में
मनुष्य के मानसिक स्खलनों में
आतिशी बहकों में
कहीं ऋत शेष है
अभी सृष्टि में!

यही है ऋत!

कहीं सूखकर गिर रहे
सिर झुका अपत पेड़
और कहीं सिर उठाए चली आ रहीं
नई स्वाभिमानी स्वर्णिम कोपलें

कहीं टूटे पंख, बिंधे जिस्म पखेरू
सिर नवा मृत्यु को स्वीकार/प्रतीक्षा
तो कहीं पेड़ों की खोखलों में
नए कंठों की चिहुँकें-कलरव

दम तोड़ते झरने, कहीं सूखते सोते
जलधार ढूँढ़ती, राह भटकी नदियाँ
तो कहीं उफनती/किनारे ढातीं
बेकाबू जल प्रलयी नदी उछालें

वहीं रेत-रेत होते बिखरते पत्थर-पहाड़
कहीं रेतीले ढूह-ढाणियाँ,
गहरे सागरों से उठते
पथरीले शृंग-शिखरों की दहाड़

इस सबको
शून्य संतोष धैर्य की
भीष्म आँखों से सतत देखता
महा-आकाश
यही है ऋत
ऋत का अवकाश!

शून्य में आकृति

हर क्षण खींचता हूँ बड़े यत्न से
सीधी लकीरें
शून्य में जो
साथ के साथ मिटती भी जाती हैं
वे सीधी भी कहाँ खिंच पातीं हैं।

श्वास आस अहसास उच्छ्वास
सीधे रह सकते हैं धरती या कागज पर
शून्य तो स्वयं ही वर्तुल है धरा-सापेक्ष
किसी को सीधा नहीं रहने देता।

कृतियाँ,
आकृतियाँ
शून्य से जुड़कर स्वत!
शून्य हो जाती हैं।
रेखाएँ बिंदु आकार-प्रकार
पर्वत, नदियाँ, झरने, वनस्पतियाँ प्रसार
शून्य से शून्य तक की यात्रा हैं।

बी-६८४, सेक्टर-४९,
सैनिक कॉलोनी, फरीदाबाद-१२१००१
दूरभाष : ९८१०७४९७०३

रेखांकनों में सिंहस्थ

उज्जयिनी को आस्थाओं से सराबोर करता सिंहस्थ

● संदीप राशिनकर

मालवा की धरती पर कर्क रेखा पर स्थित नगरी उज्जयिनी इन दिनों आस्था, साधु-संतों तथा श्रद्धालुओं के समागम से उल्लसित है, प्रफुल्लित है। अवसर है आस्थाओं के महापर्व सिंहस्थ का।

इस महाकुंभ के लिए आवश्यक जिन पाँच योगों का समावेश होता है, उनमें महत्त्वपूर्ण योग यानि सिंह राशि पर गुरु का होना है। इसीलिए इस महाकुंभ को सिंहस्थ कहा जाता है। बारह वर्षों के लंबे अंतराल के बाद इन योगों की पुनरावृत्ति इस ऐतिहासिक, धार्मिक नगरी को उत्सवमय बना देती है। बारह ज्योतिर्लिंगों में अपना विशिष्ट महत्त्व रखनेवाला महाकालेश्वर मंदिर, रामघाट, हरसिद्धी, दत्त अखाड़ा क्षेत्र या मंगलनाथ, कहीं भी जाइए, एक धार्मिक अद्‌भुत उत्साह आपको अभिभूत कर देता है।

पूरी भव्यता में बिखरे अलग-अलग पंथ, संप्रदाय के संत परिसर तथा अपनी-अपनी साधना में अपने विशिष्ट तरीकों से रमते साधु-संतों की गतिविधियाँ कौतूहल जगाते हुए चमत्कृत करती हैं।

लाखों साधु-संतों, श्रद्धालुओं, दर्शनार्थियों की आस्था के इस अद्‌भुत समागम की छवियों को अपनी रेखाओं में समेटे सृजित मेरी सिंहस्थ-शृंखला आपको भी उस अलौकिक अनुभूतियों से सराबोर करने के लिए प्रेषित है–

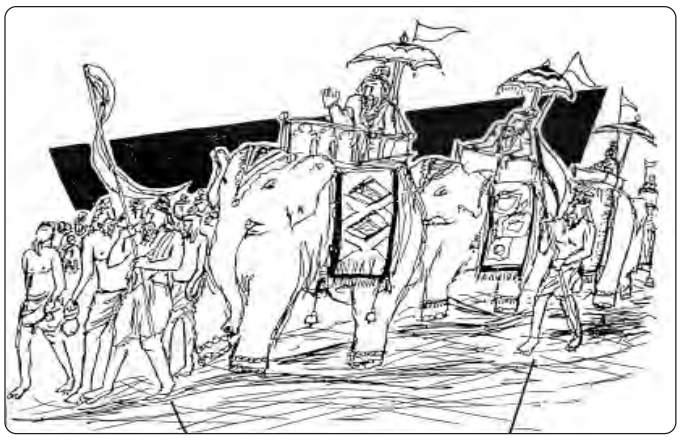

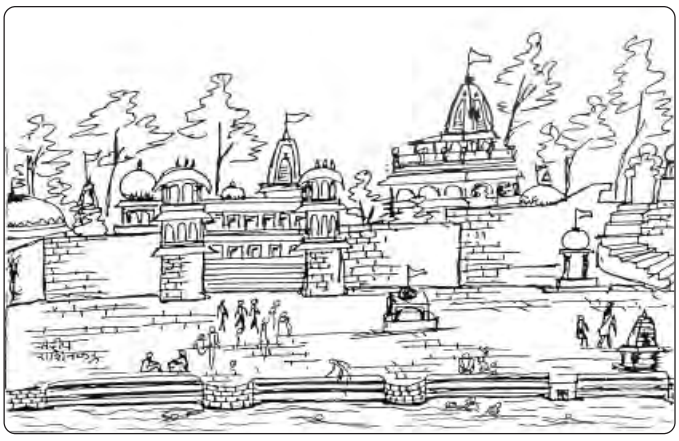

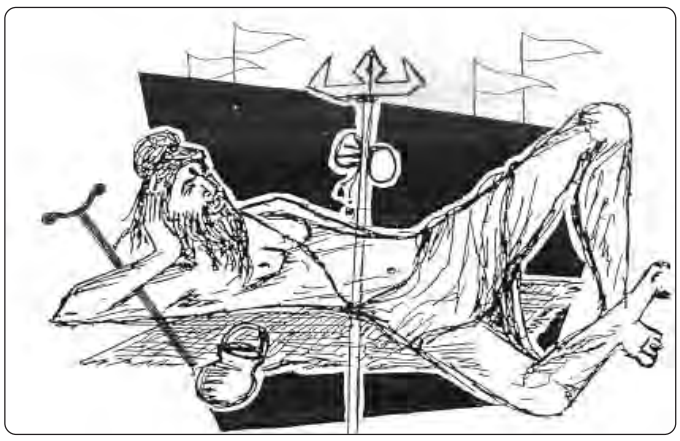

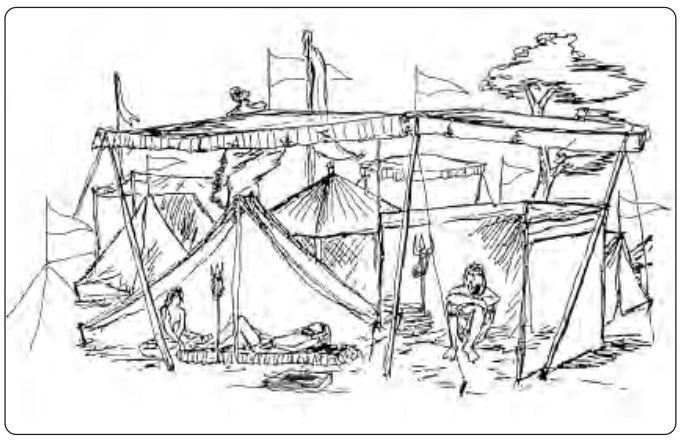

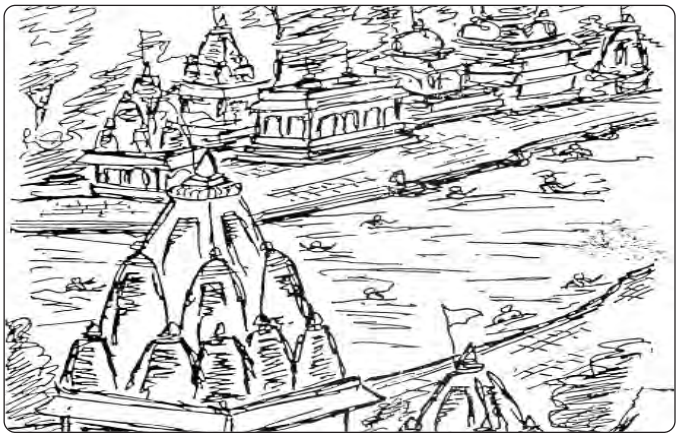

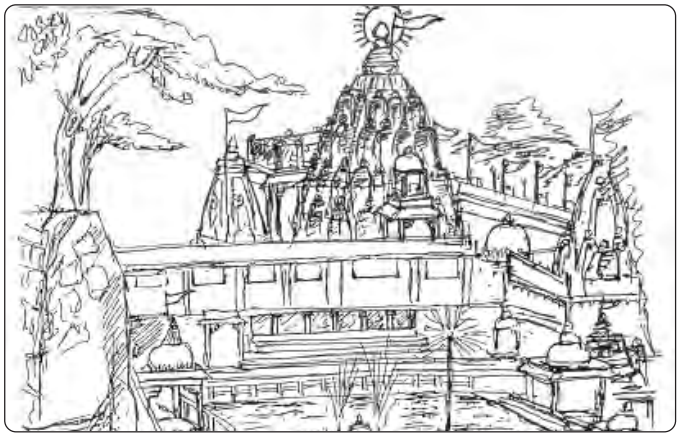

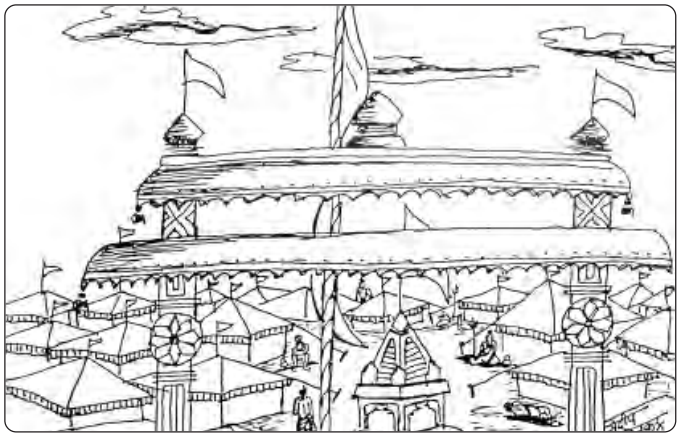

११ बी, राजेंद्र नगर
इंदौर-४५२०१२ (म.प्र.)
दूरभाष : ०९४२५३१४४२२

कहानी

माटी की ढलान

● सुरेश्वर त्रिपाठी

वह रह-रहकर बेचैनी से अपनी कुरसी पर पैंतरे बदल रहा था। कभी पीठ सीधी करके टिका देता तो कभी पैर आगे तक ले जाकर लेटने की मुद्रा बना लेता। उसकी दृष्टि दरवाजे पर जाती और चेहरे पर निराशा की झलक गहरी होती जाती। मन में तरह-तरह के सवाल उठ रहे थे। रोज तो वह दस बजते ही आ जाती थी, आज अभी तक क्यों नहीं आई, जबकि घड़ी में ग्यारह बजनेवाले हैं। उसके कार्यालय के इस कमरे में बस दो ही लोग बैठते हैं, एक वह और दूसरी कुरसी पर अंकिता। पिछले चार महीने से ऐसा कोई दिन नहीं गया, जब अंकिता ठीक समय पर अपनी कुरसी पर आकर बैठी न हो। मनीष नियमित रूप से समय से पहले कार्यालय पहुँच जाता। वह अंकिता को आते हुए देखता तो जैसे नशे में डूब जाता। वह चहकती हुई, मुसकान बिखेरती हुई कमरे में प्रवेश करती और कमरा सुगंध से नहा उठता। किसी को पूरी बोतल पीने के बाद भी वह नशा नहीं होता होगा, जो मनीष को अंकिता के आने और वहाँ छा जाने के बाद होता था। फिर वे दोनों अपने काम में लग जाते। काम करते हुए रह-रहकर अंकिता कनखियों से मनीष को देखती और हल्की सी कातिल हँसी उसके चेहरे पर आ जाती। प्राय: मनीष ऐसे समय अंकिता की ओर नहीं देखता, जब वह उसे देख रही हो बल्कि वह महसूस करता कि अंकिता उसकी ओर देखकर मुसकरा रही है।

अपने जीवन के ४५वें वर्ष में प्रवेश कर चुके मनीष को लगता था कि वह कोई अलग जीवन जी रहा है। उसका पारिवारिक जीवन खुशियों से भरा था। उसके पास सुंदर और सुशील पत्नी थी, दो बच्चे थे। उसकी समझ में यह बात नहीं आ रही थी कि यह कौन सा अध्याय है, जो किसी दूसरी किताब में लिखा गया है। अंकिता की उम्र २२-२३ साल की थी। मनीष से उम्र में वह बहुत छोटी थी। उसकी सुंदरता से अधिक आकर्षण उसके चुलबुलेपन में था। वह जब तक सामने रहती, लगता कि कोई चिड़िया इधर-उधर फुदक रही है और साथ में उसका चहचहाना भी मन को उधर ही खींचने लगता था। जब वह मनीष के कमरे से बाहर चली जाती तो अचानक लगता कि बिजली चली गई है और चारों ओर अँधेरा छा गया है। जैसे फूलों से भरे बगीचे में अचानक पतझड़ आ गया हो, अंकिता के कमरे से निकलते ही वहाँ का माहौल बदल जाता। फिर शुरू होती एक अज्ञात प्रतीक्षा। जिस मकान में यह कार्यालय था, उसी मकान में लोगों का निवास भी था। अंकिता भी उसी मकान के एक हिस्से में रहती थी, इसलिए बीच-बीच में वह उठकर चली जाती थी और कुछ देर बाद वापस आ जाती थी। उसके जाने के बाद तो समय जैसे रुक जाता था। आधे घंटे, एक घंटे, दो घंटे बीत चुके; अब तो आ जाना चाहिए। नजरें दरवाजे तक जातीं और निराश लौट आतीं। तभी एक आवाज सुनाई पड़ती। यह सितार के तारों की झंकार है, वीणा के स्पंदित स्वर हैं या किसी ने बाँसुरी की तान छेड़ दी है। आह! मनीष का जी चाहता कि वह उससे रूठकर पूछे, 'कहाँ थीं तुम इतने वर्षों तक, इतने दशकों तक। एक युग बीतने जैसी अनुभूति होती है, जब तुम यहाँ नहीं होतीं···।' पर उसकी खुली आँखें सपनीली हो जातीं और वह फिर अनुभव करता कि बहार लौट आई है।

सुपरिचित चित्रकार तथा लेखक। 'आज' में दस वर्षों तक उप-संपादक, मुख्य उप-संपादक के रूप में कार्य। 'दैनिक जागरण' और 'राष्ट्रीय सहारा' में संवाददाता रहे। हिंदी मासिक 'चुनौती' के प्रधान संपादक के रूप में कार्य। देश की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में सैकड़ों लेख प्रकाशित। फोटोग्राफी प्रतियोगिताओं में कई बार पुरस्कृत।

जब पहली बार अंकिता ने मनीष को कनखियों से देखना शुरू किया तो मनीष को विश्वास ही नहीं हुआ कि वह उसे देखती है। कहाँ ४५ साल का जीवन, शिखर से ढलान की ओर फिसलता, रसहीन मनीष और कहाँ अपनी उम्र की सुंदरतम अवधि में चौकड़ी भरती अंकिता, दोनों का कोई तालमेल ही नहीं था। उस दिन तो गजब हो गया। अंकिता के पैर उसके पैर से टकराए तो वह चौंक गया। उसने डरकर अपने पैर पीछे खींच लिये। मनीष को लगा कि यह अचानक हो गया है। परंतु दुबारा यही हुआ तो उसने अंकिता के चेहरे की ओर देखा। वह मंद-मंद मुसकराहट के साथ उसे ही देख रही थी। तो···यह जान-बूझकर किया गया प्रयास था। हे भगवान्! मनीष को लगा, वह किसी परीलोक में आ गया है और एक सुंदर सी परी उसकी बाँहें पकड़े उसे बादलों के पार ले जा रही है।

कुछ दिनों बाद अंकिता जब कार्यालय से जाकर लौटती तो उसके हाथ में टिफिन का डिब्बा होता, उसमें कभी गाजर का हलवा, कभी मैगी तो कभी खीर होती और वह आग्रह करके मनीष को देती, 'लीजिए, मैंने आपके लिए बनाया है, खा लीजिए।' वह इतने प्यार से आग्रह करती कि मनीष मना नहीं कर पाता था। खाने के बाद मनीष कहता, 'वाह, मजा आ गया। बहुत ही स्वादिष्ट है।' अंकिता इठलाकर बोलती,

'सच्ची में! मुझे तो बहुत अच्छा बनाना नहीं आता, पर आपके लिए कोशिश की है।' फिर वह कनखियों से मनीष की प्रतिक्रिया देखना चाहती। मनीष तो जैसे धन्य हो जाता।

एक दिन मनीष की पत्नी ने उससे पूछा, 'क्या बात है, आपकी तबीयत तो ठीक है? आजकल देख रही हूँ कि आप कुछ खोए-खोए से रहते हैं। कभी-कभी बैठे-बैठे अचानक हँसने लगते हैं, फिर उदास हो जाते हैं।' मनीष चौंका। ओह, क्या मेरे हावभाव बदल रहे हैं। पत्नी को कुछ शंका तो नहीं हो रही? मनीष सोचने लगा कि पत्नी को बता दूँ क्या? फिर उसने सिर को झटकते हुए विचार बदल दिया। कोई पत्नी यह स्थिति पसंद नहीं कर सकती। मनीष को अब लग रहा था कि वह अंकिता के प्यार में पड़ गया है। कभी देर रात को किसी का फोन आता है और उधर से कोई कुछ बोलता नहीं। कहीं अंकिता का काम तो नहीं है। आखिर ऐसा क्यों हो रहा है? यह सही है कि जिस जगह मनीष नौकरी कर रहा है, उस कंपनी को आगे बढ़ाने के लिए उसने अपना सब कुछ दाँव पर लगा दिया और कंपनी भी अब दौड़ने लगी है। अंकिता उस कंपनी के मालिक की रिश्तेदार है और कई साल से यहीं रह रही है। मालिक और उसके बेटे के बाद अंकिता के निर्णय सब लोग स्वीकार करते हैं। उसके पास पैसा है, जवान है, सुंदर है और कंपनी में उसकी मजबूत स्थिति भी है। ऐसी लड़की मुझ जैसे प्रौढ़ पर मेहरबान क्यों है? मनीष को इसका कोई एक कारण समझ में नहीं आता। कभी-कभी उसे आशंका होती कि अंकिता उसे बेवकूफ बनाकर मजे ले रही है। यह सोचकर वह फिर उदास हो जाता। यदि ऐसा है तो यह बहुत ही शोचनीय स्थिति है और इससे कैसे उबरा जाए, कोई रास्ता समझ में नहीं आता। फिर मनीष को लगता कि अंकिता उसे बेवकूफ बना रही है तो बनाए, मुझे क्या। मैं कोई उससे शादी करने तो नहीं जा रहा हूँ। मैं भी मजे लेता रहूँगा। पर जैसे ही संगीत बिखेरती और खनकती हँसी के साथ हवाओं में तैरती खुशबुओं के बीच अंकिता कमरे में आती, वह सारी बातों को दरकिनार करके नशे में अपनी सुध-बुध खोने लगता। मनीष को लगता कि वह लहरों के बीच फँस गया है, उसे तैरना नहीं आता और हारकर उसने अपने आपको लहरों के भरोसे छोड़ दिया है।

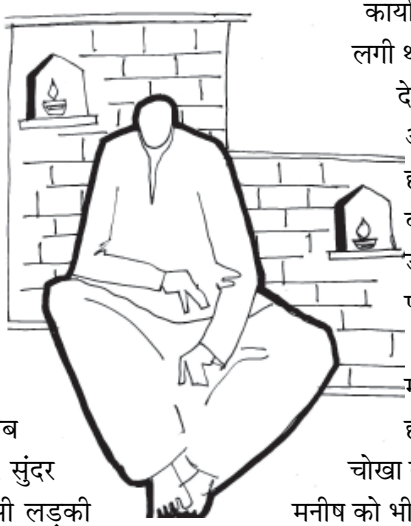

मनीष आजकल एक विचित्र माहौल में अपने को देख रहा था। वह ज्यादा-से-ज्यादा समय अपने कार्यालय में बिताता। कार्यालय से सीधे घर आता और बिस्तर पर लेटकर खयालों में खोया रहता। अपने दोस्तों से मिलना-जुलना भी उसने बंद कर रखा था। कभी-कभी उसे अपने आप पर तरस आता। उम्र के इस पड़ाव पर किस चक्कर में पड़ गया है। किसी को पता चला तो शायद उसकी छवि को धक्का लग सकता है। उसकी प्रतिष्ठा भी धूमिल हो सकती है। बाहर के लोगों की बात जाने दें तो घर के लोग अगर जान गए तो क्या कहेंगे? और उसके भीतर से एक आवाज आती, 'तुमने क्या किया है? तुम तो अपना काम करते जा रहे हो। जो करना है, वह तो अंकिता कर रही है। फिर इसमें अपने आपको धिक्कारने जैसी बात कहाँ है।' मनीष को लगता है कि सच में उसने तो किसी तरह का अपराध नहीं किया है, पर लोग तो यही कहेंगे कि इस उम्र में आकर अपनी बेटी जैसी लड़की के साथ यह हरकत? 'कैसी हरकत!' वह अपने आप से पूछता। उसने तो अंकिता को कभी छूने की भी कोशिश नहीं की है। कभी भी कोई ऐसा-वैसा विचार मन में भी नहीं आया है। उसे अंकिता मंदिर में बैठी एक देवी की तरह लगती है।

कार्यालय के अन्य कर्मचारियों में कुछ खुसर-पुसर होने लगी थी। उनमें से कई मनीष को देखकर अनायास मुसकरा देते थे। तो क्या इनको पता चल गया है कि मनीष और अंकिता के बीच कुछ ऐसा हो रहा है, जो नहीं होना चाहिए? कभी-कभी मनीष का मन करता कि वह सामने के उस आदमी को थप्पड़ लगा दे, जो उन्हें देखकर अजीब सी हँसी चेहरे पर ले आता है। पर इससे क्या होगा? वह मन मसोसकर रह जाता।

कंपनी को बहुत लाभ होने लगा था। एक दिन मालिक के बेटे ने मनीष से कहा, 'अगले रविवार को हम लोग कहीं पिकनिक मनाने चलेंगे। वहीं बाटी-चोखा का भी कार्यक्रम बनाया गया है, बहुत मजा आएगा।' मनीष को भी यह सुनकर अच्छा लगा कि कुछ लोग घूमने चलेंगे, पर कौन-कौन लोग? क्या अंकिता भी चलेगी। उसका मन सिहर उठा। अगर अंकिता चलेगी तो बहुत अच्छा लगेगा। पर अंकिता का जाना निश्चित नहीं था। मनीष किसी से पूछ भी नहीं सकता था। पता नहीं लोग क्या सोचने लगेंगे? वह इंतजार करने लगा उस दिन का, जब सबको वहाँ जाना था।

सुबह आठ बजे वह घर से निकल पड़ा। कार्यालय के बाहर दो कारें खड़ी थीं। कुछ लोग बैठ चुके थे और कुछ आनेवाले थे। मनीष ने नजरें दौड़ाईं पर उसे अंकिता नजर नहीं आई। वह उदास हो गया। क्या अंकिता नहीं चल रही है? उसने मन-ही-मन सोचा। फिर उसने अपने आप से सवाल किया, 'क्या हो गया, अगर अंकिता नहीं आई तो? तुम उसके चलने के लिए इतने उत्सुक क्यों हो?' फिर भी अगर अंकिता चलती तो कितना अच्छा लगता। अभी मनीष इसी ऊहापोह में था कि उसे परी आती दिखाई दी। आज तो अंकिता गजब लग रही थी। वह कार की अगली सीट पर जाकर बैठ गई। मनीष जान-बूझकर उस कार में बैठने नहीं गया, पर मालिक के बेटे, जिन्हें सब 'भैयाजी' कहकर बुलाते थे, मनीष से बोले, 'आइए, आइए, हमारे साथ बैठिए।' मनीष की बाँछें खिल उठीं, वह तो भगवान् से यही मना रहा था कि उसे उसी कार में बैठने का मौका मिले, जिसमें अंकिता बैठी हो।

रास्ते भर मनीष ने अंकिता की ओर देखा तक नहीं। उसे डर लगता था कि आदत से शरारती स्वभाव की अंकिता ने कुछ कर दिया

तो न जाने बाकी लोगों पर क्या असर पड़े। शहर से करीब पंद्रह किलोमीटर दूर नदी के किनारे मनीष की कंपनी के मालिक की काफी जमीन थी। वहीं पर एक मकान भी बना हुआ था। मकान से नदी बिल्कुल पास में थी और बहुत ही मनोरम दृश्य था। वहाँ पहुँचकर कुछ लोग बाटी-चोखा बनाने में जुट गए, कुछ क्रिकेट खेलने लगे और कुछ दर्शक बन गए। मनीष को नदी का यह किनारा इतना भाया कि वह अकेले नदी की तरफ घूमने निकल गया। खेतों में सरसों के फूल बासंती चादर की तरह फैले हुए थे और गेहूँ के पौधे उसमें हरे रंग भरकर और मनोरम बना रहे थे। कहीं-कहीं अरहर की फसल भी दिखाई दे रही थी। गन्ने के भी कुछ खेत थे। वाह, क्या दृश्य था। नदी किनारे दूर-दूर तक कोई मनुष्य नजर नहीं आ रहा था। इस अत्यंत शांत और स्तब्ध वातावरण में मनीष एक जगह बैठ गया।

मनीष को वहाँ चुपचाप बैठकर बहुत आनंद आ रहा था। शहर में ऐसी शांति की कल्पना ही की जा सकती है। अचानक मनीष को एक झटका सा लगा। उसे किसी ने पीछे से जकड़ लिया था। फिर उसे हँसने की आवाज सुनाई दी। ओह, यह तो अंकिता है। उसने डपटकर अंकिता से अपने को छुड़ाया और हैरान होकर उसकी ओर देखने लगा। वही शरारत भरी मुसकान। 'डर गए क्या?' अंकिता ने मनीष से पूछा। 'कमाल करती हो, यहाँ किसी ने देख लिया इस हालत में तो तुम्हारा तो शायद कुछ न बिगड़े, मेरा तो बंटाधार हो जाएगा।' लंबी-लंबी साँस लेते हुए मनीष ने अपनी बात रखी। 'मैंने देख लिया है, यहाँ दूर-दूर तक कोई नहीं है। मैं तो जान-बूझकर आई हूँ। आप भले आदमी हैं, पर डरपोक भी हैं।' अंकिता ने मनीष से कुछ शिकायती अंदाज में कहा। 'मैं किसी से डरता नहीं हूँ, पर मुझे अनैतिक कार्य करने में डर लगता है।'

'अच्छा! यह अनैतिक कार्य है। मैं तो आपको छेड़ना चाहती थी और सच पूछिए तो कुछ दिनों से मैं न चाहते हुए भी आपके बारे में ही सोचती रहती हूँ।' मनीष बेचैन हो उठा, 'देखो अंकिता, तुम बहुत अच्छी लड़की हो। रुपए की कमी तुम्हारे घर नहीं है। अभी तुम्हारी उम्र भी इतनी नहीं है। कुछ दिनों में तुम्हारी शादी हो जाएगी।' कुछ देर तक चुप्पी छाई रही। फिर मनीष ने अंकिता से एक सवाल किया, 'अच्छा सच बताना, क्या तुम मेरे साथ ऐसा करके मुझे उल्लू बनाकर मजे ले रही हो या और कोई बात है?' 'पहले मैं मजे लेने के लिए ही ऐसा कर रही थी। मैंने कई बार देखा है कि थोड़ा सा भी पहल कर देने पर मर्द बिछ जाने को तैयार हो जाते हैं और ये जो अधिक उम्र के लोग होते हैं न, ये कुछ ज्यादा ही करीबियाँ बनाने को लालायित हो जाते हैं। मैंने पहले आपके साथ भी ऐसा ही किया। बल्कि अपनी बहन को मैंने कहा था कि देखो, मैं इस आदमी को कैसे उल्लू बनाती हूँ। पर आप किसी दूसरी माटी के बने हैं। मुझे मालूम है कि आप मुझे लेकर मानसिक रूप से परेशान चल रहे हैं पर आपने कभी मेरे साथ कोई ऐसा सलूक नहीं किया कि मुझे लगे कि आपकी नीयत भी बाकी लोगों की तरह है और सच कहूँ तो मैं आपसे हार गई हूँ। मैं आपसे प्यार करने लगी हूँ। मुझे नहीं पता कि आगे क्या होगा पर भगवान् ने आपको बड़ा सोच-समझकर बनाया है।'

मनीष का मुँह खुला का खुला रह गया, वह हैरान होकर अंकिता के चेहरे की ओर देख रहा था। फिर अचानक मनीष की दोनों आँखों से आँसू बहने लगे। 'मैं ४५ साल का हो चुका हूँ। बचपन से मैं जिस प्यार की कल्पना किया करता था, वह आज मैं साकार होते देख रहा हूँ, पर यह कहानी यहीं खत्म भी होनेवाली है, क्योंकि हम दोनों के लिए रास्ते अलग-अलग बना दिए गए हैं।' अंकिता ने अपने दुपट्टे से मनीष के आँसू पोंछे, 'मुझे तो नहीं लगता कि आप ४५ साल के हो गए हैं, आप मुझे एक बच्चे की तरह भोले-भाले, निश्छल मनवाले लगते हैं, आप कभी किसी का बुरा नहीं सोच सकते, पर यह बात जिंदगी भर याद रखिएगा कि मेरा पहला प्यार आप ही हैं। मैं आपको अपने जीवन से निकाल सकती हूँ, पर अपने मन से शायद ही निकाल पाऊँ।' यह कहकर अंकिता तेजी से मुड़ी और वहाँ से चली गई।

इस घटना के बाद जैसे बहुत कुछ बदल गया। अंकिता कार्यालय में वैसे ही आती थी, पर अब उसके चेहरे पर वह शरारती मुसकान नहीं होती थी। उसकी जगह वह एक गंभीर चेहरेवाली अंकिता बन चुकी थी। मनीष पहले परेशान होता था कि यह क्या हो रहा है, अब वह इस बात को लेकर निराश था कि यह क्या हो गया। अंकिता अब भी उसके लिए टिफिन लेकर आती थी। अब भी उसके न होने पर मनीष परेशान हो उठता था। अब चुहलबाजियों की जगह एक चुप्पी ने ले ली थी। दोनों एक साथ काम करते थे और कभी अगर अंकिता के कारण कोई काम ठीक से नहीं हो पाता तो उसकी जिम्मेदारी अपने ऊपर लेकर अंकिता को बचा लेता था। उधर मनीष के बारे में हाई कमान के पास कोई शिकायत करता तो अंकिता दृढता के साथ उसका बचाव करती थी। अंकिता जब मनीष के बचाव में कुछ कहती तो उसे यह चिंता बिल्कुल नहीं सताती कि कोई क्या सोचेगा।

यह क्या हो गया भगवान्! क्या मैं इस नदी में छलाँग लगाकर इस जीवन को यहीं समाप्त कर दूँ। इससे आनंददायक, लेकिन पीड़ा देनेवाला पल शायद ही अब कभी आए। वह इतना विचलित हो गया था कि तरह-तरह के खयाल उसके मन में आने लगे। मनीष वहीं घास पर लेट गया। उसका मन अशांत हो गया था। वह समझ नहीं पा रहा था कि वह रोए या हँसे। किसी भी प्रौढ़ पुरुष को एक अति सुंदर और उससे आधी उम्र की युवती प्यार का निमंत्रण दे, यह तो सपने जैसा है। पर साथ ही एक समाज में रहने के कारण कुछ सीमा-रेखाओं को पार करना मना होता है। मनीष को अच्छी तरह पता था कि इस दिशा में कदम बढ़ाने से उसकी और अंकिता की जिंदगी नारकीय बन सकती है। उसने अपने मन को समझाया, 'नहीं-नहीं, मैं तो फिर भी अपने जीवन का एक बड़ा हिस्सा जी चुका हूँ, अंकिता तो अभी अपना जीवन शुरू भी नहीं कर पाई है।' मनीष ने तय कर लिया कि इस कहानी को विराम न भी दे पाए तो एक नया मोड़ तो देना ही पड़ेगा। कुछ देर बाद वह उस जगह लौट

आया, जहाँ सब लोग बाटी-चोखा बनाने के बाद खाने की तैयारी में लगे थे। अंकिता वहाँ बिल्कुल सामान्य लग रही थी। 'आइए-आइए, भोजन तैयार है, आपका ही इंतजार हो रहा था।' अंकिता ने मनीष को अपने हाथ से बाटी-चोखा परोसा और फिर उसकी बगल में बैठ गई।

इस घटना के बाद जैसे बहुत कुछ बदल गया। अंकिता कार्यालय में वैसे ही आती थी, पर अब उसके चेहरे पर वह शरारती मुसकान नहीं होती थी। उसकी जगह वह एक गंभीर चेहरेवाली अंकिता बन चुकी थी। मनीष पहले परेशान होता था कि यह क्या हो रहा है, अब वह इस बात को लेकर निराश था कि यह क्या हो गया। अंकिता अब भी उसके लिए टिफिन लेकर आती थी। अब भी उसके न होने पर मनीष परेशान हो उठता था। अब चुहलबाजियों की जगह एक चुप्पी ने ले ली थी। दोनों एक साथ काम करते थे और कभी अगर अंकिता के कारण कोई काम ठीक से नहीं हो पाता तो उसकी जिम्मेदारी अपने ऊपर लेकर अंकिता को बचा लेता था। उधर मनीष के बारे में हाई कमान के पास कोई शिकायत करता तो अंकिता दृढता के साथ उसका बचाव करती थी। अंकिता जब मनीष के बचाव में कुछ कहती तो उसे यह चिंता बिल्कुल नहीं सताती कि कोई क्या सोचेगा। उधर मनीष भी इस बात के लिए लड़ पड़ता कि अंकिता कभी कोई गलती कर सकती है। लोग खुसर-पुसर तो अब भी करते, परंतु कभी कोई बात निकले तब ही तो कोई आगे बढ़ाए। कार्यालय में चुपचाप काम करने के अलावा एक-दूसरे से वे न मिलते थे और ही कोई बात करने की कोशिश करते थे।

हमारे दिन-रात चाहे खुशियों से भरे हों या दु:खों का पहाड़ टूट पड़ा हो, समय तो अपनी गति से चलता रहता है। देखते-ही-देखते दो साल बीत गए। इस बीच अंकिता और मनीष के संबंध में आपस की दूरियों के बावजूद एक गहराई आती चली गई। यह प्यार वासना से कोसों दूर था। वे कभी एक-दूसरे का शरीर छूने के बारे में नहीं सोचते, पर जब वे पास होते तो उनके भीतर एक वार्त्तालाप होता रहता था। दोनों को पता था कि उनकी भलाई इसी में है कि वे भौतिकता से दूरी बनाए रखें और उन्होंने यही किया।

इस बीच कंपनी ने अहमदाबाद में अपनी एक इकाई खोलने की तैयारी कर ली थी। वहाँ निर्माण इत्यादि भी पूरा हो चुका था। कुछ दिनों तक चर्चा चली कि मनीष को अहमदाबाद का प्रभारी बनाया जाएगा, पर मनीष ने विनम्रता से यह कहकर इनकार कर दिया कि उसके बच्चों की पढ़ाई-लिखाई बाधित हो जाएगी। फिर अन्य कई लोगों के नाम सामने आए। फिर एक दिन बैठक में 'भैयाजी' ने मनीष से पूछा, 'आपकी नजर में कोई है, जिसे अहमदाबाद की जिम्मेदारी दी जाए?' कुछ देर तक सोचने के बाद मनीष ने कहा, 'मेरे खयाल से इस काम के लिए सबसे योग्य अंकिताजी हैं।' कुछ लोगों को मनीष का यह प्रस्ताव बुरा लगा, क्योंकि कई लोग लगातार इस तिकड़म में थे कि उन्हें अहमदाबाद का प्रभारी पद मिल जाए। अहमदाबाद जाने का मतलब था—मोटा वेतन, ढेर सारी सुविधाएँ, प्रभारी का पद और काम करने की आजादी। अच्छा काम करनेवाले के लिए वहाँ अपार संभावनाएँ थीं। कुछ देर की बहस के बाद भैयाजी ने अपना आदेश सुना दिया, 'अहमदाबाद के लिए अंकिता का नाम स्वीकार कर लिया गया।'

मनीष ने अंकिता का नाम सामने रखकर उसके भविष्य को बेहतर बनाने का एक रास्ता खोलने का प्रयास किया था। पर उसे यह बात अखरने लगी कि अंकिता अब यहाँ से चली जाएगी। फिर वह सोचता, 'वह उससे इतना प्यार करती है, वह भी करता है तो उसका भला जिसमें हो, वही रास्ता अपनाना सही है।' उसे रातों को नींद नहीं आती थी, यह सोचकर वह बेचैन हो उठता कि अंकिता शायद अब हमेशा के लिए उससे दूर चली जाएगी। उसने अपने आपको समझाया, 'इतने स्वार्थी मत बनो, अंकिता की भलाई इसी में है कि वह अहमदाबाद चली जाए।' बहुत कठोर बनकर मनीष ने अपने आपको तैयार किया कि वह अंकिता के बिना अपना जीवन बिता सके।

जिस दिन अंकिता को हवाई जहाज पकड़ना था, मनीष भी हवाई अड्डे पर उसे छोड़ने गया। उसे पता नहीं चल पाया कि अंकिता के मन में क्या है, पर अंकिता ने एक बार भी मनीष से अपनी नजरें नहीं मिलाईं। सारी प्रक्रिया पूरी होने के बाद मनीष वहाँ से तब तक नहीं गया, जब तक अंकिता का जहाज आसमान में उड़ नहीं गया। फिर वह अपने घर लौटा। वह अपने को काफी थका हुआ महसूस कर रहा था। उसका बुझा हुआ चेहरा देखकर उसकी पत्नी उसके पास आई, 'क्या बात है, तुम्हारी तबीयत तो ठीक है?' उसकी पत्नी उसके बालों में अपनी उँगलियाँ फिराने लगी। मनीष ने अपनी पत्नी की गोद में सिर रखा और उसकी रुलाई फूट पड़ी। उसे इस तरह रोता उसकी पत्नी ने कभी नहीं देखा था। बहुत देर तक उसे पकड़े-पकड़े मनीष फूट-फूटकर रोता रहा। उसकी पत्नी उसका सिर सहलाती रही। कुछ देर बाद पत्नी ने देखा कि मनीष रो-रोकर सो गया है। उसने मनीष को ठीक से बिस्तर पर लिटाया और उसके पैर दबाने लगी। मनीष एक सपना देख रहा था। खूब बरसात हो रही है, वह एक मिट्टी की ऊँची गीली ढलान से फिसल रहा है। नीचे गहरी खाई है। उसके पास फिसलने से बचने का कोई उपाय नहीं है, वह फिसलता जा रहा है। उसे लगता है कि मिट्टी की उस ढलान से गहरी खाई में गिरनेवाला है, तभी किसी के दो हाथ उसकी तरफ बढ़ते हैं और उसके दोनों हाथों को कसकर पकड़ लेते हैं। इसके पहले कि वह जान पाता कि वे किसके हाथ हैं, उसकी नींद खुल गई। उसकी पत्नी उसके पैर दबा रही थी।

२८१, सेक्टर-१९,
पानी की टंकी के पास,
फरीदाबाद-१२१००२

जन्मदिवस (८ अप्रैल) पर विशेष

'भारतीय आत्मा' माखनलाल की पाठशाला

● नर्मदा प्रसाद सिसोदिया

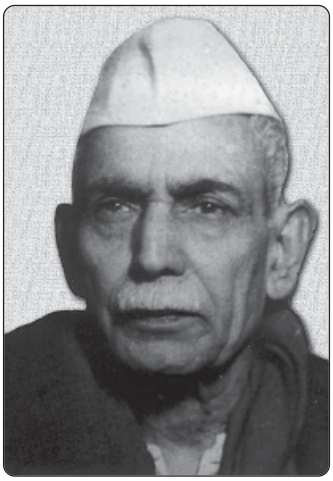

यहाँ मेरी पदस्थापना को दो वर्ष होने को हैं। धीरे-धीरे यहाँ की गलियों, गुठानों, चौबारों के राग-रंग से परिचय होता जा रहा है। गलियाँ तो अब रंगी-चंगी हैं। हाँ, सँकरी गलियों में वही लोक जीवन की गहरी छाप तो अपने रूपों में ही है। लिपे-पुते घर आँगन। मंदिरों की ड्योढ़ी हैं तो पुरानी बनावट की हवेली हैं। सामने ही किबाड़ी खड़ीताल है और चालनुमा हवेली को देखने का अवसर तो स्वतंत्रता दिवस एवं गणतंत्र दिवस की रैली में मिला तो ठिठककर ही रह जाना पड़ा। नगर पंचायत के मैदान पर राष्ट्रीय पर्व पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं छात्र-छात्राओं की अनुशासित परेड का आकर्षण तो छोटे से नगर का गौरव बढ़ाती है, तो यहीं पर है मंगलवारा बाजार का रामलीला मैदान। बालाजी मंदिर की घंटा ध्वनि और मानस के पाठ की सस्वर लोकवाणी तो परिसर की बावड़ी से प्रतिध्वनित होते हुए गूँजती है और यह पटेल मोहल्ला है, यहाँ भी प्राचीन मंदिर है। बड़ा सा हाता है। बस, यहीं से दक्षिण की ओर जाती सँकरी सी गली। तो यही गली जो है, वह अनंत विस्तारित होती है। यह गाँव था। ग्राम पंचायत बनी और नगर का रूप आकार लेते हुए नगर पंचायत बनी। तो पटेल मोहल्ला की स्व. श्री नंदलाल चतुर्वेदीजी की वह गली तो पुत्र के गौरवशाली कर्म से बाबई से जिला और जिले से मध्य प्रदेश और पूरे राष्ट्र को अपने में जोड़ती है। अब बाबई हो गई माखन नगर।

हाँ, इसी गली के किनारे-किनारे ही है छोटे-छोटे पेड़-पौधों की छिदबिदरी कतार। तो इन्हीं के सहारे बनाटी के फुदने उरेहे गए हैं तो बागड़ बन गई है। पेड़-पौधों के गोपटा तो पुन परताप से दोहरे हो रहे हैं। द्वारे पर फटकी लगी है। तार की ही कुंडी है। प्रतीक्षातुर भाव ठिठके रहे। झनकार भी अंत:पुर तक पहुँची तो आगंतुक का आशय समझकर वे आए और उस द्वारे की कुंडी उकसा दी। फटकी खुली। एक द्वार खुला। एक बालक के क्रीडांगन की धूली को अपने मस्तक से लगाने का सौभाग्य मिला। अहा! एक मार्ग मिला। मेरे भीतर उत्फुलता तो उतावली हो बावली होकर अपना परिचय बताती है। जी, मैं यहाँ के शा.मा.शा. में उच्च श्रेणी शिक्षक हूँ। परिचय जाननेवाले श्री ध्रुव तिवारीजी हैं। वे भी अभी छह माह पूर्व ही शिक्षक पद से सेवानिवृत्त हुए हैं। वे तो 'भारतीय आत्मा' के आत्मीय पारिवारिक रिश्ते से जुड़े हुए भानजी के पुत्र हैं। तो इस घर के आँगन में तुलसी क्यारा है। आजी-पराजी के इस घर में ईंट की जुड़ाई है। मगरी, बेल, गेड़े लगे हैं तो कबेलू की छानी है। आले, भंडारिया हैं, तो कोला पर जिरोती, सरबन, नाग मंडे हैं। हाँ, दीवार, किबाड़ी, मियाल तो आजी, पराजी के अंगुलियों के पोरों से रँगी-चंगी है। इसी घर में माता सुंदरबाई ने अपने ईष्टदेव की पूजा की है। बाबई के नृसिंह मंदिर के पीछे हनुमानजी का मंदिर था। वे तो वहाँ भी अपनी पूजा करती थीं। तो पूरब मुखी इस 'आवास' में देवालय की घंटी बज उठती है। परमप्रकाश फूट पड़ता है। श्री माखनलाल चतुर्वेदीजी का जन्म ४ अप्रैल, १८८९ को माता श्रीमती सुंदरबाई की कोख से हुआ। निश्चित ही वह दिन पिता नंदलाल चतुर्वेदी के लिए स्वर्णिम आभा से परिपूर्ण रहा होगा। तो घर की उजालदानी, झरोखों से मजोटा में सीधी रेखा में ही रोशनी आई होगी। अहा! वह रोशनी तो नई खिड़की खोलने के लिए प्रादुर्भूत हुई थी।

इसी मजोटा उसारी में हुमकारा भरे होंगे तो घुटने-घुटने चले थे और फिर पाँव-पाँव चलना सीखा होगा। तो पैंजनिया की घुँघरू की झंकार से ममता का झूला उल्लसित हुआ होगा। फिर रेतीली गली की धूलि में सराबोर हो क्रीड़ारत रहे होंगे तो लाड़ भरी डटकार मिली होगी तो ममता का दुलार मिला होगा। यह धूलि तो पावन है, जहाँ एक होनहार की किलकारी गूँजी। तो लोट-पोट होते हुए छिले हुए घुटनों में रजकण छिपके होंगे। माटी धन्य हो जाती है, वह दिन आया फिर मोटे कपड़े का ही झोला बस्ता में पट्टी पहाड़ा बरतना, बालभारती लिये बालक माखनलाल चतुर्वेदी ने पिता की उँगली पकड़कर बा. उत्तर बुनियादी प्राथ. शाला बाबई में दाखिला लिया। उनकी प्राइमरी शिक्षा १९०१ में पूर्ण हुई। हाँ, पिताजी ने भी इसी शाला में शिक्षा प्राप्त की थी। बड़े दादा बंशीधर के पास नर्मदा के उत्तर तट के गाँव नांदनेर में संस्कृत का अध्ययन किया। नांदनेर के जीवन में उन्हें हरवाहों और चरवाहों के गीत बहुत प्यारे लगते थे। और बाबई में पढ़ते समय हरदौल का चरित्र गाकर सुनाए जाते थे तो माखनलालजी उन्हें बड़े चाव से सुनते थे। स्व. श्री नंदलाल चतुर्वेदीजी छिदगाँव में शिक्षक पद पर रहे हैं और इधर बाबई में उनका भरा-पूरा परिवार था। माखनलालजी की कस्तूरी बाई, गोमती बाई, जमना बाई बहनें थीं। रामदयाल चतुर्वेदी, हरिप्रसाद चतुर्वेदी, बृजभूषण चतुर्वेदीजी उनके भाई थे। अपने इस वैष्णव परिवार के बीच १९०३ में इसी गाँव में ही ग्यारसी बाई से उनका विवाह हुआ।

बस २५ वर्ष के ही थे कि पत्नी का महाप्रयाण हो गया। फिर समय

के अंतराल से उनके परिवारजन हिरनखेड़ा, इटारसी और खंडवा के निवासी हुए। तो मानो नियति को कुछ और ही लोककल्याण के कार्य कराने थे। १९०५ में जबलपुर से प्राइमरी टीचर्स ट्रेनिंग की परीक्षा उत्तीर्ण की। खंडवा को ही कर्मभूमि बनाया। किंतु भारत की भीतरी लय को गुना और शिक्षक पद से त्याग-पत्र दे दिया। फिर तो आजादी के महासमर की साधना में प्राणप्रण से संलग्न हो गए। १९१४ में भेड़ाघाट की यात्रा की। नर्मदा के अपूर्व सौंदर्य और अमरता को अंतरंग से निहारा तो भेड़ाघाट यात्रा-वृत्तांत में लिखा—'नर्मदा चाहे कितनी मर-मर करे, किंतु वह मरती नहीं है। शताब्दियों ने इसे अमर ही देखा है, इसे अमर ही देखेगी।' और इधर क्रांतिकारी देवस्करजी ने प्राथमिक ज्ञान दिया, 'मृत्यु से कभी भय नहीं खाना चाहिए।' यह भी बताया कि क्रांतिकारी तरुण को अपने यश की भूख नहीं होनी चाहिए। फिर तो मंत्रों से दीक्षित होकर माखनलालजी अत्यंत उत्साहित होकर क्रांतिकारियों के हमदर्द साथी बन गए।

लोकजीवन से उनका गहरा संबंध था। १९१६ में लखनऊ कांग्रेस अधिवेशन में वे ठेठ ग्रामीण वेश में ही गए। और यह संयोग ही रहा कि यहीं मैथिलीशरण गुप्त, बालकृष्ण शर्मा नवीन से परिचय हुआ। और फिर शिखर चढ़ते गए साहित्यिक प्रभामंडल से राशि जुड़ती गई तो ख्यातिलब्ध विभूतियों से प्रभा पत्रिका के संपादक के नाते उनका संपर्क माधवराव सप्रे, गणेशशंकर विद्यार्थी, कामता प्रसाद गुप्त, महावीरप्रसाद द्विवेदी, महात्मा मुंशीराम, पं. विष्णुदत्त शुक्ला से हुआ और वे प्रत्येक राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेते रहे।

सन् १९१८ उनका 'कृष्णार्जुन' नाटक प्रकाशित हुआ। पर उच्चतम, पवित्र ध्येय की प्रतिपूर्ति में कष्टकंटकों का वरण करना ही पड़ता है और ऐसा ही हुआ कि वे बीमार पड़ गए। इसी हालत में उनका इंदौर आगमन हुआ। यहीं पर उनका संपूर्णानंद और बनारसीदास चतुर्वेदी से परिचय हुआ। रुग्णता की स्थिति में ही महात्मा गांधी के सभापतित्व में होनेवाले हिंदी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन में आनेवाले लेखों की लेखमाला का संपादन कार्य किया। टेढ़ी-मेड़ी पगडंडियाँ तो गंतव्य तक पहुँचकर ही जीवन को गतिमयता प्रदान करती हैं और हाँ, माखनलालजी के जीवन में भी एक नया मोड़ आया कि १९२१ में काशी में गांधीजी का भाषण सुनकर वे सशस्त्र क्रांति के विचारों का त्याग कर गांधीजी के सहयात्री हो गए और यही नहीं, उनकी राजनीतिक गतिविधियों के साथ-साथ साहित्यिक गतिविधियाँ भी चलती रहीं। कहा गया है, 'करनेवाले से करतार हार जाता है।'

और फिर १९२० में 'कर्मवीर' का प्रकाशन जबलपुर से प्रारंभ हुआ। पर बाधाएँ तो सत्कार्यों से जुड़ी रहती हैं, सो कुछ समय कर्मवीर का प्रकाशन रुका रहा, पर पुन: १९२५ में खंडवा से कर्मवीर का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। तो कोई नवीन मंजिल जैसे राह देख रही थी। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्व. गणेशशंकर विद्यार्थी द्वारा माखनलाल चतुर्वेदीजी के जेल से छूटते समय माँगे गए संदेश के रूप में लिखी गई कविता, जो सर्वप्रथम प्रताप के १० अप्रैल, १९२२ के अंक में प्रकाशित हुई कालजयी रचना निम्नवत् है—

सुपरिचित लेखक। ग्राम रतवाड़ा, जिला होशंगाबाद (म.प्र.) में जन्म। चार कविता-संग्रह (साक्षरता, पर्यावरण, रेडक्रॉस पर आधारित) तथा पत्रिकाओं में विविध रचनाएँ प्रकाशित। अनेक स्थानीय संस्थाओं द्वारा सम्मानित।

मुझे तोड़ लेना वनमाली
उस पथ में देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जावें वीर अनेक।

हाँ, यहाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि 'जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से अधिक गौरवशाली होती है।' तो इसी संदर्भ की प्रतिपूर्ति में 'भारतीय आत्मा' माखनलाल चतुर्वेदीजी की उपर्युक्त पंक्तियों को विद्यानिवास मिश्रजी अपने निबंध 'जननी जन्मभूमिश्च' में लिखते हुए उद्धृत करते हैं कि 'स्वर्ग की कोई कामना नहीं रह जाती। तब एक कामना रह जाती है, 'मुझे तोड़ लेना वन माली··· । मातृभूमि पर··· ।' ओ! लोक में समादृत राष्ट्रीयता की भाव भूमि कितनी उर्वर थी। तो वैदिक वाङ्मय से लेकर लौकिक साहित्य-रामायण, महाभारत में असंख्य स्थल देशभक्ति के मिल जाते हैं। इन ग्रंथों में कवियों ने मातृभूमि के प्रति अपना सहज अनुराग व्यक्त किया है तथा वैदिक युगीन राष्ट्रीय चेतना के जो अंत: सूत्र मध्ययुग में विरल हो गए थे, उनका फिर से समाहार किया गया। साहित्यिक क्षेत्र में जिस देशभक्ति की प्रतिष्ठा हुई, उसी की सामाजिक, सांस्कृतिक क्षेत्र में भी पुष्टि हुई। एक नया उन्मेष प्रकट हुआ। देशभक्ति की लहर पूरे देश की रग-रग में संचारित हो उठी। कैदी माखनलाल चतुर्वेदीजी के हृदय में उथल-पुथल मच जाती है कि आधी रात को कोयल बोल रही है। जेल में रहते हुए सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेयजी जेल की कोठरी में ही 'कैदी और कोकिला' को अपनी डायरी में उतारते हैं। निम्न पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं—

इस शांत समय में अंधकार को वेध रो रही क्यों हो?
कोकिल बोलो तो!
चुपचाप मुधर विद्रोह-बीज इस भाँति बो रही क्यों हो!
कोकिल बोलो तो!

और यह बात तो यहाँ का जनमानस जानता है कि माखनलालजी भवानी प्रसाद मिश्र की अंतरंगता से जुड़े हुए थे। मिश्रजी ने 'दादा' का शब्दचित्र इस प्रकार खींचा है, 'दादा ने लेख ही नहीं लिखे, भाषण ही नहीं दिए, कविताओं की अवतारणा नहीं की, उन्होंने कितने ही व्यक्तियों को भी बनाया है, मैं मेरे अपने शरीर पर उनके हाथों के स्पर्श और उनसे मिले हुए आकारों को स्पष्ट देख पाता हूँ। उनके वैष्णव मन ने कितने ही नास्तिक मनों की आस्था से सराबोर किया है। यदि मेरी टूटी हुई देह और हाथ से छूटे हुए मन ने साथ दिया तो मैं 'दादा' की रचनाओं को अधिकाधिक समझने की कोशिश करता रहूँगा, कर भी रहा हूँ।' और

दूसरी भाषा की बात है। प्रधानमंत्री सुरक्षा योजना में अमिताभ बच्चन कहते हैं कि अगर दुर्घटना हो जाए तो उसका लाभ आपको और घरवालों को मिलेगा। जब आप रहेंगे नहीं तो आपको लाभ मिलने का क्या सवाल है। अटल पेंशन योजना में लगभग ४० साल के व्यक्ति से कहते हैं–१८ वर्ष की आयु से ६५ या ६० वर्ष की आयु तक हर वर्ष एक निश्चित राशि जमा करोगे तो तुम्हें ६० या ६५ की आयु के बाद पाँच हजार रुपए हर महीने पेंशन मिलेगी। स्लैब बताना चाहिए, कितने साल पैसा जमा करने पर कितनी राशि मिलेगी। विज्ञापन में अपारदर्शिता और निश्चितता होनी जरूरी है। विज्ञापन की स्क्रिप्ट बनाने वालों के ध्यान देनी की बात है। सरकारी विज्ञापन में तो खासतौर से।

आज आनंदातिरेक होकर दादा की लीला स्थली सिवनी-मालवा की उजली उन्मुक्त लोकचेतना का रसास्वादन करना चाहता हूँ। ज्ञातव्य है कि माखनलालजी के काकाजी चतरखेड़ा में शिक्षक थे। उस समय उनके पिताजी ने अंग्रेजी शिक्षा के लिए उनके पास भेजा था। तब वे चतरखेड़ा से तीन किलोमीटर पैदल चलकर सिवनीमालवा अंग्रेजी पढ़ने जाते थे और यह गौरव की बात है कि १९७२ में सिवनी-मालवा में भवानी भाई अभिनंदन स्मारिका में उद्धृत है कि माखनलाल चतुर्वेदी ने सिवनी मालवा की कदेली, मोरन, गंजाल नदी के तट पर शताधिक कविताएँ लिखी हैं, तो जिनमें १९२२ में सिवनीमालवा में प्रणयन की हुई कविता की पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं—

स्मृति के मधुर बसंत पधारो
शीतल स्पर्श मंद मदमाती
मोद-सुगंध लिये इठलाती
वह कश्मीर कुंज सकुचाती
नि:श्वासों की पवन प्रचारों
स्मृति के मधुर बसंत पधारो!

मेरे लिए यह गौरव की बात है कि मेरी जन्मभूमि ग्राम रतवाड़ा के निकट ही उत्तर में भवानी भाई का गाँव टिगरिया है तो दक्षिण पूरब में जमानी गाँव हरिशंकर परसाई की जन्म स्थली रही है। और इसी ओर दक्षिण में ही हिरनखेड़ा गाँव के तालाब किनारे माखनलाल चतुर्वेदीजी के भाई रामदयाल चतुर्वेदीजी का हाईस्कूल चलाया जाता था। माखनलालजी यहाँ आते रहते थे। गाँव के दक्षिण में स्थित आम के पेड़ों के बीच इस स्थल को आज भी 'सुराज' के नाम से जाना जाता है। हिरनखेड़ा में जिस जायदाद पर रामदयालजी रह रहे थे, वह माखनलालजी द्वारा ही क्रय की गई थी। राजेश्वर गौर पूर्व प्राध्यापक महात्मा गांधी स्मृति महाविद्यालय इटारसी पैतृक निवास हिरनखेड़ा २३.११.०३ के पत्र में लिखते हैं— 'हिरनखेड़ा में माखनलाल चतुर्वेदीजी का योगदान इस प्रकार है, हिरनखेड़ा में स्वाधीनता पूर्व युग में साहित्यिक, सांस्कृतिक विरासत के रूप में कई व्यक्तित्व उभरकर आए थे, जिनका साहित्यिक और राजनीतिक योगदान अमूल्य था। इनमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व स्वनामधन्य राष्ट्रकवि माखनलाल चतुर्वेदी, भवानीप्रसाद मिश्र, हजारीलाल गौर एवं हरिशंकर परसाई हैं। उन्होंने अपनी काव्य रचनाओं के माध्यम से न केवल साहित्य की सेवा की है, अपितु तत्कालीन स्वतंत्रता संग्राम में भी अपना अमूल्य योगदान दिया।' चतुर्वेदीजी जब हिरनखेड़ा में निवास करते थे, तब यहाँ सुंदरलाल तपस्वी प्रभृति स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, जो उस समय भूमिगत थे और जिनके ऊपर अंग्रेज सरकार ने उनको पकड़ने के लिए इनाम रखा था। ऐसे व्यक्ति भी यहाँ निवास करते थे। तपस्वीजी का ग्रंथ 'भारत में अंग्रेजी राज' जब्त कर लिया गया था। उनके मझले भाई स्व. रामदयाल चतुर्वेदी सिवनी मालवा की जनपद पंचायत के अध्यक्ष पद पर आसीन रहे हैं। हाँ, मैंने अपनी सोलह-सत्रह साल की आयु में पिताजी से सुन रखा था कि स्व. श्री रामदयाल चतुर्वेदीजी सोनखेड़ी में मेरे दादाजी हरनाथ सिंह राजपूत के पास मिलने आते थे। पर मेरे पास तब वह दृष्टि नहीं थी। पं. माखनलाल चतुर्वेदी का आध्यात्मिक जीवन का काफी भाग सिवनी मालवा, बानापुरा, चतरखेड़ा, हिरनखेड़ा में बीता। सन् १९२६ में हिरनखेड़ा में लिखी कविता इस प्रकार है—

जागृति के प्रलय पुंज
गति के गति-दाता।
ऐ गुणेश ऐ गणेश
ऐ महेश के निर्देश
श्वेतकेश, श्वेत वेश
हिम गिरि-सा श्वेत देश॥

स्वतंत्रता संग्राम में नर्मदा घाटी का विशेष योगदान रहा है तो मूलत: पं. माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य व्यक्तित्व में स्वतंत्रता संग्राम का जयघोष नि:सरित होता है यथा—'हिमकिरीटनी', 'हिमतरंगिनी', 'माता', 'समर्पण', 'युगचरण', 'वेणु लो गूँजे धरा', 'बीजुरी काजर आँज रही' आदि इनके काव्य संकलन हैं तो 'साहित्य देवता', 'अमीर इरादे', 'गरीब इरादे' निबंध संकलन हैं। 'कला का अनुवाद' कहानी संकलन है तथा 'कृष्णार्जुन युद्ध' प्रसिद्ध नाटक है। दादा माखनलालजी अपनी जन्मभूमि बाबई से जब कर्मपथ की यात्रा पर निकल पड़े तो जीवन के अनेक पड़ाव पर उतार-चढ़ाव को देखते हैं। बारह बार जेल यात्राएँ कीं तो तिरसठ बार तलाशी हुई है। पर लोकजीवन तो उनकी अंतरात्मा में विराजित था। उनके साहित्य में आंचलिक भाषा का आना सहज ही था। संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग करना संस्कृत के प्रारंभिक ज्ञान का ही प्रतिफल था। रुग्णता की काया में नई स्फूर्ति और यौवन का राग अनुप्राणित था। युगीन जीवन के यथार्थ का आविर्भाव उनकी वाणी में प्रकट होता है—'नर्मदा मेरे लिए पुण्य क्षेत्र ही नहीं है, वह विश्व का सौंदर्य समझाने वाली है। मेरे जीवन की शिक्षिका भी है।' आपने नर्मदा के नादंनेर, आवली घाट, भिलाड़िया घाट, गोंदा गाँव, जनमासा, बुधनी

पुल और होशंगाबाद घाट को देखा है और यहाँ के नदी, पहाड़ बाग-बगीचों को भी देखा ही है तो नर्मदा के तट का वह दीप्त राग 'बीजुरी काजल आँज रही' में प्रस्फुटित होता है—

विंध्या में बहार आई है
दौड़ नर्मदा गुण गाती है
फूल मिले जाते धूली में
उनको रोक नहीं पाती है
सिर चढ़कर नीचे गिरने में
फिर उठने की हूलन देखो,
इन फूलों की झूलन देखो!

और हम अब फिर बाबई की उस बहार को देखना चाहते हैं, कैसा उत्साह है, उमंग है, उत्सव है। १९२३ के बाबई नगर में पं. माखनलाल चतुर्वेदी, महात्मा भगवानदीन, तपस्वी सुंदरलाल पधारे। सभा व्यवस्था ग्राम में स्थानीय माध्यमिक शाला के शिक्षकों और विद्यार्थियों ने सक्रिय सहयोग दिया। और यहाँ की सभा संपन्न होते ही पुण्य सलिला नर्मदा एवं तवा के संगम स्थल बांद्राभान में लगनेवाले मेला में माधवराव सप्रे के भी आने के साथ वृहद सम्मेलन को राष्ट्र का संदेश सुनाया। बाबई जैसे छोटे से कस्बे की गली-गली में स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। हाँ, उन महापुरुषों में से एकमात्र जुगलकिशोर सोनीजी ही बाबई को गौरवान्वित कर रहे हैं, किंतु ९७ वर्ष की आयु के चलते हुए वे अत्यंत लाचारी का जीवन जी रहे हैं। ओ! हमारे रोम-रोम तो उत्फुलित होकर स्फुरित हो रहे हैं, क्योंकि बाबई के राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास प्राय: लोकमान्य तिलक के 'स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और हम उसे लेकर ही रहेंगे।' तथा 'वंदेमातरम्' जैसे अमर संदेशों से प्रभावित होकर आरंभ होता था। और यह रहा बाबई के रामलीला मैदान की पुण्य भूमि में मंगलवारा बाजार। हाँ, इसी भूमि पर प्राइमरी शाला में पढ़ते समय माखनलालजी रामलीला में राम और लक्ष्मण का चरित्र अभिनीत करते थे। तो लोक जीवन की वह करतल ध्वनि का जयघोष तो अब भी गुंजरित है। तो प्यारेलाल गुरु के सत्प्रयासों से ७ जनवरी, १९३४ को बापू बाबई पधारे! और यहाँ आने से पहले सोहागपुर की सभा में यह कहते हुए मंच पर पधारे, 'जल्दी करो बाबई जाना है।' रात्रि ८:३० बजे मंगलवारा बाजार के मंच से कहा, ''३० तारीख को नहीं आ सका आप लोगों को बड़ा कष्ट हुआ, इसलिए मैं माफी माँगता हूँ।'' बाबई भाई मक्खनलाल की जन्मभूमि है, इसलिए पहले से ही यहाँ आने की मेरी इच्छा थी। मैं यहाँ पैसा लेने नहीं आया। पैसा तो देश में बहुत मिल जाएगा। पर बाबई का सहयोग तो अपेक्षित था। एक थैली बाबूलाल डेरिया के हाथों भेंट की गई।

आजादी का जो बीड़ा उठाया था उस पुण्य कार्य में माखनलालजी जुटे रहे हैं। १९३९ में त्रिपुरी कांग्रेस में उन्होंने युवकों को संबोधित किया। वह उनकी भाषण शैली की एक मिसाल है। तो 'चिंतक की लाचारी' में उनके चौदह भाषणों का संग्रह ही है। होशंगाबाद जिले में वे समय-समय पर आकर तरुणों में राष्ट्रीयता का मंत्र फूँकते रहे हैं। और जब हम बाबई के बस स्टैंड के पास ही नगर पंचायत द्वारा 'दादा' माखनलाल चतुर्वेदी की स्थापित मूर्ति के पास आकर निहारते हैं तो लगता है, आज भी दादा ऋचाएँ उचार रहे हैं तो इसी छोटे से परिसर में स्थापित मूर्ति के पूर्वी भाग में कविता उत्कीर्ण की हुई है तो सचमुच लगता है, 'दादा' कविता पाठ कर रहे हैं—

द्वार बलि का खोल, चल भू डोल कर दे।
एक हिमगिरि, एक सिर का मोल कर दे॥
मसलकर अपने इरादों-सी उठाकर।
दो हथेली हैं कि पृथ्वी गोल कर दे॥
रक्त है या है नसों में क्षुद्र पानी।
जाँच कर तू शीश, दे-देकर जवानी॥
चढ़ा दे स्वातंत्र्य, प्रभु पर अमर पानी।
विश्व माने तू जवानी, है जवानी॥

वर्ष १९५४ में हिमतरिनी पर साहित्य अकादेमी पुरस्कार मिला। १९५९ में सागर वि.वि.से डी. लिट् की उपाधि और १९६३ में पद्मभूषण। १९६५ में म.प्र. शासन द्वारा नागरिक सम्मान। इतना सम्मान मिला, किंतु आत्मा को जो अच्छा नहीं लगा, तब वह सम्मान भी उन्हें लौटाने में देर नहीं लगी। १९६७ में राजभाषा विधेयक के विरोध में पद्मभूषण की उपाधि लौटा दी। यह सत्य है कि लोक कल्याण के निमित्त किए गए कार्य ही लोक में रह जाते हैं। यह शरीर तो एक दिन छूटता ही है। सो आत्मा तो परमात्मा में विलीन हो जाती है और हुआ भी वही कि ३० जनवरी, १९६८ के दिन दादा माखनलाल चतुर्वेदीजी का महाप्रयाण हुआ। तो यह शाश्वत सत्य है कि माखनलाल चतुर्वेदीजी द्वारा किया गया साहित्यिक और स्वतंत्रता सेनानी के रूप में किया गया पुण्य कर्म तो आज भी प्रासंगिक है।

आज बाबई की गलियों से भ्रमण करते हुए शाला में लौट आया हूँ तो कानों में बाबई के स्वतंत्रता संग्राम की झंकार है। 'दादा' की अनंत, अनंत कालजयी यात्राओं की स्मृतियाँ हैं। कवि ने ममतामयी माँ के महत्त्व को लक्ष्य कर लिखा है, 'मेरे जीवन की कोमलतर घड़ियों का आधार मेरी माँ है।' तो यह स्तुत्य वाक्य तो अनुकरणीय है। हाँ, तो उनके ज्ञान लोक की छाया है। जीवन के राग, रंग, लय हैं। असंख्य कंठों की टेर है। मिट्ठी से सने हुए सहयात्रियों की दौड़-धूप में पूरे देश की आंतरिक लय में लय मिलाते हुए 'वंदेमात्रम, वंदेमात्रम' के ओजस्वी स्वरों की गूँज है। अंततोगत्वा आज हमारे अंतर्निहित भावों में यह आभास बना रहे कि परतंत्रता की बेड़ियों को तोड़ने के लिए जिन महापुरुषों ने अपनी पगथली में काँकरी-साँकरी की जो चुभन सही है, उसका अहसास होता रहे। यह भावोदय बना रहे कि हर हाथ को साथ लेकर चलें। माखन नगर की पुलकित धरती से शोध और अध्ययन को अँकुराने दें, पनपने दें, पल्लवित होने दें।

शा.मा. शाला बाबई माखन नगर
जिला-होशंगाबाद (म.प्र.)
दूरभाष : ९९२६५४४१५७

कहानी

गंध-माधव

● वासुदेव

एक कदम से छोटा गाँव रामपुरा। मुश्किल से सौ-सवा सौ घर। हजार-नौ सौ की आबादी। कुर्मी, ब्राह्मण, सूरी, मुसलमान और लोहरा। पर कुर्मी लोगों की बहुलता। उसके बाद कुम्हार, फिर सारी जातियाँ। पूरब-उत्तर दो ओर से घाघरा नदी, पश्चिम की ओर पक्की सड़क और दक्षिण से गुजरती रेल लाइन। इसी के बीच में उपजाऊ जमीन—ऊपर बार भी, धनहर भी। लाइन के दक्षिण की ओर केवल धनहर जमीन। पर डूब नहीं। अधिकांश आबादी गरीबी रेखा के नीचे। गिनती के आठ-दस पैसेवाले। गाँव में अभी किसानी जीवित है, खेती भी। पर उससे पूरा नहीं पड़ता। लोग कुली-मजदूरी का काम करने असम-बंगाल जाते रहते हैं। इधर तिरपुर जाने का भी प्रचलन बढ़ा है। वैसे जब से लाल-पीले कार्ड पर सस्ती दर से गेहूँ, चावल, मिट्टी तेल, नमक, साबुन आदि मिलना शुरू हुआ है, तब से गरीबों की हालत थोड़ी सुधरी है। पर पैसे का अभाव तो बना ही रहता है। किंतु गाँव है, दु:खं-सुखम् जिंदगी की गाड़ी तो घिसटती ही रहती है। उपाय भी क्या है। इस गाँव में बाँसबाड़ी और गाछी बहुत है, जिसका मुख्य कारण है जमीन का टुकड़ों-टुकड़ों में बँट जाना। खेती न सही, दो कोठी बाँस और आम के दो गाछ तो हो ही सकते हैं। मेहनत भी कम। साल में एक-दो बार ताम कोड़कर घास-फूस जंगल-झाड़ साफ कर देने से भी बात बन जाती है। विकल्प भी क्या है! यदि ऐसा नहीं किया गया तो खेत पड़ती पड़ जाते हैं। फिर तो खेत बंजर बन जाते हैं। जमीन भी चारों ओर से सिकुड़ने लगती है। गाँव में जमीन सिकुड़ने का धंधा तो प्राचीन काल से फलता-फूलता रहा है। अब क्यों थमने को···!

गाँव से निकलनेवाली पूरबारी सड़क के किनारे आम और बाँस से घिरे दो-ढाई कट्ठे के प्लॉट में माधव महतो का घर और बाड़ी हैं। घर क्या है, एसवेस्टस के दो कमरे, सामने आँगन, नीचे ईंट ऊपर मिट्टी की दीवाल, बीच में दरवाजा और सामने पानी पीने, नहाने-धोने के लिए एक चापाकल। इधर आकर उसने यह सब किया है—रिटायरमेंट के बाद जब वह शहर से गाँव में बसने आया था। पत्नी भी है साथ में। हालाँकि दोनों बहुएँ चाहती थीं कि सास शहर में ही बारी-बारी से दोनों के साथ रहे। पर गाँव में पति को खाना कौन देता? बहाना बनाकर वह भी गाँव भाग आई थी। हाँ, एक तरह से शहर से भागकर ही गाँव आए थे दोनों। सास-ससुर तो चाहते ही हैं कि बेटा-बहू और पोता-पोती के साथ शहर में ही रहें और बहू के हाथ की रोटी खाएँ। पर यह सौभाग्य कितनों को नसीब होता है!

हाँ तो, माधव तब गया था शहर, जब इक्के-दुक्के लोग पैसे की

सुपरिचित साहित्यकार। अब तक 'इस जंगल के लोग', 'नई बहू की आँखें', 'पुँश्चली', 'दहशतगर्द', 'शामगाह', 'महापाश', 'सुबह के इंतजार में', 'निगोड़ी' (कहानी-संग्रह); 'अरण्यगाथा', 'गाँव-गंध', 'नई बहुरिया' (उपन्यास) प्रकाशित। कई सम्मान तथा पुरस्कारों से सम्मानित।

चाहत मैं शहर जाते थे। पर इसके साथ तो मजबूरी थी। बात ऐसी थी कि उस साल चारों ओर घोर अकाल छा गया था। दम घोंटू सूखार। लोग-बाग तो जानवर को खिलाए जानेवाले अमेरिकी गेहूँ का भात और खिचड़ी खाते थे। प्राण बचाने के लिए लोगों को यह भी कहाँ मिलता था। पशुओं की हालत तो और बदतर थी। बाँस, केला, ताड़, सीसम, आम आदि के पत्ते खाकर वे सब किसी तरह अपनी जान बचा रहे थे। पानी का घोर संकट था। कुआँ, तालाब, नहर, नाला सब सूख रहे थे। हिंदू हैं तो गाय, बैल, भैंस आदि पालना ही है। दूध, मट्ठा, घी, दही, गोबर-करसी सब उसी से तो होते हैं। और जानवर खाता क्या है! घास, पुआल, भूसा, चोकर यही सब तो। खाने के बदले तो गोबर-मूत दे ही देता है और दूध तो बोनस में, और फिर उनके बच्चे···।

माधव महतो भी एक गाय-बैल खूँटा पर रखे हुए था। अधरिया पर हलबाही करता था। जब हल बेचता था, किसान पंद्रह रुपए देता था। उसी से घर का खर्च चल जाता था। पर उस सूखार में हल-बाही कहाँ! जब आदमी के खाने के लाले पड़े थे, तो जानवर को कौन पूछता! उसने भी अपना बैल बेच दिया था। पर गाय की आँखों के आँसू उससे देखे नहीं गए थे। उसे रहने दिया था। पर वह भी सूखकर काँटा हो रही थी। खाना ही नहीं मिलता था। चारा भी कहाँ था! सूखी धरती में तो दरार पड़ी थी और अंदर से धुआँ उठ रहा था। एक दिन वह बैल की पूँजी से भाड़ा भर पैसा निकालकर एक ट्रक-ड्राइवर के साथ असम में सिलचर के लिए निकल पड़ा था। गाँव में पत्नी और दोनों बच्चे रह गए थे और रह गई थी वह अधमरी गाय।

□

सिलचर पहुँचने के दूसरे-तीसरे दिन ही एक चाय की गुमटी में उसे काम मिल गया था। ड्राइवर तो रात-दिन देश-प्रदेश घूमता रहता था। पर माधव दुकान चलाता था। वह दिनभर चाय बेचता, सुबह-शाम गुमटी में ही चाय के चूल्हे पर खाना बनाता था और रात में वहीं खाद्य

निगम कार्यालय के शेड में पड़ जाता था। मालिक खुश था कि माधव रात-दिन दुकान में ही रहता है। थोड़े दिनों के बाद वह उसे पैसा भी देने लगा था। वह चाय-पकौड़ी बनाने की कला में निपुण हो गया था। दुकान में सुबह-शाम ग्राहकों की भीड़ उमड़ने लगी थी। बिक्री बढ़ गई थी, कमाई भी और इसके साथ माधव की तनख्वाह भी। वह हर माह गाँव पैसा भेजने लगा था।

चाय-पकौड़ी ले जाने के क्रम में ऑफिस के बड़े बाबू से उसका खासा परिचय हो गया था। एक दिन उन्होंने पूछा था, 'नौकरी करोगे?' वह गूँगा-बहरा सा विस्फारित आँखों से उनकी ओर देखता रह गया। बड़े बाबू ने जैसे उसे न जाने क्या कुछ कह दिया था। तब उन्होंने ही आगे कहा था, 'एफ.सी.आई. में लेबर की बहाली हो रही है। कल आ जाना। फॉर्म भर देंगे।' वह चुपचाप हँसता रहा था। जैसे नौकरी उसके लिए दूर का तारा हो और सचमुच मजदूरी की सूची में एक नाम उसका भी जुड़ गया था। वह एफ.सी.आई. में लेबर बन गया था। हर माह तनख्वाह मिलने लगी थी। लगे हाथ वह भी हर माह गाँव मनीऑर्डर करने लगा था।

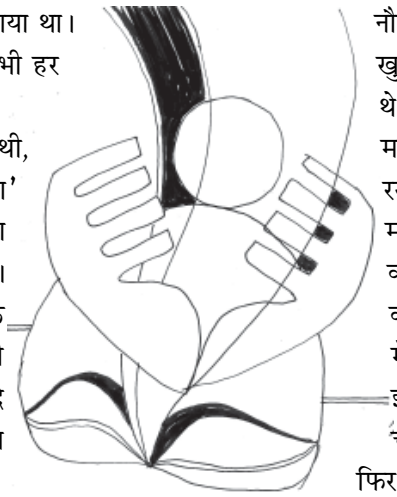

धीरे-धीरे जब उसकी नौकरी पक्की हो गई थी, तब एक दिन वह गाँव आया था, जमीन को 'कटकेना' पर लगा दिया था, गाय बेच दी थी और पत्नी तथा बच्चों को शहर ले आया था। किराए का मकान था। ड्राइवर सप्ताह-दस दिनों में शहर आता था तो एक कमरे में वह रह जाता था, नहीं तो पूरे मकान पर उसी का कब्जा था। वैसे हर माह आधा किराया ड्राइवर दे देता था। वह जब तक रहता, उसके खाने-पीने का सारा इंतजाम माधव की बहू करती थी।

गोदाम में ओवर टाइम खूब चलता था। रात-बिरात ट्रक आते रहते थे। ओवर टाइम से माधव की अच्छी कमाई हो जाती थी। उसने अपने दोनों बच्चों के नाम पास के स्कूल में लिखवा दिए। कभी माधव तो कभी उसकी पत्नी हाथ पकड़कर बच्चों को स्कूल में छोड़ आती थी। दोनों पति-पत्नी अब खुश थे। जीवन की गाड़ी पटरी पर आ गई थी। माधव में कोई बुरी आदत भी नहीं थी। वह पैसा कमाना जानता था तो बचाना भी जानता था। पर घर की असली लक्ष्मी तो पत्नी थी—गंधी! दरअसल, उसका नाम गंधवा था, पर लोग उसे गंधी ही कहने लगे थे और धीरे-धीरे उसका यही नाम प्रचलित हो गया था। लेकिन माधव उसे प्यार से गंध कहता था। वह कहता, 'तुम्हारी सुंदर कोमल देह से कमल-गंध सी खुशबू आती रहती है, जो पुरुष को कामोत्तेजित करती रहती है। इसीलिए नौकरी पक्की होते ही मैं तुमको शहर ले आया! मुझे डर था, कहीं यह गंध दूसरे को न लग जाए और वह तुम्हारा प्यार पाने के लिए पागल न हो जाए।'

तब वह बहुत हँसी थी। 'देह की गंध!···खुशबू! कामोत्तेजित! क्या होती हैं ये सब।'

'तुम नहीं समझोगी गंध। हर स्त्री-पुरुष की देह की एक विशेष खुशबू होती है, जिसे 'देह-गंध' कहा जाता है। इस देह-गंध को स्त्री का पति अथवा पुरुष की पत्नी ही जानती है, दूसरा नहीं। स्त्री-पुरुष के बीच के आकर्षण का सबसे बड़ा कारण यही देह-गंध होती है!'

पत्नी हँसी थी, 'मुझे भी कभी-कभी ऐसा लगता था। पर तब मैं ध्यान नहीं देती थी। पर आज जब तुमने ऐसा कहा, तब सारी बातें मेरी समझ में आ गईं।' इसी तरह हँसी-खुशी के बीच माधव के जीवन की गाड़ी चलती रही थी।

□

धीरे-धीरे दोनों बच्चे सयाने हो गए थे। कोशिश-पैरवी और पैसे खर्च करके दोनों बेटों को दो विभाग में नौकरी लगवा दी थी—बड़का को बैंक में चपरासी की नौकरी मिल गई थी और छोटका भारतीय खाद निगम में मजदूर बन गया था। इस से ज्यादा की न तो माधव की औकात थी और न ही वह उम्मीद ही कर सकता था। दोनों बेटों को पढ़ा-लिखाकर नौकरी लगवा दी, दोनों पति-पत्नी के लिए इससे बड़ी खुशी की बात और क्या हो सकती थी? दोनों बहुत खुश थे। अब वे उनकी शादी की बात सोचने लगे थे। उसके मामा ने तो गाँवों में ही दो-तीन लड़कियों को पसंद कर रखा था। बात भी आगे बढ़ रही थी। इस काम को लेकर माधव दो-तीन बार गाँव भी गया था। वह दोनों बेटों की शादी गाँव से ही करना चाहता था और एक साथ करना चाहता था। लेकिन उसकी बड़ी अभिलाषा शहर में जमीन खरीदकर एक झोंपड़ी खड़ी करने की थी। इसलिए वह बेटों की शादी से पहले मकान बना लेना चाहता था। नौकरी के पैसे बच्चों की पढ़ाई-लिखाई और फिर उनको नौकरी दिलाने में खर्च हो गए थे। पर बोनस, ओवर टाइम और एरियर तथा पत्नी ने जो पैसे जोड़कर रखे थे, उन सबको मिलाकर उसने जमीन खरीद ली थी और रिटायरमेंट के समय जो पैसे मिले थे, उससे उसने चार कमरों का एक दो तल्ला मकान बना लिया था। मकान प्राय: सभी आवश्यक सुविधाओं से लैस था। दो कमरा, किचेन और लैट्रीन-बाथरूम नीचे तथा उतना ही ऊपर भी। सीढ़ी बाहर से थी। मकान के चारों ओर बाउंडरी थी और सामने गेट था। गेट के पास ही एक सफेद संगमरमर पर काले अक्षर में लिखा था, 'गंध-माधव'। बेटों की शादी और अपना नया मकान, सब-के-सब फूले नहीं समा रहे थे। सब खुश थे। पर किसे पता था कि जीवन की यह खुशी अस्थायी है। सेवा-निवृत्ति के कुछ ही वर्षों बाद तक तो वह खुशी कायम रह पाई थी। फिर तो न जाने किसकी नजर लग गई थी।

बेटे और बहुओं के समक्ष पति-पत्नी कमजोर पड़ जाते हैं। पहले तो दोनों ने आपस में बँटवारा कर लिया। छोटे लड़के ने ऊपर का फ्लोर लिया और बड़के ने नीचे का। माधव और उसकी पत्नी के हिस्से गैरेज पड़ा था, जिसमें किसी तरह दोनों अपना जीवन-निर्वाह करने लगे थे। दोनों बहुओं का फैसला था कि सास-ससुर एक-एक माह बारी-बारी से दोनों बेटों के घर में रहेंगे, यानी जब सास एक माह के लिए छोटे बेटे

के घर में रहेगी तो ससुर एक माह बड़े बेटे के घर में रहेंगे। पर दोनों को यह बँटवारा अच्छा नहीं लगा था। इसलिए दोनों ने गैरेज में रहना पसंद किया था।

माधव के हाथ में पैसे तो थे नहीं। सारे पैसे तो पहले ही खर्च हो गए थे। अब तो पेंशन पर ही सारा दारोमदार था, जो बहुत कम थी। दोनों बेटे किसी तरह हर माह हजार रुपए दे पाते थे। अब तो वही दोनों की पूँजी थी। यही पहले के कुछ पैसे बच भी रहे थे तो वे उसने बुरे दिनों के लिए छिपा रखे थे। बेटे-बहू का क्या भरोसा! वैसे भी दोनों बहुओं का व्यवहार ठीक नहीं था और बेटे भी बहुओं का ही पक्ष लेते थे। उनकी बातों से बेचारी सास तो कभी-कभी रो पड़ती थी। विशेषकर देह-नेह होने पर दोनों 'बेचारे' हो जाते थे। तब माधव पत्नी को समझाने का प्रयास करता, 'क्या करोगी री भागवान! दुनिया का दस्तूर यही है। भगवान् से इनके लिए दुआ करो कि ये सब खुश रहें। इसी में हम दोनों की भी खुशी है।' पर पत्नी भला क्या बोलती? चुपचाप आँसू टपकाती रहती। तब माधव ने ही कहा था, 'मेरा मन गाँव लौट चलने का हो रहा है। इन लोगों पर बोझ बने रहने से अच्छा होगा कि हम लोग खुद इनकी आँखों से ओझल हो जाएँ!'

'इन सबकी बेरुखी से मेरा मन भी दुखने लगा है। गाँव चलकर रहना ठीक रहेगा।' और फिर दोनों मन पर पत्थर रख गाँव जाकर रहने लगे थे।

''पर कितने अरमानों से हमने जमीन खरीदकर शहर में अपना मकान बनाया था! कैसे-कैसे ख्वाब पाल रखे थे! अब दोनों अपने इस घर से बेघर हैं! जबकि दोनों अभी जीवित हैं, लगता नहीं है कि माँ-पिताजी को इस उम्र में हमारे साथ रहना चाहिए था, जबकि वे दोनों गाँव में न जाने किस स्थिति में पड़े हैं···।'' वह बोलते-बोलते हकलाने लगा था। गला भर आया था। आँखें डबडबा आईं। अँगोछे से आँखें पोंछने लगा था।

अब तक छोटका की बातों से बड़का भी भाव-विह्वल हो उठा था, ''माँ-पिताजी की याद मुझे भी आती रहती है। अब इस उम्र में उन्हें हम लोगों से अलग नहीं रहना चाहिए था। पर वे दोनों यहाँ नहीं ठहरे तो हम क्या करते? शायद उन्हें अपना गाँव ही अच्छा लगता हो। अपनी माटी का मोह सबको होता है। और उनको तो गाँव में रहने की आदत है।''

''पर मुझे तो डर लगता है! भोर का सपना था···।''

''अरे सपना सच थोड़े होता है। न जाने लोग रोज कितने सपने देखते हैं। रात को देखते हैं और आँख खुलते ही भूल जाते हैं।'' बड़का जितना बोलता था, उससे कहीं अधिक छोटका के चेहरे का अध्ययन करता जाता था। वह किसी तरह छोटका को सांत्वना देना चाहता था। उसने आगे कहा, ''हम लोग तो शहर में पले-बढ़े। पर उनका जन्म-करम, पठन-पाठन तो गाँव में ही हुआ था। उनके बेटा-बहू तो शहर में हैं, पर बाकी सारे लोग तो गाँव में ही हैं। तू कितना भी कुछ करेगा, गाँव की ओर उनका मन भागेगा ही। चिंता न करो। वे वहाँ ठीक होंगे।''

बहुत हद तक बड़का ने छोटका की जिज्ञासा शांत कर दी थी। कुछ हद तक माँ और पिता की ओर से उसे चिंता मुक्त भी कर दिया था। वह वैसा ही चाहता भी था, फिर भी छोटे की बातों ने उसके जेहन में माँ-बाप की स्मृति अवश्य ही ताजा कर दी थी, जिन्हें वह भूलता जा रहा था। परंतु उस सच्चाई को वह प्रकट होने देना नहीं चाहता था। अब तक दोनों बहुएँ अपनी-अपनी चाय लेकर बाहर आ गई थीं। फिर तो बातचीत का विषय ही बदल गया था।

□

यथा समय बड़े लड़के को पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई। चारों ओर खुशी की लहर दौड़ गई। चारों बहुत खुश हुए। धूमधाम से बच्चे की छठी मनाने की योजना बनी। बड़का ने पत्नी से कहा, ''छोटू को गाँव भेज देते हैं। माँ-पिताजी को बुला लाएगा। इस शुभ अवसर पर उनका रहना···।''

अभी पति का कहना खत्म भी नहीं हुआ था कि पत्नी बीच में ही पिनक उठी, ''नहीं, उनको नहीं बुलाना है। आपको पता नहीं, नवजात शिशु को माँ की भी नजर लग जाती है। वे तो दादी हैं! ऐसी गलती कभी मत कीजिएगा। जब बच्चा बड़ा हो जाएगा, तब उन्हें बुलाइएगा। मैं कोई आपत्ति नहीं करूँगी। पर इस शुभ अवसर पर नहीं। आप क्या जानें, वर्षों बाद मेरी गोद भरी है।''

पत्नी की बातों से उसे लगा, यह बहुत ही नाजुक मसला है। ऐसी घड़ी में अपने मन का करना ठीक नहीं है। उसने भी यह बात अपने मन से निकाल दी और छोटू को भी समझा दिया। वैसे भी उसे इससे कुछ लेना-देना तो था नहीं। पर जब उससे न रहा गया तो बोला, ''भइया, हम दोनों भी तो माँ के बेटे थे। क्या हमें उनकी नजर लगी थी, जो दादी की नजर पोते को लग जाएगी! इस अंधविश्वास से हम कब उबरेंगे, भैया?''

छोटे के तेवर को बड़का समझ रहा था। उसकी संवेदना के मर्म को भी महसूस कर रहा था। पर वह तो विवश था। उसने समझाने के अभिप्राय से कहा, ''तुम्हारा कहना सवा सोलह आना सही है छोटे। पर तुम्हारी भाभी अभी तैयार नहीं है। मैं क्या कर सकता हूँ। छोड़ो··· मटियाओ···।''

धूमधाम से छठी की तैयारी की गई। बड़का बैंक में मैनेजर के साथ रहता था। ऑफिस से लेकर घर तक का सारा काम वही करता था।···सब्जी, दूध, धोबी, बिजली-बिल, रसोई गैस आदि-आदि सारा कुछ उसके जिम्मे था। मैनेजर साहब से लेकर मैडम तक उसे खूब मानते थे। यही कारण था कि छठी में वे विशेष रूप से आमंत्रित थे। उनके साथ उनकी धर्मपत्नी और छोटा पोता भी, जो मुश्किल से साढ़े तीन साल का होगा, बहुत तेज-तर्रार! देखने में भी सुंदर, जैसे कृष्ण कन्हैया!

साहब बहुत अच्छे थे, साहिबा भी। शांति निकेतन के रहनेवाले थे। कहते हैं, शांति निकेतन को अस्तित्व में आने में उनके परिवारवालों की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। इनके पिताजी कलकत्ता के किसी कॉलेज में प्राध्यापक थे। ये वहीं से मैनेजर बनकर आए थे। मैडम महिला कॉलेज में प्राध्यापिका थीं और छात्रावास अधीक्षिका भी।

जैसे ही घर के सामने गाड़ी रुकी, घर के सारे लोग उनके स्वागत को दौड़े। नवजात शिशु बाहर पलना में सो रहा था। दोनों ने सबसे पहले उसे आशीर्वाद दिया, गिफ्ट का जो सामान था, उसकी माँ के हाथ में थमा दिया, फिर दोनों घूम-घूमकर मकान देखने लगे। ऊपर भी गए। दोनों भाइयों का शहर में अपना आशियाना है—दोनों बहुत खुश हुए। जब बाहर आए तो अचानक मैडम की नजर 'गंध-माधव' पर अटक गई। ''यह क्या है, दीप नारायण?''

दीप नारायण बड़े का नाम था और रूप नारायण छोटे का। माधव और उसकी धर्मपत्नी प्यार से दोनों को दीपू-रूपू पुकारा करते थे। पर मैनेजर साहब और उनकी पत्नी उसे दीप नारायण ही कहते थे। दीप नारायण जब तक जवाब देता, रूप नारायण बोल पड़ा, ''ये हमारे माता-पिता के नाम हैं, मैडम! माँ का नाम गंधी देवी है और पिताजी का माधव महतो। जब पिताजी ने यह मकान बनवाया था, तब हम दोनों भाइयों ने माँ और पिताजी के नाम का एक शिला-लेख खुदवाकर यहाँ सेट करवा दिया था। माँ के नाम से गंध शब्द लिया और पिताजी के नाम से माधव। 'गंध-माधव' हम दोनों को अच्छा लगा था।'' चारों मुसकराए।

मैनेजर साहब भी, ''वैरी गुड! हम देखना चाहेंगे। कहाँ हैं वे दोनों? अपने बेटे-बहू के लिए उन्होंने कितना बड़ा काम कर दिया! शहर में दो-तल्ला मकान खड़ा कर दिया! वे दोनों बधाई के पात्र हैं!''

मैनेजर साहब बोलते जा रहे थे और इधर सबको साँप सूँघ रहा था। भला इस खुशी की घड़ी में माँ-पिताजी कहाँ थे! साहब को क्या जवाब दिया जाए? दीप नारायण ज्यादा चिंतित था तो उसकी पत्नी भी कम चिंतित नहीं थी। आखिर थी तो वह गाँव-देहात की। शहर आने पर भी छल-प्रपंच, अंधविश्वास आदि की जो थोड़ी सी धूल मन-मस्तिष्क में जमी रह गई थी। उससे उसका संस्कार तो नहीं बदल गया था। तभी रूप नारायण ने साहब को समझाने का प्रयास किया, ''सॉरी सर, दरअसल इस खुशी के अवसर पर अस्वस्थता के कारण माँ-पिताजी गाँव से न आ सके। जैसे ही वे दोनों ठीक होंगे, हम लोग उन्हें शहर ले आएँगे। आखिर बच्चे को तो उनका आशीर्वाद चाहिए न सर!''

''थैंक यू वेरी मच!'' मैनेजर साहब ने मुसकराते हुए कहा, ''जरूर लाना! बच्चे को देखने के लिए दोनों तरस रहे होंगे। जानता है, आप लोग! लोग कहते हैं कि मूल से सूद ज्यादा प्यारा होता है। पौत्र रत्न को देखने को दोनों व्याकुल होंगे।''

''जी सर!'' अब तक दीप नारायण ने अपने को सँभाल लिया था। संवेदना के स्वर में बोला, ''समय भी कम था, सर। तबीयत ठीक होते ही उन्हें यहाँ बुलवा लेंगे। न होगा तो खुद चला जाऊँगा, सर।'' उसने हाथ के इशारे से आगे बढ़ने का अनुरोध किया। जहाँ भोजन की व्यवस्था थी। मैडम के साथ दोनों बहुएँ थीं।

चलते-चलते ही मैनेजर साहब कह रहे थे, ''तुम्हारे माता-पिता अवश्य ही महान् हैं। छोटी सी नौकरी से तुम दोनों को शहर में रखकर लिखाया-पढ़ाया और इस योग्य बनाया, यह उनकी बड़ी सफलता है। हर माता-पिता की यह दिली तमन्ना रहती है कि उसका बेटा पढ़-लिखकर अपने पाँव पर खड़ा हो जाए, तुम दोनों आज उनके कारण ही अपने-अपने पाँव पर खड़े होने का सुख भोग रहे हो। यह उनके लिए भी खुशी और सुकून की बात है और यह मकान उनके जीवन का एक अरमान होगा! इसमें उनका खून-पसीना मिला है!'' वे रुक-रुक जाते थे और चुप लगाकर मुसकराते भी थे। उन्होंने आगे कहा, ''और पौत्र-रत्न के जन्म की बात सुनकर तो उन दोनों की आयु ही बढ़ गई होगी। यू ऑल आर सो फॉरचुनेट, यानी तुम सब बहुत भाग्यशाली हो कि ऐसे माता-पिता तुम्हें मिले हैं! आज जब हम दोनों पति-पत्नी अपने-अपने पाँव पर खड़े हैं तो न तो हमारे पास मेरी माँ है और न ही मेरे पिताजी।'' कहते-कहते वे अचानक चुप लगा गए और चश्मा हटाकर रुमाल से आँखें पोंछने लगे।

अब तक सब लोग भोजन के करीब आ पहुँचे थे। उद्घाटन तो मैनेजर साहब को ही करना था। दीप नारायण ने पहली थाली साहब के हाथ में पकड़ा दी और उसकी पत्नी ने दूसरी थाली मैडम के हाथ में। फिर तो सब के सब अपनी-अपनी थाली लेकर पंक्ति में लगते गए।

रोहू, कतला, मृगा और सिल्वर मछली, परमल चावल, सलाद, पापड़ और दो तरह की मिठाइयाँ। मैनेजर साहब की पसंद को ध्यान में रखकर ही इस तरह के सामिश भोजन की व्यवस्था की गई थी। लोग चटकारे ले-लेकर खा रहे थे। वैसे शाकाहार की भी व्यवस्था की गई थी। कुछ लोग उधर भी जीम रहे थे। मैनेजर साहब और उनकी धर्मपत्नी ने जमकर भोजन की तारीफ की थी। भोजन भी जमकर किया था। जाने से पहले उन्होंने 'गंध-माधव' को केंद्र में रखकर मकान और इस पार्टी की कई तसवीरें खींची थीं। फिर दीप नारायण, बच्चा और उसकी माँ तथा पूरे परिवार की भी कई तसवीरें ली खींची थीं। बच्चा तो सो रहा था, फिर भी उसकी अलग से भी कई तसवीरें ली थीं। चलते समय उन्होंने कहा था, ''जब आपके माता-पिता गाँव से आएँगे तो हम लोग फिर आप लोगों से मिलने आएँगे।'' दोनों अपने बच्चों के साथ गाड़ी में जा बैठे थे। ड्राइवर गाड़ी उड़ा ले गया था।

पार्टी अभी चल ही रही थी। दीप नारायण पत्नी के साथ 'गंध-माधव' के पास रुक गया। दोनों बार-बार उसे ही देख रहे थे। तभी पत्नी ने कहा, ''सारी गलती तो मेरी है! न जाने उस दिन मेरी बुद्धि को क्या हो गया था! अब चाहे आप मुझे जो भी सजा दीजिए, पर माँ और बाबूजी को जाकर गाँव से ले आइए, नहीं तो मैं अपने को कभी माफ नहीं कर पाऊँगी।'' वह सिसकने लगी थी।

''चलो, देर से ही सही, तुमको अपनी गलती का अहसास तो हुआ। इनसान कुछ गँवाकर ही कुछ पाता है। आज मुझे भी तुम पर गर्व हो रहा

है। मैं कल ही गाँव के लिए रवाना हो जाता हूँ। छोटू की चिंता भी दूर हो जाएगी। अब चलो··· ।''

पार्टी समाप्त होते-होते ग्यारह बज गए और सबकुछ समेटते-बटोरते बारह। सब थके थे। बिछावन पर गिरते ही निंदिया गए थे। दीप नारायण सुबह की गाड़ी से निकल गया था। उसका मन-पक्षी तो कब से माँ और पिताजी के पास पहुँचने को आतुर था। पर जैसे-जैसे वह गाँव के करीब पहुँचता जा रहा था, उसके मन में डर सा समाता जा रहा था कि कहीं माँ-पिताजी शहर चलने से मुकर गए तो! क्या होगा? और उस 'क्या होगा' का जवाब उसके पास फिलहाल तो नहीं था और तब उसका ध्यान माँ-पिताजी के गाँव की ओर सरकने लगता था।

□

दस बजे के आस-पास गाड़ी गाँव के स्टेशन पर पहुँची थी। घर पहुँचते-पहुँचते साढ़े दस बज गए थे। घर सूना था। साँय-साँय कर रहा था। चारों ओर सन्नाटा पसरा था। घर में ताला लटक रहा था। कहीं कोई आहट न पाकर दीप नारायण बाहर ही नीम के पेड़ की जड़ पर बैठ गया, ताकि कोई मिले तो उससे माँ-पिताजी के बारे में पूछताछ की जाए। थोड़ी देर बाद ही बगल की मड़ई से एक दुलहिन निकली, जिसके हाथ में पानी से भरा लोटा था और दूसरे में नाश्ते की प्लेट। वह घूँघट किए हुए थी। अछता-पछताकर दीपनाराण ने अपने माता-पिता के बारे में उसी से पूछा तो उसने घूँघट की ओट से ही जवाब दिया, ''काम पर गए हैं!''

जो डर था, वही हुआ। आगे पूछा, ''कहाँ?''

''मनरेगा से सड़क बन रही है न, वहीं··· ।'' फिर वह अंदर चली गई।

दीपनारायण को जैसे साँप सूँघ गया हो। तो क्या सचमुच भोर का सपना सच होता है, छोटू ने भोर में जो सपना देखा था, वह तो सच निकला। वह और न जाने क्या-क्या सोचता रहा। उसकी आँखें भी नम हो आई थीं और पलकें भी भीग गई थीं। अब तक वह नई दुलहिन नीम-पेड़ की छाया में एक खाट डाल गई थी और उस पर चादर फैलाकर तकिया भी रख गई थी। दीप नारायण उसी पर पसर गया। पर उसकी आँखें भर आई थीं। आँसू का नाला थमने का नाम ही नहीं ले रहा था। तब तक दुलहिन चाय भी ले आई थी। वह अभी चाय से भरा कप हाथ में उठा भी नहीं पाया था कि उसके माता-पिता दोनों आ गए। वह खाट से उठकर दोनों के पाँव स्पर्श करने लगा तो उनका तो जैसे कलेजा जुड़ गया। वर्षों से जो आँसू आँखों में घर बनाए बैठे थे, वे लड़ी बनकर जब बाहर आने लगे तो वहाँ गंगा-यमुना बह चली और जब उसने पोते के जन्म की सूचना दी तो वहाँ तो जैसे आँसू के सागर ही उमड़ आए। प्रेम के आँसू, वियोग के आँसू, शिकवे-शिकायत के आँसू, मिलन के आँसू और न जाने कितनी तरह के आँसू! वे आँसू! तीनों की आँखों में आँसू!

दीप नारायण जान गया था कि माँ-पिताजी मनरेगा में मजदूरी करने गए थे। पर इसका कारण भी तो वे ही दोनों भाई थे। यदि दोनों गाँव नहीं आते तो क्या ये मजदूर बनते? जिस माँ-बाप ने जन्म दिया। आज वे ही रोटी को तरस रहे हैं और हम दोनों बेटे शहर में चैन की रोटी तोड़ रहे हैं। वह और न जाने क्या-क्या सोच रहा था। पर वह माँ-बाप के जख्मों को कुरेदना नहीं चाहता था। उससे तो सबकी पीड़ा बढ़ती ही! उसने माँ के सामने भूख का बहाना बनाया। वैसे भी खाना तैयार था। खाना खाकर वह सो गया। माँ-बाप के प्राण तो पोते में अटके थे। शामवाली गाड़ी से ही शहर चलने की बात पक्की हो गई। घंटे भर में ही सारी तैयारियाँ पूरी हो गईं।

दुलहिन ने दोनों बहुओं के लिए कुछ दाल-पूरियाँ बना दी थीं। जब वे लोग घर से निकलने लगे, तब दीप नारायण ने पूछा, ''माँ, ई नई दुलहिन कौन है?''

माँ ने हुलसकर बताया, ''यह तुम्हारी भाभो है, संजू की बहुरिया! संजू बाहर कमाता है। इसकी देख-रेख हम लोग ही करते थे। अब तो अकेली पड़ जाएगी बेचारी!''

धर्मशीला कुटीर
ग्राम : अरसंडे, पत्रा : बोड़ेया
जिला : राँची-८३४००६ (झारखंड)
दूरभाष : ९४३०३०३०९४

इस अंक के चित्रकार

संदीप राशिनकर

जाने-माने लेखक एवं चित्रकार। कई अखिल भारतीय कला प्रदर्शनियों में चित्रों का चयन व प्रदर्शन। राष्ट्रीय स्तर की पत्र-पत्रिकाओं में हजारों चित्रों/रेखांकनों का प्रकाशन, अनेक प्रतिष्ठित प्रकाशनों की पुस्तकों के आवरण।

भित्ति चित्रों (म्यूरल्स) के क्षेत्र में अनेक स्थानों/प्रतिष्ठानों पर भव्य म्यूरल्स का सृजन एवं अभिनव प्रयोगों से इस शैली में प्रतिष्ठित कार्य।

कविताओं के अलावा कला एवं साहित्य-संस्कृति पर समीक्षात्मक लेखन/प्रकाशन।

संपर्क : ११-बी, राजेंद्र नगर, इंदौर-४५१०१२
दूरभाष : ९४२५३१४४२२

चापेकर बंधुओं का बलिदान

● ऊषा निगम

भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन में ऐसा अनेक बार हुआ है, जब एक ही परिवार के अनेक व्यक्तियों ने मृत्यु का वरण किया। वीरों की इस शृंखला में सर्वप्रथम महाराष्ट्र के चित्तपावन ब्राह्मण चापेकर बंधुओं—दामोदर, बालकृष्ण और वासुदेव का नाम आता है। बंगाल क्रांतिकारी आंदोलन का केंद्र रहा, लेकिन सर्वप्रथम महाराष्ट्र में क्रांति की चिनगारी प्रकट हुई। पहले वासुदेव बलवंत फड़के और ठीक उसके बाद चापेकर बंधु।

वासुदेव चापेकर

महादेव रांडे

दामोदर चापेकर

बालकिशन चापेकर

यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि महाराष्ट्र में उस समय ऐसा क्या था, जो वहाँ की धरती पर ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध विद्रोह का विस्फोट हुआ। ऐसे विस्फोट जब कभी होते हैं, उसमें तत्कालीन आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक परिवेश का बड़ा हाथ होता है। महाराष्ट्र में भी ऐसा ही हुआ था। १९वीं शताब्दी के अंत में महाराष्ट्र में भयंकर अकाल पड़ा। अकाल जनित समस्याओं के समाधान के लिए सरकार की ओर से कोई ठोस कदम नहीं उठाए गए थे। महाराष्ट्र वासियों में घोर असंतोष व्याप्त था।

राजनीतिक दृष्टि से उस समय महाराष्ट्र को एक ऐसा अतुलनीय चिंतक और नेता मिला, जिसने महाराष्ट्र ही नहीं वरन् सारे देश की विचारधारा को प्रभावित किया। तभी श्रीअरविंद घोष ने तिलक के लिए लिखा था, ''जब तक देश को अपने अतीत पर गर्व और अपने भविष्य के प्रति आशा रहेगी, तब तक उन्हें कृतज्ञतापूर्वक याद किया जाता रहेगा।'' तिलक ने पहले 'गणपति उत्सव' और फिर 'शिवाजी उत्सव' समारोह आरंभ किए। इन समारोहों में गाए जानेवाले श्लोक, भजन और वहाँ दिए जानेवाले भाषणों में धर्म की आड़ में ऐसी द्वि-अर्थीय भाषा का प्रयोग किया जाता था, जिसके विरुद्ध सरकार कोई कदम नहीं उठा पाती थी। ये उत्सव अत्यधिक लोकप्रिय हो रहे थे, जैसा कि 'द मुंबई वैभव' पत्र ने ९ अप्रैल, १८९६ के अंक में लिखा था, 'उत्सव (शिवाजी उत्सव) एक स्थान से दूसरे स्थान पर संक्रामक रोग की तरह फैल रहा है।' इन उत्सवों में शिवाजी और उनकी नीतियों का वर्णन वर्तमान संदर्भों में किया जाता था। तत्कालीन पत्र जैसे 'महाराष्ट्र मित्र', 'पूना वैभव', 'सुधारक' और स्वयं तिलक का समाचार-पत्र 'केसरी' इन चर्चाओं से भरे रहते थे।

इसी समय १८९६ में बंबई, पूना में प्लेग फैला। स्थिति विकट थी। सरकार ने इस संकट का सामना करने के लिए ४ फरवरी, १८९७ में 'संक्रामक रोग ऐक्ट' पास किया। इस ऐक्ट को कार्यान्वित करने के लिए पूना में मि. रैंड को प्लेग कमिश्नर नियुक्त किया गया। उन्होंने सेना की सहायता से युद्ध स्तर पर बड़े अमानवीय रूप से भारतीय आस्थाओं और रीति-रिवाजों की अवहेलना करते हुए प्लेग की रोकथाम के प्रबंध किए। शहर से दूर स्थित कैंपों में पुरुषों एवं महिलाओं का अशोभनीय तरीकों से परीक्षण किया जाता था। इस सारी व्यवस्था में परदे की प्रथा का पूर्ण उल्लंघन हुआ। अस्पतालों में भी संतोषजनक प्रबंध नहीं थे। तत्कालीन समाचार-पत्रों के अनुसार अस्पताल जाने के स्थान पर लोग डूबकर मर जाना अधिक पसंद करते थे।

तिलक ने रैंड और सरकार की बहुत आलोचना की। उन्होंने ४ मई, १८९७ को 'केसरी' में लिखा कि 'बीमारी तो एक बहाना है, दरअसल सरकार लोगों की आत्मा को कुचलना चाहती है।' रैंड अत्याचारी है, और वह सरकार की सहमति से ही ऐसा कर रहा है। वस्तुत: रोग से अधिक रोग निवारण के उपाय कष्टप्रद हुए। यही वह पृष्ठभूमि थी, जिसमें चापेकर बंधु रह रहे थे।

कहने का तात्पर्य यह कि १९वीं सदी के अंत में महाराष्ट्र में अजीब तरह की बेचैनी और असंतोष था। कुछ था, जो भीतर ही भीतर सुलग रहा था। विस्फोट तो होना ही था। यह विस्फोट मि. रैंड की हत्या के रूप में हुआ और माध्यम बने दामोदर हरि चापेकर।

चापेकर बंधुओं के पिता प्रसिद्ध कीर्तनकार थे। यही कार्य उन्हें विरासत में मिला। लेकिन तीनों भाइयों का मन कीर्तन में नहीं लगता था। दामोदर हरि और बालकृष्ण तिलक के संपर्क में आए और उनके स्वयंसेवक दल के कार्यकर्ता बने। १२ जून, १८९७ में पहली बार शिवाजी उत्सव मनाया गया, जिसमें चापेकर बंधुओं ने बड़े उत्साह से हिस्सा लिया। उन्होंने शिवाजी उत्सव में जो श्लोक गाए, उसका अर्थ यह था कि केवल बैठे-बैठे शिवाजी की गाथा की आवृत्ति करने से आजादी नहीं मिल सकती है। हमें तो शिवाजी और बाजीराव की तरह कमर कसकर भयानक कृत्यों में जुट जाना पड़ेगा। अब आपको आजादी के

निमित्त ढाल व तलवार उठा लेनी पड़ेगी। सुनो, हम राष्ट्रीय युद्ध के मैदान में अपने जीवन का बलिदान कर देंगे और आज उन लोगों के रक्तपात से, जो हमारे धर्म को नष्ट कर रहे हैं, पृथ्वी को रँग देंगे। हम मारकर ही मरेंगे और तुम लोग घर बैठे औरतों की तरह हमारी कहानी सुनोगे।'

इसी प्रकार गणपति श्लोक में उन्होंने कहा, 'हाय! गुलामी में रहकर भी तुम्हें लाज नहीं आती? इससे अच्छा यह है कि तुम आत्महत्या कर डालो। उफ! दुष्ट हत्यारे, कसाइयों की तरह गोवध करते हैं, गौ माता को दयनीय दशा से छुड़ा लो। मर जाओ, किंतु पहले अंग्रेजों को मारो तो सही। चुप मत बैठे रहो। बेकार पृथ्वी पर बोझ मत बढ़ाओ। हमारे देश का नाम तो हिंदुस्तान है, फिर यहाँ अंग्रेज क्यों राज्य करते हैं?' ये श्लोक चापेकर बंधुओं की भावनाओं को प्रकट करते हैं। अंग्रेजों के प्रति असीम घृणा, उनके विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष की ललकार, अपने धर्म और देश की रक्षा की यह पुकार, निश्चित रूप से कुछ बदल रहा था।

दामोदर हरि फौज में भरती होकर फौजी प्रशिक्षण लेना चाहते थे। तिलक ने श्यामजी कृष्ण वर्मा (प्रसिद्ध क्रांतिकारी) से, जो उस समय उदयपुर के दीवान थे, दामोदर हरि को सेना में भरती करवाने के लिए कहा था। किंतु किन्हीं कारणों से ऐसा नहीं हो सका। फिर भी दामोदर हरि अपने स्तर से युवकों को सामरिक प्रशिक्षण के लिए प्रेरित करते रहे। इसी उद्देश्य से उन्होंने फर्ग्यूसन कॉलेज में भाषण भी दिया था। उनके प्रयत्नों के फलस्वरूप 'चापेकर संघ' नामक समिति की स्थापना हुई। इस समिति के देशभक्त नवयुवक विदेशी सरकार के विरुद्ध छोटी-छोटी घटनाएँ करते रहते थे। इस दल के किसी युवक ने बंबई में महारानी विक्टोरिया की प्रतिमा के मुख पर कोलतार पोता था और उन्हें जूतों की माला पहनाई थी।

यही वह समय था, जब पूना की जनता प्लेग तथा प्लेग को नियंत्रित करने के साधनों से पीड़ित थी। विदेशी सरकार मि. रैंड के माध्यम से मनमानी कर रही थी। दामोदर हरि का हृदय प्रतिशोध लेने के लिए विकल था। वे तो सिपाहियों को दंडित करना चाहते थे, लेकिन तिलक ने शाखाओं पर नहीं जड़ पर प्रहार करने का विचार दिया। यद्यपि रैंड को मारने की योजना में तिलक का कोई हाथ नहीं था।

दामोदर हरि ने रैंड को मारने की सफल योजना बनाई। दामोदर और उनके सहयोगियों ने कई सप्ताह तक रैंड की गतिविधियों पर, उसकी आदतों एवं उसके दैनिक कार्यक्रमों पर दृष्टि रखी। २२ जून, १८९७ को महारानी विक्टोरिया का राज्याभिषेक दिवस सारे देश में मनाया जाना था। इसी तिथि को रैंड की हत्या के लिए चुना गया। दामोदर और उनके सहयोगियों की पूरी टीम चौकन्नी थी। पूना शहर में राज्याभिषेक दिवस मनाया जा रहा था। रैंड और उनके सहयोगी एयर्स्ट समारोह से लौट रहे थे। उसी समय दामोदर ने रैंड पर और उनके सहयोगी रानाडे ने एयर्स्ट पर गोलियाँ चलाईं। एयर्स्ट की मृत्यु उसी समय हो गई तथा रैंड की मृत्यु ३ जुलाई को हुई।

सुप्रसिद्ध लेखिका। पत्र-पत्रिकाओं में लेख आदि प्रकाशित। 'कानपुर : एक सिंहावलोकन' स्मारिका भी। संप्रति पी.पी.एन. डिग्री कॉलेज, कानपुर में अध्यापन।

इस घटना ने पूना में हलचल मचा दी। सरकार के समक्ष यह स्पष्ट हो गया कि यह हत्या किसी सोची-समझी राजनीतिक षड्यंत्र का परिणाम है, जिसे एकजुट होकर दबाना है। अपराधियों को पकड़ने के लिए बीस हजार रुपयों के इनाम की घोषणा की गई। धन के लालच में चापेकर संघ के ही एक सदस्य गणेश शंकर द्रविड़ ने दामोदर को पकड़वाने में पुलिस की मदद की। ९ अगस्त को दामोदर पकड़े गए। उन्होंने रैंड की हत्या के साथ ही यह भी स्वीकार किया कि उन्होंने ही तिलक की आलोचना करनेवाले स्थानीय पत्रों के दो संपादकों पर भी आक्रमण किया था। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि उन्होंने ही विक्टोरिया की प्रतिमा के मुख पर कोलतार पोता था, उन्हें जूतों की माला पहनाई थी, और यह भी कि उन्होंने बंबई विश्वविद्यालय के मंडप में तथा पूना के मंडप में भी आग लगाई थी। कुछ समय के बाद बालकृष्ण भी पकड़ लिये गए।

पुलिस को दामोदर के छोटे भाई वासुदेव पर भी संदेह था। किंतु वासुदेव सरकार के प्रति वफादारी का दिखावा करते रहे। वह मन-ही-मन में अपने बड़े भाई को पकड़वाने में मदद देनेवाले द्रविड़ बंधुओं को मारने की योजना बना रहे थे। अपने दो सहयोगियों साठे और रानाडे की मदद से उन्होंने सफलतापूर्वक अपनी योजना को अंतिम रूप दिया और दोनों द्रविड़ बंधु (गणेश और रामचंद्र) उनके द्वारा मारे गए।

शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य से टक्कर लेना आसान कार्य नहीं था। एक ओर सर्व साधन संपन्न साम्राज्य था तो दूसरी ओर साधारण चित्तपावन ब्राह्मण कीर्तनकार बंधु थे। दोनों की कोई तुलना नहीं थी। उन्हें यह तो पता था कि ब्रिटिश साम्राज्य से टक्कर लेने का परिणाम उनकी मृत्यु है। उनके खिलाफ मुकदमा चला। अदालत ने दामोदर, बालकृष्ण, वासुदेव और रानाडे को मृत्युदंड तथा साठे को सात वर्ष की सजा सुनाई।

दामोदर को १८ अप्रैल, १८९८ में फाँसी दी गई। इतिहासकार के.सी. घोष के कथनानुसार यह वह दिन है, जिसे संपूर्ण राष्ट्र के द्वारा कृतज्ञतापूर्वक याद किया जाना चाहिए। ८ मई, १८९९ को वासुदेव, १० मई को रानाडे, १२ मई को बालकृष्ण को फाँसी दी गई। इन सभी ने अपने मृत्युदंड को शांति और धैर्य से स्वीकार किया। कहीं कोई घबराहट नहीं, कोई पछतावा नहीं।

रैंड की हत्या तथा इसके परिणामस्वरूप जिन व्यक्तियों को फाँसी हुई, उसका इतिहास तिलक की चर्चा के बिना अधूरा है। जिस समय दामोदर हरि को फाँसी हुई, तिलक भी उस समय यरवदा जेल में थे।

उन्हें केसरी के १५ जून के अंक के लिए सजा मिली थी, जिसमें उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से रैंड की हत्या का समर्थन किया था। यह सच है, फिर तिलक अपने अनुभवों के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे कि अभी सशस्त्र क्रांति का उपयुक्त समय नहीं है, फिर भी उनका सहयोग और सहानुभूति सशस्त्र क्रांति की ओर बढ़ रहे युवकों को मिला हुआ था। खुफिया विभाग के इंस्पेक्टर ब्रेविन को उन्होंने रैंड के हत्यारों के बारे में बताने से इनकार कर दिया था। उन्होंने अंत तक चापेकर बंधुओं, रानाडे और साठे की कभी आलोचना नहीं की। दामोदर हरि ने फाँसी से पहले जेल के अधिकारियों के माध्यम से तिलक से गीता की एक प्रति देने का अनुरोध किया था। तिलक ने अधिकारियों की अनुमति लेकर गीता की एक प्रति उन्हें दी थी। उसी प्रति को हाथ में लेकर दामोदर हरि फाँसी के फंदे तक पहुँचे।

लाला लाजपत राय ने चापेकर बंधुओं की फाँसी के प्रति अपने विचार अभिव्यक्त करते हुए लिखा था कि 'लोगों को यह नहीं लग रहा था कि हिंसा होनी चाहिए, फिर भी चापेकर बंधु की उदात्त, साहसी काररवाई के प्रति उनके मन में आदर मिश्रित कौतूहल था। लोग चापेकर बंधुओं के कार्य का नहीं वरन् इस कार्य के पीछे निहित राजनीतिक उद्देश्य का आदर कर रहे थे।'

यह सत्य है कि चापेकर बंधुओं ने विदेशी सरकार से बदला लेने के लिए जिस सशस्त्र तकनीक को आरंभ किया, वह तकनीक अपने घातक परिणामों के कारण भविष्य में बहुत प्रभावशाली सिद्ध हुई। किसी अंग्रेज अफसर की हत्या की यह प्रथम घटना थी और दामोदर हरि चापेकर उसके प्रथम शहीद। उनकी यह शहादत व्यर्थ नहीं गई। तमाम युवकों को उनसे प्रेरणा मिली। यह भी स्पष्ट हो गया कि यदि देश को स्वतंत्र कराना है तो सशस्त्र विद्रोह भी एक मार्ग है।

अपराधियों को पकड़ने के लिए बीस हजार रुपयों के इनाम की घोषणा की गई। धन के लालच में चापेकर संघ के ही एक सदस्य गणेश शंकर द्रविड़ ने दामोदर को पकड़वाने में पुलिस की मदद की। ९ अगस्त को दामोदर पकड़े गए। उन्होंने रैंड की हत्या के साथ ही यह भी स्वीकार किया कि उन्होंने ही तिलक की आलोचना करनेवाले स्थानीय पत्रों के दो संपादकों पर भी आक्रमण किया था। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि उन्होंने ही विक्टोरिया की प्रतिमा के मुख पर कोलतार पोता था, उन्हें जूतों की माला पहनाई थी, और यह भी कि उन्होंने बंबई विश्वविद्यालय के मंडप में तथा पूना के मंडप में भी आग लगाई थी। कुछ समय के बाद बालकृष्ण भी पकड़ लिये गए।

७४ कैंट, कानपुर-२०८००४
दूरभाष : ०९७९२७३३७७७

कविता

नील गगन

● बसंता

गगन की नीलिमा नयनों को मेरे मोहती रहती,
हृदय में उतरकर मुझको प्रफुल्लित करती रहती।
ओस के मोतियों को रात में वह जो गिरा देता,
सुबह होने पर दिनकर प्रेम से उनको चुरा लेता।

धरा को वह निहारे प्रेम से प्रेयसी बना करके,
उसे निर्मल हृदय से चाहता वह दूर रह करके।
कभी मिलना नहीं होता इसी से वह व्यथित रहता,
तथा मिलने की चाहत को हृदय में वह छिपा रखता।

धरा पर कुछ भी हो इससे गगन को फर्क क्या पड़ता,
नदी, वन, कंदराओं को सहज वह देखता रहता।
हवा ठंडी हो या अति गरम, इसका मर्म क्यों जाने,
सदा निर्लिप्त होकर किसी को अपना नहीं माने।

गगन में काली-काली घटाएँ घिर-घिर चली आएँ,
रोष में आकर के फुफकारने लग जाएँ ज्वालाएँ।
रुधिर से धरा पट जाए या बिल्कुल शांत हो गिरि वन,
गगन योगी-यती सा नित्य रखता अमल अपना मन।

धरा पर सभ्यताओं का हुआ उद्भव, पराभव भी,
व्योम साक्षी रहा सबका, ये प्रभुता हो या लाघव भी।
समय और नियति की ये मूक दर्शक व्योम की आँखें,
छिपे इतिहास के पन्नों को कोई विज्ञ ही बाँचे।

चाँद, सूरज, सितारे व्योम में दिखते बहुत न्यारे,
ग्रह-नक्षत्रों के हीरे गगन में हैं चमकते सारे।
अखिल ब्रह्मांड इस आकाश में प्रतिपल अवस्थित है,
जहाँ भी जाएँगे हम हर जगह तो व्योम स्थित है।

शब्द ही ब्रह्म है—ऐसी हमारी सोच है निर्मल,
शब्द तो व्योम में रहता यहीं पर अवस्थित हर पल।
गगन घट-घट में रमता है, कोई कोई घट है नहीं वंचित,
गगन में दिव्य स्पंदन, अमित चैतन्य है संचित।

सरदार वल्लभभाई पटेल
महाविद्यालय भभुआ (कैमूर)
बिहार-८२११०१
दूरभाष : ०९४३०५८१२४६

पिघलती आइस्क्रीम

● महेश शर्मा धार

''अरे सुनो!'' आरती ने प्रकाश को आवाज लगाई, ''आज ऑफिस से जल्दी आ सको तो हमें सिविल हॉस्पिटल जाना है, जरूरी है।''

''क्यों? कौन भरती है वहाँ?'' प्रकाश ने ऑफिस के लिए तैयार होते हुए पूछा।

''मेरी सहेली रीमा।'' आरती ने बताया।

''अच्छा, वही तुम्हारी मॉडर्न सहेली।''

''हाँ-हाँ, वही बेचारी, बहुत बीमार है।''

''ठीक है, मैं चार बजे तुम्हारे ऑफिस आ जाऊँगा, तुम भी बॉस से जल्दी छुट्टी के लिए बोल देना। लेकिन पप्पू का क्या होगा? उसका स्कूल तो साढ़े चार बजे छूटता है।''

''उसे लेकर ही चलेंगे, तुम उसे लेती हुई मेरे ऑफिस आ जाना।''

''ठीक है, डार्लिंग, जैसा आपका हुक्म।'' कहते हुए प्रकाश ने आरती पर एक प्यार भरी दृष्टि डाली।

''अरे हटो भी, ऑफिस जाते वक्त ये प्यार-मोहब्बत कहाँ ले आए?''

''डार्लिंग, तुम्हें जब भी गौर से देखता हूँ तो अपने आप दिल में प्यार की हिलोरें उठने लगती हैं।''

''अच्छा चलो, नो मस्का, मैं जा रही हूँ। ठीक साढ़े चार पर आ जाना।'' आरती ने अपनी मोपेड निकाली और ऑफिस के लिए चल दी। रीमा की याद आते ही कुछ देर पहले का प्रफुल्लित मन फिर उदास हो गया।

आज सुबह ही रीमा के फ्लैट के पड़ोसी का फोन आया था कि रीमा दो दिन से बीमार है और कल ही उसे हॉस्पिटल में एडमिट करवाया है। कौन होगा उसके पास? इसी चिंता में डूबी आरती ऑफिस पहुँची, लेकिन काम में जरा भी मन नहीं लगा। ऐसे अकेले भी कोई जीवन काट सकता है भला? लेकिन रीमा आज अकेली है, पहले कहाँ थी अकेली रीमा, पहले तो खूब व्यस्त थी। रोजाना नए-नए दोस्तों के साथ हमेशा हँसती-मुसकराती, जिंदादिल और दिलफेंक।

आरती को छह वर्ष पहले की हॉस्टल लाइफ याद आ गई। रीमा और वह, दोनों वर्किंग वुमेन हॉस्टल में रूम मेट बनी थीं। वहीं दोस्ती हुई थी दोनों में। घर-परिवार दिल्ली से बाहर था, दोनों पढ़ाई के बाद नौकरी की खोज में दिल्ली आई थीं। प्राइवेट कंपनियों में थीं। नौकरी तो

सुपरिचित रचनाकार। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित। कहानी, कविता, गजल एवं गीत में समानाधिकार से लेखन। संप्रति सेवानिवृत्त बैंककर्मी।

अच्छी मिली, लेकिन रहने को हॉस्टल के सिवा कोई उपाय नहीं था।

शुरू दिन से ही आरती रीमा से बहुत प्रभावित थी। हँसमुख-मिलनसार, जिंदादिल रीमा बहुत स्मार्ट और खुबसूरत थी। बड़े ऊँचे सपने पाल रखे थे उसने। और आरती ने बस एक अच्छी सी नौकरी, एक अदद पति और परिवार, यही उसकी महत्त्वाकांक्षा थी। हॉस्टल में एक वर्ष बिताते-बिताते दोनों काफी घनिष्ठ हो गई थीं।

आरती को अपने ऑफिस में कार्यरत एक सीधा-सादा सादगीपूर्ण, किंतु आकर्षक युवक प्रकाश के रूप में एक दोस्त मिला था, जबकि रीमा के दोस्तों की कमी नहीं थी। चार-छह दोस्त तो उसके हमेशा बने रहते थे और उनमें से ही कोई एक खास भी हुआ करता था, लेकिन ये खास भी दो-चार महीने में बदलता रहता था।

आए दिन डिस्को जाना, क्लब जाना और पार्टियाँ करना, यही रीमा की दिनचर्या थी। कभी-कभी आरती भी उनके साथ शरीक होती, लेकिन उसे ये पार्टी लाइफ ज्यादा पसंद नहीं थी।

उसका प्रकाश के प्रति प्यार धीरे-धीरे परवान चढ़ रहा था। 'देख रीमा, अब तू भी ये मौज-मस्ती छोड़ और कोई अच्छा सा एक दोस्त खोजकर उसे परमानेंट जीवनसाथी बना ले।'

'ओह नो आरती, मुझसे यह नहीं होगा। किसी एक के साथ फुल टाइम? यार, मैं तो बोर हो जाऊँगी।' आरती चौंकी, 'तो क्या जिंदगी भर ऐसे ही दोस्त बदलती रहेगी?'

'अरे यार, जब कोई सुपर स्मार्ट, एवरग्रीन हीरो मिला तो उसे पति भी बना लूँगी। बशर्ते वह मेरी जिंदगी में रोज नए-नए रंग भरे।' रीमा ने बड़ी अदा के साथ अपनी इच्छा जताई।

'अच्छा तो तू शर्तों के साथ शादी करेगी?'

'अच्छा आरती, तू एक बात बता, क्या तू फुल लाइफ एक ही फ्लेवर की आइस्क्रीम खाते-खाते ऊब नहीं जाएगी?' आरती ने चौंककर

रीमा की मदमाती आँखों में देखा।

'रीमा, यह लाइफ केवल स्वाद या फ्लेवर से जी सकनेवाली आइस्क्रीम नहीं है और न ही पति या जीवनसाथी कोई आइस्क्रीम का डिब्बा।'

'अरे यार मेरा मतलब···'

मैं समझ रही हूँ तेरा मतलब, ये जो अलग-अलग तरह की आइस्क्रीम का शौक रखती है न, कितनी देर लगती है इस आइस्क्रीम को पिघलने में?'

'आरती प्लीज, नो फिलॉसफी।' रीमा का स्पष्ट उत्तर था।

'मैं फिलॉसफी नहीं बता रही, रीमा। अभी वक्त है, कोई अच्छा सा साथी देख औ···।'

'और गृहस्थी बसा लूँ, बच्चे पैदा करूँ और किचन सँभालूँ। मैं नहीं करनेवाली यह सब, तू ही बन जा आदर्श गृहिणी।' और आरती सचमुच में आदर्श गृहिणी बन गई। प्रकाश का स्वभाव, विचारधारा और जीवनशैली उसे भा गई थी। दोनों के घरवालों ने भी कोई विरोध नहीं किया और दोनों विवाह बंधन में बँध गए। विवाह के बाद वह प्रकाश के किराए के फ्लैट में रहने चली गई। दोनों नौकरी करते और पूरी मस्ती से जीवन जी रहे थे।

आरती की मुलाकात कभी-कभी रीमा से होती थी। रीमा भी अब किराए के फ्लैट में रहती थी, लेकिन उसकी लाइफ स्टाइल अभी भी वही थी, जब तक जो भाया तब तक उससे दोस्ती की, नहीं जमा तो छोड़ दिया या कोई नया अच्छा दोस्त मिला तो पुराने को टाटा। आरती से मिलने पर रीमा अभी भी उसकी शांत-सुकून भरी पारिवारिक जिंदगी की हँसी उड़ाती, 'और क्या हाल हैं मेरी भारतीय नारी और आदर्श पत्नी के?'

'हम बहुत खुशहाल और उल्लासमय जीवन जी रहे हैं, रीमा।'

'रीमा भी बहुत मस्ती से जी रही है। आरती, यू नो आई हेव व्हेरी लक्जरी लाइफ।'

'क्या तू किसी रात अपने फ्लैट में अकेलेपन से नहीं घबराती?' आरती ने फिर एक चुभता हुआ तीर छोड़ा।

'अकेलापन कैसा? जब मैं चाहूँ फोन लगाऊँ और फ्रेंड हाजिर।'

'ठीक है, लेकिन क्या कोई ऐसा है, जिसे तू अपने दिल से याद करती है? या कोई तेरे लिए बेचैन हो या तेरे लिए दुनिया की सारी खुशियाँ छोड़ दे?'

'ऐसा कोई नहीं होता यार, ये सब किताबी बातें हैं, फिल्मी अंदाज है। रियल लाइफ में तो मिलो-जुलो। एक-दूसरे को खुश करो और आगे बढ़ो। सच्चे प्यार करनेवाले मिलते कहाँ हैं।' रीमा ने आरती के सब प्रश्नों के उत्तर एक साथ दे दिए।

आरती भी हार माननेवाली नहीं थी। उसने फिर अंतिम तीर छोड़ा, 'अच्छा रीमा, क्या तूने कभी चाहा कि कोई तुझे सच्चा साथी मिले, जो तुझे दिल से प्यार करे, तेरे शरीर से ज्यादा।' और इस प्रश्न पर चौंक गई थी रीमा। जैसे रँगे हाथों पकड़ी गई।

ये दो-तीन वर्ष पुरानी बातें थीं। उसके बाद आरती का मिलना-जुलना कम हो गया था। फिर उनके जीवन में एक नई खुशी ने जन्म लिया था पप्पू के रूप में, वह भी अब तीन वर्ष का हो गया था। कभी-कभार रीमा से टेलीफोन पर बात हो जाती थी और एकाध बार बाजार में चलते-चलते मुलाकात भी हुई तो आरती ने रीमा के स्वर का ठंडापन और उसके सौंदर्य तथा जिंदादिली में आई गिरावट को स्पष्ट महसूस किया था।

ऑफिस में बिना कुछ काम किए, सोच-सोचकर आरती ने तीन बजा दिए थे। बड़ी बेसब्री से प्रकाश की राह देख रही थी। साढ़े चार बजे प्रकाश पप्पू को लेकर आ चुका था। आरती ने अपनी मोपेड वहीं छोड़ी और प्रकाश के साथ मारुति से अस्पताल की ओर चल दी।

रीमा ऊपरी मंजिल के प्राइवेट वार्ड में एडमिट थी। जब आरती और प्रकाश वहाँ पहुँचे तो रीमा पलंग पर लेटी थी और एक नर्स उसके सिरहाने रखे गुलदस्ते के फूल बदल रही थी। आरती को देखते ही रीमा के चेहरे पर खुशी की चमक आ गई। उसने उठने का प्रयास किया, लेकिन उठ नहीं पाई।

रीमा की नजर आरती के पीछे आते प्रकाश और उनके बीच खड़े नन्हे से पप्पू पर पड़ी। न जाने कितने भाव रीमा के चेहरे पर आते-जाते रहे। जिनमें जिज्ञासा, ईर्ष्या, अपनत्व और स्वयं के प्रति हीनता का समावेश था, लेकिन अंततः उसने मुसकराते हुए सभी का स्वागत किया।

''क्यों और कोई नहीं है तुम्हारे पास?'' आरती ने चिंतित मुद्रा में रीमा के पलंग के पास खाली कुरसियों पर नजर डालते हुए पूछा।

''नहीं, कुछ फ्रेंड्स आए थे और अभी कुछ देर पहले ही गए हैं।'' रीमा ने नजरें बचाते हुए जवाब दिया।

'लेकिन किसी का साथ रहना तो जरूरी है न।'

'हाँ', लेकिन आगे कुछ न बोल सकी रीमा। 'घर पर खबर की क्या?' आरती की चिंता पूर्ववत् थी।

'नहीं यार, मम्मी-दादी तो काफी बुजुर्ग और कमजोर हैं। आ नहीं पाएँगे।'

'और भैया?'

'भैया को कहाँ छुट्टी मिलती है नौकरी से।'

'अच्छा यहाँ भरती किसने किया?' आरती ने रीमा की आँखों में आँखें डालकर पूछा।

'वो···मेरे···' रीमा चुप थी।

'पड़ोसी ने? सच है न?' आरती के शूल से चुभते प्रश्न गूँजे और रीमा के चेहरे पर असहायता के भाव अचानक आ गए, जो धीरे-धीरे अफसोस में बदलने लगे। आरती ने पप्पू को उठाकर रीमा के पास बैठाया। 'मौसी से नमस्ते करो बेटा।'

और जब नन्हे पप्पू ने रीमा को विश किया तो रीमा उसकी प्यारी मनमोहनी बाल सुलभ अदा पर सम्मोहित हो गई। 'कितना प्यारा बच्चा है न आरती?'

'ये उसी आइस्क्रीम के डिब्बे का नया फ्लेवर है रीमा।'

'क्या? आइस्क्रीम का डिब्बा?' रीमा एक क्षण के लिए समझी नहीं।

'हाँ-हाँ, वही एक ही स्वादवाला आइस्क्रीम का डिब्बा, वह रहा।' आरती ने प्रकाश की ओर हाथ उठाकर इशारा किया और मुसकराई।

लेकिन रीमा हँस न सकी। 'ओ!' सारी पिछली स्मृति उसके जेहन में आने लगी। साथ ही आँखों से छलकने लगी आँसुओं की धार।

'अरे रीमा तू रो रही है? मैं तो तुझे हँसाने के लिए मजाक कर रही थी।' आरती ने रीमा को चुप कराने का प्रयास किया। लेकिन रीमा की सिसकियाँ बढ़ती गईं। 'अरे क्या हुआ? क्यों रो रही है पगली?'

रीमा ने आरती का हाथ अपने हाथों में ले लिया और रोते-रोते बोली, 'मेरी सारी आइस्क्रीम पिघल गई, आरती। सारे अलग-अलग फ्लेवर बेरंग और बेस्वाद हो गए और मैं अकेली रह गई।'

आरती ने रीमा को अपनी ओर भींचते हुए सहलाया, लेकिन रीमा की सिसकियाँ और कातर भावों की अभिव्यक्ति जारी थी। वह फिर बोली, 'मैंने बहुत वक्त गँवाया आरती, मैं लाइफ को बस आइस्क्रीम की तरह समझती रही और आज मेरे पास कुछ भी नहीं। यदि मैं तेरी सीख मानती तो आज···' आगे कुछ न कह पाई रीमा।

आरती ने उसका सिर अपनी गोद में रखते हुए चुप कराने की कोशिश की, 'अभी बहुत जीवन बाकी है। रीमा, पगली जब जागो तभी सवेरा। तू जल्दी से अच्छी हो जा, फिर मैं खोजती हूँ तेरे लिए एक आइस्क्रीम का डिब्बा।'

और आरती के साथ रीमा भी हँस पड़ी। 'सच आरती, क्या अब भी यह पॉसिबल है?'

'पॉसिबल क्यों नहीं? हम जब भी चलना शुरू करेंगे, हमारी मंजिल हमारे नजदीक आती जाएगी। शर्त बस यही है कि जीवन के सही और शाश्वत फ्लेवर को ही महत्त्व देना होगा।'

रीमा आरती के कहने का आशय समझ रही थी, वातावरण सहज हो रहा था। तभी प्रकाश ने आगे बढ़कर कहा, 'ठीक है, तुम दोनों सहेलियाँ एक-दूसरे के दुःख-दर्द बाँटो, मैं कुछ नाश्ता लेकर आता हूँ।'

'हाँ-हाँ, ठीक है। तुम कुछ खाने को लेकर आओ।' आरती ने भी प्रकाश को नीचे भेजना चाहा। 'मैं कुछ आइस्क्रीम भी ले आता हूँ रीमा, तुम्हें कौन सा फ्लेवर पसंद है?'

दोनों सहेलियाँ एक क्षण के लिए चौंकीं और मुसकरा दीं। रीमा शरमा गई, 'प्लीज प्रकाश, मुझे माफ करो, अब याद न दिलाओ।'

सबके समवेत हास्य से अस्पताल का वार्ड मुसकरा उठा और प्रकाश नाश्ता लेने चला गया।

२२४ सिल्वर हिल कॉलोनी, धार
जिला : धार (म.प्र.)
दूरभाष : ८२३६९४०२०१

सार्थक बनो

लघुकथा

● विनोद शंकर गुप्त

हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि शिवमंगल सिंह सुमन शांति निकेतन से शिक्षा प्राप्त कर लौटने लगे तब संस्था के मुख्य आचार्य क्षितिमोहन सेन ने उन्हें आशीर्वाद दिया कि जीवन में कभी सफल व्यक्ति मत बनना।

यह सुनकर शिवमंगल सिंह सुमन स्तब्ध रह गए। सोचने लगे कि उनसे कहीं कोई गलती तो नहीं हो गई। उन्होंने हिम्मत करके पूछा, ''गुरुजी, क्या मुझसे कोई गलती हो गई?'' तब श्री सेन बोले, ''बात वह नहीं बेटे, दरअसल सफल तो लाखों लोग हर वर्ष होते हैं, किंतु तुम जीवन में सार्थक बनो।''

यह सुनकर सुमन ने श्रद्धानत होकर सेन महोदय के चरण छू लिये और उनकी शिक्षा को जीवन में उतारने के लिए आगे कदम बढ़ा दिए।

ए-३, ओल्ड स्टाफ कॉलोनी,
जिंदल स्टेनलेस लि., ओ.पी. जिंदल मार्ग
हिसार-१२५००५
दूरभाष : ९४१६९९५४२२

न्यायी पुरुषोत्तम राम

● योगेंद्र शर्मा

अधिकांश भारतीय अब भी अपने प्रिय का अभिवादन 'राम-राम' कहकर करते हैं, ऐसा न भी कर सकें तो उसकी विदाई 'राम-राम सत्य है' कहकर करते ही हैं। अब भी राम भारतीयों के जीवनाधार हैं, भारतीय सभ्यता और संस्कृति के प्रतीक हैं। ऋषि वाल्मीकि श्री राम के समकालीन थे। उनके राम ईश्वरीय कम, मानवीय अधिक थे। गोस्वामी तुलसीदास ने राम को ईश्वरीय गुणों से युक्त, लोकनायक, मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में प्रस्तुत किया। तुलसी के इस प्रयास को भारतीय जनमानस ने सराहा, स्वीकृति तथा समर्थन प्रदान किया और रामायण घर-घर में रच-बस गई, एक महान् धार्मिक व सांस्कृतिक धरोहर के रूप में। कोई कितना ही आदर्श चरित्र प्रस्तुत करे, परंतु छिद्रान्वेशी तो छिद्र ढूँढ़ ही लेते हैं।

भारतीय परंपरा रही है कि किसी दिवंगत पर दोषारोपण नहीं किया जाता, क्योंकि वह उत्तर देने नहीं आ सकता और एकपक्षीय न्याय अभारतीय कृत्य है। श्रद्धा और विश्वास किसी तर्क के मोहताज नहीं होते। हमारे समाज में लाख कुरीतियाँ व पांखड सही, परंतु इसका ढाँचा लोकतांत्रिक ही रहा है। बहस की गुजांइश रही है, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता रही है। अस्तु आइए, उन घटनाओं का विवेचन करें, जिनके कारण कुछ लोग राम पर प्रश्न उठाते हैं:

सूर्पणखा को दंड

कोई पुरुष यदि किसी स्त्री के नाक-कान काट ले तो सरसरी तौर पर एक बर्बर और असामान्य कार्य प्रतीत होता है, परंतु हर असामान्य कार्य के पीछे असामान्य कारण भी तो होते हैं। अपने पति विद्युतजिह्व के निधन के पश्चात् स्वच्छंद विचरती सूर्पणखा श्रीराम को देखकर मोहित हो गई और स्वयं को कुमारी बताते हुए प्रणय का असफल निवेदन किया। उन्होंने उसे लक्ष्मण की ओर भेजा तो सूर्पणखा उन पर भी मोहित हो प्रणय निवेदन करने लगी। लक्ष्मण द्वारा पुन: वह श्रीराम की ओर भेजी गई। राम और लक्ष्मण से बार-बार प्रणय निवेदन करने पर भी असफल सूर्पणखा ने सारी स्त्रियोचित मर्यादा उतार फेंकी—

सुपरिचित साहित्यकार। 'तीसरे रावण की मौत', 'मरद' (कहानी-संग्रह), 'शिनाख्त, लघुकथा संग्रह', 'रूहेलखंड का गांधी' (उपन्यास); 'जुगाड़ से चलता देश' (व्यंग्य-संग्रह); 'राम-राम कंछीलाल' (कहानी संग्रह) एवं प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित। रेडियो-दूरदर्शन से प्रसारित।

तब खिसिआनी राम पहिं गई।
रूप भयंकर प्रकटत भई॥
सीतहि सभय देखि रघुराई।
कहा अनुज सन सयन बुझाई॥
(तुलसीकृत रामचरितमानस, अरण्यकांड)

वाल्मीकि रामायण के अनुसार तो सूर्पणखा का व्यवहार और भी निकृष्ट व निंदनीय है—

इमा विरूपाम् सतीं करालां निर्णतोदरीम्।
वृद्धां भार्यामवष्टम्य न मां त्वंदहुमन्यसे॥
अद्देमां भक्षयिष्यामि पश्तयव मानुषीम्।
त्वया सह चरिष्यामि नि:सपत्ना यथासुखम्॥
इत्युक्त्वा भृगशवक्षीभलात् सद्दक्षेक्षण्य।
अभ्यागच्छत सुसंक्रुद्धा महोल्का रोहिणीमिव॥

(वाल्मीकि रामायण, अरण्यकांड, १८वाँ सर्ग)

अर्थात् राम, तुम इस कुरूप, ओछी, विकृत, धँसे पेट वाली और वृद्धा (सीता) का आश्रय लेकर मेरा विशेष आदर नहीं करते। अत: तुम्हारे देखते-देखते मैं इस मानुषी को खा जाऊँगी और इस सौत के न रहने पर तुम्हारे साथ सुखपूर्वक विचरण करूँगी। ऐसा कहकर दहकते अंगारे के समान नेत्रों वाली सूर्पणखा अत्यंत क्रोध में भरकर मृगनयनी सीता पर झपटी, मानो कोई बड़ी भारी उल्का रोहिणी नामक तारे पर टूट पड़ी हो।

सूर्पणखा का राम के विवाहित होते हुए भी सीता की उपस्थिति में अपने को कुमारी बताते हुए प्रणय निवेदन, उनके द्वारा टाल दिए जाने पर लक्ष्मण

से प्रणय निवेदन, पुन: टाल दिए जाने पर पुन: प्रणय की भीख माँगना। अर्थात् यह नहीं तो वह सही, वह नहीं तो यह सही, आधुनिक संदर्भ में हम इसे 'फ्रीसेक्स' कहते हैं। इतना ही नहीं, अपने प्रयोजन में असफल होने पर वह सीता की हत्या करने झपटी। बताइए तो क्या करते श्रीराम? क्या अपनी धर्मपत्नी को अपमानित होते हुए या मारे जाते हुए चुपचाप देखते रहते? या सूर्पणखा के बलात् प्रणय के शिकार हो जाते? वस्तुत: सूर्पणखा राक्षस संस्कृति की प्रतीक थी, जो मूल्यहीनता में विश्वास रखती थी, राम का जीवन उससे संघर्ष को समर्पित था।

उन्होंने सूर्पणखा को भयभीत करने के लिए ऐसा दंड दिया, ताकि वह किसी पुरुष से ऐसा आचरण न कर सके।

सीता परित्याग

कोई पति यदि अपनी गर्भवती पत्नी का बिना अपराध परित्याग कर दे तो वह अपनी पत्नी और संतान दोनों का अपराधी ठहराया जाता है। राम भी उसी अपयश के भागी बने। परंतु कहीं अपराध हो तो उसका उद्देश्य भी होता है। क्या उद्देश्य था सीता परित्याग के पीछे? क्या दूसरा विवाह करना? या भोग-विलास में डूब जाना? श्रीराम ने दूसरा विवाह नहीं रचाया। भोग-विलास में नहीं रमे। जैसा त्यागमय जीवन वाल्मीकि के आश्रम में सीता ने व्यतीत किया, वैसा ही जीवन श्रीराम ने अयोध्या में किया। सौ राजसूय यज्ञ किए, परंतु उसमें पत्नी के स्थान पर सीता की प्रतिमा उनके साथ रही। फिर क्यों किया उन्होंने सीता परित्याग?

सीता के विषय में प्रजा की विभिन्न कटूक्तियों से दुखी श्रीराम अपने तीनों भाइयों से कहते हैं—

पौरापवाद: सुमहांस्तथा जनपदस्य च।
वर्तते मयि बीभत्सा सा मे मर्माणि कृन्तति॥
अप्यहं जीवितं जह्यां युष्मान् वा पुरुषर्षभा:
अपवादभयाद् भीत: किं पुनर्जनकात्मजाम्॥
एवमुक्त्वा तु काकुत्स्थे बाष्पेण पिहितेक्षण:॥
संविवेश व धर्मात्मा भ्रातृभि: परिवारित:।
शोकसंविग्नहृदयो निशश्वास यथा द्विप:॥

(बाल्मीकि रामायण, उत्तरकांड, ४५वाँ सर्ग)

अर्थात् इस समय पुरवासियों और जनपद के लोगों में सीता के संबंध में महान् अपवाद फैला हुआ है। मेरे प्रति भी उनका बड़ा घृणा भाव है। उन सबकी घृणा मेरे मर्मस्थल को विदीर्ण किए देती है। बंधुओ, मैं लोक निंदा के भय से अपने प्राणों को, तुम सबको भी त्याग सकता हूँ। फिर सीता को त्यागना कौन बड़ी बात है? इस प्रकार से कहते हुए श्रीराम के दोनों नेत्र आसुँओं से भर गए, फिर धर्मात्मा श्रीराम अपने भाइयों के साथ महल को चले गए। उस समय उनका हृदय शोक से व्याकुल था और वे हाथी के समान लंबी साँस खींच रहे थे।

राजा प्रजा का आदर्श होता है। प्रजा के हर अपवाद-विवाद का समाधान उसका धर्म है, यदि वह या उसकी पत्नी किसी विवाद में पड़ जाएँ, तो उसका निराकरण राजधर्म है। सीता-परित्याग करनेवाले श्रीराम हमारे समक्ष एक ऐसे राजा के रूप में उभरते हैं, जो राज्य के हर नागरिक का विश्वास प्राप्त करने को प्रतिबद्ध हैं, लालायित हैं और उसकी यह लालसा व प्रतिबद्धता इतनी तीव्र है कि वे अपनी प्राणों से प्यारी, एकमात्र जीवनसंगिनी का भी परित्याग करने को उद्यत हैं। सीता-परित्याग, लोकेच्छा व लोकोपवाद के समक्ष अपनी समस्त कामनाओं के बलिदान की गाथा है। आज जब राजा प्रजा का खून चूसनेवाली होने लगा है, हर रिश्ता लेन-देन व स्वार्थ पर आधारित हो चला है, तब इस त्याग की महानता को समझना कठिन है। राम विश्व के अकेले राजा हैं, जिन्होंने अपनी प्रजा के लिए इतना बड़ा त्याग किया। विडंबना है कि जो लोग सीता परित्याग के कारण राम को अन्यायी कहते हैं, वही ऐसा न करने पर कहते, 'कैसा वह निर्लज्ज पति था, जो एक माह तक शत्रु के संरक्षण में रही पत्नी को स्वीकार किया।' राम महामानव थे, महानायक थे, परंतु एक समय ऐसा आया, जब वे एक दोराहे पर खड़े थे। उन्होंने आत्मबलिदान की राह चुनी और वे एक अच्छे पति, अच्छे पिता सिद्ध भले ही न हो पाए हों, कुछ के लिए कुछ खोना पड़ता है, पर अच्छे राजा अवश्य सिद्ध हुए।

राजा दशरथ ने राम को वनवास जाने को भी नहीं कहा था। कैकेयी ने ही राम को उनके दोनों वचनों के विषय में बताया था। भरत, जिन्हें कैकयी अयोध्या नरेश बनाने को बहुत अधीर थी, स्वयं श्रीराम को वापस लाने के लिए गए थे। तब उनके साथ सारी अयोध्या राम-वनवास के विरोधस्वरूप उपस्थित थी। स्वयं कैकेयी उस भीड़ में थी। अपने प्रयास में असफल होने पर भी भरत ने श्रीराम की खड़ाऊ राजसिंहासन पर स्थापित कर एक तपस्वी की भाँति राज्य-संचालन किया। राम चाहते तो वनवास के कष्टों को तिलांजलि दे, जनमत का सहारा ले अयोध्या पर निष्कंटक राज्य कर सकते थे। न राम वनवास होता, न सीता हरण होता, न सीता परित्याग होता। राम ने स्वयं इन कष्टों को गले लगाया, पिता के वचन का पालन, साधुजनों की रक्षा, दुष्टों के संहार का व्रत लिया। स्वयं श्रीराम गुरु वसिष्ठ आदि के लाख मना करने पर भी सीताजी राम के साथ वनगमन को बहुत आतुर थीं।

अपने परित्याग के बाद सीता ने लक्ष्मण के माध्यम से श्रीराम को यह संदेश भेजा था—

अहं त्यक्ता च ते वीर अयशोभीरुणा जने।
यच्चते वचनीयं स्यादपवाद: समुत्थित:॥

(वाल्मीकि रामायण, उत्तरकांड, ४८वाँ सर्ग)

अर्थात् वीर, आपने अपयश के डर से मुझे त्यागा है। अत: लोगों में जो निंदा हो रही है अथवा मेरे कारण जो अपवाद फैल रहा है, उसे दूर करना भी मेरा कर्तव्य है, क्योंकि मेरे परमआश्रय आप ही हैं।

जो समाज-सेवा का व्रत लेते हैं, उन्हें अपने परिवार के हितों का बलिदान करना ही पड़ता है। श्रीराम ने लोक-कल्याण के महायज्ञ में अपना समस्त जीवन होम कर दिया तथा सती सीता इस यज्ञ में मन, वचन व कर्म से सहधर्मिणी रहीं। दावा है मेरा, यदि सीता परित्याग न होता तो राम की पूजा न होती, वह केवल राजा राम बनकर रह जाते।

आधुनिक संदर्भों में यदि सोचें तो भारत माँ की सेवा का व्रत लेने

वाले रणबाँकुरे क्या अपनी माँ, पत्नी, संतान व पिता के साथ न्याय कर पाए? यदि सीता परित्याग के कारण राम अन्यायी हैं तो मैं कहता हूँ, सीमा पर शहीद होनेवाला हर सैनिक, जो अपने पीछे एक बिलखती जवान विधवा, दुधमुँही अबोध संतानें, निराश्रय शोक-संतप्त माँ-बाप छोड़ जाता है, वह भी अन्यायी हुआ। सीता परित्याग को व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखें तो श्रीराम के इस महान् त्याग का आकलन कर पाएँगे, अपनी संकीर्ण सांसारिक बुद्धि से तो कदापि नहीं।

शांबूक वध प्रसंग

उत्तरकांड (वाल्मीकि रामायण) में प्रसंग है कि राम के दरबार में एक बार एक ब्राह्मण (इस ब्राह्मण का नाम नहीं बताया गया है) अपने चौदह वर्षीय पुत्र की लाश लेकर आया और विलाप करने लगा कि अभी तक उसने कोई पाप नहीं किया, इसमें राम का ही कोई दोष है, जिससे उसके पुत्र की अकाल मृत्यु हुई। राम यह सुनकर दुखी हुए, तभी वहाँ नारदजी आए और यह मत प्रकट किया कि कोई खोटी बुद्धि वाला शूद्र तपस्या कर रहा है। इसी कारण यह अनर्थ हुआ है। श्रीराम ने पुष्पक विमान पर चढ़कर देखा तो एक तपस्वी पेड़ कर उल्टा लटककर तपस्या कर रहा था। श्रीराम ने उससे पूछा—

राघवस्तमुपागम्य तप्यन्तं तप उत्तमम्।
उवाच च नृपो वाक्यं धन्यस्त्वमसि सुव्रत॥१५॥
कस्यां योन्या तपोवृद्ध वर्तसे दृढविक्रम।

(वाल्मीकि रामायण, उत्तरकांड, ७५वाँ सर्ग)

अर्थात् राघव उग्र तपस्या करते तपस्वी के पास आए और बोले, 'उत्तम व्रत का पालन करनेवाले तापस, तुम धन्य हो। तपस्या में बढ़े-चढ़े सुदृढ पराक्रमी पुरुष, तुम किस योनि से उत्पन्न हुए हो? परिचय व जाति बताते हुए उस तपस्वी ने अपना नाम शांबूक बताया तथा तपस्या का प्रयोजन सदेह स्वर्ग जाना बताया तथा अपनी योनि शूद्र बताई। यह सुनकर श्रीराम ने उसका सिर तलवार से काट दिया।

शांबूक वध के प्रसंग का विवेचन करें तो अनेक प्रश्न उठ खड़े होते हैं? यथा क्या तपस्या भी पाप हो सकती है? यदि तपस्या पाप हो सकती है तो पापों का क्या होगा? शांबूक के तथाकथित पाप के कारण उसके किसी स्वजन का अहित हो सकता था, ब्राह्मण पुत्र का निधन कैसे हुआ? यह तो कर्म के सिद्धांत के सर्वथा विरुद्ध हुआ। वैसी ही बात जैसे मैं बरेली में कोई पाप करूँ और पेट में दर्द किसी दिल्ली वाले के हो जाए, जिसे मैं जानता तक न होऊँ। कौन था वह ब्राह्मण, जो राम से भी अधिक पुण्यात्मा था? इस कथा में उस ब्राह्मण का नाम क्यों नहीं बताया गया? क्या नाम था उस महर्षि का, जिसने भरी सभा में कह दिया कि उसने तो जीवन में कोई पाप नहीं किया, अवश्य राम से ही कोई पाप हुआ है। कोई होता तो नाम बताया जाता। सारा प्रसंग कपोल-कल्पित क्षेपक है, जो वाल्मीकि के नाम से बाद में जोड़ दिया गया।

इस प्रसंग में राम का व्यवहार उनके शेष जीवन, कार्यकलाप व चरित्र से कतई मेल नहीं खाता। शांबूक की पहले 'उत्तम व्रत पालन करने वाले तापस तुम धन्य हो।' कहकर प्रशंसा करना, फिर वर्ण जानते ही सिर उतार लेना, असंगत व अविश्वसनीय है।

शबरी ने स्वयं को 'अधर्म जाति मैं जड़मति भार' कहा है। उसकी बातें सुनकर, देखकर राम तलवार भले न निकालते, दो-चार अपशब्द कह देते, परंतु उन्होंने तो—

कंदमूल फल सरस अति दिये राम कहूँ आनि।
प्रेम सहित प्रभु खाए बारंबार बखानि॥
कहें रघुपति सुन भामिनि बाता। मानहू एक भगति कर नाता॥

(रामचरितमानस, अरण्यकांड, छठा विश्राम)

अकुलीन निषादराज गुह को देखकर अयोध्या के उस राजकुमार ने भाव-विह्वल हो गले लगाया, साधारण अभिवादन से काम चल सकता था—

मुजाभ्यां साधुवृत्ताभ्यां पीडयन वाक्यभब्रवीत।
दिष्टया त्वां गुह पश्यामि ह्यरोगं सह बान्धवः ॥६२॥

(बाल्मीकि रामायण, अयोध्याकांड, ५०वाँ सर्ग)

आचार्य चतुरसेन के अनुसार वानर पूछ वाले बंदर नहीं थे, परंतु एक प्रकार की जनजाति थे। किष्किंधा राज्य की व्यवस्था देखकर यह सिद्ध होता है कि वानर राज सुग्रीव को सखा मानकर गले लगाने वाले राम, केवट निषादराज गुह, शबरी, गीधराज जटायु आदि का आदर देने वाले राम, किसी भी प्रकार से शांबूक वध के राम से मेल नहीं खाते। राम न जातिवादी थे न वर्णवादी, वे तो सदा निर्बल के समर्थक व आततायी के लिए साक्षात् काल थे। उन्होंने व्यक्ति के आचरण को देखा, उसका वर्ण और जाति नहीं देखी। ब्राह्मण होते हुए कुंभकर्ण, मेघनाथ का वध किया। सत्कर्म में रत रावण के भ्राता विभीषण को लंका का राज्य व मित्र का सम्मान दिया। छोटे भाई की पत्नी को कुदृष्टि से देखने वाले बाली को अपना शिकार बनाया, उसके भाई सुग्रीव को मित्र का सम्मान, किष्किंधा का राज्य प्रदान किया।

अपने महानायक राम की भाँति महर्षि बाल्मीकि भी करुणासिंधु थे। एक क्रोंच पक्षी की पीड़ा ने उन्हें उसका पक्षधर और हत्यारे निषाद का विरोधी बना दिया और उन्होंने उसे कभी प्रतिष्ठा न प्राप्त करने का

शाप दे डाला। जिस कवि का पहला श्लोक करुणा की गंगोतरी से निकला हो, उसका नायक क्या ऐसा जघन्य कार्य कर सकता है? स्वयं महर्षि बाल्मीकि दस्युकर्म में लीन थे। शंख ऋषि के साहचर्य एवं तपोबल से उन्होंने ब्रह्मर्षि का पद प्राप्त किया, उनके तप से किसी का अनिष्ट क्यों नहीं हुआ?

वस्तुत: श्रीराम के काल में वर्ण व्यवस्था का वह रूप नहीं था, जो आजकल है। उस समय जो ब्रह्म हो जानता था, वह ब्राह्मण था। तपोबल द्वारा विश्वमित्र व बाल्मीकि ने ब्रह्मर्षि का पद प्राप्त किया। रावण, कुंभकर्ण, मेघनाद जाति से ब्राह्मण होते हुए भी 'राक्षस' कहलाए।

इस संबंध में एक विचारणीय तथ्य यह भी है कि युद्ध कांड के अंतिम श्लोक रामायण के समापन के श्लोक लिख दिए थे—

आयुष्मारोग्यकरं यशस्यं सौभ्रातृकं बुद्धिकरं शुभं च।
श्रोतव्यमेतन्निमेन सद्भिराख्यानमोजस्करमृद्धिकामै: ॥

(बाल्मीकि रामायण, युद्धकांड, १२८वाँ वर्ग)

अर्थात् यह काव्य आरोग्य, आयु, यश व भ्रातृप्रेम को बढ़ाने वाला है। अत: समृद्धि की इच्छा करनेवाले सत्यपुरुषों को इस उत्साहवर्धक इतिहास का नियमपूर्वक श्रवण करना चाहिए। बाल्मीकि ने पाँचों कांडों के अंत में ऐसे श्लोक नहीं लिखे। बाल्मीकि आज से हजारों वर्ष पूर्व हुए, तब से उनकी रामायण किसी ताले में बंद नहीं रही। न तब आज के जैसे प्रेस थे, न कॉपी राइट कानून। अन्य कवियों ने भी बाल्मीकि के नाम से लिखा, ऐसे में किसी संकीर्णमन, घोर जातिवादी कवि ने भी शांबूक वध का प्रसंग जोड़कर बहती गंगा में हाथ धो लिये।

राम अर्थात् सबको सुख देने वाले, वे यथानाम तथा गुण थे। वैसे हरि अनंत हरिकथा अनंता। श्रीराम सबको सद्बुद्धि प्रदान करें।

३/२९ सी, लक्ष्मीबाई मार्ग
रामघाट रोड, अलीगढ़
दूरभाष : ०९८९७४१०३२०

बुना भाव का ताना-बाना

गीत

● शिवानंद सिंह 'सहयोगी'

नववसंत

बौना होना नहीं कभी मन
नहीं दर्द का टोटा होना,
नहीं कभी कम होनी ध्वनियाँ
अक्षर कभी न छोटा होना।

पतझड़ की डाली पर खुलता
कलियों का दरवाजा होना,
निर्धानता के घर में हँसता
धन-दौलत का राजा होना,
सूखी टहनी की पुलई पर
नववसंत का कोटा होना।

छिपे समय की हर गली में
अनुभव का अनुप्रास मिले तो,
अधिकारों के पुखराजों पर
आख्या का अधिवास मिले तो,
संकल्पों का चंद विलक्षण
मानवता का गोटा होना।

बचपन के मुखड़ों पर खुशियाँ
एक नया अध्याय लिखें तो,
यौवन के उल्लास पटल पर
शुचि अभिनव अभिप्राय लिखें तो,
नहीं सुअवसर होना धूमिल
आदर कभी न खोटा होना।

कालखंड

कालखंड की समयशिला पर
अनुशासन इतिहास हो गया,
अनुभव के अविनाश पटल पर
एक अमिट परिहास हो गया।

अभिसम्मत अभिकथन शब्द का
हर समाज के घर तक पहुँचा,
सागर की तलहटी जहाँ है
अंबर चढ़े शिखर तक पहुँचा,
बुना भाव का ताना-बाना
अक्षर का अनुप्रास हो गया।

अलंकार रस छंद व्यंजना
विलख-विलख आँगन तक आए,
विधा-विधा के आलोलित स्वर
वाणी को अकसर समझाए,
शब्दबोध का हंस अवतरित
एक अहम उपहास हो गया।

जल-प्रवाह के जलधि छोर पर
महाप्रलय का भोर हुआ सा,
लहरों से लहरें टकरातीं
एक तांडवी शोर हुआ सा,
कहाँ रुकेगी आँधी अविरत
कैसा विरल समास हो गया।

'शिवाभा', ए-२३३, गंगानगर
मेरठ-२५०००१ (उ.प्र.)
दूरभाष : ०९४१२२१२२५५

कहानी

निपूती

● विजय कुमार सिंह

पूतोंवाली हूँ। मैंने पूतों को जन्म दिया है। इस बात की गाँव भर में धाक है। लोग सवेरे सुहागिनों को हिदायत देते कि बूढ़ी काकी के दर्शन करने से सबकी कोख हरी जाती है और काकी शून्य में कुछ ढूँढ़ती लोक दिखावे के घेरे में उन्हें आशीर्वाद दे तो देती, पर मन-ही-मन सोचती, 'मेरे राम, इन्हें मेरी तरह लाल न देना, चाहे गोद खाली ही रहने देना।'

उर्मिला जब नई-नवेली इस गाँव में आई तो विभूति नारायण एक प्राइमरी स्कूल में मास्टर थे। निहायत ईमानदार और आदर्शों से लबरेज। नवोढ़ा पत्नी को भी इसी लिबास में रंग दिया था, पर वह सोचती, क्या कोई समुंदर उसके हृदय में नहीं होगा, जहाँ वह गोता लगा सके। मास्टरजी दिनभर गाँव के बच्चों को पढ़ाते और दिन ढलते ही उपदेशक की तरह गाँव में निकल पड़ते। उर्मिला की दिनचर्या भी इसी क्रम में ढल गई। रात का पहला प्रहर तो इंतजार में ही बीतता, दूसरे प्रहर आधी नींद में पति का स्पर्श पाती और सारे गिले-शिकवे भूल जाती। उस समय लगता कि कोई नया आदमी उसकी बगल में आ गया है। उर्मिला के दिन चाँदी और रातें सोने की हो जातीं। उसका यौवन विभूति से कसाव पाकर दिन-दुगुना फैलता ही गया और पता नहीं कब, उसकी गोद पूतों से भर गई। बच्चों ने इसके प्रेम में अपनी भागीदारी अंकित कर ली। अब उनके सामने एक रोबदार पिता उँगली पकड़कर पाटी पर वर्णमाला सिखाता और इसी गति से दोनों बच्चों ने शिक्षा के उन्नत शिखर छूने शुरू कर दिए। पति-पत्नी ने अपनी इच्छाओं का आकाश समेट लिया और जवानी में ही बुढ़ापे के रंग में रँग गए। एक ही चाह कि किसी तरह शरद और अजय अच्छी सी नौकरी पा लें। उर्मिला अपने बेटों को डरकर पूरी नजर से भी नहीं देखती। कहीं मेरी ही नजर न लग जाए, बस भगवान् से उनकी दीर्घायु की कामना करती रहती।

एक दिन डाकिया उनके जीवन के सारे तार एक चिट्ठी देकर हिला गया। बेचारी सोचती, पता नहीं कहाँ चले गए शरद के बाबू, रोज तो यहीं चक्कर काटते हैं। आज जब इतना जरूरी खत आया तो सामने नहीं हैं। उलट-पलटकर हजारों बार खत देखती। निरक्षर कुछ समझ ही नहीं पाती और जगह बदल-बदलकर उसे सँभालकर रखती। आखिर शाम चार बजे विभूति नारायण के कदम घर की देहरी पर पड़े। घुड़ककर उलाहना दिया, 'कहाँ चले जाते हो, रोज तो घर से निकालना मुश्किल हो जाता है और जब निकलते हैं तो आवारा लड़कों की तरह लौटने का नाम ही नहीं लेते। अच्छा, अब जल्दी से हाथ-मुँह धो लो। एक खुशखबरी

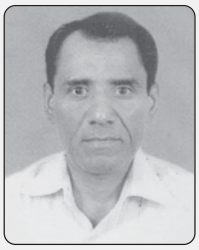

सुपरिचित लेखक। कादंबिनी, दैनिक जागरण, नवभारत टाइम्स, हिंदुस्तान राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर रचनाएँ प्रकाशित।

देनी है। देखो, ये चिट्ठी दे गया है डाकिया।' मास्टरजी ने एक ही साँस में खत पढ़ा, लगा ब्रह्मांड घूमकर एक वरके में अटक गया। कुरसी पर निढाल पड़ गए।

उर्मिला कभी हाथ मलती, कभी पैर दबाती। इतने में पड़ोस की गंगा उसकी हालत देखकर ठिठक गई। घर की बात बाहर न जाए, ऐसा सोचकर उसे कुछ नहीं बताया और यों ही बहाना करके उसे टरका दिया। दो-चार घूँट पानी मुँह पर छिड़क वह विभूति नारायण को होश में लाई। एक-एक करके सारी बात जान गई है। छाती पीटकर 'शरद! ये तूने क्या किया, हमें जहर क्यों नहीं दे दिया। अरे कुछ तो ध्यान करता अपने बाप का। हमारा तो करम ही भ्रष्ट कर दिया है।' सुना कि केरल की एक नर्स से ब्याह रचाया है सपूत ने और अब आशीर्वाद की रस्म निभाने अगले इतवार को गाँव आनेवाला है। 'मुए, कुछ तो रहम कर, बिरादरी में क्या मुँह दिखाएँगे। कम-से-कम सबके सामने नाक कटवाने तो न आए। हम तो किसी तरह मिट्टी डाल ही देते, पर बिरादरी...।' एक-एक करके गाँव की औरतों के चेहरे याद करके उर्मिला सहमकर रह गई। बार-बार उसके पिता को दोष देती—'कहती थी न, जल्दी ही अपने बराबरवालों से रिश्ता जोड़ लो, पर ये तो कलेक्टर की बेटी लाएँगे। अब आ गई न डॉक्टरनी। उसी से नब्ज टटोलवाना।' खैर, अब ममता की सारी धुरी दूसरे बेटे पर जा टिकी, पर उसके पैर तो बचपन में ही पालने में नहीं समाते थे।

होटल मैनेजमेंट का कोर्स क्या किया, वहीं से विदेश चला गया और एक गोरी मेम के चक्कर में फँस गया। दोनों ठूँठ की तरह एक-दूसरे को घूरते। उर्मिला का जीवन पति की इच्छा-अनिच्छा तक ही सीमित हो गया। साल-दर-साल झुर्रियों ने उनके चेहरों पर सत्ता काबिज कर ली। सदा खुश रहनेवाली उर्मिला अब गाँव भर की काकी बन गई। शादी-ब्याह होता तो लोग काकी के हाथों शगुनों की शुरुआत कराते, पर काकी किश्तों में टूटकर रह जाती। उसकी धड़कनें रुक सी जातीं। यही

तो करना चाहती थी अपने आँगन में। उसके रीतेपन की सुध कब लेगा प्रभु और समय बीतते-बीतते एक दिन बहुत सालों बाद डाकिया उसके दरवाजे पर फिर आया 'काकी, चिट्ठी आई है।' काँपते हाथों से चिट्ठी धोती के पल्लू में बाँध ली। लिफाफा विदेशी टिकटों से सजा था, न जाने क्या परीक्षा लेगा प्रभु। दौड़कर शरद के पिता को देकर जल्दी पढ़ने का आग्रह किया, पर कोई उत्सुकता उसके अंदर बाकी नहीं है।

एक-एक शब्द उसे ममता की अतल गहराइयों में ले गया। उसका छुटका विदेश से लौटकर दिल्ली आनेवाला है। विदेशी बहू और नाती ग्रेटर कैलाश, दिल्ली में कोठी लेकर रहेंगे। आज तो उसके पाँव धरती पर पड़ ही नहीं रहे थे। काकी की खुद्दारी मना करती। जब तक घर की चौखट पर नाक नहीं रगड़ेगा, नहीं जाएगी। बार-बार मिन्नतें करेगा तो भी न मानूँगी। पति के सामने कमजोर नहीं पड़ना चाहती, पर अपने भाग्य से डरी हुई काकी सोचती है, बहुत मुश्किलों से देवी माँ की कृपा से आज यह दिन देखा है। आसपास की औरतें खूब समझाती हैं। ना-नुकुर करते-करते अंदर-ही-अंदर काकी ने सब तैयारियाँ पूरी कर लीं। बस एक बार शरद के बापू मनुहार कर लें तो पैदल ही रास्ता नाप लेगी।

खूब उजले कपड़े पहनकर सवेरे ही दोनों स्टेशन की ओर चल दिए। काकी मन-ही-मन सोचती, 'इन मरी बिवाइयों को भी अभी पड़ना था। बहू क्या सोचेगी, मेरे फटे पैरों को देखकर। पता नहीं मेमों के पैर कैसे होते होंगे?' यही ग्रंथि उसे बार-बार धोती नीचे सरकाने के लिए विवश करती। खैर, धक्के खाते-खाते ट्रेन से दिल्ली पहुँच ही गए।

ऊँची इमारतें देखकर काकी का सिर चक्कर खाने लगा। रास्ते भर पानी भी नहीं निगला था। जी हलकान हुआ जा रहा था। बस बेटे से मिलने की इच्छा, भूख-प्यास सब सहन कर रही थी। टैक्सी भाड़े पर लेकर बेटे की कोठी पर पहुँच गए। काकी कनस्तरी और मास्टरजी गाँव के पंच से माँगी अटैची बगल में दबाए फाटक के सामने मूक खड़े हैं।

दरबान ने बाहर ही रोक दिया। 'अरे! माता-पिता हैं। जाओ अंदर, खबर कर दो मेरे अजय को, देखना कैसे भागा चला आएगा।'

'नहीं, यह समय साहब के सोने का है। बाहर ही बैठ जाओ।' माँ की ममता नींद में खलल नहीं डालना चाहती। 'मास्टरजी, अब अपना ही तो घर है। क्या फर्क पड़ता है अंदर-बाहर से। एक घंटे बाद तो स्वर्ग-ही-स्वर्ग है।' ऐसा कहकर बाहर ही इंतजार करने लगे।

इतने में एक भीमकाय पुरुष दो आदमकद कुत्ते अंदर बाँध गया। शायद जर्मन शेफर्ड रहे होंगे। दोनों की घिग्घी बँध जाती है। 'ये बूढ़े कौन हैं?' सहमकर उत्तर भी नहीं दे पाए। इतने में एक घंटा बीतते ही संतरी से हाथ जोड़कर प्रार्थना की, 'बेटा! अंदर कह तो आओ, हम आए हैं। देखो, विश्वास करो।' ऐसा कहकर बेटे का खत भी उसे दिखाया। संतरी सबकुछ समझकर अंदर चला गया। आधे घंटे बाद उनके बेटे ने रँगी-पुती मेम को बगल में दबाए, बिना किसी आतुर भावुकता के दोनों को प्रणाम किया। इस सभ्यता से अपरिचित बहू ने हाथ आगे बढ़ाकर विभूति नारायण से हाथ मिलाना चाहा, पर वह ऐसा नहीं कर पाते। 'माँ, आने से पहले खबर तो भेजी होती, हम तैयारी तो करते, अभी तो हम स्वयं ही अस्त-व्यस्त हैं।'

'अरे बेटा, अब ले आया न तेरी माँ को, सब दो दिन में व्यवस्थित कर लेगी।' 'न-बाबा-न, ऐसा न करना। मेरे स्टेट्स का सवाल है। किसी को न बताना कि हम पेरेंट्स हैं।' ऐसा समझा-बुझाकर अंदर ले गया। वहाँ पत्नी के तांडव को देखकर भूखी शेरनी के सामने जैसे चूहा, ऐसा दुबककर उसे सांत्वना दी। 'बस थोड़े ही दिनों की बात है, फिर चले जाएँगे। मैंने तो यों ही लिख दिया था।'

उर्मिला काकी चारों ओर अपने नातियों को देखना चाहती, पर उसे कहीं अपना ब्याज दिखाई नहीं दिया। सुना है, जिम गए हैं और फिर घर से बाहर बने एक कमरे में दो खटिया उनके लिए डालकर बगल में ही एक रसोई का इंतजाम कर दिया गया। जहाँ वे अपनी पसंद का भारतीय भोजन कर सकें, पर इस क्रम में दोनों को अपने बेटे का संस्पर्श नहीं मिलता। गाँव से लाए लड्डू-मठरी खोलने की भी किसी को फुरसत नहीं थी। कनस्तरी में सोई मठरी भी मुँह चिढ़ाए पूछती सी लगती, बड़े आए थे गृहस्थी देखने। धीरे-धीरे विभूति नारायण सब समझ गए। काकी का बदन भी ऐंठने लगा और बार-बार पति से गाँव लौटने का आग्रह करने लगी। त्रिया हट के सामने मास्टरजी सोचते, 'गाँववालों को क्या जवाब देंगे। जोरू का गुलाम बन गया है। कैसी नागिन के चक्कर में फँस गया, पर उन्हें तो उसका साया भी नहीं दिखता। दूसरे की गृहस्थी में बिना दखल दिए रात में ही अपने कपड़े-लत्ते बाँध लिये।'

काकी एक बार बेटे को गले लगाना चाहती थी, पर वह तो पत्नी के बाहुपाश में ऐसा जकड़ा कि माँ को क्या-क्या सपने देखे थे, लालकिला, कुतुबमीनार, चाँदनी चौक, अक्षरधाम मंदिर, कालका मंदिर, पालिका बाजार; सब नाम गाँव की किशोरी चमको से रट आई थी। 'भूलना मत काकी, वहाँ बटुए और चप्पल जरूर खरीदना, हो सके तो एक जोड़ी मेरे लिए भी ले आना।' पर बेचारी के हिस्से में तो बंद कोठरी की धूप ही आई थी। सारे आसमान बिखेरकर काकी एक बार फिर विभूति नारायण के पार्श्व में सरक आई, 'सुनो, बेटे को खबर तो कर दो कि हम जा रहे हैं।' सुनते ही पति की सारी ज्वाला एकबारगी फूट पड़ी, 'उसका नाम न लो मेरे सामने। मर चुका है मेरे लिए। उसी मेम को माँ-बाप कहियो। मरूँ तो लच्छी, उसका छुआ पानी न दियो।'

काकी की सारी सृष्टि काँप उठी। चुपचाप कनस्तरी बगल में दबाए, जैसे आए थे, उन्हीं पैरों से तारों की छाँव में कोठरी से निकल पड़े। खटपट सुनकर संतरी सजग हो गया और चोर-चोर की आवाज लगाने लगा, 'न बेटा न। हम चोर नहीं, हम तो खुद ही लुटकर जा रहे हैं।' पूरी चाहत से काकी आँख भरकर बेटे का महल देखने लगी, पर मास्टरजी को मुड़कर देखना भी गवारा नहीं। संतरी गिफ्ट करता है—'बैकवर्ड लोग आ जाता है विलेज से।'

१३८५/१३, गोविंदपुरी, कालकाजी
नई दिल्ली-११००१९
दूरभाष : ९९७१७२८०४४

राम झरोखे बैठ के

स्मार्ट भारत की परिकल्पना

● गोपाल चतुर्वेदी

बजट से वे निराश हैं। इतनी बातें, इतने वादे, पर अमल एक पर भी नहीं। पता नहीं, भारत को यह कहाँ ले जाना चाहते हैं? कोई तुक है, स्मार्ट फोन महँगा करने की? जब सबके कान में 'ईयर-प्लग' और हाथ में स्मार्ट फोन होगा, तभी तो भारत स्मार्ट बनेगा। इन्होंने तो उलटा किया है गाँवों का बजट बढ़ा करके। पिछली सरकार ने करोड़ों फूँक दिए गड्ढे खोदने और उन्हें पाटने में। यह भी वही करना चाहते हैं। वही नरेगा, वही सिंचाई की महत्त्वाकांक्षी योजनाएँ। करना तो राज्य सरकारों को है। फिर से खान-पान का अंतहीन सिलसिला चलेगा ग्राम-कल्याण के नाम पर। प्रधानजी की कोठियाँ खड़ी होंगी, जिला अध्यक्षजी के महल। रहे किसान, वे फिर अपनी किस्मत पर रोएँगे। न उन्हें शहरी बाबू बख्शते हैं, न उनके चुने हुए ग्रामीण भाई। चक्की के इन दो पाटों के बीच से उनका बच निकलना जिजीविषा का करिश्मा है।

राष्ट्रीय जेबकतरे ने दूसरों की जेब काटकर किसान कल्याण का बजट दे दिया है। अब प्रांतीय गिरहकट उससे अपनी जेबें भरेंगे। किसानों की हित साधकों को उनकी याद तभी आती है, जब उन्हें अपना हित साधना होता है। पहले वे मंच से सरकार से सिद्दई-सियापा करते हैं, बाद में खेतों से किसान। सिद्दई-सियापे का न थमनेवाला दौर चलता ही रहता है। कुछ दिनों बाद वे फिर महँगे बीज, खाद, पानी की कमी, बिजली का अभाव आदि का रोना रोते नजर आते हैं, 'वह तो केंद्रीय राशि कम आवंटित हुई, नहीं तो हम हर किसान के सपने साकार करते। यह तो केंद्र की मक्कारी है कि दस बार माँगो तो हमारे हक की राशि कभी-कभार रिलीज करते हैं, वह भी इस अंदाज में, जैसे भिखारी को मेहरबानी कर कोई भीख दे।'

कुछ का मानना है कि ग्रामों के युवा वहाँ से ऊबकर शहरों में पलायन करने लगे हैं। न वहाँ बिजली की समुचित व्यवस्था है, न पानी की, न शिक्षा की, न काम-धंधे की। लामुहाला, शहर को पलायन उनकी विवशता है। इसीलिए तो बजट से निराश नायक शहरों के विकास के पक्षधर हैं। स्मार्ट भारत तभी बनेगा, जब गाँव से शहर आए हर युवा के गले में स्मार्ट फोन लटकेगा। यह तभी मुमकिन है, जब सरकार सहयोग करे। स्मार्ट फोन पर ड्यूटी घटाए। जरूरत हो तो उन की खरीद पर अनुदान दे।

कोई सोचे, इससे कितना लाभ है। इंटरनेट से शिक्षा मिलेगी, किताबों की भी, सेक्स की भी। नई-नई देशी-विदेशी फिल्में देखकर सामान्य ज्ञान बढ़ेगा, नए-नए फैशन, प्रेम और अपराध के अभिनव तरीकों का। इन फोनों में इतना ही नहीं, संगीत की सुविधा भी है। जब कानों में संगीत गूँजता है तो आसपास के शोर, चीख-चिल्लाहट, वाहनों की चिल्ल-पों होती है तो होती रहे, किसे फुरसत है इसको सुनने की।

कई सरकारों ने युवा वोट की खातिर 'लैप-टॉप' बाँटे हैं छात्रों को। लैपटॉप साथ लेकर चलना कठिन है। जब छात्र घर के बाहर हैं तो उनका क्या उपयोग है? यों भी बिजली की मनमानी है, कभी गई तो आई नहीं। अब लैपटॉप भी सिर्फ डिब्बा बना सजावट के नकली फूलों सा, माँ-बाप के ड्राइंगरूम में सजा है। कभी-कभार कोई घर आया तो दोनों बेटे की उपलब्धि के रूप में उसे दिखाना नहीं भूलते हैं, 'पप्पू को मुख्यमंत्री ने पिछले साल ही भेंट किया है। हमें तो इसे चलाना-वलाना आता नहीं है, वही इसके उपयोग के ज्ञानी हैं।'

पप्पू के विचार इसके उलट हैं। इससे बेहतर था मुख्यमंत्री कोई स्मार्ट फोन देते। जेबी शीशे का काम करता। शक्ल निहार ली, मुसकान का परीक्षण कर लिया। एकाध सेंटीमीटर बाएँ ओठ खिंचते हैं तो कुछ वक्र सी हो जाती है मुसकराहट। अभ्यास से बराबर की दूरी पर दोनों तरफ होंठ फैलाकर इसे सीधा करना पड़ेगा, वरना लड़कियों का क्या भरोसा? वह 'टेढ़े मुँहवाला पप्पू' कहना शुरू कर देंगी। जगहँसाई होगी। फिलहाल यही अभ्यास उन्हें अब घर पर माँ-बाप से छिपकर करना पड़ता है। उन्हें फर्राटे के सफर के लिए अब मोटरसाइकिल की दरकार है। उनके कई साथी अपनी कन्या मित्रों को घर लेने इसी सवारी से जाते हैं। उनके पास मन मसोसकर रहने के अलावा कोई चारा नहीं है। लैप-टॉप तीस-बत्तीस हजार में बिकेगा। कुछ और मिलाकर किसी ढंग की बाइक की खरीद क्या बुरी है? कइयों के साथ तो गिफ्ट के बतौर स्मार्ट फोन का तोहफा भी है। बस बॉस की बात है। नंबर लग गया तो गाड़ी की गाड़ी और फोन का फोन।

समय के हर कालखंड में समानता है। बच्चों की जिद्द के आगे माँ-बाप हमेशा विवश रहे हैं। लैप-टॉप को बिकना था, बिक गया और बाइक आ गई। पिता तो समय से दफ्तर सिधारते हैं, माँ दोपहर के भोजन से लेकर बेटे का पंथ निहारती हैं। कमबख्त बाइक का कोई ठिकाना

नहीं है। साइकिल से भी बदतर है। रफ्तार तेज है। टकराई तो हड्डी-पसली टूटने का ही नहीं, जान जाने का भी खतरा है। उनके पिताजी के साथ तो साइकिल की दुर्घटना हुई थी। बेचारे दो-तीन माह अस्पताल में पड़े रहे और उसके बावजूद लँगड़ाने की सजा के भोगी बने। अब बेटा सता रहा है। बमुश्किल नाश्ता कर फुर्र से उड़ जाता है और फिर कब लौटे कोई ठिकाना नहीं है। इधर उसकी जेब में एक सैल फोन भी पड़ा रहता है। माँ ने जानना चाहा तो पता लगा कि गाड़ी की खरीद में लॉटरी थी, उसमें ही उसका नंबर आया है। बाइक लिये तो एक-दो महीने हो गए। ऐसी कौन सी लॉटरी है, जिसमें इतना वक्त लगता है खुलने में।

बेटे के हित में शक्की होना हर माँ की सिफत है। बेटा हमेशा नेक रहता है। कहीं बुरी संगत में पड़कर चोरी-चकारी तो नहीं करने लग गया है उनका लाड़ला? घर से भी घंटों गायब रहता है। पूछो तो कभी झुँझला जाता है, कभी यूनिवर्सिटी के चुनाव की व्यस्तता तो कभी एक्स्ट्रा क्लास तो कभी पार्टी जैसे देर में आने के रटे-रटाए कारण दोहराहे-तिहराहे जाते हैं। ज्यादा सवाल करना उसकी व्यक्तिगत 'स्पेस' में नाजायज घुसपैठ है। दखलंदाजी है, जो आज के किसी युवा को बरदाश्त नहीं है। उसकी माँ उदास हैं। उन्हें खयाल आता है कि शायद बच्चों का विद्रोह झेलना हर माँ की नियति है।

यूनिवर्सिटी आकर पप्पू का भी मिशन है। वह अधिक-से-अधिक लड़कियों के घर और यूनिवर्सिटी का शटल सर्विस बने हुए हैं। वह उनकी पीठ से सटकर बैठती हैं तो उनके स्पर्श से पप्पू के शरीर में बिजली का करंट सा दौड़ जाता है। उन्हें कभी-कभी खुद ताज्जुब होता है कि रोज इतना करंट झेलकर वह 'इलेक्ट्रोक्यूट' होने से कैसे बचे रहे हैं? अब उन्हें यकीन हो गया है कि यह स्पर्श की बिजली नई ऊर्जा देती है, तभी तो वह तीन-चार लड़कियों को घर से ढोने और वापस पहुँचाने में समर्थ हैं। इस भागदौड़ में उन्हें रत्ती भर थकान तक नहीं आती है। उनकी हर परिचित लड़की उन्हें राखी बाँधने को उत्सुक है। पर वह रक्षाबंधन के दिन कहाँ गुम हो जाते हैं, किसी को पता नहीं चल पाता है। यों सबके वह प्यारे पप्पू भैया हैं।

इसकी सिर्फ श्रीमती वर्मा ऐसी कुछ ही अपवाद हैं। उनका जीवन किटी पार्टियों, ब्यूटी पार्लर और बुटीकों के आसपास कोल्हू के बैल सा घूमता रहता है। कौन कहे यह शुरुआत के उनके शौक से अब मजबूरी बन गई है। न इसमें उनके पति का प्रवेश है, न परिवार का। जाने वह इससे बोर भी होती है या निरर्थक भाग-दौड़ में उन्हें जीवन का कोई अर्थ मिल गया है? अगर यह राज है तो उनके मन में दफन है। जो सच सब जानते हैं, वह सिर्फ इतना है कि श्रीमती वर्मा एक सफल और संपर्कवान सामाजिक महिला हैं, जो घर के अलावा सब जगह सक्रिय हैं। इसमें कई स्वैच्छिक संस्थाएँ भी शामिल हैं।

वहीं पप्पू अपनी बाइक और फोन में मगन हैं। पेट्रोल की समस्या पप्पू के मित्र ने हल कर दी है। उनके पिता सरकार में फुलटाइम ड्राइवर हैं और घर में पार्ट-टाइम पैट्रोल-डीजल के डीलर। वह सरकार के ड्राइवरों की यूनियन के अध्यक्ष हैं। जाहिर है कि ड्राइवर सच्ची-झूठी शिकायतें लेकर उनके पास हाजरी लगाएँ। सबसे प्रमुख शिकायत है कि सरकार जान-बूझकर वाहन चालकों के पद समाप्त करने पर उतारू हैं। पुरानी के स्थान पर नई गाड़ियों की खरीद पर रोक है। उनके स्थान पर टैक्सी ली जाती है, नियत पेट्रोल और महीने के खर्चे के आधार पर। जो ड्राइवर अपने अध्यक्ष के पास आता है, वह एकाध लीटर इस बेहद ज्वलनशील पदार्थ का तोहफा लाना नहीं भूलता है। अध्यक्ष जी ड्राइवर सेवा मिशन में वाकई रोजाना आग से खेल रहे हैं, पकड़े गए तो जेल और सिगरेट-बीड़ी से कहीं डीजल-पेट्रोल सुलगा तो राख का ढेर। फिर भी सफेदपोश चोर हैं तो साहसी हैं। उनका एक ही चुनौती भरा नारा है, 'जो हमसे टकराएगा, डीजल से जल जाएगा।' इसी डीजल-पेट्रोल की फ्री सप्लाई से उनकी तीन-चार टैक्सियाँ चलती हैं और बेटे तथा उसके दोस्त की बाइक।

यूनिवर्सिटी आकर पप्पू का भी मिशन है। वह अधिक-से-अधिक लड़कियों के घर और यूनिवर्सिटी का शटल सर्विस बने हुए हैं। वह उनकी पीठ से सटकर बैठती हैं तो उनके स्पर्श से पप्पू के शरीर में बिजली का करंट सा दौड़ जाता है। उन्हें कभी-कभी खुद ताज्जुब होता है कि रोज इतना करंट झेलकर वह 'इलेक्ट्रोक्यूट' होने से कैसे बचे रहे हैं? अब उन्हें यकीन हो गया है कि यह स्पर्श की बिजली नई ऊर्जा देती है, तभी तो वह तीन-चार लड़कियों को घर से ढोने और वापस पहुँचाने में समर्थ हैं। इस भागदौड़ में उन्हें रत्ती भर थकान तक नहीं आती है। उनकी हर परिचित लड़की उन्हें राखी बाँधने को उत्सुक है। पर वह रक्षाबंधन के दिन कहाँ गुम हो जाते हैं, किसी को पता नहीं चल पाता है। यों सबके वह प्यारे पप्पू भैया हैं। मित्रों ने उन्हें 'वाहन सेवक' की उपाधि से नवाजा है। कई दोस्त इश्क का पेंच लड़ाने में उस्ताद हैं। वह उन्हें प्रोत्साहित भी करते हैं, पर पप्पू को ऐसे संबंधों में विश्वास नहीं है, 'यार! क्या हमें खबर नहीं है कि इनमें से हर लड़की का किसी-न-किसी के साथ 'अफेयर' है। हमारे साथ दोस्ती है। देखें, दोस्ती ज्यादा टिकाऊ है कि अफेयर?'

उन्हें एक ही शौक है। हर लड़की के साथ उनका हँसता-खिलखिलाता सेल्फी फोन में कैद है। उन्हें अपनी इस सेल्फी गैलरी पर गर्व है। वह लड़कियों के घर के सदस्य बन गए हैं। माता-पिता, भाई, बहन सब उन्हें अपना मानते हैं। कई बार तो उनसे सवाल भी करते हैं, 'यूनिवर्सिटी में सब ठीक-ठाक तो है? इधर सुरभि की शादी की बात चल रही है, जरा सी भी बदनामी से सब खेल बिगड़ सकता है।' वह माँ-बाप को आश्वस्त करते हैं कि सुरभि जैसी नेक लड़की हमेशा निगाह नीची कर चलती है। उसका किसी के साथ नाम जुड़ने का सवाल ही नहीं है। मन-ही-मन वह जानते हैं कि सुरभि और सौरभ विश्वविद्यालय में कैंटीन से लेकर क्लास तक एक-दूसरे में खोए रहते हैं। पर उन्हें यह भी ज्ञात है कि ऐसे रिश्ते सिर्फ यूनिवर्सिटी तक सीमित हैं। प्रेम विवाह से

न आधुनिक स्मार्ट भारत का कोई युवा दहेज दाँव पर लगाने को प्रस्तुत है, न उस के माँ-बाप। सारी 'स्मार्टनैस' बराबर की शिक्षा, नौकरी, कमाई आदि तक धरी रह जाती है। उसके बाद, विवाह-कुंडली के मिलाप, दहेज की रकम और जात-गोत्र पर निर्भर है। इन अनिवार्य सामाजिक बंधनों को बिरले ही तोड़ पाते हैं। कौन कहे, ऐसी शुरुआत होगी तो कब होगी?

इस विषय में उनके अपने विचार स्पष्ट हैं। पढ़ाई-लिखाई में उसकी रुचि नहीं है। जो दहेज और नौकरी की नियामत दे, वह वहाँ शादी करने को प्रस्तुत है। लड़की सुंदर हो या बदशक्ल, क्या फर्क पड़ता है? प्यार तो साथ रहने से पनपता है। यूनियन के चुनाव में उन्होंने गला फाड़कर नारे भी लगाए हैं, पर वह उस हर परंपरा के समर्थक हैं, जो उन के स्वार्थ की पूर्ति करे।

जब से उन्हें स्मार्ट फोन मिला है, वे आते-जाते कान में 'इयर-प्लग' लगाकर गाने सुनते हैं। यह उनका नियमित रुटीन है। लाल बत्ती पर ट्रैफिक रुका तो बिना इधर-उधर देखे वह फोन से अपनी हैलमेट लगी सेल्फी लेने में व्यस्त हैं। लड़कियाँ ऐसी सेल्फी देखकर उन्हें स्पेस-मैन कहकर पुकारती हैं। स्पेस की खबर नहीं है तो क्या हुआ? वहाँ के मैन तो वह बन ही गए हैं। वह इस तथ्य से प्रभावित हुए कि लड़कियाँ उनकी सेल्फी से प्रभावित हैं।

पहले उन्हें खयाल आया कि हवाई अड्डे से 'रन-वे' पर सेल्फी ली जाए। पर सिक्योरिटी के कारण वहाँ तो प्रवेश असंभव है। 'भागते भूत की लँगोटी भली' के अंदाज में उन्होंने मजबूरी में रेलवे स्टेशन का चयन किया। वहाँ ट्रैक पर खड़े होकर पीछे-पीछे से आती ट्रेन की पृष्ठभूमि में सेल्फी लेकर वह दूसरी ओर कूद जाएँगे। वह अपनी 'कन्या शटल सर्विस' को अंजाम देकर स्टेशन सिधार गए। वहाँ देखा तो पाया कि लगातार ट्रेनें आ-जा रही हैं। दूर की पटरी नजर आई, जहाँ अपेक्षाकृत सन्नाटा था। वह उसी ओर चल दिए, अपने कानों को संगीत से अवरुद्ध किए। वह काफी दूर निकल आए तो पीछे से पटरियों पर कुछ आहट सी सुनाई दी। उन्होंने मुड़कर देखा नहीं, बस सेल्फी के अंदाज में फोन लेकर रुके ही थे कि उनके चीथड़े उड़ गए। दूसरे दिन सुर्खियों में खबर थी 'सेल्फी के चक्कर में एक अन्य युवा दुर्घटना का शिकार'। बमुश्किल उनके माता-पिता को सूचना दी गई पुलिस द्वारा। उनके घरवाले अभी तक इन अनपेक्षित अवसाद से नहीं उबर पाए हैं। उन्हें लगता है कि सेल्फी इक्कीसवीं सदी की आत्मकेंद्रित प्रवृत्ति की विकृति है। यह प्रतीक है उस समाज की, जहाँ व्यक्ति सिर्फ अपनी सोचता है और किसी की नहीं।

'शटल सर्विस' की लड़कियाँ उन्हें कब का भूल चुकी हैं। आजकल वे किसी और उल्लू को फाँसने की फिराक में हैं। श्रीमती वर्मा की भाग-दौड़ जारी है। बस उन्होंने वर्माजी से 'आपसी सहमति' के आधार पर छुटकारा पा लिया है। वह अपने नए परिवार के साथ मिलकर बुटीक चला रही हैं। वह उसी बुटीक का स्वामी है, जहाँ श्रीमती वर्मा अकसर फेरे देती थीं। पता नहीं, अब उन्हें अपने जीवन का अर्थ मिला है कि नहीं?

दहेज, जातिवाद, अधकचरी शिक्षा, हर स्तर पर असमानता के बावजूद हम स्मार्ट भारत का सपना देख रहे हैं, इस उम्मीद के साथ कि अचानक बिना किसी प्रयास के सब ठीक हो जाएगा, बस नींद से उठने की देर है। अभी तक आरक्षण ही हर ऐतिहासिक सामाजिक अन्याय, विषमता का सफल-असफल रामबाण इलाज रहा है, क्या अब स्मार्ट फोन उस की जगह लेगा? देश के तथाकथित नेताओं को भी युवाओं के वोट इस में नजर आएँ तो वे स्मार्ट फोन की रट लगाने से बाज नहीं आनेवाले हैं, वरना जात तो है ही!

९/५, राणा प्रताप मार्ग
लखनऊ-२२६००१

चप्पल की कील

लघु कथा

● विनोद शंकर गुप्त

गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर को कहीं भाषण देने जाना था। अत: जल्दी में उन्होंने चप्पलें पहन लीं, जिसकी कील निकली हुई थी। भाषण देकर गुरुदेव चलने लगे तो लोगों ने देखा कि उनका पैर खून से लथपथ है। इतने कष्ट के बाद भी गुरुदेव ने अपने भाषण की रसधारा में क्षणभर की भी बाधा पैदा न होने दी, तभी किसी ने पूछा, ''जब कष्ट हो रहा था तो आप रुके क्यों नहीं?'' इस पर गुरुदेव ने कहा, ''सभी बंधु भाषण सुनकर आनंद का उपभोग करने आए थे, उन्हें अपना दु:ख परोसना मुझे अशोभनीय लगा, इसलिए उसे अपने में समेटे रखा और श्रोताओं को आनंद परोसता रहा।''

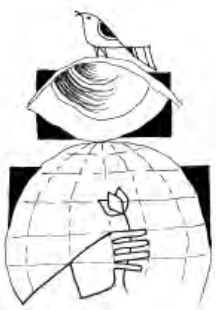

ए-३, ओल्ड स्टाफ कॉलोनी,
जिंदल स्टेनलेस लि., ओ.पी. जिंदल मार्ग
हिसार-१२५००५
दूरभाष : ९४१६९९५४२२

खड़ी बोली के शब्द-शिल्पी : हृषीकेश चतुर्वेदी

● रुद्रदत्त चतुर्वेदी

संस्कृत साहित्य भाषा-चातुर्य और शब्द-संयोजन के लिए प्रसिद्ध है। काव्य की परिभाषा करते हुए आचार्य मम्मट ने इसे 'वाक्यं रसात्मकम्' कहा है। बीसवीं शताब्दी में जहाँ खड़ी बोली में अतुकांत कविता का जन्म और विकास हो रहा था, वहीं इस सदी के प्रथमार्ध में आगरा में कविवर हृषीकेश चतुर्वेदी ऐसी वैविध्यपूर्ण रचनाओं में रत थे, जो एक स्थान पर संस्कृत साहित्य में भी नहीं मिलती। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि ऐसा कवि एक दो शताब्दी इधर-उधर नहीं जनमा है। उनके काव्य में भाषा-चातुर्य, कला-चातुर्य और छंद विविधता मन को मोहने के साथ आश्चर्यचकित भी कर देती है। उनकी रचनाएँ भावप्रवणता और बुद्धि-विलास दोनों का संयुक्त उदाहरण है। अब मुख्य विषय की चर्चा उनकी कविता के कलापक्ष से करते हैं। नीचे लिखा दोहा पढ़ते समय दोनों ओठ एक दूसरे को नहीं छूते—

स्व. हृषीकेश चतुर्वेदी

नन्द-नंदन आनंद-घन सील-सनेह निधान।
नारायण नटराज जय, नर-नायक रसखान॥

यदि यह हिंदी का दोहा है तो संस्कृत में निरोष्ठ्य श्लोक भी हैं। एक उदाहरण—

कृष्ण कृष्ण जगन्नाथ, नन्द-नन्द दयानिधे।
जगद्रक्ष जगद्रक्ष, जन संहारि-संगरात॥

अब कुछ ऐसे दोहों की चर्चा करता हूँ, जिन्हें चित्रपद्य कहते हैं—

कमल नयन श्री राम पद जगपयोधि जलयान।
तिनके गुन पर द्वै घड़ी कर नर मन सन कान॥

बार-बार नर देह यह मिलै न तो कहँ यार।
तार रार कर तोर कर हर हर कर हर बार॥

धरम-करम कर तू सदा, कर संचित 'सत-नाम'।
है पूरन-परमातमा, सुख-संपति कर धाम॥

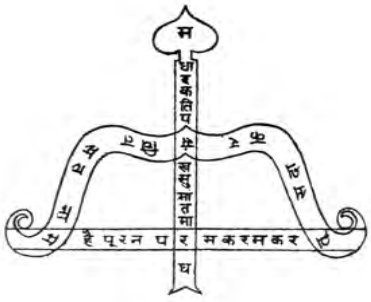

यहाँ महत्त्वपूर्ण बात यह है कि सामान्यत: जब कविता बुद्धिवादी हो जाती है तो रसतत्त्व समाप्त हो जाता है, परंतु यहाँ काव्य के चमत्कार में सरसता विद्यमान है, क्योंकि सरसता के अभाव में कोई उक्ति काव्य नहीं कही जा सकती। यदि काव्य भाव माधुर्य पैदा करता है तो कलात्मकता लावण्य पैदा करती है। हृषीकेशजी ने केवल तीन प्रकार के बंध ही नहीं लिखे बल्कि पताका बंध, छत्र बंध, अष्ट कमलदल बंध, मुष्टिका बंध, चित्र-पत्र आदि भी लिखे हैं। उनकी रचनाएँ बहुमुखी हैं, उनकी अभिव्यक्ति बहुविध है। एक संवेदनशील चित्रकार के साथ-साथ उनका भाषा पर पूर्ण अधिकार था। उनका 'एकाक्षर त्रिपदी बंध' पठनीय है—

व	का	है	अ	ह्याँ	व	गु	खा
ही	न	री	ली	कौ	र	न	न
क	मा	मे	भ	वा	द्य	छि	ध्या

नोट : *प्रथम पंक्ति को पढ़ने के लिए पंक्ति के प्रत्येक अक्षर को क्रमशः द्वितीय पंक्ति के प्रत्येक अक्षर से जोड़ते जाइए। द्वितीय पंक्ति के लिए तृतीय पंक्ति के अक्षरों को द्वितीय से जोड़िए और बन गया दोहा—*

वही कान है, री अली! ह्याँ कौ वर गुन खान।
कही मान मेरी भली, बाकौ घर छिन ध्यान॥

हृषीकेशजी के साहित्य के विभिन्न आयाम हैं। एक ही व्यक्तित्व में कई धाराएँ सम्मिलित हैं। कथन वैचित्र्य काव्य को नवीनता प्रदान करता है। कविवर कालिदास के शब्दों में 'क्षणे-क्षणे यन्नवतामुपैति तदैव रूपं रमणीयताया।' यहाँ एक ऐसा दोहा उद्धृत कर रहा हूँ, जो दोनों ओर से एक ही तरह पढ़ा जा सकता है—

सखा सोहै जो, है सो खास।
अथवा
सदा मुनि बन, मानव! विभुदास॥
अथवा

चीन के आक्रमण के समय चीन के इरादों पर लिखे गए कवित्त की एक पंक्ति—'लगै चीनी की नीची गैल।'

इसी प्रकार एक बिना मात्राओं और संयुक्त अक्षरोंवाला कवित्त पठनीय है। शीर्षक है—'पनघट लीला।' ऐसे कवित्तों को डमरू कवित्त कहते हैं। अर्थात् वे पढ़े जाते समय वाद्य यंत्र डमरू की तरह ध्वनि करते हैं—

नटवर नटखट झगरत झटपट; झपत न मन झटपट पट झटकत।
अचक अरत अकरत, पकरत कर; करत न डर बरबस घट पटकत॥
नव-नव छल बल, रचत अनवरत; अटपट वचन कहत मग मटकत।
अटकत अबलन सन पनघट पर; डटत करत हट हटत न हटकत॥

हृषीकेशजी ने एक खंडकाव्य 'श्रीराम-कृष्ण काव्य' लिखा है, जो विलोम काव्य है। यदि सीधे पढ़ा जाए तो भगवान् राम का जीवन-वृत्त है और विपरीत (उल्टा) पढ़ा जाए तो कृष्ण-चरित है।

रामा हरैं कष्टइ तीव्र धारा।
हैं सोपमी, सत्य निरीह जो हैं॥
अर्थात् सभी उपमाओं युक्त सत्यरूप
तथा इच्छा रहित श्रीरामजी हमारे
दूर करें।

राधा-व्रती इष्ट करें हमारा।
हैं जो हरी, नित्य समीप सोहें॥
अर्थात् जिन्हें राधाजी परम प्रिय हैं,
जो विष्णु रूप हैं, वे हमारे समीप
शोभायमान हैं।

इसी प्रकार हृषीकेशजी ने 'राम कृष्णायन' नामक खंडकाव्य लिखा है। यह श्लेष-यमक काव्य है। इसमें कॉमा आगे-पीछे करने से भी अर्थ बदल जाता है। सरल भाषा में 'रोको मत, जाने दो' और अल्प विराम

जाने-माने लेखक। पत्र-पत्रिकाओं में शताधिक लेख प्रकाशित। 'गीतामृत पदावली' संपादित ग्रंथ, 'वेदामृत' (वेद की ऋचाओं का पद्यानुवाद)। सत्यमेव इंडिया डॉट कॉम वेवसाइट पर भी सामग्री उपलब्ध।

परिवर्तन अर्थ बदल देते हैं। जैसे 'रोको, मत जाने दो' अथवा रोको मत, जाने दो।

राम पक्ष

श्री विष्णु सोहैं नर रूप में जहाँ
हैं सिद्धि आठौं 'वसु' देव के वहाँ।
ता देव की कीर्ति कथा बखानते वहाँ।
न इंद्र ब्रह्मा दिहु भेद जानते वहाँ॥

कृष्ण पक्ष

श्री विष्णु सोहैं नर रूप में जहाँ,
हैं सिद्धि आठौं 'वसु' देव के।
हैं सिद्धि आठौं 'वसु' देव के।
हैं सिद्धि आठौं 'वसु' देव के॥

हृषीकेश चतुर्वेदी केवल काव्य तक ही सीमित नहीं थे, उन्होंने समाज की विसंगतियों पर भी कलम चलाई थी। व्यवसायी की जीवन शैली का वर्णन इस वर्ग की मनोवृत्ति को दरशाता है। उन्होंने इस वर्ग को 'लाला' कहकर संबोधित किया है। 'लाला लीला' शीर्षक से शब्द चमत्कारों के साथ पठनीय हैं—

'लाला पढ़े 'ला' 'ला', अर्थ से ही रखते हैं अर्थ
जानें बिना 'अर्थ', व्यर्थ जग की जलपना¨

चाँदी इनकी है यहाँ आठौ याम साठ घड़ी,
सोने में भी देखते हैं सोने का ही सपना।

पंच दश (१५) अक्षर का जापें महामंत्र एक
राम नाम जपना, पराया माल अपना॥

इसी प्रकार 'बारात है या डाका है', 'छात्रों का रूप' अथवा नेताओं की प्रकृति/ विकृति पर भी कलम चली है, जब वे लिखते हैं—

प्रकृति ने चंदा गोल करके दिखायौ एक,
तुमने अनेक चंदा रात-दिन गोल करे।

विसंगतियों और भ्रष्टाचार पर प्रहार में कवि कहीं नहीं चूके हैं। उन्होंने ठेकेदारों, चोर कवियों आदि किसी को नहीं बख्शा है और तो और, साक्षर (लिटरेट) और शिक्षित (एजुकेट) का भी दो पंक्तियों में अंतर बता दिया है—

साक्षर होकर समझते, जो निज को सर्वज्ञ।
'अ' से 'ज्ञ' तक पढ़ लिए किंतु रहे वे अज्ञ॥

और अंत में अपने एक अनुभव के साथ कविवर नीरजजी से क्षमायाचना सहित बात समाप्त करना चाहूँगा। आगरा के एक कवि सम्मेलन में हृषीकेश चतुर्वेदी कविता पाठ कर रहे थे। नीरजजी अपनी रौ में मसनद के सहारे लेटे थे और उनके पैर हृषीकेशजी की कमर पर टिक गए। हृषीकेशजी को यह अप्रिय लगा। उन्हीं दिनों नीरजजी की पुस्तक 'नीरज की पाती' प्रकाशित हुई थी। हृषीकेशजी आशुकवि थे, उन्होंने तत्काल एक छंद बनाया, जिसकी अंतिम पंक्तियाँ थीं, 'नीरज की पाती नहीं सर में समाती हैं।' और संकेत से पुस्तक तथा सर की ओर इशारा कर दिया। हड़बड़ाकर नीरजजी उठे और उन्होंने खेद सूचक तरीके से उनके घुटनों पर हाथ लगाते हुए हृषीकेशजी की ओर देखा। हृषीकेशजी ने हाथ से संकेत करते हुए बताया कि नीरज की पाती अर्थात् कमल-पत्र, सर में अर्थात् तालाब में नहीं डूबता है। मामला खुशनुमा हो गया और बात समाप्त हो गई।

हृषीकेशजी की वैविध्यपूर्ण रचनाओं पर शोध वांछित है। कहा जा सकता है कि साहित्य के विभिन्न पक्षों के वे पूर्णांक हैं। साहित्य के इस प्रज्ञापुरुष के चरणों में मेरी श्रद्धांजलि है।

सी-२१, देवरतन अपार्टमेंट
एच पार्क के पास, महानगर विस्तार, लखनऊ-२२२००६
दूरभाष : ९४५०९२७६७१

कविता

महामना मालवीय

● **विनोद चंद्र पांडेय**

महामना हे! जन्म दिवस पर तुमको कोटि प्रणाम।
भारत के महान् पुरुषों में तुम विशेष विख्यात।
शुभ व्यक्तित्व कृतित्व तुम्हारा किसे नहीं है ज्ञात।
हृदय-हृदय में अंकित अब भी अमर तुम्हारा नाम।
महामना हे! जन्म-दिवस पर तुमको कोटि प्रणाम॥

हुआ प्रफुल्लित तुम्हें जन्म दे पावन पुण्य प्रयाग।
शिक्षा के प्रति रहा तुम्हारा आजीवन अनुराग।
प्रभु-प्रदत्त प्रतिभा पाई थी तुमने ललित ललाम।
महामना हे! जन्म-दिवस पर तुमको कोटि प्रणाम॥

तुमको हुआ विविध शास्त्रों का परम समुन्नत ज्ञान।
मातृभूमि भी धन्य हो गई, पा उद्भट विद्वान।
मिला तुम्हें वक्तृत्व-कला का गुण अनुपम अभिराम।
महामना हे! जन्म-दिवस पर तुमको कोटि प्रणाम॥

भारत-भू की पराधीनता थी न तुम्हें स्वीकार।
जननी-जन्मभूमि के प्रति तुम्हें अप्रतिम प्यार।
तुससे अति गतिशील हो सका स्वतंत्रता-संग्राम।
महामना हे! जन्म-दिवस पर तुमको कोटि प्रणाम॥

तुमने किया विश्वविद्यालय का अद्भुत निर्माण।
काशी नगरी हुई सुशोभित, हुआ छात्र-कल्याण।
कठिन साधना, कठिन तपस्या का पुनीत परिणाम।
महामना हे! जन्म-दिवस पर तुमको कोटि प्रणाम॥

तुम सहृदयता, सज्जनता की रहे अलौकिक मूर्ति।
जन-जन में जाग्रत् की तुमने, नवजीवन की स्फूर्ति।
तुमको प्रिय थी अपनी संस्कृति, तुमको प्रिय थे राम।
महामना हे! जन्म-दिवस पर तुमको कोटि प्रणाम॥

'धर्मात्मा' कह तुम्हें सभी ने दिया अमित सम्मान।
तुम थे मानवता के पोषक तुम थे दया-निधान।
परहित का कर्तव्य निभाया, तुमने नित हर याम।
महामना हे! जन्म-दिवस पर तुमको कोटि प्रणाम॥

हिंदी भाषा के प्रति मन में, रहा अपरिमित प्रेम।
संस्कृत भाषा का भी तुमने चाहा मन से क्षेम॥
पठन और पाठन में प्रतिक्षण लगे रहे अविराम।
महामना हे! जन्म-दिवस पर तुमको कोटि प्रणाम॥

हुए सफलतम संपादक तुम, कर संपादित पत्र।
कीर्ति तुम्हारी व्याप्त हो गई, यत्र-तत्र-सर्वत्र।
सेवा का ही व्रत अपनाया, ईष्ट न था विश्राम।
महामना हे! जन्म-दिवस पर तुमको कोटि प्रणाम॥

करते हमें रहेंगे प्रेरित, जीवन के संदेश।
भूल नहीं पाएगा तुमको कभी हमारा देश।
खड़ा आज भी बन स्मारक, है विद्या का धाम।
महामना हे! जन्म-दिवस पर तुमको कोटि प्रणाम॥

सी-१०, सेक्टर जे
अलीगंज, लखनऊ-२२६०२४ (उ.प्र.)

व्यंग्य

असली साहित्यकार

● पूरन सरमा

यह विषय इतना सामयिक हो गया है कि निरंतर विवाद के बावजूद हल होने का नाम ही नहीं लेता। साहित्यकार और असली साहित्यकार का फर्क समझ में तो आता है, परंतु उसकी मान्यता गले नहीं उतर पाती। आदमी जब साहित्यकार हो जाता है तब वह आम आदमी से पर्याप्त रूप से भिन्नताएँ ग्रहण करता है और यदि असली साहित्यकार बन जाए तो हद से ज्यादा विशिष्ट बन जाता है। साहित्यकार और असली साहित्यकार के भेद को समझना आज की स्थितियों में नितांत जरूरी है। वरना कई जगह हमें दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। वह इसलिए कि जैसे पत्रकार को साहित्यकार मान लिया जाए या कि साहित्यकार को असली साहित्यकार मान लिया जाए और असली साहित्यकार को घसियारा।

आजकल पत्रकार और साहित्यकार में तो ज्यादा फर्क नहीं है, वहाँ फकत दृष्टिभेद है, क्योंकि पत्रकार साहित्यकार बन रहे हैं और साहित्यकारों का रुझान निरंतर पत्रकारिता की ओर हो रहा है। इसलिए इन दोनों के बीच इतनी घपलेबाजी हो गई है कि पत्रकार और लेखक दोनों को साहित्यकार मानना ही हित में है। पत्रकारों के हाथ में अखबार है। अत: वे खूब लिखते हैं—लिखनेवाला लेखक होता है और लेखक साहित्यकार होता ही होता है, इसमें दो राय कहीं नहीं है। लेखक पत्रकार-संपादक की कृपा पर आजकल बहुत निर्भर हो गया है। अत: उसका साहित्यकार बनना उस पर ही है। चूँकि लेखक भी छपता है, अत: वह भी साहित्य को रचनेवाला है, इसी आधार पर उसके भी साहित्यकार होने में शक नहीं है।

लेकिन हमें जानना है उस जीव के बारे में, जो असली साहित्यकार है। असली साहित्यकार की स्थिति आजकल वैसी ही है, जैसी कि असली घी की। वनस्पति घी के चलन व मिलावटियों की साजिशों के पीछे जैसे देसी घी अपनी मूल पहचान खो बैठा है, उसी तरह यह असली साहित्यकार भी बहुत ही उपेक्षित रह गया है। असली साहित्यकार की अव्वल पहचान यह है कि वह साल में एक-आध बार लिखता है और फिर लंबी चुप्पी साध जाता है। वह ज्यादा छपनेवाले लेखकों की आलोचना करता है तो बचे समय में त्योरियाँ चढ़ाए और गंभीर मुद्रा चिंतन प्रधान शिल्प में अपने कमजोर चेहरे पर लगाए रखता है। असली साहित्यकार लिखता कम और भाषण ज्यादा देता है। यदि उसके मौखिक वचनों को टेप किया जाए तो प्रतिदिन एक पॉकेट बुक तैयार की जा सकती है।

सुपरिचित व्यंग्यकार। अब तक चौदह व्यंग्य-संग्रह, एक उपन्यास 'समय का सच' एवं बाल साहित्य की करीब बीस पुस्तकों का प्रकाशन; 'कन्हैयालाल सहल पुरस्कार' के साथ-साथ अनेक बार पुरस्कृत-सम्मानित।

यह जीव साहित्य को मौखिक रूप से ज्यादा नष्ट करता है। साहित्य का यह भाषण इतना ऊल-जलूल व जटिल होता है कि पत्रकार और साहित्यकार आम तौर पर ऐसे समय में उबासियाँ लेते हैं तथा उससे पिंड छुड़ाने को छटपटाते हैं।

असली साहित्यकार घर में बच्चों तथा बीवी पर भी साहित्य का क्षय करता है। वह बात-बात में साहित्यिक बिंबों और प्रतीकों के जरिए जीवन-शैली उभारता है तथा मुश्किलों से अनजान बनकर साहित्य के प्रति गहरी चिंता व्यक्त करता है। इस वजह से घरवाले भी इस तेंदुए को ज्यादा नहीं छेड़ते तथा अपने आपको बचाने के प्रयत्नों में लगे रहते हैं। यह जीव आमतौर पर घर में पड़ा ही पाया जाता है तथा काम-धाम व नौकरी आदि के प्रति इसकी रुचि कतई नहीं पाई जाती है। आमतौर पर असली साहित्यकार की पत्नी कमाती है और वह फोकट की रोटियाँ खाकर दिनभर साहित्य की उधेड़बुन में लगा रहकर पान की दुकान तथा चाय-पकौड़ी की थड़ियों पर साहित्य बघारता है। वह इन स्थानों पर घंटे से लेकर सात-आठ घंटे प्रतिदिन नष्ट करता है और अपने साहित्यकार का जीवन बनाए रखता है।

असली साहित्यकार चूँकि स्पष्ट रूप से असली है। अत: वह छपने पर ऊपरी तौर पर ज्यादा जोर नहीं देता। वह सामग्री की गरिष्ठता तथा उसके बोझिलपन को निरंतर उभारने में लगा रहता है। हालाँकि उसकी हार्दिक तमन्ना अधिकाधिक छपने की होती है तथा पारिश्रमिक प्राप्त करने की भी, परंतु यह भाव वह कभी भूल से भी प्रकट नहीं करता तथा निर्लिप्त भाव से दिनभर थूक बिलोता है। वह ज्यादा छपनेवाले साहित्यकारों पर प्रोफेशनल होने का लांछन लगाकर खुश होता है तथा उनके साहित्य की खिल्ली उड़ाकर घटिया तथा निम्नस्तरीय होने का फतवा देता है। सामान्य रूप से असली साहित्यकार अपना लिखा फाइलों में बाँधकर अपनी सोने की चारपाई के नीचे ढेर लगाता रहता है तथा साहित्य को दीमकों के प्रति समर्पित करता रहता है।

असली साहित्यकार की यह भी एक अपनी पहचान है कि वह स्वदेशी साहित्य व साहित्यकार की बात नहीं करता। वह दूसरी भाषाओं तथा देशों के साहित्यकारों की बात करके अपनी विद्वत्ता की छाप छोड़ता है तथा उन्हीं के उदाहरण देकर साहित्य की सार्थकता का बखान करता है। वह अपने स्थानीय समकालीनों को नकारकर आमतौर पर इतनी ऊँचाई पर बैठा रहता है कि उस ऊँचाई को छूना किसी प्रोफेशनल साहित्यकार के लिए सहज नहीं है। यदि वह उस ऊँचाई को छूने की कोशिश करे भी तो दाँत-मुँह तुड़वा बैठे तथा उसकी गृहस्थी की आराम से चलती गाड़ी चरमराकर टूट जाए। इसलिए असली साहित्यकार की देखा-देखी अमूमन साहित्यकार नहीं करता है।

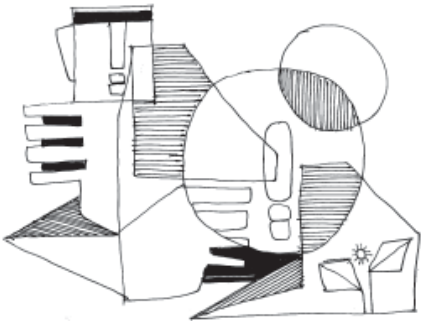

विचार-गोष्ठियाँ असली साहित्यकार का प्रिय स्थल हैं। इन गोष्ठियों का आयोजन तीन साहित्यकार मिलकर कर सकते हैं। पूरे साहित्य की चिंता उस समय इन तीनों पर इतने भयंकर रूप से हावी होती है कि ये लोग तनिक भी विचलित नहीं होते तथा गंभीरतापूर्वक अपने चिंतन में लगे रहते हैं। उन्हें लगातार यह आभास रहता है कि यदि उन्होंने तनिक भी इस कार्य में लापरवाही बरती तो साहित्य का सत्यानाश तथा बड़ा अनर्थ हो जाएगा। इसलिए गोष्ठियों में साहित्य तथा अपना स्वयं का हाजमा ये लोग निरंतर खराब करते रहते हैं। लेखक-सम्मेलन, विचार-गोष्ठी, साहित्य-संगोष्ठी तथा भाषण आदि के आमंत्रण पर यह जीव प्रफुल्लित होता है तथा अपने स्वयं के किराए से यह उन कार्यक्रमों में शरीक होता है, क्योंकि किराया उन्हें अपनी पत्नी की कमाई से मिलता है। अत: वे इसके प्रति ज्यादा चिंतित नहीं रहते। असली साहित्यकार कार्यक्रमों की अध्यक्षता तथा मुख्य अतिथि बनने का भी शौकीन पाया जाता है—वह राजनेताओं की आलोचना करता है तथा उन्हें फूहड़ समझकर अपना औचित्य ठहराता है।

असली साहित्यकार यदा-कदा अनियतकालिक पत्र-पत्रिकाओं तथा छोटे साप्ताहिक पत्रों में छपता है तथा अपनी ही रचनाओं पर बहस करता है। उसकी रचनाएँ पढ़ने को आमतौर पर साहित्यकार तरसते रहते हैं, और वह है कि उन पत्रिकाओं में रचनाएँ छपवाता है, जो कहीं भी पढ़ने को नहीं मिलतीं। वे पत्र-पत्रिकाएँ उन्हीं सीमित लोगों के पास पहुँचती हैं, जो साहित्य की निरंतर आम साहित्यकार और आम आदमी से दूर ले जाते हैं। एक रचना लिखने के बाद वर्षों तक असली साहित्यकार उसके गुणावगुण का बखान करता है। असली साहित्यकार, जो कुछ भी लिखता है, बस वही साहित्य होता है—बाकी सब कूड़ा-करकट माना जाता है। वह बुक स्टॉल पर बिकनेवाली पत्रिकाओं को पढ़ता है, खरीदता है, परंतु उन्हें व्यावसायिक मानकर घृणा करता है।

१२४/६१-६२, अग्रवाल फार्म,
मानसरोवर, जयपुर-३०२०२० (राजस्थान)
दूरभाष : ०९८२८०२४५००

सुधी पाठकों से निवेदन

- जिन पाठकों की वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है, कृपया वे सदस्यता का नवीनीकरण समय से करवा लें। साथ ही अपने मित्रों, संबंधियों को भी सदस्यता ग्रहण करने के लिए प्रेरित करने की कृपा करें।
- सदस्यता के नवीनीकरण अथवा पत्राचार के समय कृपया अपने सदस्यता क्रमांक का उल्लेख अवश्य करें।
- सदस्यता शुल्क यदि मनीऑर्डर द्वारा भेजें तो कृपया इसकी सूचना अलग से पत्र द्वारा अपनी सदस्यता संख्या का उल्लेख करते हुए दें।
- चैक अथवा बैंक-ड्राफ्ट साहित्य अमृत के नाम से भेजे जा सकते हैं।
- ऑन लाइन बैंकिंग के माध्यम से सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के एकाउंट नं. १११०७३४३९३ अथवा CBIN ०२८०२९७ में साहित्य अमृत के नाम से शुल्क जमा कर फोन अथवा पत्र द्वारा सूचित अवश्य करें।
- पत्रिका न मिलने पर १५ से २० तारीख तक सूचित कर दें, ताकि वह अंक नए अंक के साथ भेजा जा सके।
- आपको अगर साहित्य अमृत का अंक प्राप्त न हो रहा हो तो कृपया अपने पोस्ट ऑफिस में पोस्टमैन या पोस्टमास्टर से लिखित निवेदन करें। ऐसा करने पर कई पाठकों को पत्रिका समय पर प्राप्त होने लगी है।
- सदस्यता संबंधी किसी भी शिकायत के लिए कृपया कार्यालय दिवस में २ से ५ बजे तक फोन नं. ०११-२३२५७५५५, २३२७६३१६ अथवा **sahityaamrit@gmail.com** पर इ-मेल करें।

दोहे

पानी के अनुवाद

● अशोक 'अंजुम'

सुपरिचित रचनाकार। अब तक चार हास्य-व्यंग्य-संग्रह, पाँच गजल-संग्रह, 'एक नदी प्यासी' गीत-संग्रह; हास्य-व्यंग्य एवं गजल, कविता, दोहा, लघुकथा, गीत आदि विधाओं पर सत्ताईस पुस्तकें संपादित। 'राष्ट्रभाषा गौरव', 'काव्यश्री', 'साहित्यश्री' सहित दर्जनों पुरस्कार। संप्रति 'प्रयास' पत्रिका के संपादक।

हुई प्यास से अधमरी, काला पड़ा शरीर।
दिल्ली के दरबार में, नदिया माँगे नीर॥

लिये होंठ सूखे, समय पूछे यही सवाल।
किधर गया, कल था यहाँ, पानीवाला ताल॥

न जाने किस मोड़ पर, चेतेगा इनसान।
पानी-पानी हो रही, पानी की पहचान॥

सार्वजनिक नल बंद हैं, प्याऊ हैं लाचार।
लगे हुए हैं हर तरफ, पानी के बाजार॥

नदियाँ अमृत बाँटकर, खुद करतीं विषपान।
पता नहीं किस मोड़ पर दे दें अपनी जान॥

सागर से बोली नदी, भर आँखों में नीर।
हर पग पर इनसान ने, रस्ते में दी पीर॥

किस विकास के खुल गए, यारो आज किवाड़।
डरे-डरे हतप्रभ खड़े, जंगल, नदी, पहाड़॥

किस विकास की दौड़ में, रहा न कुछ भी याद।
जीव-जंतु जंगल सभी, पानी के अनुवाद॥

जीवन एक निबंध-सा, यों पाए विस्तार।
पानी ही प्रस्तावना, पानी उपसंहार॥

हरी-भरी रचना सभी, ठहर, समझ, पढ़, देख।
कितने पानीदार हैं, पानी के आलेख॥

नित पानी का दायरा, हुआ अगर यों तंग।
पानी की खातिर न हो, यारो अगली जंग॥

राजन पर उत्तर नहीं, हतप्रभ है वेताल।
कहाँ शहर से गुम हुए, सारे पोखर-ताल॥

नदिया कहे कराह के, दे ले अब तो घाव।
कभी नाव में है नदी, कभी नदी में नाव॥

नदिया चली पहाड़ से, मन में ले उल्लास।
जब आई मैदान में, पग-पग पसरी प्यास॥

खोदे गए मकान जब, कुछ नगरों के पास।
हर मकान की नींव में, थी पोखर की लाश॥

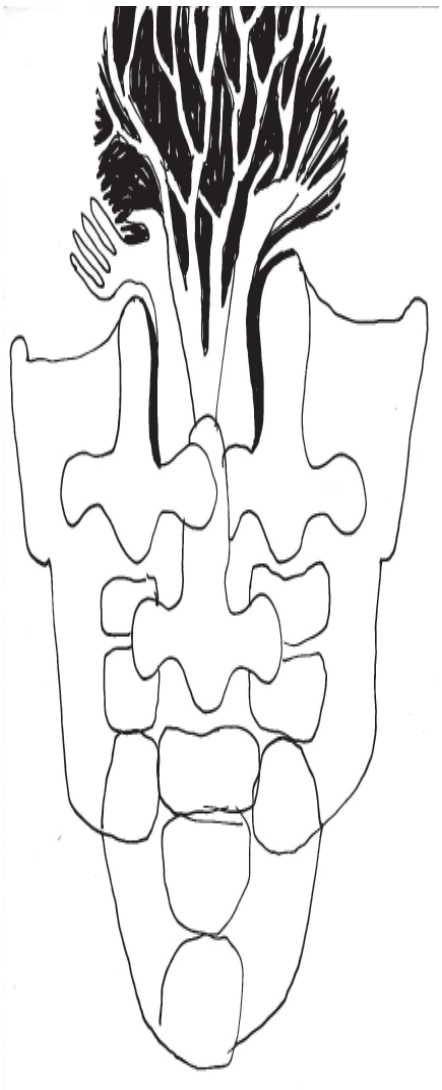

जल ये जल-जलकर कहे, चेत अरे इनसान।
तरसाऊँगा कल तुझे, ले मत मेरी जान॥

जल ने मल में डूबकर, दिया मनुज को शाप।
'दुःख झेलेंगी पीढ़ियाँ, जल-जल करते जाप॥'

सागर बोला—री नदी! कैसी भी वो राह।
नदी सुबकने लग गई, मुँह से निकली 'आह'॥

जल जहरीला हो गया, पी-पीकर तेजाब।
ऐ विकास! तू धन्य है, माँगे कौन जवाब॥

जल पहुँचा पाताल में, नभ पर पहुँचे लोग।
काली नदिया बह रही, लेकर अनगिन रोग॥

नदिया चली पहाड़ से, हुई राह में लुप्त।
निकलेगा परिणाम क्या, जाँच बड़ी है सुस्त॥

जल स्तर यदि घटता रहा, यों ही नित अविराम।
कल होना है सुनिश्चित, एक महासंग्राम॥

हम नदिया के तट खड़े, ले आँखों में नीर।
प्यासी नदिया की विवश बाँच रहे तकदीर॥

खेल अनोखे खेलता, दिल्ली का दरबार।
आँखों में पानी नहीं, किससे करें गुहार॥

मिनरल वाटर बेचते सेठ करोड़ीलाल।
गंगाबाई खोजती पानीवाला ताल॥

स्ट्रीट-२, चंद्रविहार कॉलोनी
(नगला डालचंद), क्वारसी बाईपास
अलीगढ़-२०२००१ (उ.प्र.)
दूरभाष : ०९२५८७७९७४४

मेरा देश कहाँ

मूल : **प्रतिभा वसु**

अनुवाद : **जलज भादुड़ी**

बिंदुवासिनी अब सचमुच बेहद परेशान थी। संत्रास की हवा बह चली है। अब यहाँ रहना मुश्किल है। सुन रहे हैं कि ''पासपोर्ट नाम का कागज बन रहा है। अब कोई पाकिस्तान छोड़ भारत जा नहीं सकेगा। जलियाँवाला बाग के नक्शे-कदम पर लघु संप्रदायी जितने हिंदू हैं, सबके सब मार डाले जाएँगे।''

''सच ऐसा होगा क्या?''

''सच है, पाकिस्तानी संख्या लघुओं के खून सूखने लगे थे, फिर तो न कोई आगे देखा, न पीछे। वन, जंगल, खेत, माठ, नदी, तालाब लाँघते हुए दौड़ते-गिरते-पड़ते सब भागने लगे। कोई माथे पर बोरिया-बिस्तर बाँधे तो कोई दो बच्चों को कमर से बाँधे या तो कोई अकेले ही, जहाँ से बन पड़ा, भागते रहे। जिंदगी के डर से साँस रोककर किसी तरह सरहद पार पहुँचना ही उनका मकसद था। गाल पर हाथ धरे बिंदुवासिनी सोचने लगी थी। अब वह क्या करेगी? इससे परे रहना भी मुमकिन नहीं है। पर कहाँ जाएगी। कौन है अपना, कहाँ है? खुद अकेली जान तो है नहीं। विधवा पुत्रवधु और उसकी दो बेटियाँ हैं। एक जवान लड़का साथ होता तो भी भरोसा बनता। यहाँ की कोठी में उसको सुख-सुविधा की कोई कमी तो है नहीं। अभी भी कम होते और खोते हुए भी चालीस तौला सोने के गहने, बनारसी साड़ियाँ, दो सेट चाँदी के बरतन, काँसा, पीतल और ताँबे के बरतन, सभी संदूक में भरे पड़े हैं। सीमेंट, चूना और रंग उतरने के बाद भी इस कोठी में कितनी रईसी नजर आती है। पाँच बड़े-बड़े कमरों में आठ लंबे-चौड़े पलंग, जिनके पैरों पर सिंह का मुख बना हुआ है। रेशमी चादर पलंग पर बिछी है। बड़ी-बड़ी दरियाँ, गलीचे उत्सवों में बिछाने के लिए सफेद चादर भी है। बिलायती झाड़, लंठन गैस बत्ती, सभी तोषखाने में स्मृति बनकर अंधकार में पड़े हैं, जिन्हें मालकिन साल में तीन बार बाहर निकालकर झाड़ती, साफ करती और धूप लगाकर पुन: सँभालकर रखवा देती हैं।

वंश का एकमात्र माथे का टीका, इकलौता बेटा नीरदवरण की शादी में ये सारे सामान बाहर निकाले तथा इस्तेमाल किए गए थे। दो बड़े-बड़े सिंहासन और कुरसियाँ, जिन पर प्रतिष्ठित मेहमानों को बिठाया गया था। झाड़दानों में डेढ़ सौ मोमबत्ती जलाई गई थीं। पूरे गाँववालों को गलीचे पर बिठाकर भरपेट दावत खिलाई गई थी तथा बहू के मायकेवाले दूल्हे के अमीर घराने की प्रशंसा करते थकते नहीं थे, पर सारी रौशनाई, चमक-धमक अचानक ही अंधकार में दुबक गई। बेटा और बाप एक साल के अंदर ही आगे-पीछे गुजर गए। समय बीतने पर बिंदुवासिनी घर

जानी-मानी साहित्यकार। अपनी मातृभाषा बँगला के साथ-साथ हिंदी में भी सशक्त और प्रभावपूर्ण रचनाओं के लिए ख्यात। अंग्रेजी और बँगला साहित्य की कई रचनाएँ हिंदी में अनूदित। कविगुरु रवींद्रनाथ और नजरुल इस्लाम के गीतों का हिंदी अनुवाद। 'रवींद्रदीप' तथा 'मानवतावादी नजरुल के गीत' पर पुरस्कार। केंद्रीय हिंदी निदेशालय, हिंदी संस्थान लखनऊ से पुरस्कृत। बँगला में ६ पुस्तकें प्रकाशित; अटल बिहारी वाजपेयी की ५१ कविताओं का बँगला में अनुवाद।

का शोक भूल चुकी थी, पर इस देश का बँटवारा बहुत भारी पड़ने लगा था। देखते-ही-देखते गाँव-के-गाँव सूने हो गए थे। खून-खराबी, राहजनी, लूटपाट, डकैती क्या-क्या नहीं देखना पड़ा था बिंदुवासिनी की दो आँखों को। रात-रात भर पलकें नहीं झपका पाई थी। मुँह में भात का कोर नहीं डाल पाई थी। डर के मारे सबकुछ बटोरकर जाने की तैयारी करने लगी थी, तभी मुसलमान प्रजा लोगों ने रोक दिया। 'जहाँ जाएगी, वहाँ भी डर का अभाव नहीं है। मालकिन, आप चार नारियों के लिए कहीं भयहीन यात्रा हो सकती है? यहाँ तो आपका अपना ताल्लुक है। जमींदारी, पूजापाठ, खेत और अपनी ही वसूली भी है। बस डर है तो मुसलमानों का। भय है, इसी में आप भलीभाँति सालों से गुजारा कर रही हैं। यही सब बातें बार-बार सोचते हुए बिंदुवासिनी ने प्रिय प्रजा जमीर मियाँ को बुला भेजा।

''भाईजान अबतक आपने भरोसा दिया। आज चुप क्यों हैं?'' फिर भी जमीर चुप ही रहा। बिंदुवासिनी घबरा गई। जमीर काफी देर बाद मुँह उठाकर बोला, ''माँ, आप शाम को बशीर, कालू शेख और जलालुद्दीन को भी बुलवा भेजें।''

''क्यों जमीर, तुम तो बराबर अकेले ही सौ के समान रहे हो। मैं तो तुम्हारे ही भरोसे में...।''

अपनी कच्ची-पक्की दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए जमीर बोला, ''अल्लाह की मरजी, सब अल्लाह की मरजी। पर विश्वास मानिए, मुझमें न पैसे का लोभ जनमा है, न उन लोगों की बड़ी-बड़ी लैक्चरबाजी का प्रभाव।'' जमीर मेहँदी लगी दाढ़ी को वैसे ही सहलाता रहा। बिंदुवासिनी के दाँतों से दाँत जकड़ने लगे।

''माँ, बड़े-बड़े मियाँ लोग बाहर से पधारे हैं। वे कहते हैं, लूटो-

काटो, कुछ न मानो।''

''पर तुम्हारा क्या मकसद है?''

''मेरा? मैं तो अब मनुष्यों में गिना जाने लायक नहीं रहा। बहुत बड़े-चढ़े होशियार लोगों से माहौल भर गया है। यहाँ तक कि बड़े से बड़े मौलवी उनके दल में चले गए हैं। गाँव-शहर के पंद्रह आने लोगों को पैसों से खरीद लिया गया है। मेरी तो सलाह है, आप लोग आज ही रवाना हो जाएँ। चारों औरतें बच्चियाँ सयानी हो गई हैं। बहूरानी तो कुछ ही दिनों पहले घूँघट काढ़े आई।'' कहकर लुंगी से जमीर ने अपनी गीली आँखें पोंछी। उसने सलाह दी, ''साथ में कुछ भी लेंगी तो सर्च के समय सब छीन लिया जाएगा। बस, जहाँ तक हो सके, गहने छुपाकर पहन लें।''

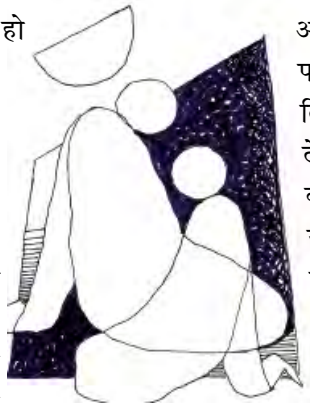

सास-बहू फिर भी रातभर जागकर पोटलियाँ बाँधती रहीं, जो कि जमीर ने स्टेशन की भीड़-भाड़ में किसी के संदूक छिन जाने की बात कही तो कितने पैदल भागे हैं या कितने पुलिस द्वारा छीन लिये गए हैं और कितने बेइज्जत हुए हैं। सरहद को पार करने में, ऐसे ही बहुत कुछ भयानक क्षणों का और भयंकर घटनाओं के वर्णन सुनाने लगा था। सरकार ने दोनों तरफ रस्सी बाँधकर रवाना होने का रास्ता बना दिया था। उसी रास्ते में से दोनों नातिनों और बहू को लेकर बिंदुवासिनी रवाना हो गई। हजारों की संख्या में उस रस्सी बँधे रास्ते से गुजरते हुए लोग पिस रहे थे, धक्के खा रहे थे, गर्भवती औरतों का पेट दबा जा रहा था। कमर में खोंसी हुई धनराशि छीन ली जा रही थी। कोई-कोई मर्द हिंदू लड़कियों को पंक्ति से बाहर खींचना चाह रहे थे। किसी-किसी जनानियों के खुले अंगों पर दुष्ट मर्द हाथ डालकर उन्हें गुदगुदा रहे थे। इज्जत लूटने की फिकर में थे। दो-तीन दिनों बाद ऐसी ही हजारों परेशानियाँ झेलकर बिंदुवासिनी जैसे लोगों ने पाकिस्तान की सरहद पार की थी। हिंदुस्तान की मिट्टी पर उनके पैर पड़े थे। बिंदुवासिनी ने गिनकर देख लिया कि वे कुल चार जनी हैं। कोई खोया नहीं और मरा भी नहीं। सभी थककर मुरदा बन चुकी थीं। पक्की सड़क पकड़कर अब दस-बारह अपने ही गाँव के रिफ्यूजी परिवार के संग मिलकर वे आगे बढ़ती जा रही थीं। उनको छोड़कर प्राय: अधिकतर भीड़ बड़े-छोटे किसानों के परिवारों की थीं। सबसे पहले वनगाँव नामक स्टेशन पर रिफ्यूजियों ने अपना डेरा-डंडा उतारा था और रात को ठहरे थे।

दूसरे ही दिन कुछ-एक भूँईफोड़ जैसे गुंडे अचानक आ गए, जिन्होंने धक्का-मुक्की में सबको हटाने की कोशिश की। इसी तरह सब लोग आगे बढ़ते रहे। काफी बड़ा सा आम का बगीचा सामने मिला, जहाँ पहुँचकर पूरा दल रुक गया। लग रहा था कि यहाँ कभी मिलिटरी छावनी रही होगी। चबूतरा ऐसा बड़ा सा बना हुआ था, जो कुछ भी हो, सामान साथ जो लाए थे, उसी चबूतरे पर उतारकर अपना-अपना इलाका गढ़ने में सब व्यस्त हो गए। बिंदुवासिनी ने भी अपना ट्रंक उतारा। दोनों नतनियों की आँखें रो-रोकर सूज रही थीं। बहू बोली, 'माँ, अब तो मेरे पैर जवाब दे गए।''

''बेटा, किसी तरह हिंदुस्तान पहुँचने दो। देखना, सारे दु:ख खत्म हो जाएँगे। कितने स्वयंसेवक और स्वेच्छा सेवा के केंद्र हैं, जहाँ पहुँचते ही सारे दु:ख और विपदा के अंधकार भाग खड़े होंगे।''

उत्तरा बहू ने अपने आँचल से आँसू पोंछते हुए कहा, ''चाचाजी को पत्र लिखा था? वे तो झामापुकुर कलकत्ता में रहते हैं। उस पत्र का उत्तर तो नहीं आया।''

□

कार्तिक के महीने में साँझ ढलते ही काफी जाड़ा पड़ रहा था, शरीर बरफ सा ठंडा हो रहा था। बाहर रिफ्यूजी परिवार के अड़तालीस बच्चे थे। जो अपनी-अपनी माँओं को कसकर पकड़े हुए थे। सीने में मुँह छुपा रहे थे। छोटे बच्चे दूध के लिए चिल्ला रहे थे। माँओं के स्तन नोच-नोचकर घाव बनाए दे रहे थे। स्तनों की सूखी चमड़ी चूस-चूसकर उन्हें परेशान कर रहे थे। स्त्री-पुरुषों की देह थककर कटी हुई बकरियों जैसी जमीन पर धड़ाम-धड़ाम करके गिर रही थी। उत्तरा बहू बोली, ''इससे तो हम घर में पड़े-पड़े मर भी जाते तो भी भला था।'' छोटी नातनी, जो दस साल की थी। दादी से लिपटकर सोना चाह रही थी। दादी ने बदन छूकर देखा तो बुखार से तप रहा था। देह से साँस नहीं, आग सी निकल रही थी। डर के मारे बुलू को उत्तरा ने आँचल में छिपा लिया। दूसरी लड़की मीनू, जो नींद में किसी दूसरे मर्द के बिस्तर की ओर लुढ़क गई थी, पर ऐसा नहीं था। वह दूसरा पुरुष मीनू को नींद में खींचकर अपने बिस्तर पर लेने की कोशिश कर रहा था, जिसने कड़ा-गठीला-रोएँदार हाथ अचानक खिसका लिया गया। दूसरे दिन रिलीफ के लोग आए थे, नाम और पता दर्ज कर ले गए थे।

सब बच्चों को छटाँक भर दूध दिया गया और बड़ों को चिउड़ा और गुड़। किसी-किसी ने करुणा की दृष्टि उन पर डाली तो किसी ने धमकाया भी। कोई-कोई आँखों में बेहद लालसा लिये हुए दिखा। भिखारी के जैसे कटोरी हाथ में थामे उत्तरा तथा बिंदुवासिनी दोनों मानो भीख के दानों के लिए खड़ी थीं। भूख ऐसा ही दानवी रूप लिये थी कि कोई लज्जा महसूसने का अवसर भी नहीं था। बुलू दिन भर बुखार में कराहती रही। मिलू ने रो-रोकर दिनभर अपनी नाक को टमाटर जैसा लाल बना लिया था। दूसरे सहयात्री भी इसी परिस्थिति में थे, जिससे जैसा बन पड़ा, खड़िया से अपनी सीमाएँ आँक रहे थे और कड़ाही व पतीली निकालने में व्यस्त हो रहे थे। छोटे बच्चों के खेल-कूद, तमाशे बरकरार थे। आम के बगीचे में एक आनंद का माहौल गूँज रहा था। बालिकाएँ और अन्य कुछ औरतें एक-दूसरे के सिर छानते तथा जूएँ-लीख बीनते हुए मस्त थीं। कहीं से लकड़ी बीन-चुनकर लाए तो आग जलाकर खिचड़ी बना ली, जिनकी गाँठ में कुछ रुपए भी बचे थे, ऐसे मर्द इधर-उधर से ढूँढ़कर चावल-दाल खरीदकर ला रहे थे। उनमें से कुछ लोग काम-धंधा खोजने के मकसद से निकल पड़े थे। जिनके पास रिफ्यूजी सर्टिफिकेट था, वे कैंप की सुविधा खोजने लगे थे। जो खेतिहर प्रमाण-

पत्र साथ ला पाए थे, वे खेत पाने को सरकारी दलालों की खुशामद में व्यस्त थे। कुछ रिफ्यूजी जो लुहार, कुम्हार, बढ़ई के काम-धंधे में जम गए तो कुछ जवान औरतें गृहस्थ के घरों में नौकरानी या बँधी नहीं तो छुट्टी दैया के काम में बहाल हो गई थीं। कुछ छोटे बालक पान-बीड़ी, चाय की दुकानों में खटने लगे। अल्यूमीनियम की कटोरी थामे भिखमंगों की पंक्तियों में कुछ बच्चियाँ फटे-गंदे फ्रॉक पहने, सिर में जूँ और लीख लिये हुए खड़ी दीख पड़ रही थीं।

पर बिंदुवासिनी को अपने परिवार के लिए कुछ भी नहीं मिला। कई सुबह-शाम और रात ऐसे ही सरकारी रिलीफ के छटाँक भर मटमैले दूध, गुड़ मोटे-मोटे चिउड़े से ही पेट की आग बुझाई। उसी बीच अचानक एक स्थूल, सामने के निकले हुए दाँतवाला कोई गेरुआधारी संन्यासी रिलीफवालों के साथ आया था, उसने बिंदुवासिनी को देखा। वह आदमी करुणा और ममता भरी दृष्टि से सबको निहारने लगा था। जो धीरे-धीरे और भी प्रेममय तथा करुणा का सागर बनता हुआ बुलू के पास पहुँचा और उसकी तपती देह को छुआ व सहलाया। दु:खी होकर मुख से चुस-चुस आवाज भी निकाली। इस थोड़ी सी सहानुभूति ने बिंदुवासिनी की आँख छलका दीं। सब कहने लगे कि रिफ्यूजियों के पीछे इस संन्यासी ने अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया। सेवा ही उनका धर्म है। उन्होंने एक सुंदर आश्रम की प्रतिष्ठा भी की है। सारी बातें उसी भीड़ में फैलते-सुनते बहू उत्तरा और सास ने भी सुनी और बोली, ''माँ, आप उनसे हमारे लिए भी कुछ पूछिए।'' सास को बात जँच गई।

नतिनी बुलू को तपते हुए गोद से जमीन पर लिटाते हुए कुछ एकांत में बिंदुवासिनी चली गई, उस साधु के पास जाकर अपने सारे दुखड़े पलभर में आँखें बंद किए साधु बाबा को सुना दिए। वह दिन तो बीता। दूसरे ही दिन दोपहर के दो बजे एक जीप आ खड़ी हुई, आमतला की कच्ची सड़क के किनारे। सब बच्चे भीड़ में खड़े देखने लगे। बुलू को तेज बुखार के साथ छाती में दर्द भी था, उसके मुँह से हिचकियाँ निकल रही थीं।

न जाने कौन सी नई रोशनी और आशा की किरण सास-बहू को दिखी; जिससे बेटियों को साथ लिये दोनों नारियाँ उस जीप गाड़ी में जा बैठीं। दिन ढलकर शाम हो चली। वनगाँव नामक स्थान के हजारों आम, जामुन और कटहल बरगद के महामूल्यवान जंगलों में से धूप-छाँह भरी पीच डले चौड़े रास्ते से पार होकर, अब एक उर्वर धान खेत भुट्टे से भरे तो कभी पाट के खेतों के बीच से गुजरने लगीं। हरित बंगभूमि के ग्राम-नगरों की शोभा दिखाते हुए जीप गाड़ी कलकत्ता तक पहुँच गई। पता नहीं, यह कलकत्ता की कौन सी दिशा थी। आश्रम आ पहुँचे थे। सामने डेढ़ हाथ की दूरी पर पतितपावनी गंगा बह रही थी। जिसकी शीतल बयार ने शरणार्थियों के पथ के सारे क्लेश क्षणभर में दूर भगा दिए थे। संन्यासी की वही विनय नम्रवाणी और करुणा दृष्टि। वह बोला, 'यही मेरा आश्रम है। कुछ दिन यहाँ ठहरें। अच्छा लगे तो फिर देखा जाएगा।' कृतज्ञता से बिंदुवासिनी की जीभ हिली, आँखें सजल हो उठीं। छोटी नतिनी बुलू को किसी तरह आश्रम के बिस्तर पर सुला दिया। बिंदुवासिनी ने कहा, 'महाराज थोड़ी सी दवाई?' साधु तुरंत डॉक्टर को ले आया। जाँच-पड़ताल के बाद डॉक्टर दवा देकर चला गया। आमतला के निराश्रय दिन-धूप और रात की ठंड से तथा भूख से परेशान चार प्राणों के लिए यह कोठी सुख के स्वर्ग जैसी लगी। अत: उनकी आँखें नींद से मुँदने लगीं। दवाई से छोटी बिटिया भी सो गई थी। सुबह जब कौवे काँव-काँव करने लगे, तभी सास-बहू की नींद खुली, तुरंत दोनों ने एक साथ बुलू के हृदय पर हाथ रखा। नहीं, वह शांत थी। दोनों समझ गई थीं कि बुलू अब चिरनिद्रा में चली गई है ईश्वर के पास। उत्तरा की एक आर्तनाद भरी चीख से मिलू भी जाग उठी। सास ने नतिनी के शरीर-दाह के बाद गंगा दर्शन किया और सिर में पानी डाला।

आज सातवाँ दिन बीत रहा था। साधू, जिसे आश्रमवासी केशवानंद कहकर पुकार रहे थे, वे आए और बोले, ''लीजिए माताजी, आपके कान के बुंदे बेचकर तीस रुपए मिले हैं। पर माँ इस थोड़े से रुपयों से अब काम नहीं चलेगा। भला होगा, अगर आप बहू को कहीं काम में लगा दें।''

बिंदुवासिनी, ''साधु बाबाजी, मेरी बहू न तो लिखी-पढ़ी है, न बाहर कभी निकली है। गृहस्थी सँभालने के अलावा वह कुछ नहीं जानती है।''

केशवानंद, ''हाँ एक अति भद्र जन एक संभ्रांत महिला की तलाश में है। बिन माँ की दो छोटी बच्चियों की देखभाल का काम है।''

बिंदुवासिनी, ''घर की नौकरानी का काम?''

केशवानंद, ''नहीं, नौकरानी क्यों भला? इसे शहर में गवर्नस कहते हैं। अंग्रेजी सीखी महिलाएँ यह काम करती हैं। ऊँचे स्तर का काम है।''

बिंदुवासिनी फिर भी दुविधा में पड़ी रही।

उत्तरा अब लपककर सामने आकर बोली, ''माँ अब आप कुछ न बोलें। मैं यह काम जरूर कर लूँगी। आप क्यों दु:खी हो रही हैं। काम अच्छा है। वेतन भी अच्छा मिलेगा। यह तो सम्मान की जिंदगी होगी।'' एक दिन सचमुच केशवानंद के साथ उत्तरा काम के लिए जीप पर सवार होकर चली गई। लौटते वक्त केशवानंद अकेले ही लौटे। बिंदुवासिनी परेशान होकर बोली, ''मेरी बहू उत्तरा नहीं आई, वह कहाँ है?''

केशवानंद, ''बहुत अच्छी नौकरी है, वेतन भी बहुत है, वह आज ही से काम में बहाल हो गई। याद आया, उन्होंने आपको अग्रिम यह रुपए दिए हैं। बहुत अच्छे दिल की है, तभी तो…''

विंदुवासिनी, ''आपको अब कैसे धन्यवाद दूँ।'' कृतज्ञता से झुककर वह बोली। पास ही आ खड़ी हुई मिलू बोली, ''माँ का पता बता दीजिए।''

केशवानंद, ''ओह! माँ के लिए मन दु:खी हो रहा है, घबराओ मत। मैं परसों तुम्हें तुम्हारी माँ के पास ले जाऊँगा या उन्हें ले आऊँगा। गाड़ी पर झटपट बैठकर माँ से मिलकर आना, फिर दादी के गलबाँह लगकर उनकी खुशी की कहानी कहती रहना। फिर देखना, मेरा यह आश्रम छोड़कर तुम दोनों उन्हीं के पास चली जाना चाहोगी।'' कहकर ठहाके मारकर स्वयं ही अपने व्यंग्य पर हँस पड़े। फिर गंभीर होकर बोले, ''बहू के बाप की उम्र के व्यक्ति हैं वे। नाम राजीव लोचन है। मेरे

जैसे साधारण व्यक्ति को बड़ा उन्होंने ही बनाया है। पहले २४ रुपए महीने का मैं साधारण कर्मचारी था। अब आश्रम गाड़ी, बड़े-बड़े मंत्रियों से पहचान; सब उन्हीं के कारण हुआ।'' मन-ही-मन सोचते रहे। इस अबला विधवा आश्रम के बैंक में लाख-लाख रुपए हैं।

□

राजीव लोचन के घर पहुँचते ही मानो चींटी ने उत्तरा को काट खाया, ऐसा प्रतीत हुआ। विवेक का एक दंश फिर सबकुछ बिल्कुल शांत। रोना-धोना, भय-त्रास सब समाप्त। आँखों का पानी भी सूखने को मजबूर। राजीव लोचन अस्त-व्यस्त से बने तकिये की टेक लगाए बैठे थे। शरीर पर सिल्क की लुंगी और ऊपर एक बनियान। परदा हटाकर ऐसी नारियाँ उनके पास हर रात आती हैं। केशवानंद ही उनका जुगाड़ करता है। यहाँ रिफ्यूजियों ने जब से आना शुरू किया, तब से और भी सुविधा हो गई है। उनका भोलापन और गरीबी, बँगलादेशियों की बेवकूफी बड़ी आसानी से उनको मूर्ख बनाकर काम हासिल कर लेते हैं। उनकी मूर्खता निर्बोध होने के कारण यही दशा होनी चाहिए।

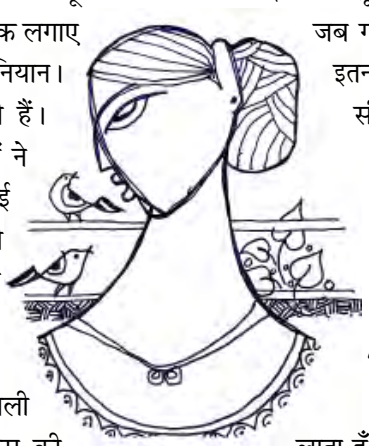

उत्तरा को ही देख लें। इकत्तीस वर्ष की गठीली साँवली है, पर उसके चेहरे में कितनी लुनाई है। मानो उन्नीस की जवानी नहीं बीती।

राजीव लोचन के चले जाते ही बाएँ हाथ की हथेली से आँख पोंछती हुई, पिताजी कहकर दाहिना हाथ राजीव लोचन के हाथ में, बेबाक थी उत्तरा। उधर केशवानंद विवेक के किसी भी दंश बिना सावधानी से राजीव लोचन के पास उत्तरा को कामना के यज्ञ में बलि चढ़ाकर बकरी को जैसे शेर के मुँह में डाला जाता है, उसी प्रकार निकल भागे केशवानंद। वह अपने ऑफिस में लौट आए। तभी 'पाराबत' फिल्म के परिचित दोस्त शशिशेखर को फोन किया। शशिशेखर तुरंत भागा-भागा अबला बोध आश्रम के दफ्तर में आया। कत्थई रंग की पंजाबी, मुँह में पान खाए बाल को सँवारते हुए बीड़ी फूँकने लगे। उनकी हाजिरी के साथ-साथ केशवानंद ने मुँह चिढ़ाकर व्यंग्य भरे स्वर में पूछा, 'फिल्म वास्तुहारा की दु:खी नायिका मिली?' उतना ही बदसूरत मुँह बनाकर शशिशेखर बोला, 'सब अपने को गुलाब सुंदरी समझती हैं। छोटी बच्ची नायिका मिल ही नहीं रही है।'

'मैं दे सकता हूँ।'

'अरे बहादुर दोस्त, सच कहता है?'

'कई शर्त हैं।' और नीची आवाज में शर्तें रखीं।

'लड़की तो दिखाओ।' लड़की देख खुशी से कूदता हुआ शशि शेखर आश्रम से निकल गया। दूसरे दिन मिलू का वादा पूरा करना था माँ से मुलाकात का। 'एक दिन मेरे पास बहू को ले आओगे?' विंदुवासिनी ने विनती करते हुए कहा।

'जरूर लाऊँगा, हो सके तो आज ही।'

नीलू जामुन रंग की ताँत की साड़ी पहने थी। गोरे रंग के मुख पर छोटी सी काँच की बिंदी। लंबे बालों को वेणी में बाँध जूड़ा बनाया था। दादी उसे देखकर निहाल हो रही थी। कृतज्ञता से नीलू की आँखें डबडबाने लगीं।

खुली छतवाली जीप गाड़ी आश्रम के सामने से नीलू को लेकर कलकत्ते के बड़े-से-बड़े रास्ते पर न जाने कहीं गुम हो गई। लाखों-करोड़ों की भीड़वाले शहर, चारों तरफ रोशनाई, जुगनुओं जैसे बत्तियों का जादू देखती, तरह-तरह के वाहनों को इधर-उधर से आते-जाते देखती नीलू हैरान होने लगी। इतना सुंदर शहर देखने के बाद गाड़ी जब गली में पहुँची तो नीलू अवाक् रह गई। सोचने लगी, इतनी गंदी, बदसूरत, बदबूदार जगह में मेरी माँ रहती है? सीढ़ी से टूटे-फूटे अँधेरे लंबे बरामदे से होकर आखिरी कमरे तक पहुँची तो पान के थूक, पेशाब की बदबू साथ ही सस्ती सेंट की गंध से मीनू को उलटी आने लगी। जब बह कमरे में घुसी तो शशिशेखर को अविन्यस्त से बैठे अधलेटे हुए देखा।

शशिशेखर, 'अरे यार, बैठो यार।' नीलू रोने लगी, 'मेरी माँ कहाँ है, वह नहीं दिख रही हैं।'

केशवानंद, 'तुम यहीं बैठो बेटी, माँ को बुलाकर लाता हूँ।' और उसके चौखट लाँघते ही लपककर शशिशेखर ने दरवाजे की चिटकनियाँ चढ़ा दीं। नीलू डरकर द्वार पर धक्का मारती रही और माँ-माँ चीखती रही। शशि ने बाएँ हाथ से उसका मुँह बंद किया और दाहिने हाथ से नीलू की छाती दबा ली। तीन दिनों के लिए किराए का कमरा था। इस इलाके में पहले साँप का जहर उतारा जाता है, जंगली आदतों को दुरुस्त किया जाता है। यह ट्रेनिंग समाप्त होने पर नीलू को ठीक जगह पर ले जाएँगे। कितनी नीलूओं को फिट कर चुकी हैं यहाँ की औरतें।

बिंदुवासिनी राह देख रही थी मुलाकात करने के लिए। शायद बेटी के साथ आज माँ लौटकर आएगी। एक बार छत पर घूम आई, जितनी दूर तक देख सकी, आँखें ढूँढ़ती रहीं। आँखें नीलू को कहीं नहीं ढूँढ़ पाईं। तेजी से जीप चलाते हुए केशवानंद सोच रहे थे कि इन दो औरतों को ठिकाने लगाने में इस बुढ़िया को बैठे-बैठे खिलाना पड़ा। अब इस बुढ़िया से भी हाथ झाड़ना है। तब जाकर मेरी छुट्टी होगी।

मुख्य द्वार से चिल्लाते हुए केशवानंद आ रहे थे, 'कहाँ हो माताजी, आपकी बहू और उसके पिता आपके लिए अधीर हैं। मेरे संत हृदय में आप लोगों के लिए मोह पैदा हो गया है। चलिए, जल्दी चलिए।'

विंदु, 'कहाँ चलना है मुझे?'

केशवानंद, 'क्यों अपनी बहू के पास, बूढ़े राजीव लोचन खुद आपके पास आ रहे थे। मैंने उन्हें रोका। उनके पास एक कोठे में खाली कमरा पड़ा है, आपको किराया नहीं देना है। वहीं आप रहेंगी। नतिनी और बहू को हरदम पास पाएँगी। आप के मन में शांति बनी रहेगी।'

सबकुछ सुनकर बिंदु ने उचित समझा और जल्दी-जल्दी साथ चलने के लिए तैयार होकर गाड़ी के पीछे की सीट पर बैठने लगी तो

केशवानंद हँसकर बोले, 'पीछे क्यों, मेरे पास बैठिए।' ठीक दोपहर के ग्यारह बजे कत्थई रंग की जीप झलमलाती धूप में लंबे-लंबे रास्ते से पार होने लगी, बिंदुवासिनी अवाक् होकर सोच रही थी कि कितना बड़ा शहर है कलकत्ता। जब तक दिन की रोशनी रही, चारों तरफ शहर देखती रही, पर धीरे-धीरे टेक लगाकर बैठी सीट पर फुरफुरी हवा में उसे झपकी सी आने लगी। बस, फिर तो वह गहरी नींद में सो गई। अब उन्हें पता भी नहीं चला कि शहर के रास्ते-बस्ती सब छोड़कर गाड़ी जंगल की निर्जनता में आ गई है। ऊँचे-नीचे खँडहर और झाड़ियों में से कूदती हुई अचानक गाड़ी को धक्का लगा और उसी के साथ बिंदुवासिनी को भी धक्का मारकर मानो किसी ने गिरा दिया। उनकी नींद उचट गई। प्राण बचाने की इच्छा से दोनों हाथ केशवानंद की ओर फैलाते हुए वे चीखीं, पर गाड़ी के इंजन की भीषण आवाज में उनकी चीख दब गई। एक बड़े से कठोर पत्थर से उनका माथा टकराया। कपाल से ताजा खून निकलने लगा। वर्षों से पुराने धूलि धूसर पड़े पत्थरों से भरी भूमि को वे भूरे रंग से गीली करती रहीं। एक-एक चित्र उनके सामने फिल्म जैसा आता रहा। पहले हाल ही में मरी, नातनी मिलू, फिर अपने पति को, फिर पुत्र को सामने देखा मरते हुए। उत्तरा को, नीलू को देखा और चीखने लगी, 'मुझे कुछ सुनाई नहीं दे रहा है।' क्रमश आँखें भी धुँधलाने लगीं। कुछ देर बाद जंगली कुत्ते ने आकर खून सूँघा और चाटने लगा। फिर चला गया।

कुछ समय बाद सूरज भी डूब गया, धीरे-धीरे चींटियों से भर गई बिंदुवासिनि की जख्म भरी देह। फिर धीरे-धीरे उनके कान, नाक में भी मानो चींटियों का एक पहाड़ थी वह। घंटों पहले शब्द या शोर नाम की वह आवाज समाप्त हो चुकी थी। अब केवल चींटियों का काला अंधकार, पहाड़ और निस्तब्धता चारों ओर दूर-दूर तक फैली थी।

'पारिजात', २४ ए
शेक्सपीयर सरिणी, फ्लैट-९२
कोलकाता-७०००९७
दूरभाष : ०९४३३१५६४८४

कविता

उस कृषक का गान कर लूँ

● दिनेश भारद्वाज

हाथ में संतोष की तलवार ले जो लड़ रहा है।
जगत् में मधुमास पर उस पर सदा पतझर रहा है॥

दीनता अभिमान जिसका,
आज उस पर मान कर लूँ।
उस कृषक का गान कर लूँ॥

चूसकर श्रम-रक्त जिसका, जगत् ने मधुरस बनाया।
एक सी जिसको बनाई सृजक ने भी धूप-छाया॥

मनुजता के ध्वज तले,
आह्वान उसका आज कर लूँ।
उस कृषक का गान कर लूँ॥

विश्व का पालक बना जो अमर उसको कर रहा है।
किंतु अपने पालितों के पद दलित हो मर रहा है॥

आज उससे कर मिला,
नव सृष्टि का निर्माण कर लूँ।
उस कृषक का गान कर लूँ॥

क्षीण निज बलहीन तन को पत्तियों से पालता जो।
ऊसरों को खून से निज उर्वरा कर डालता जो॥

छोड़ सारे सुर-असुर,
मैं आज उसका ध्यान कर लूँ।
उस कृषक का गान कर लूँ॥

सिंधु में तूफान आए धरनि पर भूचाल आए॥
मगर जो अविचल खड़ा है युगों से छाती उड़ाए॥

इस युगांतर में उसी का,
हृदय भर सम्मान कर लूँ।
उस कृषक का गान कर लूँ॥

यंत्रवत् जीवित बना है माँगते अधिकार सारे।
रो रही पीड़ित मनुजता आज अपनी जीत हारे॥

जोड़कर कण-कण उसी के,
नीड़ का निर्माण कर लूँ।
उस कृषक का गान कर लूँ॥

एम.एस. रोड, जौरा
जिला-मुरैना (म.प्र.)
दूरभाष : ९९०७०३३२८२

आलेख

नवसंवत्सर : भारतीय नववर्ष

● अवधेश कुमार चंसौलिया

भारत वर्ष, जिसे आर्यावर्त भी कहा जाता है; विविधताओं से ओत-प्रोत देश है। यहाँ भौगोलिक क्षेत्रों की भिन्नता के साथ ही मानव नस्लों की भी अलग-अलग जातियाँ विद्यमान हैं। यही कारण है कि यहाँ के रीति-रिवाज, खान-पान, परंपराएँ, मान्यताएँ, आस्थाएँ, विश्वास एवं धर्म, संप्रदाय पंथों, दर्शनों आदि में भी पृथकताओं का स्वाभाविक समावेश है। इन्हीं सब विविधताओं से यह सुंदर देश निर्मित हुआ है। उपवन में यदि एक ही प्रकार के पुष्प हों तो वह इतना अच्छा नहीं लगता, जितना कि विभिन्न प्रकार के पुष्पों से भरा उपवन। हमारे देश में हिंदू, मुसलिम, सिख, ईसाई आदि धर्मावलंबियों के पंचांग भी नाना प्रकार के हैं। वर्तमान समय में विक्रम संवत् २०७१-७२, राष्ट्रीय शक संवत् १९३६-३७, वीर निर्माण संवत् २५४१, बँगला संवत् १४२१, हिजरी सन् १४३६ एवं ईसवी सन् २०१५ का कार्यकाल है। हमारे देश में विक्रम संवत् ही सर्वाधिक प्रचलित है।

यद्यपि भारत में नववर्ष भी अलग-अलग तिथियों में मनाया जाता है। लेकिन ये सभी तिथियाँ मार्च-अप्रैल के महीने में ही पड़ती हैं। पंजाबी लोग 'बैसाखी' के नाम से १३-१४ अप्रैल को नववर्ष मनाते हैं। बंगाली तथा तमिल भी इन्हीं तारीखों में 'विशु' के नाम से नववर्ष को पुकारते हैं। आंध्र प्रदेश में 'उगारी' के नाम से चैत्र माह के प्रथम दिन को नया वर्ष मानते हैं। कर्नाटक में भी इसी दिन से नववर्ष माना जाता है। सिंधी लोग गुड़ी पड़वा को 'चेटीचंड' के रूप में नया वर्ष मनाते हैं। देश के अधिकतर लोगों का विश्वास है कि गुड़ी पड़वा ही भारतीय नव वर्ष है। इसी दिन से नवरात्र प्रारंभ हो जाते हैं।

ज्योतिषियों के अनुसार चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि (प्रतिपदा) को ही 'ब्रह्मा' ने सृष्टि का प्रारंभ किया। ब्रह्मगुप्त (सातवीं शताब्दी) और भास्कराचार्य (बारहवीं शताब्दी) के ग्रंथों में इसकी चर्चा है। इस दिन से एक अरब सत्तानबे करोड़ उनतालीस लाख उनचास हजार एक सौ चौदह वर्ष पूर्व इसी दिन के सूर्योदय से ब्रह्माजी ने जगत् की रचना प्रारंभ की थी। संवत्सर चक्र के अनुसार, सूर्य इस ऋतु में अपने राशि चक्र के प्रथम राशि मेष में प्रवेश करता है और जिस दिन सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है, उसी दिन से सौर वर्ष का आरंभ माना जाता है। उस दिन को मेष संक्रांति का दिन कहते हैं। इस दिन जिस ग्रह का वार होता है, वह मंत्री होता है। गुड़ी पड़वा को शनिवार है। अत: इस वर्ष सं. २०७२ विक्रमी के राष्ट्रपति (राजा) के पद पर शनिदेव को चुना गया है। अत: इस वर्ष का फलादेश इस प्रकार है—

सुपरिचित रचनाकार। बुंदेली काव्य, फागें एवं शोध, समीक्षा आदि में विशेषज्ञता। 'इंगित' पत्रिका का संपादन। ४३ से अधिक शोध-पत्र प्रकाशित। ५८ से अधिक सम्मान-पुरस्कार प्राप्त।

खंडदृष्टि शनिराज में, अग्नि, वायु, भय चोर।
राजदंड पीड़ित, क्षुधित, प्रजा, भ्रमित चहुँ ओर॥

इस संवत् में मंत्री मंगल है। अत: 'अवनि जौ ननु मंत्रिकांता गतो भवति दस्युग ददिज वेदना।' अर्थात् देश में फसलों की पैदावार कम होगी।

विक्रम संवत् उसी राजा के नाम से प्रारंभ होता था, जिसके राज्य में चोर, अपराधी और भिखारी न हों और जो चक्रवर्ती सम्राट् हो। सम्राट् विक्रमादित्य ने सन् २०७१ वर्ष पूर्व इसी दिन शकों को हराकर राज्यारोहण किया था। उन्होंने गांधार से म्याँमार तथा कश्मीर से कन्याकुमारी तक ३५ वर्षों तक एकच्छत्र राज्य किया था। १२ ज्योतिर्लिंगों एवं अयोध्या में भगवान् राम का भव्य मंदिर भी उन्हीं ने बनवाया था। इसलिए विक्रम संवत् भारत में महत्त्वपूर्ण है। विक्रम संवत् पूर्णत: वैज्ञानिक है, जबकि ईसाई कलेंडर अवैज्ञानिक है। ईसाई कलेंडर पहले १० माह का था। अनेक संशोधनों के पश्चात् यह १२ माह का हुआ। जबकि नव संवत्सर अपरिवर्तनीय है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन स्वामी दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की थी। इसी तिथि को 'आरोग्य प्रतिपदा' के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि इस दिन नीम के पत्ते, काली मिर्च तथा मिश्री मिलाकर खाने से सालभर तक व्यक्ति नीरोग रहता है।

प्रभु श्रीराम ने वनवास के पश्चात् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का दिन राजतिलक हेतु चुना था। युगाब्ध ५११६ वर्ष पूर्व युधिष्ठिर भी इसी दिन राजा के पद पर प्रतिष्ठित हुए थे। भारतीय प्रकृति में वसंत ऋतु का प्रारंभ प्रकृति के शृंगार के साथ होता है। चैत्र और वैशाख, इन दो मासों में प्रकृति का कण-कण उल्लसित, प्रफुल्लित और चैतन्यावस्था में आकर झूमने लगता है। कंदर्प-देवता अपने तूणीर में अरविंद, नीलोत्पल, अशोक, नवमल्लिका एवं आम्र के पुष्पों को सजाकर चेतन-अचेतन सभी को इन बाणों से बेधने लगते हैं। पेड़-पौधे और तृण सभी नव पल्लवों और पत्तों से आच्छादित होकर खुशनुमा माहौल पैदा कर देते हैं। जूही, चमेली, चंपा, बेला, गुलाब, गेंदा, कनेर, पलाश, गुड़हल, गुलमोहर आदि पेड़-

पौधों के पुष्प खिलकर सभी को आनंदित करने लगते हैं। महुआ की भीनी-भीनी गंध से सारा वन्य प्रदेश मदमस्त हो जाता है। ऐसा लगता है, मानो सभी जीव-जंतु अपने-अपने भिन्नत्व को त्यागकर एकमेक हो रहे हों। सबकी अपनी-अपनी सुगंध संपूर्ण ब्रह्मांड को सुरभित कर नवचेतना का संचार करने लगती है। न अधिक धूप, न अधिक गरमी, ऐसा सुखद वातावरण अन्य ऋतुओं में दृष्टिगत नहीं होता, तभी तो यह 'ऋतुराज' कहा जाता है। इसे 'मधुमास' भी कहते हैं, क्योंकि इसमें चारों ओर सौंदर्य ही सौंदर्य बिखरा रहता है।

गेहूँ, चना, मटर, अलसी, सरसों एवं मसूर की संपन्न फसलों को देख-देखकर भारत के कृषक देवता प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। लहलहाती फसलें देखकर उनकी बाँछें खिल जाती हैं। पशुओं और पक्षियों को भी इस मौसम की सुखानुभूति होने लगती है। कोयल अपने मीठे गान सुनाने लगती है। भ्रमरों की टोलियाँ हुरियारों जैसी प्रतीत होती हैं। युवाओं में लालिमा छा जाती है। बालकों में नव-स्फुरण का भाव जाग्रत् हो जाता है। वृद्धों में भी कुछ कर गुजरने की लालसाएँ बलवती हो जाती हैं। वृद्धजन भी मतवाले होकर शृंगार रस के गीत गाने लगते हैं। सभी लोगों के शरीर के अंग-अंग में स्फूर्ति, उमंग, उल्लास, उत्साह और क्रियात्मकता का भाव हिलोरें लेने लगता है। आलस्य, प्रमाद और निष्क्रियता का पलायन हो जाता है। नदियाँ, झरने, पोखर, झीलें आदि जलस्रोत निर्मल और पवित्र हो जाते हैं। पर्वत, पठार आदि जड़ी-बूटियों के अप्रतिम सौंदर्य से निखर उठते हैं। संपूर्ण वातावरण रंगीन हो जाता है, क्षितिज इंद्रधनुषी होकर धरती से मिलने हेतु व्यग्र हो उठते हैं। ऐसे आनंददायक वातावरण में हमारा नया वर्ष प्रारंभ होता है।

लेकिन आजकल हमारे देश के लोग एक जनवरी से नया वर्ष मनाते हैं, जो हमारे देश की प्रकृति से बिल्कुल भी मेल नहीं खाता। उस समय कड़ाके की सर्दी में मनुष्य ही नहीं अपितु पशु-पक्षी एवं वनस्पतियाँ तक ठंड और पाले से निर्जीव पड़े रहते हैं। चारों और मनहूसियत का वातावरण छाया रहता है। ऐसी स्थिति में हमारे युवा एवं युवतियाँ पश्चिमी कानफोड़ संगीत में मादक पदार्थों का सेवन कर, उचित-अनुचित का ध्यान न देकर वर्ज्यकृत्य तथा अशोभनीय हरकतें करके स्वयं, परिवार एवं समाज को शर्मसार कर देते हैं। जबकि हम सभी भारतीयों को अपनी संस्कृति, सभ्यता एवं महानतम मूल्यों के संवाहक हमारे पर्व-त्योहारों को भारतीय गरिमा, परंपरा और रीति-रिवाजों के साथ आस्थामय होकर मनाना चाहिए। हिंदू नववर्ष चैत्र प्रतिपदा को सभी भारतीय प्रातः जागकर, स्नान करके, नवीन या धुले हुए साफ वस्त्र धारण कर ब्रह्माजी की पूजा-अर्चना करें। पुष्पगंध, अक्षत, हल्दी, चंदन फल, मिष्टान्न आदि निर्माल्य उन्हें अर्पित करें। साथ ही 'ओ३म् भूर्भुवः स्वः संवत्सर अधिपति आह्वायामि पूजयति च।' मंत्र का यथा योग्य जाप करें। इस मंत्र के जाप से वर्षारंभ होने से वर्षभर सभी के कार्य सुसंपादित होंगे।

राजा विक्रमादित्य ने ९५ शक राजाओं को परास्त कर भारत को विदेशी दासता से मुक्ति दिलाई थी। विक्रम संवत् ऐसे ही पराक्रमी राजाओं की याद दिलाता है। अतः हमें भी विदेशी ताकतों षड्यंत्रों को विफल कर, देश को अतिवादी शक्तियों से मुक्ति की शपथ अपने नववर्ष पर लेनी होगी। तभी हम अपने देश की भव्यता, सांस्कृतिक विरासत, गौरव, अक्षुण्णता, भारतीय जीवन-मूल्य, जीवन-दर्शन और हिंदुत्व की रक्षा कर सकेंगे। हमें अपनी रूढ़ियाँ, अंध-विश्वास, कुरीतियाँ और बुराइयाँ त्यागनी होगीं। अस्पृश्यता मिटाकर सभी के लिए प्रवेश के दरवाजे खोलने होंगे, तभी हम विश्वगुरु बनकर हिंदूस्थान की विजय पताका जल, थल व नभ में गर्व से फहरा सकेंगे और संपूर्ण जगत् में वंदे मातरम् का जयघोष निनादित होने लगेगा।

डी.एम. २४२, दीनदयाल नगर,
ग्वालियर-४७४००५ (म.प्र.)
दूरभाष : ९४२५१८७२०३

कविता

करो सम्मान बेटी का

● राजेंद्र सिंह ढैला

कहारों के कंधों पर
डोली में बैठकर
जब जाती है बेटी ससुराल
मन में उलझन तो रहती होगी
जाने कैसा होगा मेरा ससुराल।

माँ-बाप, भाई-बहन मायके का प्यार
छोड़ के जाती है नए परिवार।

रीति-रिवाज परंपरा का करती है सम्मान
इसलिए बेटी का हमेशा ऊँचा है स्थान।

अगर बेटी न होती तो कौन निभाता रिवाज
सभी मनमरजी करते टूट जाता समाज।

समझ सको तो समझ लो
हम पर उपकार बेटी का
है सबसे ज्यादा दुनिया में
अधिकार बेटी का।

सब जन करता दुनिया में सम्मान बेटी का,
देखो हो नहीं पाए कहीं पर, अपमान बेटी का॥

ग्राम-मल्ला ब्यूरा
पो. काठगोदाम, तहसील-हल्द्वानी
जिला-नैनीताल-२६३१२६ (उत्तराखंड)
दूरभाष : ९७१९४१७१८२

एक सुखांत

मूल : **एंटन चेखव**

अनुवाद : **वल्लभ सिद्धार्थ**

एक छुट्टी के दिन, रेलवे हेड कंडक्टर निकोलयाई ने एक विशिष्ट महिला ल्युबोव ग्रिगोरीण्ना को एक गोपनीय कार्य के लिए आमंत्रित किया। ल्यूबोव एक चालीस वर्षीय, हृष्ट-पुष्ट और दीर्घकाय महिला थी, जो जोड़ियाँ मिलाने व विवाह कराने का धंधा करती थी। कुछ ऐसे काम भी करती थी, जिसकी चर्चा सोसाइटी में सिर्फ फुसफुसाहटों में होती थी। निकोलाई गंभीर, शांत और रूखे स्वभाव का आदमी था। इस समय वह उद्विग्न था और सिगार फूँकता हुआ कमरे में चहलकदमी कर रहा था।

''तुमसे मिलकर अत्यंत प्रसन्न हुआ,'' उसने कहा, ''सेम्यन इवानोविच ने मुझे तुमसे एक निजी मामले में मदद लेने का सुझाव दिया था। एक मुद्दा जिस पर मेरे जीवन की खुशी निर्भर करती है। तुम देख रही हो ल्यूबोव ग्रिगोरीण्ना, मैं बावन साल का हो रहा हूँ। इस उम्र में सबके बच्चे जवान हो जाते हैं। मेरे पास एक सम्मानीय नौकरी है, पैसा अधिक नहीं, लेकिन अपनी बीवी-बच्चों का खर्च उठा सकता हूँ। बैंक में ईमानदारी से कमाए कुछ रुपए भी जमा हैं। मैं एक नम्र और गंभीर व्यक्ति हूँ। कानून का सम्मान करता हूँ। लोग एक आदर्श पुरुष के रूप में मेरी चर्चा करते हैं।''

''हाँ, हाँ!''

''लेकिन एक कमी है। घर में चूल्हे और बीवी की गरमाहट नहीं। मैं जगह-जगह खोंचे लगानेवाले दुकानदार की तरह हो गया हूँ। एक रेगिस्तानी जिंदगी, जिसमें खुशी का दूर-दूर तक निशान नहीं। ऐसा कोई नहीं, जिससे अपना सुख-दुःख कह सकूँ। बीमार होता हूँ तो कोई एक गिलास पानी देनेवाला नहीं। इसके अलावा एक बात और, भद्र सोसाइटी में विवाहितों के मुकाबले कुँवारे की कम इज्जत होती है। मैं पढ़ा-लिखा हूँ, मेरे पास पैसा है। अब तक कुँवारा रहा तो इसलिए, क्योंकि मैंने इसका व्रत लिया था। लेकिन अब मैं किसी सुयोग्य कन्या से विवाह करना चाहता हूँ।''

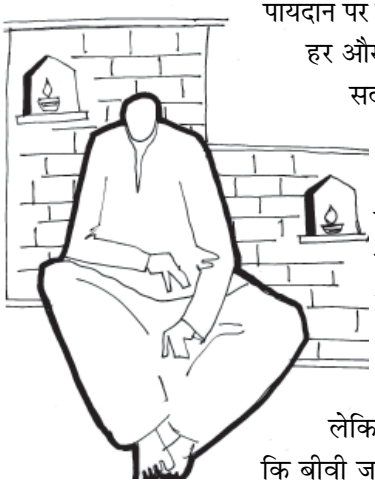

''उत्तम खयाल है।'' जोड़िया महिला ने कहा।

''मैं रिटायर होनेवाला हूँ और इस कस्बे में किसी से परिचित नहीं। सेम्यन इवानोविच ने मुझे सलाह दी कि आपकी मदद लूँ, इस काम में माहिर हो, दूसरों को खुशियाँ देने की विशेषज्ञा हो, इसलिए ल्यूबोव ग्रिगोरीण्ना, मेरे भविष्य का फैसला करने में मेरी मदद करो। तुम इस शहर की सभी कन्याओं को जानती हो, तुम इसका इंतजाम कर सकती हो।''

जाने-माने कहानीकार-उपन्यासकार एवं अनुवादक। प्रमुख रचनाओं में 'शेष प्रसंग', 'नित्य प्रलय', 'दुसारे पर', 'कठघरे' तथा अनेक शिक्षाप्रद जीवनियाँ। अनुवाद कार्य में दक्षता तथा अनेक पुस्तकों का अनुवाद। संप्रति चेखव की कहानियों का अनुवाद कर रहे हैं।

''हो जाएगा।''

''कृपया एक ड्रिंक लो।''

ल्यूबोव ने अपना गिलास उठाया और आदतन एक साँस में खाली कर दिया।

''हो जाएगा, तुम्हें कैसी दुलहन चाहिए?''

''जैसी किस्मत भेजे।''

''सत्य वचन! फिर भी लोगों की अलग-अलग पसंद होती है। कुछ गोरी को पसंद करते हैं, कुछ साँवली को।''

''मैं एक चरित्रवान और गंभीर व्यक्ति हूँ। मेरे लिए सुंदरता दूसरे पायदान पर है, क्योंकि हर औरत का चेहरा एक जैसा होता है और हर औरत एक औरत। मेरा मतलब है कि औरत में आत्मिक सद्गुण होने चाहिए। कृपया एक ड्रिंक और···''

''··· ?''

''खूबसूरत बीवी से बहुत सी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। उदाहरण के लिए एक स्वस्थ औरत अच्छी बीवी होती है। लेकिन उसमें भी एक दिमाग होता है, जबकि उसे ज्यादा दिमाग की जरूरत नहीं। उससे औरत अपने बारे में ज्यादा सोचेगी। उसके दिमाग में तरह-तरह के सवाल उठेंगे। आजकल शिक्षा का जमाना है, लेकिन शिक्षा और तालीम में फर्क होता है। यह अच्छा है कि बीवी जर्मन और फ्रेंच समझती हो, लेकिन अगर घरवाले की कमीज में बटन टाँकना नहीं जानती हो तो सब बेकार! मैं एक सादगीपसंद आदमी हूँ और वैसी बीवी चाहता हूँ। खास बात यह है कि वह मेरी इज्जत करे और स्वीकार करे कि उसकी खुशियाँ मुझ पर निर्भर हैं।''

''स्वाभाविक है।''

''अब हम मुख्य विषय पर आते हैं। मैं धनाढ्य बीवी नहीं चाहता। मैं इतना गिरा हुआ नहीं कि धन की खातिर शादी करूँ। मैं अपनी बीवी की दी हुई रोटी नहीं खाना चाहता। मैं चाहता हूँ कि वो मेरी रोटी खाए और इसका अहसान माने। लेकिन एकदम मुफलिस बीवी भी नहीं चाहता, क्योंकि दिनोदिन महँगाई बढ़ रही है। इसके अलावा हमारे बच्चे भी होंगे।''

''मैं दहेजवाली लड़की तलाश कर सकती हूँ।''

''कृपया दो बूँद और लो···''

दोनों पाँच मिनट तक मौन रहे। फिर जोड़िया ने निकोलाई को तिरछी नजर से देखा।

''क्या विदेशी माल चलेगा? मेरे पास एक ग्रीक, एक फ्रेंच औरत है?''

कुछ देर गंभीर सोच में डूबे रहने के बाद निकोलाई ने कहा, ''नहीं, धन्यवाद! इस बात को ध्यान में रखते हुए कि तुम अपने ग्राहकों का कितना खयाल रखती हो, मैं पूछने की इजाजत चाहूँगा कि तुम्हारी फीस क्या होगी?''

''कोई ज्यादा नहीं। सिर्फ पच्चीस रूबल और एक ड्रैस। जैसा कि चलन है। अगर दहेज मिलता है तो उसका परसेंटेज अलग से।''

निकोलाई ने छाती पर हाथ बाँधकर उसके शब्दों को सुना, उन पर चिंतन किया और गहरी साँस ली।

''फीस बहुत ज्यादा है।''

''बिल्कुल नहीं! पुराने वक्त में जब कम शादियाँ होती थीं, हम कम कमाते थे। लेकिन आज के जमाने में पचास रूबल प्रति माह कमाती हूँ। इसके अलावा एक धंधा और करती हूँ।''

''तुम्हारा मतलब पचास रूबल कम होते हैं?''

''बिल्कुल, पुराने समय में हम सौ रूबल प्रति माह कमाती थी।''

''हम्म! मैं नहीं जानता था जोड़ी मिलानेवाले धंधे से कोई इतना कमा सकता है। दो बूँद और···''

जोड़िया ने पहले की तरह एक साँस में गिलास खाली कर दिया।

''पचास रूबल प्रति माह यानी छह सौ रूबल वार्षिक। क्यों ग्रिगोरीण्ना। इतनी आय से तो तुम खुद अपना विवाह कर सकती हो?''

''मैं···एक अधेड़ औरत हूँ।'' वह हँसी।

''इसके विपरीत तुम्हारी देह सुडौल है। चेहरा खूबसूरत और ताजगी भरा है। तुम्हारी हर चीज खूबसूरत है।''

इस पर जोड़ी मिलानेवाली शरमा गई। शरमाता हुआ निकोलाई उसकी बगल में सटकर बैठ गया।

''तुम अब भी बहुत आकर्षक हो। जानती हो, अगर तुम किसी से विवाह करती हो तो दोनों की सम्मिलित आय के कारण तुम उसे कितनी प्रिय हो उठोगी।''

''ओह निकोलाई, तुम क्या कह रहे हो?''

''जो महसूस कर रहा हूँ, वही कह रहा हूँ।''

कुछ देर मौन छाया रहा। फिर शरमाती हुई ल्यूबोव ने उसे कनखियों से देखा।

''तुम्हें कितनी तनख्वाह मिलती है?''

पचहत्तर रूबल प्रति माह। हम लोग खरगोश और मोमबत्तियों से अलग से भी कुछ कमा लेते हैं।''

''शिकार से?''

''नहीं, बिना टिकट चलनेवाले यात्रियों से। हम उन्हें खरगोश कहते हैं।''

एक मिनट और गुजरा। निकोलाई उठकर कमरे में चहलकदमी करने लगा। वह उत्तेजित था।

''मैं जवान बीवी नहीं चाहता। मैं अधेड़ हूँ। अत: तुम जैसी गरिमामयी और हृष्ट-पृष्ट बीवी चाहता हूँ।''

''कैसी बातें करते हो? ही-ही-ही!'' ल्यूबोव ग्रिगोरीण्ना अपने गोरे चेहरे पर रूमाल रखकर हँसी।

''इसमें आश्चर्य की क्या बात है? तुम मुझे पसंद हो। तुम्हारे सभी गुण मेरे अनुकूल हैं। अगर तुम मुझे पसंद करो तो इससे बेहतर मेरे लिए कुछ नहीं। मैं तुम्हें अपना हाथ देता हूँ। इजाजत दो।''

ल्यूबोव ग्रिगोरीण्ना ने हर्ष के आँसू बहाते हुए उसके गिलास से अपना गिलास टकराया।

''अब सुनो, मैं तुमसे कैसे व्यवहार की उम्मीद करता हूँ।''

निकोलाई ने बैठकर गहरी साँस ली और उसे वैवाहिक जीवन तथा पत्नी के कर्तव्यों के बारे में समझाने लगा।

आई-९९, शास्त्री नगर, मेरठ (उ.प्र.)

सुधी पाठकों, लेखकों एवं विज्ञापनदाताओं को

साहित्य अमृत परिवार की ओर से

नवसंवत्सर एवं रामनवमी

की हार्दिक शुभकामनाएँ

नवरात्र

● राजेश्वरी शांडिल्य

'नवरात्र' में दो शब्द हैं—'नव' और 'रात्र'। 'नव' शब्द संख्यावाचक है और 'रात्र' का अर्थ है—रात्रि-समूह का कालविशेष। इस 'नवरात्र' शब्द में संख्या और काल का उद्‌भुत सम्मिश्रण है।

हिंदू धर्म में दो नवरात्र क्रमश: 'वासंती नवरात्र' एवं 'शारदीय नवरात्र' के नाम से प्रचलित हैं। प्रथम नवरात्र चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से और द्वितीय नवरात्र क्वार मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से प्रारंभ होते हैं। प्राचीन काल में कुल चार नवरात्र मनाए जाते थे, परंतु कालक्रम में अब दो ही नवरात्र प्रचलित रह गए हैं। शक्ति-उपासना के लिए नवरात्र सर्वाधिक उपयुक्त माना जाता है। इसीलिए इस अवधि में विधि-विधान से दुर्गा-पाठ किया जाता है। श्रद्धालु लोग प्रथम एवं अंतिम दिवस अथवा पूरे नौ दिनों तक व्रत-उपवास रखते हैं और अपनी दिनचर्या का अधिकतर भाग दुर्गा माँ की पूजा में व्यतीत करते हैं। कुछ तांत्रिक तथा श्रद्धालु इस अवधि में पशु-बलि भी देते हैं।

नवरात्र के दिनों में शक्तिपीठों, जैसे—कामाख्या, विंध्याचल, वैष्णो देवी, ज्वाला देवी व पूर्णागिरि आदि में लाखों श्रद्धालु दर्शन-लाभ के लिए जाते हैं। जिस दुर्गा सप्तशती का पाठ नियमित रूप से नवरात्रों में करने का विधान है, वह 'मार्कंडेय पुराण' का 'देवी माहात्म्य' अध्याय है, जिसमें विष्णु, शंकर, अग्नि एवं देवों से संगृहीत तेजों द्वारा उत्पन्न देवी का स्वरूप उनके द्वारा शिव से त्रिशूल, विष्णु से चक्र, इंद्र से वज्र की प्राप्ति तथा महिसासुर, चंड, मुंड, शुंभ एवं निशुंभ नामक दानवों का वध तथा विजय-प्राप्ति का वर्णन है। दुर्गापूजा नित्य एवं काम्य दोनों है। 'कालिका पुराण' में वर्णित कि जो व्यक्ति प्रमाद, छल, आलस्य, मत्सर, विभ्रम, अनिश्चय, अविश्वास आदि के कारण दुर्गा की आराधना नहीं करता, उसके सभी मनोरथ देवी द्वारा नष्ट कर दिए जाते हैं। यह पूजा काम्य इसलिए है, क्योंकि इससे वांछित फलों की प्राप्ति होती है, चारों पुरुषार्थ प्राप्त होते हैं। 'देवी पुराण' का कथन है कि नवरात्रों का अनुष्ठान एक महान् एवं पवित्र कृत्य है, जो अंसख्य सिद्धियाँ प्रदान करता है, शत्रुओं का विनाश करता है और सबका उपकार करता है।

दुर्गापूजा या दुर्गा-पाठ किसी के लिए भी निषिद्ध नहीं है। इसका आयोजन सामूहिक रूप से भी किया जाता है। नवरात्र के नौ दिनों में दुर्गा की भिन्न-भिन्न तीन शक्तियों की आराधना तीन नामों से की जाती है। प्रथम तीन दिन लक्ष्मी, दूसरे तीन दिन सरस्वती और अंतिम तीन दिन काली रूप की आराधना होती है। नवरात्रों में महाष्टमी एवं नवमी तिथियों का विशेष महत्त्व है। अष्टमी का उपवास महत्त्वपूर्ण होता है और नवमी को बलि के पश्चात् कुमारी कन्याओं तथा गरीब-दु:खियों को भोजन कराने का विधान है। बलि के संबंध में मनु, हेमाद्रि एवं कई अन्य विद्वानों ने लिखा है कि जिन पशुओं की बलि दी जाती है, वे स्वर्ग के अधिकारी होते हैं और वध करनेवाले को पाप नहीं लगता। बलि के पशुओं में बकरा तथा भैंसा—दो के ही नाम हैं। दुर्गापूजा के लिए सप्तमी को दुर्गाजी की प्रतिमाएँ स्थापित की जाती हैं और दशमी को उनका विसर्जन कर दिया जाता है। शाक्त परंपरा का केंद्र समझे जानेवाले बंगाल में दुर्गापूजा बड़ी धूमधाम और उल्लास के साथ महोत्सव के रूप में मनाई जाती है। बंकिम चंद्र चटर्जी ने अपना ऐतिहासिक 'वंदे मातरम्' गीत इसी अवसर के लिए प्रणीत किया था, जिसे राष्ट्रगान का दर्जा प्राप्त है। बंगाल के प्रभाव तथा शक्ति की महिमा से अभिभूत होकर बिहार सहित अन्य प्रदेशों में भी सार्वजनिक दुर्गापूजाएँ प्रारंभ हो गईं। एक-एक पूजा की व्यवस्था में लाखों रुपए व्यय होते हैं। वहाँ श्रद्धालुओं की अपार भीड़ दर्शनार्थ उमड़ती है।

इन नौ दिनों को 'नवरात्र' अथवा 'नवरात्रि' क्यों कहते हैं—इसपर भी मतैव्य नहीं है। कुछ लोग इसे नौ दिन व नौ रात्रि कहते हैं तो कुछ अन्य लोग इसे समय का द्योतक मानते हैं। आठ दिनों तक व्रत करने के पश्चात् नौवें दिन समापन कर दिया जाता है। यदि किसी तिथि का क्षय हो तो दशमी को पारण करना चाहिए। दो नवरात्रों की व्यवस्था के संबंध में भी प्रश्न उठाए जाते हैं।

दुर्गा सप्तशती में शुंभ, निशुंभ तथा महिषासुर नामक असुरों द्वारा समाज में व्याप्त अनीति, कदाचार एवं तामसिक वृत्तियों में वृद्धि के कारण माँ द्वारा उनके सर्वनाश की कथा है। समाज आज भी इन दुष्वृत्तियों से पराभूत है। यद्यपि समाज के अधिकतर मानव सात्त्विक प्रवृत्ति के होते हैं, परंतु कम संख्या में होते हुए भी अनाचारी लोगों की आक्रामक वृत्ति से पीड़ित हैं। नवरात्र हमें यह संदेश देता है कि ऐसी प्रवृत्ति के लोगों का सामना हमें दृढ़तापूर्वक करना चाहिए और समाज को उनसे मुक्ति दिलाने का प्रयास करना चाहिए।

नवरात्र के संबंध में यह एक स्वयंसिद्ध तथ्य है कि शक्ति-उपासना के लिए यह अति पवित्र समय होता है। एक पौराणिक आख्यान है कि पार्वती ने भगवान् शिव से यह जानने की जिज्ञासा प्रकट की कि नवरात्र किसे कहते हैं और इसका क्या प्रयोजन है। इसका उत्तर भगवान् शिव ने इस प्रकार दिया—

नव शक्तिभि: संयुक्तं नवरात्रं तदुच्यते,
एकैब देव-देवेशि नवधा परितिष्ठता ॥

अर्थात् नवरात्र नौ शक्तियों से संयुक्त एक अनुष्ठान है, जिसमें नौ शक्तियों की भिन्न-भिन्न रूपों में प्रतिदिन पूजा-अर्चना की जाती है। 'मार्कंडेय पुराण' में इन नौ शक्तियों के नाम क्रमश: शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा,

कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी एवं सिद्धिदात्री अभिहीत हैं।

नवरात्र के प्रत्येक दिन शक्ति के जिन रूपों की पूजा-अर्चना की जाती है, वह इस प्रकार है—

१. प्रथम नवरात्र—महाकाली ने मधु-कैटभ नामक राक्षसों का संहार कर भगवान् विष्णु की रक्षा की थी।

२. द्वितीय नवरात्र—देव-मानव, चर-अचर सभी महिषासुर दानव से त्रस्त थे। उसके विनाश हेतु भगवान् विष्णु तथा शंकर की दिव्य शक्तियों से एक तेजपुंज प्रकट हुआ, जिसने महालक्ष्मी का रूप धारण कर इस दैत्य का संहार किया।

३. तृतीय नवरात्र—भगवान् विष्णु की इच्छा से महासरस्वती प्रकट हुईं। उन्होंने शुंभ-निशुंभ नामक दो दुर्दांत दानवों का विनाश किया। यह देवी विद्या, ज्ञान तथा ललित कलाओं की अधिष्ठात्री शक्ति हैं।

४. चतुर्थ नवरात्र—इसका संबंध योगमाया से है। जब मथुरा में कंस के कारागार में भगवान् कृष्ण का जन्म हुआ तो उसी समय गोकुल में यशोदा के गर्भ से योगमाया ने जन्म लिया। भगवत्कृपा से कंस के कारागार में इसी नवजात योगमाया को स्थापित कर कृष्ण को वहाँ से अन्यत्र भेज दिया गया, जो अंततः कंस के विनाश का कारण बने।

५. पंचम नवरात्र—दुर्गा की शक्ति का एक नाम रक्तदंतिका भी है। वैप्रचिति असुर परिवार का विनाश करने के लिए दुर्गा देवी ने रक्तदंतिका नाम से अवतार लिया और असुरों को मार-मारकर उनका रक्तपान करती गईं, क्योंकि इन असुरों के रक्त की जितनी बूँदें पृथ्वी पर गिरती थीं, उतने सहस्र दानव उत्पन्न हो जाते थे। इसीलिए दुर्गा रक्तदंतिका के रूप में विख्यात हुईं और इस दिन उनके इस रूप की पूजा होती है।

६. षष्ठम नवरात्र—देवी शाकंभरी सुख-समृद्धि, धन-धान्य तथा शांति की महाशक्ति हैं, जिनकी आराधना छठे नवरात्र को होती है। पौराणिक आख्यानों के अनुसार, जब पृथ्वी पर सौ वर्षों तक अवर्षण की स्थिति से प्राणिमात्र विनाश के कगार पर पहुँच गया था तो ऋषि-मुनियों और देवताओं ने सामूहिक रूप से देवी शाकंभरी के समक्ष त्राहिमाम्-त्राहिमाम् की गुहार लगाई। तब देवी ने घनघोर वर्षा का उपक्रम किया और प्राणिमात्र को जीवनदान मिला।

७. सप्तम नवरात्र—शक्ति का प्रमुख नाम दुर्गा है। सप्तम नवरात्र इन्हीं को समर्पित है। इसीलिए नवरात्र के दिनों में आज ही के दिन माँ दुर्गा की प्रतिमा स्थापित कर नवमी तक सघन रूप से पूजा-अर्चना की जाती है। दुर्गम नामक राक्षस ने पृथ्वी पर अपने अत्याचार से जड़-चेतन सभी को त्रस्त कर रखा था। उसके संहार के लिए समस्त देवगणों ने अपना-अपना अंश देकर माँ दुर्गा को उत्पन्न किया, जिन्होंने दुर्गम राक्षस का विनाश किया। इसीलिए इस शक्ति का नाम दुर्गा पड़ा।

८. अष्टम नवरात्र—यह तिथि शक्ति के अष्टम रूप भ्रामरी देवी के लिए निश्चित है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, जब देवताओं की पत्नियों का सतीत्व दानवी प्रकोपों के कारण संकट में पड़ गया था तब उन्होंने माँ दुर्गा से अपने सतीत्व की रक्षा के लिए प्रार्थना की, जिसके फलस्वरूप भ्रामरी देवी के रूप में दुर्गा प्रकट हुईं और अरुण नामक असुर तथा अन्य दानवों का वध किया।

९. नवम नवरात्र—अंतिम नवरात्र चंडिका देवी की पूजा-अर्चना एवं स्मरण के लिए निर्धारित है। चंड-मुंड नामक दो प्रचंड राक्षसों के कुकृत्यों से तीनों लोक त्रस्त और विचलित होने लगे तो माँ दुर्गा ने चंडिका रूप धारण किया और उन दोनों का संहार किया, जिसके पश्चात् चारों ओर पुनः सुख-शांति स्थापित हुई। 'विष्णु पुराण' के अनुसार, शक्ति के तीन रूप माने गए हैं—१. पराशक्ति (विष्णु शक्ति), २. अपराशक्ति (क्षेत्रज्ञाख्या) एवं ३. अविद्या शक्ति (कर्म संज्ञाख्या)।

प्रथम पराशक्ति ही महामाया है, जो पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार के रूप में विद्यमान है। 'दुर्गा सप्तशती' में तीन बार 'नमस्तस्यै' का यही अभिप्राय है कि भक्त तीनों शक्तियों को प्रणाम कर रहा है। 'ब्रह्मवैवर्त पुराण' के अनुसार सृष्टि में जो भी शक्ति की विभूति का दर्शन होता है, वह सब पर ब्रह्म की शक्ति प्रकृति का ही उद्‌भाष है।

नवरात्र में शक्ति की देवी भगवती के निमित्त व्रत, पूजा, अर्चना, उपवास आदि का विधान बताया है। हमारी संस्कृति प्रकृति से कभी विच्छिन्न नहीं हुई। इसी दृष्टि से वृक्षों, लताओं एवं वनस्पतियों में भी ब्रह्म के दर्शन कर उन्हें सुरक्षित रखने का प्रयास किया गया, क्योंकि जीवन में इनके महत्त्व का अभिज्ञान प्राचीन साधकों को प्राप्त हो चुका था। नवरात्र के दो शब्दों में 'नव' का अर्थ 'नवीन' तथा 'रात्र' या रात्रि से तात्पर्य 'सुखानुभूति' से है। इस प्रकार नवरात्र का भाष्य नया उत्साह, नई शक्ति एवं स्फूर्ति के रूप में किया जा सकता है। भारतीय उपमहाद्वीप में नित व्यवस्था के अनुसार चैत एवं आश्विन से प्राप्त होनेवाली ऋतुओं क्रमशः वसंत एवं शरद् में रोग, व्याधि, महामारी इत्यादि फैलने का भय सर्वाधिक होता है। इसीलिए अपनी आंतरिक शक्ति और रोग-प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाने हेतु शक्ति की पूजा, व्रत, उपवास, संयमी जीवन एवं ब्रह्मचर्य का पालन करने के लिए कहा गया है और इसी उद्‌देश्य से शक्ति की उपासना करके अतिरिक्त ऊर्जा प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। 'मार्कंडेय पुराण', 'ब्रह्मवैवर्त पुराण', 'विष्णु पुराण' एवं अन्य अनेक ग्रंथों में शारदीय नवरात्र तथा उसमें की जानेवाली पूजा-अर्चना का विशेष विधान दिया गया है।

समृद्धि, शांति, आयु, धन, पुत्र, शत्रु-पराजय, यशकीर्ति एवं राष्ट्रीय समुन्नति के लिए किए जानेवाले इस अनुष्ठान में पत्नी को भी साथ रखने का विधान है। घट स्थापना, अखंड दीपमाला, कुमारीपूजन, चंडी-पाठ, ब्राह्मण भोजन तथा कुमारी भोजन इसके मुख्य अंग हैं। यज्ञ, दान तथा तप—इसमें तीनों का ही समावेश होना चाहिए। प्रातः, मध्याह्न एवं संध्या में पूजन, यज्ञ और जप करना होता है। भारतवर्ष एक कृषि प्रधान देश है। इसलिए इसी के प्रतीकस्वरूप कलश की स्थापना के समय जौ के बीज

बो दिए जाते हैं, जिनसे अंकुरित एवं पल्लवित जवारों को पूर्णाहुति के समय शिरोधार्य किया जाता है। नवरात्र में पूजा-अर्चना के अतिरिक्त दुर्गा सप्तशती का पाठ भी अवश्य करना चाहिए, ताकि मन की वृत्तियों का दमन भी होता रहे। नवमी के दिन कुमारीपूजन एवं भोजन कर्म से स्त्रियों के प्रति सम्मान एवं आदर भाव का प्रतिपादन होता है।

शाक्त मत का सर्वाधिक प्रभाव बंगाल एवं पूर्वी भारत में रहा है, जिसके कारण नवरात्र में वहाँ शक्तिपूजा श्रद्धा एवं भक्ति के साथ होती है। देवी दुर्गा के विभिन्न कार्यों, पराक्रमों एवं कल्याणकारी कर्मों को दरशाते हुए भव्य प्रतिमाओं का निर्माण किया जाता है, जिन्हें सामान्यत: षष्ठी एवं सप्तमी को प्रतिष्ठित किया जाता है और दशमी को विसर्जन किया जाता है। इस अवसर पर महादुर्गा के साथ सरस्वती, लक्ष्मी एवं काली रूपों की भी आराधना की जाती है।

शीतलाष्टमी

होली के बाद मौसम में एकाएक परिवर्तन होने लगता है और वातावरण में उष्णता आ जाती है। हर ऋतु-परिवर्तन पर हमारे शास्त्र दैहिक, दैविक और भौतिक रूप से तैयार होने का संदेश देते हैं। शीतला माता की आराधना भी इसी का एक अंग है। देवी भगवती की जिन शक्तियों का उल्लेख बार-बार किया जाता रहा है, उनमें शीतला माता भी एक आद्य शक्ति हैं। होली के उपरांत इनकी आराधना करने का तात्पर्य यह है कि भगवती हमें त्रितापों से बचाएँ और नीरोग रखें।

यह पर्व महालक्ष्मी की आराधना का पर्व है। महालक्ष्मी की महामाया से समस्त प्राणी अभिसिंचित हैं। देवी ने अपने को 'प्रकृति' कहा है। इसका अर्थ है कि संसार में जो कुछ है, वह देवी के प्रताप से है। इस नाते देवी प्रकृति में होनेवाले परिर्वतनों और उथल-पुथल का भी अहसास कराती हैं। देवी का पहला स्वरूप शैलपुत्री का है, जो पर्यावरण और प्रकृति की ओर ध्यान आकृष्ट करने का संदेश देता है। यह भारतीय संस्कृति ही है, जिसने पर्यावरण को धार्मिक आधार पर स्वीकार किया है। पूरा विश्व आज इस पर चिंतन कर रहा है, लेकिन हमारे ऋषि-मुनियों ने भविष्य को भाँपकर बहुत पहले ही पर्यावरण की चिंता कर डाली थी। इसलिए हर पर्व, त्योहार आदि में प्रकृति-पूजन का भाव निहित है। देवी भगवती की आराधना तो एक प्रकार से प्रकृति का पूजन ही है।

शीतला माता के पूजन का अर्थ 'प्रकृति के तत्त्व को जानने' से समझा जा सकता है। शीतला सप्तमी के दिन बासी भोजन खाकर बसौड़ा पूजा जाता है। अगले दिन शीतलाष्टमी का पूजन किया जाता है। होली के सात-आठ दिन बाद ये दोनों पर्व मनाए जाते हैं। 'बसौड़ा' पूजने का अर्थ है कि हम अन्न के महत्त्व को समझें, उसके एक-एक कण की उपयोगिता को ग्राह्य करें। अगले दिन अष्टमी को महागौरी की आराधना में हम सृष्टि के तत्त्व को समझ सकते हैं। सातवें और आठवें दिन महागौरी के रूप में देवी भगवती की आराधना होती है।

चैत्र मास में नया अन्न आता है। देवी लक्ष्मी अन्न-धन की वर्षा करनेवाली हैं। वह हम पर प्रसन्न हों और श्रीवृद्धि करें, यही कामना की जाती है। महागौरी लक्ष्मी का स्वरूप हैं। महालक्ष्मी के जितने भी स्वरूप हैं, वे सब किसी-न-किसी रूप में प्रकृति से जुड़े हैं। यह देवी दैहिक और भौतिक तापों का हरण करनेवाली हैं। ऐसा कहा जाता है कि ग्रीष्म ऋतु में तीन तापों में वृद्धि होती है। पृथ्वी और शरीर का तापमान बढ़ जाता है। ऐसे में शीतला माता की पूजा करने से तीनों प्रकार के तापों का क्षय होता है।

महलक्ष्मी को समर्पित तीनों ही स्वरूपों में सप्तमी (कालरात्रि), अष्टमी (महागौरी) और नवमी (सिद्धिदात्री) प्रकृति के ही उत्सव हैं। काल को वश में करनेवाली कालरात्रि हैं तो प्रकृति को संयोजित और श्रीवृद्धि करनेवाली महागौरी हैं। सौभाग्य प्रदान करनेवाली, धन और अन्न प्रदान करनेवाली तथा त्रितापों का क्षय करनेवाली देवी की आराधना ही शीतला माता की आराधना है।

उत्तरी भारत में, विशेष रूप से भोजपुरी क्षेत्र में शीतला माता की बड़ी महिमा है। शीतला माता पर स्त्री-पुरुष की अटूट श्रद्धा है। यहाँ तक कि बड़ी चेचक और छोटी चेचक को माता की अकृपा का परिणाम माना जाता है। बड़ी चेचक को श्रद्धापूर्वक 'बड़ी माता' और छोटी चेचक (चिकेन पॉक्स) को 'छोटी माता' कहने की परंपरा है। चेचक निकलने पर सामान्यत: कोई चिकित्सकीय उपचार नहीं किया जाता है, वरन् रोगी के आस-पास स्वच्छता, नीम की टहनियों को रखने तथा शीतला माता के चरणों में रोगी के बिस्तर पर पुष्पार्पण करके कष्ट दूर करने की प्रार्थना माता से की जाती है। इस प्रकार के रोगों के निवारणार्थ अनेक लोकगीत भी प्रचलित हैं। इन गीतों को रोगी के पास बैठकर एक-दो स्त्रियाँ कभी-कभी गुनगुनाकर माता का आवाहन करती रहती हैं। भोजपुरी अंचल में शीतला माता की इतनी अधिक मान्यता है कि प्रत्येक शुभ कार्य के श्रीगणेश के समय माता के गीत गाकर उन्हें आमंत्रित किया जाता है, ताकि अनुष्ठान सफल हो सके।

शीतला माता की भक्ति एवं श्रद्धा में गाए जानेवाले गीतों में प्राय: माता से कृपा करने, धन-धान्य से पूर्ण करने, रोग-व्याधि से मुक्त रखने एवं विशेष कष्टों के निवारण की याचना की जाती है।

शीतला माता की पूजा श्रीलक्ष्मी की ही आराधना है। भू-माता के थान पर जाकर हलदी के पाँच थाप लगाए जाते हैं और हलदी, मूँग की दाल, रोली, चावल, गेहूँ आदि से शीतला माता का पूजन किया जाता है। इस दिन नीम की पत्तियों से स्नान किया जाता है और तापों के क्षय की कामना की जाती है। शाम को शीतल पदार्थों का सेवन किया जाता है।

(श्रीमति राजेश्वरी शांडिल्य की पुस्तक 'भारतीय पर्व एवं त्योहार' से साभार)

स्याम देश का भ्रमण, देशमाटी का राग-रंग

● ऋता शुक्ल

यह स्याम देश है। थाईलैंड सरकार के कला-संस्कृति मंत्रालय के आमंत्रण पर भारतीय लेखकों का एक शिष्टमंडल सात दिवसीय दौरे पर इन दिनों बैंकॉक में है। एयर इंडिया की उड़ान (ए आई-३३२) में कुल चार भारतीय प्रतिनिधि हैं—डॉ. हरेकृष्ण सत्पथी (कुलपति, संस्कृत विश्वविद्यालय, चेन्नई), डॉ. अर्जुनदेव चारण (अध्यक्ष, संगीत नाटक अकादमी, राजस्थान), कवि तथा रंगकर्मी डॉ. के. श्रीनिवास राव, (साहित्य अकादेमी के सचिव), डॉ. ऋता शुक्ल (मीडियाकर्मी तथा हिंदी कथा लेखिका)।

हमारा वायुयान ७ बजकर, ३५ मिनट पर बैंकॉक के हवाई अड्डे पर उतरता है। थाईलैंड कला एवं संस्कृति मंत्रालय की ओर से निदेशक नार्दनिसा सुकचित (टिक) और उनके सहयोगी सुगंधित फूलों के गजरे हाथों में लिये स्वागतार्थ प्रस्तुत हैं। यह सुवर्णभूमि है। बैंकॉक हवाई अड्डे से ही भारतीय कला-संस्कृति और अध्यात्म का प्रभाव दिखाई पड़ने लगता है। साथ ही अतिथि-सत्कार की परंपरा भी परिलक्षित होती है। नार्दनिसा की सहयोगी युवतियाँ और युवक हमारा सामान उठाने के लिए तत्पर हैं। मधुर मुसकान और सिर झुका, हाथ जोड़कर अभिवादन की भंगिमा में खड़े ये स्याम देशवासी थोड़ी ही देर में अपने लगने लगते हैं।

कलिंग विजय के बाद सम्राट् अशोक ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया था और भिक्षुओं को बौद्ध मत के प्रचार हेतु स्याम देश (थाईलैंड) भेजा था। तब से यह सुवर्णभूमि 'अहिंसा परमोधर्मः' का संदेश देनेवाले तथागत बुद्ध की उपासना को अपने जीवन का मूल मंत्र मानती है।

यह रॉयल ब्लू होटल है। चौड़े पाटवाली रॉयल ब्लू नदी के तट पर निर्मित! कमरा संख्या-९११। बालकनी का दरवाजा खोलते ही नदी अपनी समूची सुंदरता के साथ समक्ष है। अनेक यंत्रचालित नौकाएँ तट पर बँधी हुई, उन पर छोटे केसरिया ध्वज लहराते हुए! इस नदी पर अनवरत मालवाहक पोत संतरित हैं। उगते हुए सूरज की लालिमा, गौरैयों की कलरव-ध्वनि और नौकाओं की आवाजाही के बीच दिन प्रारंभ होता है।

नार्दनिसा का आतिथ्य सचमुच सराहने लायक है। वे मेरे कमरे में फलों से भरी डलिया रख जाती हैं—मुझे पता है, तुम विशुद्ध शाकाहारी हो। अतएवं ये फल तुम्हारे लिए।

दूसरी सुबह टिक के दिए फल ही मेरे नाश्ते का सरंजाम बनते हैं। आधा गिलास टमाटर का रस और फलों का सलाद!

सुप्रसिद्ध कथाकार। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं– 'अरुंधती', 'दंश', 'अग्निपर्व', 'समाधान', 'बाँधो न नाव इस ठाँव', 'शेषगाथा', 'कनिष्ठा उँगली का पाप', 'कितने जनम वैदेही', 'कासों कहों मैं दरदिया' तथा 'मानुस तन'। 'क्रौंचवध तथा अन्य कहानियाँ' भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा पुरस्कृत। इसके अलावा लोकभूषण सम्मान आदि विशिष्ट पुरस्कारों से सम्मानित।

बून सुएप क्लिपेंग उत्साह से भरा एक कर्मठ नवयुवक है। वह कला-संस्कृति मंत्रालय में पद-स्थापित है। उसकी तत्परता देखते बनती है। हमारे अंतरराष्ट्रीय दूरभाष संबंधी व्यवधानों का समाधान ढूँढ़ता सुएप। छोटी-बड़ी हर चीज के लिए लगातार दौड़-भाग करता सुएप।

मैं कब, कैसे उसकी मॉम बन गई, पता ही नहीं चला। वातानुकूलित बड़े वैन की ऊँची सीढ़ियों से उतरते समय चटपट आगे बढ़कर अपने हाथ का सहारा देता सुएप! बुद्ध की धरती ने मुझे एक पुत्र दिया। कहते भी हैं, जो सहारा बने, वही संतान होती है। सुएप ने इटली में रहकर कला संस्कृति का अध्ययन किया है। वह एक बेहतरीन छायाकार है और उससे भी बढ़कर एक बेहतरीन इनसान।

पहले से ही सुनिश्चित किए गए कार्यक्रम के तहत टिक सुबह आठ बजे हमें लेने के लिए होटल पहुँचती है।

थाईलैंड का कला-संस्कृति मंत्रालय! निदेशालयवाले संभाग में हमारी भेंट प्रिस्नापाँग टैडसिरीकुल (स्थायी सचिव, कला, संस्कृति निदेशालय) से होती है। भारतीय दूतावास के कुछ अधिकारी भी वहाँ मौजूद हैं। सचिव शांत और सौम्य सदैव मुसकराती रहनेवाली महिला है। उनके प्रभाग की सभी अधिकारी अधिकांश महिलाएँ हैं, वे भी अतिथि सत्कार में पारंगत हैं। प्रिस्ना थाई भाषा में भारतीय शिष्टमंडल का स्वागत करती है। दुभाषिया युवक अंग्रेजी अनुवाद करता जाता है। वे अपने देश की कला संस्कृति की संक्षिप्त जानकारी देती हुई इस बात पर संतोष व्यक्त करती हैं कि भारत थाईलैंड साहित्य, कला-संस्कृति के क्षेत्र में वैचारिक आदान-प्रदान का यह मिशन जो आज प्रारंभ हुआ है, आगे बढ़ेगा और दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक संबंध दृढतर होंगे।

हमारे साथ भारतीय दूतावास के श्री प्रशांत अग्रवाल और प्रदीप कुमार भी थे, जो भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के उच्चाधिकारी हैं। इसके

पूर्व (विमोलक चुचाट) उप महानिदेशक, समकालीन कला एवं संस्कृति मंत्रालय से हमारी मुलाकात हुई थी। उस दफ्तर में खूबसूरत किशोरियों ने बड़े मनोयोग से हमारा स्वागत किया। मैंने उनसे कहा—तुम मेरी नातिनी की तरह दिख रही हो। और वे सुंदर हँसी हँसती हुई मुझसे लिपट गईं।

परिचय सत्र के अपने संबोधन में मैंने कहा—थाईलैंड के मेरे भाई-बहनो! मैं आपके लिए बुद्ध के जन्मस्थान भारत से करुणा और संवेदना लेकर आई हूँ। इस सुवर्ण भूमि की माटी का संस्पर्श पाते ही यहाँ के लोगों की विनम्रता और सत्कारप्रियता ने मेरा मन मोह लिया। यहाँ छोटी बहन जैसी 'टिक' मिली, सुएप जैसा पुत्रवत् युवक मिला, आप सभी की हृदय से आभारी हैं। आपके प्यार की यही सौगात लेकर हम अपने देश लौटेंगे!

कला-संस्कृति मंत्रालय के सभी अधिकारियों से औपचारिक परिचय के पश्चात् डॉ. राव ने साहित्य अकादमी के वृहत्तर उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए अपना वक्तव्य दिया और धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात् हम ग्रैंड पैलेस की ओर बढ़े। रास्ते भर तेज रफ्तार के साथ दौड़ती खूबसूरत रंगोंवाली गाड़ियाँ, चौड़ी सड़कों के दोनों ओर बहुमंजिला इमारतें और स्थान-स्थान पर बौद्ध मंदिरों के आकर्षक दृश्य देखने को मिले। थाई वास्तुकला अपने आप में विलक्षण है और यहाँ के प्राचीन मंदिरों, ऐतिहासिक भवनों में इस स्थापत्य-सौंदर्य का विस्तार देखा जा सकता है।

हिंदू ब्राह्मणों के मंदिर 'देवस्थान' में जाकर ऐसा प्रतीत हुआ, जैसे भारतीय सनातन धर्म के लिए अकूत श्रद्धा यहाँ के निवासियों के मन में है। सृष्टि के रचयिता बह्मा की मूर्ति के समक्ष जलता हुआ अखंड दीप, विशाल शिवलिंग, गणेश, विष्णु, सरस्वती अनेक देवी-देवताओं की प्रतिमाएँ विभिन्न कक्षों में सुशोभित! ये मूर्तियाँ भव्य हैं और इस मंदिर की व्यवस्था थाईलैंड के राजा राम (नवम) की देखरेख में चलाई जाती है। श्वेत परिधान में सुसज्जित दो पुजारी हमारी अभ्यर्थना के लिए आगे आए। एक गौर वर्ण के वृद्ध और एक युवा। मिर्जई की तरह छोटा कुरता और सिली-सिलाई धोती धारण करनेवाले इन पुजारियों ने बताया—यहाँ की समस्त व्यवस्था, हमारा वेतन आदि राजा के द्वारा प्रदत्त है।

उन्होंने सीलबंद नन्ही शीशियों में तरल प्रसाद दिया। साथ में एक-एक छोटी नलिका भी। उस प्रसाद का स्वाद भारतीय घरों में पूजा के समय बनाए जानेवाले पंचामृत के स्वाद जैसा था। मैं उसे रखना चाहती थी—अपने साथ ले जाने के लिए। क्लिपेंग ने कहा—मॉम, इसे पी जाओ। अधिक दिन रखने से यह खराब हो जाएगा।

उस पवित्र देवस्थान से निकलकर हम सीधे थेप्थीदरम मंदिर गए। यहाँ थाईलैंड के शेक्सपियर माने जानेवाले महान् रचनाकार सुनेथ्रॉन फू का स्मृति संग्रहालय मिला। इस मंदिर परिसर में उन्होंने लगातार तीन वर्षों तक निवास किया था। मजबूत काठ की बनी इकहरी चौकी, जिस पर सुनथ्रॉन सोया करते थे, उनके सिरहाने एक छोटी सी आबनूसी मेज, एक अलमारी, जिसमें उनकी कविताओं की पांडुलिपियाँ श्वेत वस्त्र-खंड में लिपटी सुरक्षित रखी गई हैं।

दूसरे छोटे कमरे में मिट्टी की बनी चाय की केतली छोटी अँगीठी पर धरी हुई। लिखते समय चाय की तलब लगे तो फू उठकर अपने लिए चाय तैयार करेंगे। मिलने-जुलने वालों को भी उनके हाथ की बनी चाय नसीब होगी। इस कमरे की एक दीवार पर फू की तसवीरें लगी हुई हैं। तालपत्र पर लिखी अनेक रचनाएँ सामने रखी पुरानी अलमारी में सहेजी गई हैं। कम ऊँचाईवाला एक ही द्वार है। कुल दो छोटे कमरोंवाला यह घर किसी ऋषि के उटज सा प्रतीत होता है। काशी का गंगा तट! तुलसीघाट पर स्थित टोडरमल द्वारा निर्मित गोस्वामी तुलसीदास की एकल कक्षवाली तीन मंजिला इमारत मेरे जेहन में उग आती है। कहते हैं—मीरांबाई, अब्दुरहीम खानखाना जैसे श्रेष्ठ रचनाकार उस कोठरी में आया करते थे। फू के साथ विचार-विमर्श करने के लिए उनके समकालीन लेखकों की बैठकें मंदिर परिसर में आयोजित होती होंगी। सुनथ्रॉर्न फू की स्मृतियों को प्रणाम करती हुई मैं झुककर उनके कमरे से बाहर निकल आई।

थाई लोग अपनी कला-संस्कृति, अपने साहित्य का संरक्षण करना बखूबी जानते हैं। क्लेश से भीगा मन लिये मैं वहाँ से आगे बढ़ी—यह सलीका हम भारतवासियों को कब आएगा?

दिन भर विविध मंदिरों के सौंदर्य को आँखों में समेटते हम पाँच बजे अपने होटल रॉयल ब्ल्यू रिवर पहुँचे। एक घंटे की मोहलत थी। तुरंत तैयार होकर निकलना था। बेसमेंट में बने भोजनागार के सामने विशाल शीशद्वार था, 'खुल जा सिम सिम' कहे बिना खड़े होते ही खुल जानेवाला द्वार, वहाँ से नीचे उतरती सीढ़ियाँ और रेलिंग के उस पार नदी का अनंत विस्तार। कला-मर्मज्ञ कुरते-पायजामे में फब रहे बंधु, अर्जुन देव चारण ने मछलियों का समूह नृत्य दिखाया—नीलवर्ण जल की सतह पर लयबद्ध उमगती, अठखेलियाँ करती मत्स्य बिरादरी। हमारी आँखें उस सौंदर्य को अपलक निहारना चाहती थीं। वहीं थोड़ी दूरी पर मांसाहार की तृष्णा पाले एक व्यक्ति मछलियों का शिकार करने के लिए दत्तचित्त था। उस दिन रात्रि भोजन के समय मैंने साथ बैठी 'टिक' से कहा—

'तुम्हारे ईश्वर ने अहिंसा का संदेश दिया, जीव मात्र पर करुणा का पाठ पढ़ाया तो तुम लोग उनके आदेश को कैसे भुला बैठे?'

मुझे स्मरण हुआ, अपने देश में भी छोटे-बड़े जीवों का जिह्वा के स्वाद के लिए वध करते मांसभक्षी लोग। मेरी प्रतिवेशिनी जैनी भोजन परंपरा का कठोरतापूर्वक निर्वाह करनेवाली गृहिणी ने अपनी पीड़ा व्यक्त की थी—मेरे सबसे छोटे लड़के को मांसाहार की लत लग गई है। घर का भोजन उसे नहीं सुहाता। डिब्बा बंद मांस ले आता है।

उस रात महानिदेशक कला, संस्कृति श्री खेमचट थेपचाई ने भारतीय लेखकों के सम्मान में भोज दिया। भारतीय दूतावास के श्री प्रशांत अग्रवाल ने बताया—आप लोगों की पसंद को ध्यान में रखते हुए शाकाहारी भोजन तैयार किया गया है। बिना प्याज-लहसुन की सब्जियाँ, फलों से बने सुस्वादु व्यंजन, आम, पपीता, लीची का सलाद, सब्जियों का सूप, अदरक और बीन की भुनी हुई सब्जी। कुरकुरे स्वादवाला चावल का बना स्वादिष्ट व्यंजन और सब्जियों का सॉस···। थाईलैंड में चावल, मकई, नारियल, मशरूम की खेती बहुतायत में है। यह भोजन सबको रुचिकर लगा।

अगला दिन हमारे लिए ज्ञान-यात्रा का दिन था। हम थाईलैंड के राष्ट्रीय ग्रंथागार को देखने के लिए उत्सुक थे। 'टिक' बदस्तूर हमारे साथ थीं। 'के' और सुएप 'सन' भी!

मुख्य पुस्तकालयाध्यक्ष एक महिला थीं, उन्होंने सम्मेलन कक्ष में चाय तथा मिष्टान्न के साथ हमारा स्वागत किया। राष्ट्रीय पुस्तकालय से संबंधित एक वृत्तचित्र हमें दिखाया गया। वाचक द्वारा यह बताया गया कि यह ग्रंथागार थाईलैंड की बौद्धिक संपदा के संरक्षण हेतु निर्मित है। सन् १९६६ से इसका शुभारंभ हुआ और ग्रंथ संकलन, ग्रंथों का संरक्षण, कला-संस्कृति से संबंधित साक्ष्यों का संकलन, पांडुलिपियों और प्रस्तर-आलेखों का संचयन तथा देश के समस्त भू-भागों की रचनात्मक धरोहरों का संरक्षण। चक्री रियासत के दिनों में इस पुस्तकालय का नाम था—'वाजिरायनाना लाइब्रेरी फॉर द कैपिटल सिटी।'

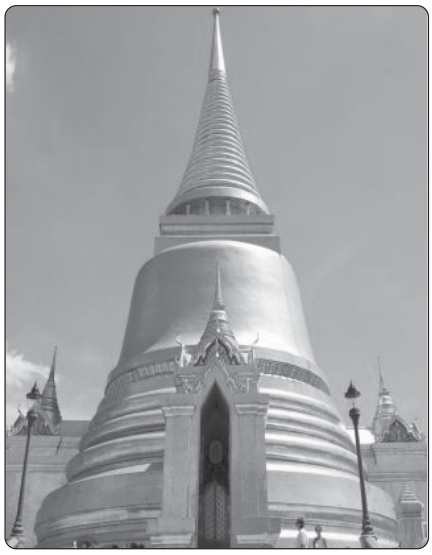

चेदी स्तूप

सन् १९३३ में लोकतांत्रिक व्यवस्था के प्रसार के तहत अनेक परिवर्तन हुए और इस पुस्तकालय का नाम राष्ट्रीय पुस्तकालय करते हुए इसे लोक को सौंप दिया गया। १९६६ में यह पुस्तकालय (सैमसेन) रोड में स्थानांतरित किया गया और अब यह कला संस्कृति मंत्रालय के अधीन काम कर रहा है। सभी शाखाओं को मिलाकर इस विशाल बहुमंजिला पुस्तकालय में बीस लाख से अधिक संख्या में किताबें, पांडुलिपियाँ, शिलालेख तथा अन्य सामग्रियाँ हैं। राजा राम नवम का संगीत पुस्तकालय और राजकुमारी सिरिनधॅर्न की संगीत लाइब्रेरी देखकर मन एक नई पुलक से भर उठा।

रामायण के चुने हुए अंशों पर आधारित नृत्य-नाटिका की सी.डी. देखते हुए अनुभव होने लगा था—पूरा राजघराना संगीत-कला में अभिरुचि रखनेवाला है। वहाँ के अधिकारियों ने बताया—राजा स्वयं एक जाने-माने संगीतज्ञ हैं।

दोपहर के भोजन के पश्चात् रामकामहेंग विश्वविद्यालय में 'अंतरराष्ट्रीय एशियाई साहित्य' पर सम्मेलन और प्रेस-वार्त्ता का आयोजन था। वहाँ हम भारतीयों का गर्मजोशी से स्वागत किया गया और विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों तथा संवाददाताओं से हमारा परिचय कराया गया। भाषण आदि के पश्चात् थाई कवि जकारिया अमात्या ने अपनी कविता पढ़ी। अपने काव्य पाठ के दौरान उन्होंने मंच पर पहले से रखी एक बड़ी टॉर्च उठाई और उसे जलाकर सभागार की ओर वृत्ताकार प्रकाश फेंकना प्रारंभ किया। वे कविता की पंक्तियाँ पढ़ रहे थे और प्रकाशवृत्त को तेजी से घुमाते जा रहे थे। यह सिलसिला देर तक चला। काव्य-पाठ के दौरान यह एक नया प्रयोग देखने को मिला।

अगले दिन सुवर्णभूमि हवाई अड्डे से उडोनथोनी के लिए हमारी रवानगी थी। टीजी ७०० की इस गृह उड़ान को पूरी करके हम बैन पियांग नेशनल म्यूजियम गए। कुछ राज समाधियाँ, बरतनों के अवशेष, नर-कंकाल, अन्य जीवों के कंकाल। यहीं एक त्रासद दृश्य भी देखने को मिला—एक माता और उसके नवजात शिशु का कंकाल। मन भारी हो गया! विधाता का सबसे बड़ा अभिशाप है—शिशु-मृत्यु!

नदी किनारे काठ के बने ग्रामीण रेस्तराँ में सादा चावल, तले हुए आलू और योगर्ट का भोजन लेने के पश्चात् हम 'नातित कैफे' में नोंगकाई राज्य के लेखकों से मिले।

लघु कथाकार फैतून थान्या, कवि फाइवारिन कावंगम, कवि कलाकार निराति साई लवारूनोथाई। फाइवारिन और निराति साई ने अपनी-अपनी कविताओं का पाठ किया। फैतून थान्या ने अपनी कहानी का अंश सुनाया।

जुलाई का महीना थाईलैंड के लिए वर्षा ऋतु का महीना है। नातिन कैफे के खूब चौड़े खुले बरामदे में बड़ी मेज के इर्दगिर्द थाई-भारतीय लेखकों का जमावड़ा है। बाहर झमाझम बारिश और भीतर लंबे बालोंवाले थाई कवि का कविता पाठ! सामने के बगीचे में आम के टिकोरे टहनियों के साथ झूमते वर्षा में नहाते! थाई ग्रीन टी हरित चाय की प्याली का आनंद भी साथ-साथ! सुएप खटाखट तसवीरें खींचने में जुटा है। राव चुटकी ले रहे हैं—भारत के कवियों को झेला, अब यहाँ भी झेलो! सत्पथी दाद देने में सबसे आगे है। वे कुछ थाई शब्द सीख रहे हैं। थाईवासियों पर अपना भी तो कुछ सिक्का जमे। अर्जुन देव गंभीर हैं। मन-ही-मन मुसकराते हुए उनका कौतुकी भाव उनके चेहरे से झलक रहा है। मैं बरसों रंगमंच से जुड़ी रही हूँ—वह संप्रेषण थाह सकती हूँ। कविता पाठ का उतावलापन वाहवाही के साथ परवान छू रहा है। शाम गहरा चुकी है, हमें अपने अगले गंतव्य की ओर जाना है। बलपूर्वक विदा लेकर हम आसावान होटल की राह मुड़ जाते हैं।

बृहस्पतिवार, ११ जुलाई की सुबह! हमें नन्हे-मुन्ने विद्यार्थियों के रीडिंग फेस्टिवल में शामिल होना है। पूरी यात्रा में यह एक सुखद अनुभव है। आसावान होटल की दूसरी मंजिल के विशाल सभागार में लगभग तीन सौ (प्राथमिक विद्यालयों के) बच्चों का जमावड़ा है। इन प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं को सम्मान दिया जाना है तथा मौके पर ही पेंटिंग सहित अन्य कलाओं में अपनी सुदक्षता प्रमाणित करनी है। सभागार में बच्चों के साथ हम चारों भारतीयों का परिचय कराया जाता है। मेरी साड़ी देखकर बच्चे आश्चर्यचकित हैं। उनकी चमकीली आँखों में अद्‌भुत जिज्ञासा है। मेरे दौहित्र राजर्षि जैसा दिखनेवाला एक बालक धीरे से आता है। मैं उसे पुष्पगुच्छ देकर अपने पास खींच लेती हूँ। वह आँखें झुकाकर मुसकराता है और धीरे से 'थैंक्यू' कहकर भाग जाता है। मेरी आँखें नम हो जाती हैं। ऋशु, वैष्णवी की झलक इन्हीं बालक-बालिकाओं में दिख जाती है। कितनी रचनात्मक शिक्षा प्रणाली है यहाँ की! प्रत्येक

बच्चे को एक थाई कथा दी गई और कहा गया—पूरी कथा पढ़ उसके चरित्रों, घटनाओं और दृश्यों को अपनी पेंटिंग में उतारें! लाजवाब चित्र बनाए थे नन्हे बालकों ने! अद्‌भुत कल्पनाशील आँखें! छोटी उम्र में रंगों और कूची का इतना सुंदर संयोजन! अनेक बच्चे अपनी कलाकृतियों के पास खड़े हमारे साथ फोटो खिंचवाने के लिए उत्साहित हैं। शिक्षक, शिक्षिकाएँ और कई स्वायत्त संस्थाएँ बच्चों की प्रतिभा को निखारने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। वहाँ की प्राथमिक कक्षा तक अंग्रेजी रटने का संताप बच्चों को नहीं सताता। इंजीनियरिंग, डॉक्टरी आदि तकनीकी पढ़ाई में बेशक अंग्रेजी को माध्यम बनाया जाता है। अपनी राष्ट्रभाषा के प्रति ऐसा ऐकांतिक श्रद्धाभाव देखकर मुझे अनुभव हुआ। स्वभाषा और स्वदेशी ही थाई निवासियों के विकास का मूलमंत्र है। यहाँ की अधिकांश महिलाएँ आत्मनिर्भर हैं। बड़े प्रतिष्ठानों, होटलों, बाजारों, दुकानों में ९० प्रतिशत महिलाएँ काम में जुटी हुई हैं। इन्हें अपना मनपसंद पुरुष चुनने की स्वतंत्रता है और ये धनोपार्जन में पुरुषों से किसी भी स्थिति में कम नहीं हैं।

इंडोचीन बाजार में भ्रमण करते हुए मैंने यही दृश्य देखा। महिलाओं का यह अनूठा वर्चस्व मुझे मातृसत्तात्मक समाज व्यवस्था का स्मरण दिला गया। के ने बताया—उसका पति और वह शहर के दो छोरों पर नौकरी करते हैं। घर में भोजन पकाने की कोई जहमत नहीं। अपने-अपने कार्यालयों से सटे रेस्तराँ में वे नाश्ता-खाना सबकुछ निपटा लेते हैं। रात का भोजन पति-पत्नी मिलकर पकाते हैं। किसी का छोटा बच्चा हो तो उसकी दादी या नानी उसे दिन भर सँभालती है। इंडोचीन बाजार विशाल है। हम सब अपने-अपने घर-परिवार के लिए कुछ चीजें खरीदने के लिए उत्सुक हैं। मैं राँची से ही अमेरिकन डॉलर ले आई थी, जिसे व्हाट में बदलने की प्रक्रिया हम सबने बैंकॉक के बैंक में पूरी की। मैंने 'टिक' का सहारा लिया है। वह मेरे द्वारा खरीदे गए सामानों का मूल्य चुकाती तनिक मोल-भाव करती आगे बढ़ती जा रही है। मैं आश्वस्त हूँ। बच्चों के कपड़े, पेंसिल बॉक्स, रंग-बिरंगी पेंसिलें, हाथ के ब्रेसलेट और ऐसी ही छोटी-छोटी चीजें! बैंकॉक का मोती प्रसिद्ध है। मैं मोतियों का एक हार लेती हूँ। एक अँगूठी और ब्रेसलेट भी।

स्वभाषा और स्वदेशी ही थाई निवासियों के विकास का मूलमंत्र है। यहाँ की अधिकांश महिलाएँ आत्मनिर्भर हैं। बड़े प्रतिष्ठानों, होटलों, बाजारों, दुकानों में ९० प्रतिशत महिलाएँ काम में जुटी हुई हैं। इन्हें अपना मनपसंद पुरुष चुनने की स्वतंत्रता है और ये धनोपार्जन में पुरुषों से किसी भी स्थिति में कम नहीं हैं।

अब हमारा कारवाँ उडोनथानी शहर के सुप्रसिद्ध सिल्क बाजार ना खा सिल्क की ओर बढ़ता है। यहाँ लुभावने सिल्क के थान मिलेंगे, भारतीय सिल्क की तुलना में महँगे। मैं बच्चों के कोट लेती हूँ। नई डिजाइन के सुंदर रंगोंवाले कोट और एक शॉल भी! यहाँ का सफर पूरा कर हम टी जी-७०५ की गृह उड़ान से वापस बैंकॉक लौटते हैं।

शुक्रवार, १२ जुलाई, २०१३। रॉयल ब्लू होटल का वही पुराना कमरा! नदी के प्रवाह पर संतरित होता थाई जीवन! सामने खड़ी आकाशचुंबी इमारतें! आज हमें श्री अयुध्या जाना है। मेरे मन में रघुकुल की पावन राजधानी, सरयू तट पर बसी अयोध्या के दृश्य-बिंब उभरते हैं। क्या थाईलैंड की इस अयुध्या का त्रेता युग की हमारी अयोध्या से कोई सरोकार या कोई सामंजस्य है? फ्रा नाक्रोन श्री अयुध्या को विश्व-परंपरा को सहेजनेवाला अनमोल परिदृश्य कहा जाता है।

हमारे पथ-प्रदर्शक बताते हैं—यह ऐतिहासिक स्थल है। १४४८ में राजा बोरोमा-ट्राइ-लोका-नैट ने वैट फा श्री सानफेट महल बनवाया। नदी के किनारे बनी यह इमारत अत्यंत भव्य थी। पुन: एक-के-बाद एक राजाओं ने अपनी अभिरुचि एवं परिकल्पना के आधार पर नए राजप्रासादों का निर्माण कराया। वे महल किंचित् भग्नावस्था में आज भी अपने राज वैभव का एहसास दिलाते हैं।

यहीं चक्री रियासत राम प्रथम के पिता ने वाट सुवान डरम नामक विहार बनवाया। यह पुराने विहार का पुनर्निमित रूप है। अयुध्या थाईलैंड की पुरानी राजधानी है। जहाँ विशालकाय स्तूपों, मंदिरों और चैत्यों का निर्माण पुरातन काल के राजाओं द्वारा किया गया था। सन् १३२४ में यहाँ बुद्ध की विशालकाय प्रतिमा (पद्मासन में बैठे बुद्ध) स्थापित की गई थी। ऐसा बताया जाता है कि राजा साइ नाम फुंग ने अपनी पत्नी की स्मृति में यह मंदिर बनवाया था। उस रानी की मृत्यु एक नौका में हुई थी।

इस क्षेत्र की उत्तर दिशा में द फैनिएट हाथियों के समुदाय के दृश्य देखे जा सकते हैं। पुरातन काल में जंगली हाथियों को युद्ध कौशल हेतु प्रशिक्षित किया जाता था, ये युद्ध में सामान ढोने तथा योद्धाओं की सवारी के काम आते थे।

हाथियों की प्रतिमाओं से घिरा विशाल घंटे के आकार का चेदि (स्तूप) इस स्थान का विशेष आकर्षण है।

अयुध्या राज जापान के साथ व्यापारिक संपर्क में आया और प्रारंभिक शासन काल में अयुध्या की सैन्य शक्ति को बढ़ाने के लिए बहुत सारे जापानियों को सैनिकों तथा सरकारी अधिकारियों के रूप में बहाल किया गया। इस नगर प्रायद्वीप का दक्षिणी इलाका जापानियों को दिया गया। इन दिनों वहाँ एक प्रदर्शनी भवन है, जो थाई-जापानी संघ की सहभागिता से बनाया गया है।

सन् १५४० के आसपास पुर्तगालियों के साथ अयुध्या का संपर्क सधा था और तत्कालीन राजा ने नदी किनारे उनके आवास हेतु भूखंड उपलब्ध कराया था। इन दिनों ललित कला विभाग ने वहाँ के अवशेषों को सहेजकर प्रदर्शनी भवन बना दिया है। यह अयुध्या हमारी अयोध्या नहीं है। विभिन्न राजाओं के महलों, स्तूपों, भग्न मंदिरों के बिखरे अवशेषों को सहेजने का इनका उपक्रम सचमुच सराहनीय है।

इतिहास के गलियारे से निकलकर अब हम बैंकॉक के अत्याधुनिक पट्टाया समुद्र तट की ओर जा रहे हैं। वातानुकूलित वैन द्रुत गति से भागी जा रही है। हम पुरातन से अर्वाचीन की ओर जा रहे हैं। लीजिए, आ गया समुद्र तट! देशी-विदेशी सैलानी मौजमस्ती के मूड में। समुद्र स्नान करती रेती पर लेटी उन्मुक्त काया। कुछ लोगों ने कुरसियाँ, छतरियाँ लगाकर पैसे कमाने की होड़ पाल रखी है।

देश-विदेश के सैलानी इस तट के किनारे बने सस्ते-महँगे होटलों में ठहरते हैं। यहाँ भारतीय भोजन बनाने वाले भारतीय रेस्तराँ की भरमार है। हम रात का भोजन 'इंडियन चिमनी' रेस्तराँ में लेते हैं। विशुद्ध भारतीय व्यंजन, तंदूरी रोटी, कढ़ी, आलू भाजी, पापड़, दही, अचार। प्रबंधक आर.सी. शर्मा स्वयं रुचि लेकर खिलाते हैं। टिक, के, सन सभी स्वाद ले-लेकर भोजन ग्रहण करते हैं। यहाँ जैनी थाली भी है—बिना प्याज, लहसुन वाली।

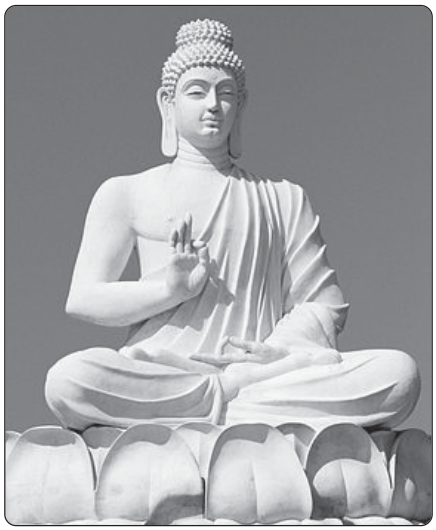

गौतम बुद्ध की प्रस्तर प्रतिमा

यह रेस्तराँ पट्टाया तट से बेहतर लगा। घर के से आस्वाद वाले भोजन को पाकर सबकी तृप्ति हुई। सब थके हुए थे। सबको अपने होटल का शयन-कक्ष स्मरण आने लगा था।

शनिवार, १३ जुलाई, २०१३। आज हम सबों को लेखक आवास संग्रहालय जाना था, जहाँ लेखक संघ के साथ हमारी बैठक तय थी। एक छोटा-सा खूबसूरत भवन! अनेक लेखक-लेखिकाएँ वहाँ एकत्र हैं। यह भवन एक नि:संतान लेखक दंपती का है, जिन्होंने मृत्युपूर्व वसीयत बनाकर यह भवन यहाँ के लेखक संघ को दान में दिया था।

यहाँ लेखक संघ के अध्यक्ष और पेन नामक अंतरराष्ट्रीय थाईलैंड केंद्र के अध्यक्ष से मुलाकात हुई। इस संस्था को राजकीय संरक्षण प्राप्त है। विचारों के परस्पर आदान-प्रदान के बाद अस्सी वर्षीया लेखिका ने अपनी पुस्तकें भेंट में दीं। यहाँ भी भारतीय विधि से पकाया गया स्वादिष्ट व्यंजन परोसा गया। दिवगंत लेखक के रसोईघर में पके व्यंजन का स्वाद उनकी स्मृतियों से सुवासित था।

वहाँ की भावभीनी यादें लेकर हम सुपा देवकुल लिटरेचर अवार्ड समारोह के लिए रवाना हुए। समारोह स्थल था—नानमी बुक्स हाउस।

रविवार, १४ जुलाई, २०१३ थाईलैंड प्रवास का अंतिम दिन! हमें बैंकॉक कला संस्कृति केंद्र जाना था। यहाँ राइटर्स मैगजीन के लिए हम चारों भारतीय लेखकों को साक्षात्कार लिया जाना था। उपसंपादक और उनकी सहयोगिनी पत्रकार ने पारी-पारी सबसे प्रश्न किए। उनकी जिज्ञासा उनके प्रश्नों की गंभीरता से झलकती थी।

भारतीय स्त्रियों की दशा और मेरे कथा-लेखन के विषय में उन्होंने कई प्रश्न किए। तत्पश्चात् हम लोग एम.बी.के. सेंटर गए। सियाम पैरागॉन और जिम थॉम्पसन हाउस देखने के बाद हम 'बुकमोबाइ रीडर्स कैफे' गए। इस केंद्र पर लेखक वार्त्ता कार्यक्रम थाई-भारतीय साहित्य, कला और संस्कृति के विषय में विचार-विनिमय किया गया। साहित्य अकादमी के सचिव डॉ. राव ने अकादमी के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। भारतीय लेखन के प्रति वहाँ उपस्थित श्रोताओं तथा युवा थाई लेखकों के मन में गहरी उत्कंठा देखकर सुकून मिला। युवा लेखकों प्राब्दा यून बिनलाह सोनकालाकीरी, उथिस हिमामूल तीनों कथाकारों तथा जकारिया अमात्या कवि ने श्रोताओं की ओर से प्रश्न पूछे। तत्पश्चात् श्रोता मंडली ने अच्छे सवाल पूछे। यह एक सुखद शाम थी। नए लेखकों की उत्कंठा और उनकी सजगता को देखकर ताजगी का अनुभव हुआ। रात्रि में हम लोग फिर चले अपनी भारतीय चिमनी की ओर!

बैंकॉक में यह हमारी अंतिम संध्या थी। कर्तव्य में बँधे होने की वजह से नहीं, वास्तविक सहयोग की भावना से टिक, के., सन तथा कला-संस्कृति विभाग, थाईलैंड के अन्य सदस्यों ने जो आतिथ्य सत्कार दिखाया, वह वास्तव में हृदयग्राही था। टिक और के की आँखें नम थीं—हम आप लोगों को मिस करेंगी!

और ऐसा ही हुआ। बैंकॉक हवाई अड्डे पर दूतावास के प्रदीपजी, उनके सहयोगी के और सन आए। टिक किसी कारणवश पीछे रह गईं।

मेरा मन भारी था। दुनिया में मनुष्य मुश्किल से मिलते हैं। हमने अलविदा 'थाईलैंड' कहा और एयर इंडिया-३३५ में जा बैठे। हमारा विमान हमें घर ले जा रहा था। नई धुनी हुई बेशुमार रुई की ढेरी से मेघखंड और उनके ऊपर संतरित होता हमारा विमान!

बुद्ध के उपासक स्याम देश से मज्झिम निकाय (मध्यम मार्ग) का बोध लेकर हम लौट रहे थे। यह बोध हमारे लिए नया नहीं है। वैदिक ऋचाओं में विहित संतुलनवादी जीवन-दृष्टि सम्यक् ज्ञान का मंत्र देती है। न सुख की अति व्याप्ति हो, न ही वेदना कंपित मन हो! न जरा-मरण का सोच हो और न ही संकुचन का एहसास हो। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का वैश्विक राग देनेवाले ऋषिओं की संतान हैं हम! सबके सुख की अखंड परिकल्पना ही हमारा मुख्य भाव है और निर्वैयक्तिकता का सुख ही हमारी पीड़ा-मुक्ति का प्रायोजन है। हमारी लेखनी का लक्ष्य राजवंदना नहीं, देशवंदना है। देश-माटी की सोंधी गंध ही हमारे अस्तित्व की सच्ची पहचान है। इस माटी के राग-रंग में हमारी साँसें बसती हैं! दिनकरजी की पंक्तियाँ उधार लूँ तो इतना ही कह पाऊँगी। पूरे आठ दिनों के बाद भारत के वायुमंडल में साँस लेना, अपने देश की धरती का संस्पर्श पाना, सचमुच—

'शब्द नहीं है, यह गूँगे का
स्वाद, अगोचर सुख है··· '

मोराबादी-८४३००८,
राँची

गुरु दक्षिणा

● शकुंतला शर्मा

मैं और सुकवारा दोनों संगवारी, कोसला की प्राथमिक शाला में पहली से पाँचवीं तक साथ-साथ पढ़ा करती थीं।

मेरी सहेली सुकवारा का घर गाँव के बाहर तालाब के किनारे था। उसके पिता चमड़े के जूते बनाते थे और वही उनके परिवार की आमदनी का जरिया था। मुझे सुकवारा अच्छी लगती थी। कई खेलों में मुझे हराकर वह इनाम जीत लेती थी। जैसे घड़ा-दौड़, कबड्डी और सुई-धागा दौड़ में उसका कोई सानी नहीं था। घड़ा-दौड़ में तो वह 'पामगढ़' जाकर भी इनाम लेकर आती थी। कबड्डी में मुझे हमेशा पकड़ लेती थी, मैं कभी भी उसे न पकड़ सकी। मदरसे में हम दोनों पास-पास ही बैठती थीं, पर हमारे गुरुजी को यह अच्छा नहीं लगता था, इसीलिए हम गुरुजी के सामने दूर-दूर रहती थीं, पर न जाने कैसे गुरुजी हमारी हर बात को बिना बताए जान जाते थे। उसके और मेरे घर का रास्ता भी एक ही था, मेरे घर के बाद उसका घर पड़ता था। मेरे नाना-नानी कभी भी मुझे सुकवारा के साथ खेलने-कूदने के लिए मना नहीं करते थे, पर घर के नौकर-चाकरों को इससे बड़ी तकलीफ होती थी। कारण तो वही जानें, पर हम बिना किसी की परवाह किए साथ-साथ खेलती-कूदती, हँसी-खुशी जी रही थीं।

स्कूल में गुरुजी सुकवारा को बहुत डाँटते थे और बुरा-भला कहते रहते थे। इमला में गलती होने पर कहते थे, 'पढ़ाई तेरे बस की बात नहीं है, सुकवारा! तुम चुपचाप अपने घर में बैठो और गोबर सैंतो।' उसकी आँखें छलछला आती थीं और वह मेरी ओर देखती थी, फिर मैं गुरुजी से पूछती थी, 'गुरुजी! सुकवारा क्यों नहीं पढ़ सकती? जब मैं पढ़ सकती हूँ तो सुकवारा क्यों नहीं पढ़ सकती?' गुरुजी मुझे गुर्राकर देखते थे। किसी गुरुजी ने मुझ पर कभी हाथ नहीं उठाया, क्योंकि सभी गुरुजी मुझे 'भॉची' मानते थे।

हम पाँचवीं कक्षा में पहुँच गई थीं। परीक्षा निकट आ गई थी, बड़े गुरुजी अपने घर के सामने बुलाकर पाँचवीं के सभी बच्चों को पढ़ाते थे। किसी ने सुकवारा से कह दिया, 'सुकवारा, तुम मत आना।' सुकवारा को बहुत खराब लगा, उसने मुझे बताया। मैं सुकवारा का हाथ पकड़कर बड़े गुरुजी होरीलाल के पास गई और उन्हें पूरी बात बताई। बड़े गुरुजी ने मुझसे कहा, 'अच्छा किया जो तुमने मुझे बता दिया।' उन्होंने सुकवारा के सिर पर हाथ रखकर कहा, 'बेटी, तुम कभी किसी से मत डरना, मैं तुम्हारे साथ हूँ। तुम भी सब बच्चों के साथ मेरे घर पर पढ़ने के लिए आया करो।'

सुपरिचित लेखिका। काव्य की छह पुस्तकें छत्तीसगढ़ी में तथा छह हिंदी में तथा अनुवाद की सात पुस्तकें प्रकाशित। छोटे-बड़े डेढ़ दर्जन पुरस्कार-सम्मान प्राप्त। संप्रति 'सरयू-द्विज' का संपादन।

उस दिन के बाद सुकवारा के भी पंख निकल आए। हम दोनों बहुत मस्ती करतीं, साथ-साथ पढ़ाई में भी ध्यान देने लगीं। पाँचवीं में हम दोनों के अच्छे नंबर आए। सुकवारा ने ग्यारहवीं पास की और वह शिक्षिका बन गई। इसके साथ-साथ वह प्राइवेट परीक्षा देती रही। बी.ए., एम.ए. और बी. एड. कर ली। धीरे-धीरे प्रमोशन भी होता रहा। अभी वह हिंदी की व्याख्याता है।

एक दिन एक बुजुर्ग उसके पास आए, उनकी आँखों में आँसू थे, सुकवारा ने उनसे पूछा, ''आप रो क्यों रहे हैं?'' तो उन्होंने बताया, ''मेरा बेटा किशोर दसवीं में दो साल से फेल हो रहा है। पढ़ाई में ध्यान ही नहीं देता, आप ही बताइए, मैं क्या करूँ?'' वह बुजुर्ग फूट-फूटकर रोने लगे। सुकवारा ने कहा, ''किशोर तो मेरी ही क्लास में पढ़ता है, मैं उसकी क्लास टीचर हूँ, रुकिए, मैं उसे बुलवाती हूँ।'' किशोर आया तो सुकवारा ने उसे समझाया, ''देखो किशोर, तुम्हारे लिए तुम्हारे पापा कितने परेशान हैं, तुम मन लगाकर पढ़ाई करो और ६० प्रतिशत से ज्यादा नंबर लाकर दिखाओ।''

''यस मैम,'' कहकर किशोर ने सुकवारा के पाँव छुए और क्लास में चला गया।

सुकवारा को लगा कि यह चेहरा कुछ परिचित लग रहा है और जब उसने किशोर के पिता का नाम देखा तो पता चला कि यह तो वही गुरुजी हैं, जो हमेशा उसका अपमान किया करते थे। फिर क्या था, सुकवारा ने उस किशोर का ऐसा ध्यान रखा, जैसे कोई अपने सगे भाई का ध्यान रखता है। देखते-ही-देखते एक साल बीत गया और इस बार भी किशोर ने सुकवारा को निराश नहीं किया, वह केवल अपने स्कूल में ही नहीं, अपितु पूरे पामगढ़ में अव्वल आया है।

२८८/७, मैत्रीकुंज, भिलाई-४९०००६ (छ.ग.)
दूरभाष : ०९३०२८३००३०

बाल-कहानी

न टूटे मन

● मनोहर चमोली 'मनु'

रक्षिता दौड़ते हुए कुसुम से लिपट गई, ''ममा! आज स्कूल-प्रोग्राम फाइनल हो गए हैं। डांस में मेरा भी सलेक्शन हुआ है। पता है, हमारी क्लास का एक ही प्रोग्राम सलेक्ट हुआ है। होली के अवसर पर ब्राइट स्टार स्कूल फेस्टीवल होगा। बड़ा मजा आएगा।'' कुसुम ने हँसते हुए कहा, ''बहुत बढ़िया। लेकिन अभी तो डेढ़ महीना है।'' रक्षिता तो अपनी बात कहने को आतुर थी, ''ममा, कुल दस प्रोग्राम हैं। आज से प्रैक्टिस भी शुरू हो गई है। अब सिक्स्थ पीरियड के बाद डेली प्रैक्टिस होगी। पता है, डबल होमवर्क मिलेगा। मस्ती के साथ पढ़ाई भी होगी।'' यह कहकर रक्षिता ने कपड़े चेंज किए और मुँह-हाथ धोकर होमवर्क करने में जुट गई।

एक महीना बीत गया। फिर एक दिन स्कूल से आते ही रक्षिता ने कहा, ''ममा, फाइनल प्रैक्टिस हो गई है। हम चार परियाँ बनेंगी और चार राजकुमार बनेंगे। क्लास टीचर ने कहा है कि परियाँ सफेद ड्रेस, सफेद जूते और सफेद चुनरी लाएँगी। सफेद मुकुट, वो भी चमचमाता हुआ होना चाहिए और सफेद छड़ी।'' कुसुम ने सुना तो उसका दिल बैठ गया। दस घरों में काम करने के बदले में जो रुपया मिलता है, उससे महीने भर का गुजारा ढंग से नहीं हो पाता। पड़ोसी एंथोनी डिया चर्च जाने से पहले अपना बेबी कुसुम के हाथों सौंप देते हैं। चार घंटे की देखभाल के बदले में हर माह वह दो हजार रुपए की मदद करते हैं। इस तरह मकान किराया, स्कूल फीस, रोटी-कपड़ा, दूध-राशन का खर्च बड़ी मुश्किल से निकलता है। दीवाली से पहले ही वह उनसे दो महीने का एडवांस लेकर काम चला रही थी। अब यह एक और खर्च आ गया। इस सोच को झटकते हुए कुसुम ने कहा, ''चिंता की बात नहीं। इस संडे बाजार चलेंगे। सारा सामान ले आएँगे।''

दूसरे ही दिन कुसुम ने एंथोनी डिया को सबकुछ विस्तार से बताया तो वे बोले, ''कोई बात नहीं, बच्ची का मन नहीं टूटना चाहिए।'' रविवार आया तो कुसुम रक्षिता को बाजार ले गई। स्कूल से मिली सूची के अनुसार सबकुछ खरीद लिया गया। रक्षिता ने घर आकर परी की ड्रैस पहन ली। कुसुम ने रक्षिता का माथा चूम लिया, ''वाह! बिल्कुल परी लग रही हो।'' रक्षिता आँखें मटकाती हुई बोली, ''ममा, मैंने डांस में खूब मेहनत की है। आप मेरा डांस देखने जरूर आना।'' 'उस दिन एंथोनी डिया के बेबी की देखभाल कौन करेगा। दस घरों की मालकिनें एक दिन का रुपया काट लेंगी।' कुसुम यही सोच रही थी। लंबी साँस लेते हुए बोली, ''कौन माँ होगी, जो अपनी बेटी का प्रोग्राम देखने नहीं आएगी। मैं जरूर आऊँगी।''

जाने-माने बाल-साहित्यकार। 'हास्य-व्यंग्य कथाएँ', 'उत्तराखंड की लोक-कथाएँ', 'किलकारी', 'यमलोक की यात्रा', 'ऐसे बदला खानपुर', 'बदल गया मालवा', 'बिगड़ी बात बनी', 'खुशी', 'अब बजाओ ताली', 'बोडा की बातें', 'सवाल दस रुपए का', 'ऐसे बदली नाक की नथ' और 'पूछेरी'। बाल कहानियाँ मराठी में अनूदित।

होली से एक दिन पहले स्कूल में प्रोग्राम तय हो गया। रक्षिता सुबह पाँच बजे ही उठ गई। एक बार आईने के सामने रिहर्सल करने के बाद वह स्कूल के लिए तैयार हो गई। जाते हुए कहने लगी, ''ममा, ठीक दस बजे आ जाना। लेट मत होना।'' कुसुम हँसते हुए बोली, ''मैं पाँच मिनट पहले ही आ जाऊँगी।''

कुसुम ने एक दिन पहले ही आज की छुट्टी के बारे में हर घर में बता दिया था। एंथोनी डिया ने हँसते हुए कहा था, ''कोई बात नहीं, चर्च की सिस्टर बेबी को देख लेगी। स्कूल के प्रिंसिपल मेरे दोस्त हैं। शायद मैं भी आऊँ। जरूर जाओ। बच्ची का मन नहीं टूटना चाहिए।'' कुसुम ठीक समय पर स्कूल पहुँच गई। प्रोग्राम शुरू हो गया। प्रिंसिपल अपने स्कूल की उपलब्धियाँ गिना रहे थे। फिर कल्चरल प्रोग्राम शुरू हो गए। एक से बढ़कर एक प्रस्तुति मंच पर आती रहीं। तालियों की गड़गड़ाहट से दर्शक हर प्रोग्राम का स्वागत कर रहे थे। घोषणा हुई, ''अब आखिरी प्रस्तुति परियों के देश से।'' कुसुम की आँखें तो मंच पर अपनी रक्षिता को खोज रही थीं। अचानक उसे ध्यान आया कि रक्षिता तो कह रही थी कि चार परियाँ बनेंगी। लेकिन मंच पर तो तीन परियाँ ही हैं। राजकुमार भी तीन ही हैं। कुसुम किनारे से होते हुए मंच के पीछेवाले हिस्से में जा पहुँची। मंच के बाईं ओर ड्रेसिंग रूम बना हुआ था। कुसुम को देखते ही रक्षिता सिसकते हुए कहने लगी, ''ममा, एक राजकुमार कम हो गया तो एक परी भी कम कर दी गई। मेरी ड्रैस पहनकर दीया डांस कर रही है।''

कुसुम की आँखें भर आईं। गला रुँध गया। वह कुछ न कह सकी। डांस टीचर कहने लगी, ''डांस फोर पेयर्स में था। एक स्टूडेंट नहीं

आया। सारा कॉम्बीनेशन खराब हो गया। मंच पर अब तीन पेयर्स ही डांस कर रहे हैं। दीया की ड्रैस वीक थी तो हमने रक्षिता की ड्रैस उसे पहना दी।''

'आपने जो किया। बहुत अच्छा किया। बच्चों की आँखों के आँसुओं का बहना तो आप लोगों के लिए आम बात है।' कुसुम यह कहना चाहती थी, लेकिन कह नहीं पाई।

घर आकर कुसुम ने रक्षिता से कहा, ''रोते नहीं, क्या पता बिलाल की तबीयत खराब हो गई हो। हो सकता है, उसकी ममा बीमार हो।'' रक्षिता रोते-रोते चुप हो गई। कहने लगी, ''कल संडे है, बिलाल के घर चलेंगे।'' दोपहर दो बजे के बाद वे दोनों बिलाल के घर का पता पूछते-पूछते धोबीघाट जा पहुँचीं। दीया रास्ते में मिल गई। रक्षिता को ड्रैस लौटाते हुए बोली, ''रक्षिता, अच्छा हुआ तुम यहीं मिल गई। यह लो, तुम्हारी परी वाली ड्रैस। इस ड्रैस में मेरी फोटो बहुत अच्छी आई हैं। कल स्कूल में दिखाऊँगी।'' रक्षिता ने चुपचाप ड्रैस ले ली। ड्रैस लेकर वह बिलाल के घर की ओर बढ़ गई। वे दोनों धोबीघाट की झुग्गियों में आ गईं। बिलाल मिल गया। बिलाल की माँ शबीना बीमार थी। होटल की सफेद चादरें धोने-सुखाने का काम पड़ोसियों ने किया था। अब उन चादरों को बिलाल समेट रहा था। बिलाल उन्हें अपने घर में ले आया। कोने में राजकुमार वाली ड्रैस पॉलीथिन में पैक रखी हुई थी।

शबीना बोली, ''मैं बड़ी जतन से यह ड्रैस लाई थी। मैं ही जानती हूँ कि इसका बंदोबस्त मैंने कैसे किया था। दुख इस बात का है कि बिलाल इसे पहन नहीं पाया।'' बिलाल की दीदी रुखसार चाय बनाकर लाई तो कुसुम और शबीना बातें करने लगीं। कुछ देर बाद अचानक कुसुम को ध्यान आया, ''ये रक्षिता कहाँ चली गई?'' कुसुम बाहर की ओर दौड़ी। बाहर देखा तो कुछ ही दूरी पर झुग्गी-झोंपड़ी के बच्चे बिलाल और रक्षिता को घेरकर खड़े हैं। कुसुम के पीछे-पीछे शबीना भी चली आई। इससे पहले कि कुसुम कुछ कहती, बिलाल और रक्षिता का डांस शुरू हो चुका था। दर्शकों का घेरा तोड़कर कुसुम ने देखा कि वे दोनों राजकुमार और परी की ड्रैस पहने हुए थिरक रहे हैं। रुखसार के हाथ पर मोबाइल में वही गाना बज रहा था, जो स्कूल प्रोग्राम में उसने सुना था। बड़े-बूढ़े भी बच्चों की भीड़ देखकर जुटने लगे। डांस जैसे ही खत्म हुआ, तालियों के बीच कोई चिल्लाया, 'एक बार और···' रुखसार ने गाना रिपीट किया तो बिलाल और रक्षिता फिर से थिरकने लगे।

तभी धूल उड़ाती हुई एक स्कूल बस वहाँ आकर रुकी। वह बस ब्राइट स्टार स्कूल की थी। बस से एंथोलीन डिया और स्कूल प्रिंसिपल बाहर आए। वह भी सारा नजारा देखकर खुश हुए। गाना खत्म होने से पहले ही झुग्गी-झोंपड़ी के दर्शकों ने हवा में नोट उछालने शुरू कर दिए। एंथोलीन डिया ने कुसुम से कहा, ''ब्राइट स्टार स्कूल का प्रोग्राम देखने मैं भी गया था। मंच पर रक्षिता को न देखकर मुझे भी हैरानी हुई। समापन के बाद मैंने प्रिंसिपल से बात की। देखो, माफी माँगने के साथ-साथ यह भी कहने आए हैं कि कल ही प्रातःकालीन सभा में सभी कल्चरल प्रोग्राम दोबारा होंगे। पड़ोसी स्कूलों के बच्चे और स्टाफ भी प्रोग्राम देखने आएँगे। स्कूल फंड से सभी को इनाम भी मिलेगा।'' प्रिंसिपल ने कहा, ''मैंने पूरी रिकॉर्डिंग कल ही देख ली थी, लेकिन बिलाल और रक्षिता का यह प्रोग्राम तो उसमें भी नहीं है। मैं चाहूँगा कि इन दोनों का यह स्पेशल प्रोग्राम सब देखें। एक बात और, इस बस्ती के बच्चे पेरेंट्स सहित प्रोग्राम देखने आएँगे तो मुझे अच्छा लगेगा। हम पूरी कोशिश करेंगे कि अब किसी भी बच्चे का मन न टूटे।'' सब हाँ में सिर हिला रहे थे। कोई मना क्यों करता! कुसुम और शबीना की आँखें भर आईं। गला रुँध गया। वे क्या कहतीं। वहीं सारी बातों से बेखबर बिलाल और रक्षिता तो दर्शकों के बीच में झूम रहे थे।

पोस्ट बॉक्स-२३,
पौड़ी गढ़वाल-२४६००१ (उत्तराखंड)
दूरभाष : ०९४१२१५८६८८

प्रीत बावरी

कविता

● राधा जनार्दन

मंजुल मधुर सुरभित विभावरी,
आज हुई है प्रीत बावरी।

कोमल किसलय सी वह विलसित
शतदल नयन ओस-कण सिंचित,
पल-पल बाट तकत श्याम की
आज हुई है प्रीत बावरी।

चंदन-चर्चित गात तरंगित
बृज गोरी का हिय स्पंदित,
कल ही तो घनश्याम दिखे थे
बाँसुरिया थी साथ साँवरी।

बृज की गलियन-गलियन भटकत
आम्रकुंज और मधुवन निरखत,
इत-उत ढूँढ़त श्याम-छाँव री
आज हुई है प्रीत बावरी।

कदम तले या यमुना के तट
नंद-यशोदा-आँगन, पनघट,
कहाँ छिपे हो तुम गिरिधारी
बावरिया की प्रीत बावरी।

मंजुल मधुर सुरभित विभावरी,
आज हुई है प्रीत बावरी।

काँच मंदिर के पास, टिकुरिया मोहल्ला
पन्ना-४८८००१ (म.प्र.)
दूरभाष : ०७७३२-२५२४४१

पाठकों की प्रतिक्रियाएँ

'साहित्य अमृत' का दिसंबर अंक 'युवा हिंदी कहानी विशेषांक' हिंदी भाषा शैली में कहानी लेखन की उच्च गुणवत्ता के मापदंडों को पूरा करता अपने हिमालयी वचनबद्धता से यह दरशाने में पूर्ण सफल हुआ है कि लेखकों का भविष्य हिंदी भाषा के प्रति अत्यंत समर्पित हृदय से प्रयासरत है। जिस देश के युवा अपनी अभिव्यक्ति और सृजन अपनी भाषा में अपने संवेदनात्मक हृदय की कोमलता से लेखन करते हों, वहाँ भाषा के प्रति आशा के सुनहरे उजाले एक दिन अवश्य जगमग ज्योति बिखेरेंगे। यह विश्वास प्रत्येक भारतीय के लिए हर्ष का विषय है। 'साहित्य अमृत' का यह प्रयास प्रशंसनीय है। कहानी के स्तर को अपनी कुशल चयन प्रणाली से बखूबी न्याय दिलानेवाले प्रबुद्ध निर्णायक साहित्यकार भी बधाई के पात्र है। ***—रजनी सिंह, डिबाई (उ.प्र.)***

'साहित्य अमृत' का मार्च अंक पढ़ा। मुखपृष्ठ का चित्र बहुत ही मनमोहक लगा। होली की याद दिला गया। संपादकीय खूब पसंद आया। 'काका के कहकहे' खूब पसंद आए। 'प्रतिकार' एवं 'आंटी की अंटी' कहानी बहुत ही दिलचस्प लगीं। आलेख 'उसने कहा था', 'दान', 'होली है असत्य पर···' हिंदी का बाल साहित्य बहुत ही शिक्षाप्रद और ज्ञानवर्धक लगा। इस बार के अंक की कविताएँ भी खूब पसंद आईं। 'बस्तर की गोंड जनजाति···' पर जानकारी भी खूब पसंद आई। साहित्यिक गतिविधियाँ हमें जानकारीपूर्ण लगती है। पत्रिका घर में बड़ों के साथ बच्चे भी बड़े चाव से पढ़ते हैं। भाई त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी जल्दी ठीक हो जाएँ, इसकी प्रार्थना परमेश्वर से करता हूँ। ***—ब्रदीप्रसाद वर्मा 'अनजान', गोरखपुर***

'साहित्य अमृत' का मार्च अंक मनहर पठनीय सामग्री से आपूर है। इसके स्थायी स्तंभ बहुत प्रभावी हैं, इनकी सतरंगी छटा आह्लादित करती है। जहाँ संपादकीय लेख महीने भर की महत्त्वपूर्ण घटनाओं की बेबाक रपट देता है, ललित निबंध शब्द सौंदर्य, विचार-प्रवाह भाव विस्तार में सफल हैं, वहीं गीत, कविता बहती यमुना के तट पर कदंब के पेड़ प्रतीत होती हैं। इस बार के होली अंक में होली का वर्णन अप्रतिम है। संजय पंकज की रचना 'तन-मन-नयन फगुनाए' में नयनों का फगुआना बिहारी की याद दिलाता है, लोक कवि ईसुरी मुखर हो उठते हैं। ब्रजेश कुमार मिश्र के गीत कोमल कांत पदावली की स्लेट पर कलम से लिखी इबादत हैं। आपकी दृष्टि लोक-मंगलकारी है। इस अंक में आपने काका हाथरसी को याद कर अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित किए हैं। यदि के.पी. सक्सेना को भी याद किया जाता तो शायद और अच्छा होता। फागुनी गीतों, लेखों के रचनाकार खुद तो फगुनाए हुए हैं ही, पाठक भी फगुना गए हैं। आप खूब फाग का आनंद लें, होली की हार्दिक शुभकामनाएँ। ***—ब्रजेश श्रीवास्तव, ग्वालियर***

'साहित्य अमृत' का मार्च अंक यथासमय मिला। इस बार सभी विधाओं की रचनाएँ अभूतपूर्व लगीं, विशेषकर दो रचनाएँ 'उसने कहा था—एक अंतरंग भावयात्रा' और 'बेर वाली लड़की'। लगभग सौ वर्ष पूर्व श्रीचंद्रधर शर्मा गुलेरी द्वारा रचित कहानी ने कथा-साहित्य में एक नई दिशा का स्थापन किया था, सत्येंद्र चतुर्वेदी द्वारा इस कहानी की समीक्षा पढ़कर मूल रचना से भी अधिक रस मिला। इस अंक की कविताएँ भी प्रभावशाली लगीं। इंदिरा मोहन की रचना 'हर्ष का संवाद मोहक' में समुद्र तट की सुंदरता ने भाव-विह्वल कर दिया। श्रीधर द्विवेदी की रचना 'कभी न भूलने वाली शहादत' देशभक्ति को उत्प्रेरित करनेवाली एक अनुपम कविता लगी। इतने त्याग और बलिदान से मिली आजादी को न मालूम क्यों और कैसी विचारधारा वाले लोग महत्त्व देने को तैयार नहीं और देश को टुकड़ों में बाँटने को तत्पर हैं, अचंभित हूँ। ***—बी.डी. बजाज, दिल्ली***

'साहित्य अमृत' का फरवरी अंक मिला। गोपाल नारायण आवटे की कथा 'उम्र की सच्चाई' यथार्थ धरातल पर लिखी सहज-सरल भाषा के भावों की अभिव्यक्ति है। 'निहारती पलकें' कथा ठीक है, वहीं 'हम सब जानते हैं', मनोहर पुरी की कथा करारा प्रहार है। आज की पीढ़ी पर 'मर्यादा की लकीरें' आनंद आदीश की कथा मर्यादा में ही लिखी सशक्त रचना है। 'तुम याद आओगे लीलाराम' बहुत लंबी कथा हो गई, जो कथ्य से मध्य में भटक गई थी, लेकिन मानवीय संवेदनाओं से परिपूर्ण है। संस्मरण में डॉ. वृंदावनलाल वर्मा के जीवन के प्रेरक प्रसंग बहुत ही अच्छे लगे। 'लुटेरे' (द सोशली फ्रेंडली) में अच्छी जानकारी थी। कविताओं में 'खत्म होते जा रहे जंगल' अमिता की कविता हल्की एवं पत्रिका के अनुकूल नहीं थी। बालकवि बैरागी की 'धरती माता सबकी माता' सुंदर एवं सीख प्रदान करनेवाली कविता है। सिद्धेश्वर के चित्रांकन सुंदर हैं।

—सुनील, होशंगाबाद (म.प्र.)

'साहित्य अमृत' के फरवरी अंक को प्राप्त कर धन्य हुआ। अन्य अंकों की तरह सभी साहित्यिक सामग्री मनोरंजक, ज्ञानवर्धक व प्रेरणादायी रही। संपादकीय समसामयिक गतिविधियों पर चेतना देनेवाला रहा। सभी रचनाकारों को साधुवाद। ***—रामकिशन पंवार, बीबीपुर (राज.)***

'साहित्य अमृत' के बसंत अंक में प्रो. हेरंब चतुर्वेदी का लेख 'स्वतंत्रता पूर्व इलाहाबाद में पत्रकारिता का विकास' उनके गहन अध्ययन का द्योतक है, जिसमें पत्रकारिता के क्रोनोलॉजिकल विकास तथा उसके विभिन्न आयामों जैसे दैनिक, पाक्षिक तथा मासिक पत्रिकाएँ तथा बाल और महिलाएँ लेखक की समग्र परिधि में रही हैं। किस पत्रिका का स्वाधीनता और सामाजिक चेतना के विकास में कितने वर्षों तक योगदान रहा, यह उनके दीर्घकालिक अध्ययन का सुफल है, जो शोध छात्रों के लिए मार्गदर्शक होगा। मुझ जैसे टेक्निकल ग्रेजुएट के लिए उनका यह भगीरथ प्रयास है।

—मो. शमीम, गोरखपुर

'साहित्य अमृत' के मार्च अंक में 'विमर्श या आतंकवाद को समर्थन' शीर्षक से संपादकीय को प्रमुखता देने के कारणों पर विशेष चर्चा किया जाना, ९ फरवरी को संसद् पर हमला करनेवाले अफगल गुरु को फाँसी देनेवाले न्यायालय के आदेशों के विरुद्ध वामपंथी विद्यार्थियों द्वारा नारेबाजी के विरुद्ध अपनी प्रतिबद्धता दिखाना, साहित्य के प्रति, अपनी रचनाधर्मिता के प्रति जागरूक रहने की भावना स्पष्ट होती है। इसके लिए संपादक की लेखनी की सराहना स्वाभाविक है। इसके अतिरिक्त 'काका के कहकहे', 'उसने कहा था—एक अंतरंग भावयात्रा' के साथ 'बनन में, बागन में बगर्‌यो बसंत है'। काशी की पांडित्य परंपरा के प्रतीक विद्यानिवास मिश्र जैसे पठनीय विषयों पर चर्चा की जा सकती है। संपूर्ण संपादक मंडल को कोटि-कोटि बधाई। ***—कृष्ण मित्र, गाजियाबाद (उ.प्र.)***

वर्ग पहेली (१२७)

अगस्त २००५ अंक से हमने **'वर्ग पहेली'** प्रारंभ की, जिसे सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् एवं ज्ञान–विज्ञान की अनेक पुस्तकों के लेखक **श्री विजय खंडूरी** तैयार कर रहे हैं। हमें विश्वास है, यह पाठकों को रुचिकर लगेगी; इससे उनका हिंदी ज्ञान बढ़ेगा और पूर्व की भाँति वे इसमें भाग लेकर अपना ज्ञान परखेंगे तथा पुरस्कार में रोचक पुस्तकें प्राप्त कर सकेंगे। भाग लेनेवालों को निम्नलिखित नियमों का पालन करना होगा—

१. प्रविष्टियाँ छपे कूपन पर ही स्वीकार्य होंगी।
२. कितनी भी प्रविष्टियाँ भेजी जा सकती हैं।
३. प्रविष्टियाँ ३० अप्रैल, २०१६ तक हमें मिल जानी चाहिए।
४. पूर्णतया शुद्ध उत्तरवाले पत्रों में से ड्रॉ द्वारा दो विजेताओं का चयन करके उन्हें दो सौ रुपए मूल्य की पुस्तकें पुरस्कारस्वरूप भेजी जाएँगी।
५. पुरस्कार विजेताओं के नाम–पते जून २०१६ अंक में छापे जाएँगे।
६. निर्णायक मंडल का निर्णय अंतिम तथा सर्वमान्य होगा।
७. अपने उत्तर **'वर्ग पहेली', साहित्य अमृत, ४/१९, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२** के पते पर भेजें।

वर्ग पहेली (१२५) का शुद्ध हल

१ अ	नु	२ रो	३ ध	■	४ ध	५ रो	ह	६ र
न	■	७ ग	ड़	ग	ड़ा	ना	■	सि
८ हो	९ ली	■	क	■	बं	■	१० अं	क
११ नी	ला	प	न	■	१२ धी	र	ज	ता
■	क	■	■	■	■	■	लि	■
१३ ज	ल	त्रा	१४ स	■	१५ ती	ब्र	ग	१६ ति
१७ मा	ह	■	क्यु	■	र्था	■	१८ त	प
न	■	१९ जे	ल	का	ट	२० ना	■	हि
२१ त	द	बी	र	■	२२ न	च	नि	या

★ पुरस्कार विजेता ★

१. **श्री सुनील बहल**
२१८५, सेक्टर-४८-सी
आशियाना एन्क्लेव
चंडीगढ़-१६००४७

२. **श्री शिवानंद सिंह 'सहयोगी'**
'शिवाभा', ए-२३३, गंगानगर
मेरठ-२५०००१ (उ.प्र.)

पुरस्कार विजेताओं को हार्दिक बधाई !

वर्ग-पहेली १२५ के अन्य शुद्ध उत्तरदाता हैं—सर्वश्री योगेंद्र शर्मा 'व्योम' (मुरादाबाद), संतोष शर्मा (गाजियाबाद), ब्रह्मानंद 'खिच्ची' (महेंद्रगढ़), सागर ढुल (कैथल), निखिल नाहड़िया (नारनौल), रामकिशन पँवार (हनुमानगढ़), शिव शरण दुबे (कटनी), जया सहल, सुभाष शर्मा, मुकेश जैन 'पारस' (दिल्ली), मोहन उपाध्याय (अजमेर), शाहिदा परवीन (दरभंगा), नीरजा शर्मा (अहमदाबाद), रामप्रकाश राय (गोरखपुर)।

बाएँ से दाएँ—

१. जिगरी, आत्मीय (४)
४. एक काला, गाढ़ा पदार्थ, जिसे सड़कों पर बिछाया जाता है (४)
७. वह रूपक, जिसमें गद्य की अपेक्षा पद्य अधिक रहता है (५)
९. आकाश में उड़नेवाला यान (३)
११. वह स्नेह, जो माता का पुत्र के साथ होता है (३)
१३. कुत्ता (२)
१४. क्षण (३)
१६. विवाद के बाद सब पक्षों में निपटारा (४)
१७. हृदय को चुभनेवाला (४)
१९. अफगानिस्तान का प्रसिद्ध शहर (३)
२१. चिड़ियों की चहचहाट (२)
२२. पीतल की बड़ी बटलोई (३)
२४. झंडा (३)
२५. खुशी मनाना (५)
२८. असाध्यता (४)
२९. पानी जमा करने का छोटा हौज (४)

ऊपर से नीचे—

१. विवेकशून्य धरना (५)
२. विलासप्रिय, रँगा हुआ (३)
३. चाल (२)
४. गरमी (२)
५. रुपया-पैसा (३)
६. छोटापन (३)
८. हाथ-मुँह पोंछने का चौकोर टुकड़ा (३)
१०. रूठने और मनाने की क्रिया, मन्नत (५)
१२. सुंदरता (५)
१४. ध्वज (३)
१५. कीचड़ में उगनेवाला एक फूल (३)
१८. दिल का स्वच्छ (२, १, २)
२०. ऊँचा (३)
२२. तमगा (३)
२३. किसी के ऊपर बहुत सी वस्तुएँ रखना (३)
२४. शरण (३)
२६. जो पुरानी न हो (२)
२७. अंगों की वह गति, जो हृदय की उमंग के कारण हो (२)

वर्ग पहेली (१२६) का हल अगले अंक में।

वर्ग पहेली (१२७)

१		२	३	■	४	५		६
	■	७		८			■	
९	१०		■		■	११	१२	
१३		■	१४		१५	■		■
१६				■	१७			१८
■		■	१९	२०		■	२१	
२२		२३	■		■	२४		
	■	२५	२६		२७		■	
२८				■	२९			

प्रेषक का नाम : .....

पता : .....

.....

.....

२९वें मूर्तिदेवी पुरस्कार से सम्मानित

भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रवर्तित वर्ष २०१५ का २९वाँ मूर्तिदेवी पुरस्कार तेलुगु के प्रसिद्ध लेखक प्रो. कोलाकालुरी इनोक को उनकी कृति 'अनंत जीवनम्' को देने की घोषणा की गई है। सम्मानस्वरूप उन्हें सरस्वती प्रतिमा, प्रशस्ति-पत्र तथा चार लाख रुपए की राशि से सम्मानित किया जाएगा। □

श्रेष्ठ कृतित्व सम्मान से सम्मानित

१२ फरवरी को भोपाल के माधवराव सप्रे स्मृति समाचार-पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान में सर्वश्री सुरेश गुप्ता को 'संतोष कुमार शुक्ल लोक संप्रेषण पुरस्कार'; आलोक मिश्र को 'माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार'; हिमांशु द्विवेदी को 'लाल बलदेव सिंह पुरस्कार'; अनिल गुप्ता को 'जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी पुरस्कार'; राजीव सोनी को 'रामेश्वर गुरु पुरस्कार'; शरद द्विवेदी को 'झाबरमल्ल शर्मा पुरस्कार'; राहुल नरोन्हा एवं गौरव चंद्रा को 'के.पी. नारायणन पुरस्कार'; धमेंद्र पैगवार को 'राजेंद्र नूतन पुरस्कार'; आरिफ मिर्जा को 'यशवंत अरगरे पुरस्कार'; स्नेहा खरे को 'आरोग्य सुधा पुरस्कार'; अशोक गौतम को 'जगत पाठक पुरस्कार'; शान बहादुर को 'होमई व्यारावाला पुरस्कार'; श्याम कटारे, महेश महदेल, राकेश अचल, जयराम शुक्ल, मलय श्रीवास्तव एवं पुष्पराज पुरोहित को 'हुक्मचंद नारद पुरस्कार' से मध्य प्रदेश गृहमंत्री श्री बाबूलाल गौर एवं श्री सत्यनारायण शर्मा द्वारा प्रशस्ति-पत्र, शॉल और कलम भेंट कर सम्मानित किया गया। □

संस्कृत कवि गोष्ठी संपन्न

१४ फरवरी को वाराणसी में बौद्ध दर्शन विभाग, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में योग-साधना केंद्र में पं. विद्यानिवास मिश्र की पुण्यतिथि पर प्रो. यदुनाथ प्रसाद दूबे की अध्यक्षता में संस्कृत कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. दयानिधि मिश्र ने मुख्य अतिथि प्रो. शिवजी उपाध्याय का अंगवस्त्र से सारस्वत सम्मान किया। इस अवसर पर सर्वश्री कौशलेंद्र पांडेय, राजेंद्र पांडेय, पवन कुमार शास्त्री, विवेक पांडेय, गायत्री प्रसाद पांडेय, विजय कुमार पांडेय, धर्मदत्त चतुर्वेदी, उमाकांत चतुर्वेदी, कमला पांडेय, केशव पोखरेल, आशीष मणि त्रिपाठी, विनीता सिंह, मणिकांत पाठक ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं। संचालन आचार्य पवन कुमार शास्त्री ने किया तथा धन्यवाद डॉ. दयानिधि मिश्र ने ज्ञापित किया। □

'सुरता' कार्यक्रम आयोजित

२८ फरवरी को खरसिया के गोदावरी भवन में डॉ. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी सृजन पीठ तथा छत्तीसगढ़ साहित्य अकादमी, रायुपर के संयुक्त तत्त्वावधान में स्व. पं. लोचन प्रसाद पांडेय द्वारा जगत् को दिए योगदान को स्मरण करते हुए आचार्य श्री रमेंद्रनाथ मिश्र की अध्यक्षता में 'सुरता' कार्यक्रम का आयोजन किया। मुख्य अतिथि प्रो. के.के. तिवारी एवं विशिष्ट अतिथि सर्वश्री नंदलाल त्रिपाठी 'प्यासा' व प्रदीप उपाध्याय 'अंबर' थे। इस अवसर पर श्री मनमोहन सिंह ठाकुर एवं डॉ. हेमलता सिंह गबेल ने अपने विचार व्यक्त किए। इस सत्र का संचालन डॉ. रामविजय शर्मा ने किया। द्वितीय सत्र में कवि सम्मेलन आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्राचार्य प्यारेलाल कँवर थे तथा विशिष्ट अतिथि सर्वश्री विनोदचंद्र सिंह राठौर, गुरुचरण सिंह छावड़ा, रामनाथ साहू जांज व रामविजय शर्मा थे। सर्वश्री संजय बहिदार, संतोष पैकरा, निर्भयराम गुप्ता, आनंद कुमार त्रिवेदी, गुलाब सिंह कँवर, मनमोहन सिंह ठाकुर, लखनलाल राठौर, जे.आर. मनहरे, डिग्रीलाल जगत, किरण शर्मा, हरप्रसाद ढेढ़े, प्रियंका गुप्ता, हितेश कुमार साहू, सनत मित्र, के.के. तिवारी, नंदलाल त्रिपाठी, हेमलता गबेल, प्रदीप उपाध्याय ने काव्य-पाठ किया। संचालन श्री गुलाब सिंह कँवर 'गुलाब' एवं श्री डिग्रीलाल जगत ने किया तथा आभार श्री अमित कुमार साहू ने व्यक्त किया। □

बाबू गुलाबराय की १२८ वीं जयंती मनाई गई

११ फरवरी को आगरा में बाबू गुलाबराय स्मृति संस्थान के तत्त्वावधान में नागरी प्रचारिणी सभा के मानस भवन में बाबू गुलाबराय की १२८वीं जयंती का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता प्रो. हरिमोहन शर्मा ने की। इस अवसर पर डॉ. कमल किशोर गोयनका को 'बाबू गुलाबराय सम्मान'; श्री रमेश पंडित व डॉ. उमेश चंद्र शर्मा को 'बाबू धर्मपाल विद्यार्थी सम्मान'; डॉ. मनीष मोहन गोरे को 'प्यारेलाल विज्ञान लेखन सम्मान'; श्री संकल्प शंकर को सी.बी.एस.ई. परीक्षा में हरियाणा में प्रथम स्थान प्राप्त करने हेतु सम्मान; सुश्री दीपशिखा दीक्षित को 'पं. महेशदत्त शर्मा संस्कृत पुरस्कार' तथा श्री विनोद बिहारी तिवारी को समाज सेवा के लिए 'स्व. रामशंकर गुप्ता सम्मान' से सम्मानित किया गया। संचालन डॉ. श्रीभगवान शर्मा ने किया तथा धन्यवाद श्री सुबोध शंकर ने ज्ञापित किया। □

काव्य गोष्ठी संपन्न

२८ फरवरी को पंचकुला में साहित्यिक संस्था साहित्य संगम द्वारा काव्य गोष्ठी आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता कवि श्री टेकचंद अत्री ने की। इस अवसर पर सर्वश्री रेणुका नैयर, योगेश्वर, नवीन 'नीर', फूलचंद 'मानव', ललित सिंगला, विष्णु सक्सेना, लक्ष्मी रूपल, सुरिंदर कपिला, एहसान बावा, योगेश्वर कौर, संतोख सिंह 'अंबालवी', जीत कवल, गुरदीप सिंह भोगल, जगजीत सिंह नूर, डी.आर. सिकरी, माखन सक्सेना ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की। संचालन श्री गुरमान सैनी ने किया तथा धन्यवाद श्री सुरिंदर सिंगला ने ज्ञापित किया। □

राष्ट्रीय साहित्य संगोष्ठी संपन्न

विगत दिनों हैदराबाद में हिंदुस्तानी प्रचार सभा द्वारा कार्यालय के सभागृह में श्री सतीश शाह की अध्यक्षता में 'साहित्य का पठन-पाठन' विषय पर सर्वश्री राहुल देव, दामोदर खड़से, सुरेश ऋतुपर्ण, ऋता शुक्ल, कुमुद शर्मा, कुंदन व्यास, वी.एन. शर्मा, अनिल प्रभा कुमार, सुधा अरोड़ा, सादिका नवाब 'सहर', फिरोज पैच, सत्यदेव त्रिपाठी एवं अन्य पत्रकारों व साहित्यकारों ने अपने प्रपत्र द्वारा विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर श्री सतीश शाह ने 'सभा' द्वारा प्रकाशित तथा श्री संजीव निगम द्वारा अनूदित शरलॉक होम्स की पुस्तक के हिंदी अनुवाद 'नाचती हुई आकृतियों का रहस्य' का लोकार्पण भी किया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री राहुल देव ने की। द्वितीय सत्र में डॉ. ऋता शुक्ल की अध्यक्षता में सर्वश्री कुंदन व्यास, वी.एन. शर्मा, कुमुद शर्मा, सुरेश ऋतुपर्ण, सतीश पांडेय, श्यामसुंदर पांडेय, वाघेला व रमेश यादव ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन डॉ. रीता कुमार ने किया। तीनों सत्रों का आभार क्रमशः राकेश

त्रिपाठी, संजीव निगम एवं प्रज्ञा गान्ला ने व्यक्त किया। ☐

कथा शिविर आयोजित

१७-२१ फरवरी को बिहार के सिवान जिले में 'परिवर्तन' नामक संस्था के तत्त्वावधान में डॉ. रंजन कुमार सिंह और डॉ. नीलम प्रभा द्वारा श्री संजीव सिंह के कुशल सहयोग में 'पात्र से मिलिए' कथा शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें सर्वश्री उषाकिरण खान, विद्या विंदु सिंह, वंदना राग, नीहारिका, मो. आरिफ, नवनीत नीरव, अभिषेक पांडेय, श्रद्धा थवाइत और राजेंद्र उपाध्याय ने रचना पाठ किया। कथा पाठन के अतिरिक्त परिवर्तन के प्रशिक्षुओं द्वारा श्री आशुतोष मिश्रा और श्री पंकज महतो के निर्देशन में श्री भिखारी ठाकुर द्वारा लिखित नाटक 'बेटी बेचवा' का मंचन हृदयस्पर्शी रहा। ☐

प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न

११ फरवरी को असम विश्वविद्यालय सिलचर के शिक्षा संकाय में पं. मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा योजना के अंतर्गत 'शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशासन के मुद्दे व चुनौतियाँ' विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता प्रो. आर.आर. धमाला ने की। मुख्य अतिथि प्रो. जे.वी.जी. तिलक एवं विशिष्ट अतिथि प्रो. के.पी. पांडेय थे। इस अवसर सर्वश्री इंदिरा शुक्ला, एन.वी. विश्वास व रेमिथ जार्ज कैरी ने अपने विचार व्यक्त किए। आभार डॉ. रमईया बाला कृष्णन ने व्यक्त किया। ☐

प्रविष्टियाँ आमंत्रित

बाल साहित्य संस्थान, अल्मोड़ा द्वारा बाल साहित्य सम्मान-२०१६ के लिए अखिल भारतीय स्तर पर प्रविष्टियाँ आमंत्रित हैं। सम्मान हेतु चयनित १० साहित्यकारों को जून २०१६ में उत्तराखंड में आयोजित समारोह में होने पर २१००/- नकद, प्रशस्ति पत्र, शॉल तथा स्मृति चिह्न भेंट किया जाएगा। लोरी, शिशु गीत, बाल गीत, बाल कविता, बाल कहानी, बाल उपन्यास, बाल जीवनी, यात्रा-वृत्तांत, संस्मरण, बाल एकांकी आदि विधाओं पर सम्मान दिए जाएँगे। कुमाऊँनी एवं गढ़वाली बाल कविता एवं बाल कहानी पर भी पुरस्कार दिए जाने का प्रावधान है। इच्छुक साहित्यकार २०१२ से २०१५ तक प्रकाशित बालसाहित्य की पुस्तकों की तीन-तीन प्रतियाँ, पासपोर्ट साइज फोटो एवं अपना जीवन-वृत्त सचिव, बाल साहित्य संस्थान, दरबारीनगर, अल्मोड़ा, उत्तराखंड-२६३६०१ के पते पर १५ अप्रैल, २०१६ तक भेज सकते हैं। दूरभाष : ०९४१२१६२९५० ☐

प्रविष्टियाँ आमंत्रित

साहित्य सदन, भोपाल द्वारा राष्ट्रीय ख्याति के उन्नीसवें अंबिका प्रसाद दिव्य स्मृति पुरस्कारों हेतु साहित्य की अनेक विधाओं में पुस्तकें आमंत्रित हैं। उपन्यास, कहानी, कविता, व्यंग्य, निबंध एवं बाल साहित्य विधाओं पर प्रत्येक के लिए २१००/- रुपए की राशि के पुरस्कार प्रदान किए जाएँगे। हिंदी में प्रकाशित पुस्तकों का प्रकाशन काल १ जनवरी, २०१४ से लेकर ३१ दिसंबर, २०१५ के मध्य होना चाहिए। राष्ट्रीय ख्याति के इन प्रतिष्ठा पूर्ण चर्चित दिव्य पुरस्कारों हेतु प्राप्त पुस्तकों पर गुणवत्ता के क्रम में दूसरे स्थान पर आनेवाली पुस्तकों को दिव्य प्रशस्ति-पत्रों से सम्मानित किया जाएगा। दिव्य पुरस्कारों हेतु पुस्तकों की दो प्रतियाँ, लेखक के दो छाया चित्र एवं प्रत्येक विधा की प्रविष्टि के साथ दो सौ रुपए प्रवेश शुल्क श्रीमती राजो किंजल्क, साहित्य सदन, १४५-ए, साईंनाथ नगर, सी-सेक्टर, कोलार रोड, भोपाल-४६२०४२ पर ३० दिसंबर, २०१६ पर भेज सकते हैं। दूरभाष : ०९९७७७८२७७७ ☐

१८वें अंबिका प्रसाद दिव्य साहित्य पुरस्कार घोषित

२९ फरवरी को भोपाल में कोलार रोड स्थित साहित्य सदन में अंबिका दत्त प्रसाद दिव्य साहित्य पुरस्कारों की घोषणा की गई। सर्वश्री सरन घई को उपन्यास 'राजद्रोह'; स्वप्निल शर्मा को काव्य-संग्रह 'पटरी पर दौड़ता आदमी'; घनश्याम भारती को निबंध-संग्रह 'शोध और समीक्षा के विविध आयाम'; विजय कुमार को कहानी-संग्रह 'एक थी माया'; नरेंद्रनाथ लाहा को व्यंग्य संग्रह 'व्यंग्य कथाएँ'; प्रबोध कुमार गोविल को उपन्यास 'जल तू जलाल तू'; रवींद्र श्रीवास्तव को उपन्यास 'रुक्काबाई का कोठा'; ओशो नीलांचल को गजल-संग्रह 'वक्त का दरिया'; भावना को गजल-संग्रह 'शब्दों की कीमत'; कारूलाल जमड़ा को पुस्तक 'वह बजाती ढोल'; रोहित कौशिक को निबंध-संग्रह '२१वीं सदी : धर्म, शिक्षा, समाज और गांधी'; सगीर अशरफ को निबंध-संग्रह 'सुगंध मेरे देश की'; आशीष दाशोत्तर को कहानी-संग्रह 'चे पा और टिटिया'; अपर्णा चतुर्वेदी 'प्रीता' को कहानी-संग्रह 'रेखाओं के पार', महेश चंद्र द्विवेदी को व्यंग्य-संग्रह 'वीरप्पन की मूँछें'; विमल कुमार शर्मा को व्यंग्य-संग्रह 'पत्नी पुराण'; वेद प्रकाश कँवर को बाल उपन्यास 'कृपाल जंगल का राजा' तथा करुणाश्री को बाल कहानी-संग्रह 'अपने दीप स्वयं बनो' के लिए साहित्यिक पत्रिकाओं के संपादन हेतु 'सोच विचार' पत्रिका के संपादक श्री नरेंद्र नाथ मिश्र एवं श्री मुकेश वर्मा को 'समावर्तन' पत्रिका के लिए दिव्य-प्रशस्ति पत्र प्रदान किए जाएँगे। ☐

व्याख्यानमाला आयोजित

विगत दिनों भोपाल में मध्य प्रदेश प्रचार समिति द्वारा हिंदी भवन में 'राजनीतिक विमर्श में भारतीय दृष्टि का सन्निवेश' विषय पर व्याख्यामाला आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता श्री रघुनंदन शर्मा ने की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री मनोज श्रीवास्तव एवं सर्वश्री रामेश्वर मिश्र पंकज, अशोक मोडक, बनवारी ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन श्री कैलाशचंद्र पंत ने किया। इस अवसर पर म.प्र. शासन के मंत्री श्री बाबूलाल गौर ने स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, पत्रकार एवं कवि विचित्र कुमार सिन्हा की स्मृति में स्थापित साहित्य सेवी सम्मानस्वरूप श्री युगेश शर्मा को 'सारस्वत सम्मान' से सम्मानित किया। साथ ही वर्ष २०१५ के सम्मान एवं पुरस्कार का अलंकरण समारोह भी संपन्न हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि श्री मनोज श्रीवास्तव द्वारा स्व. वीरेंद्र तिवारी की स्मृति में स्थापित गांधी विचार से प्रेरित श्रेष्ठ लेखन के लिए प्रो. श्रीभगवान सिंह को एवं श्री संजय मेहता को वर्ष २०१६ के डॉ. सुरेशचंद्र शुक्ल 'चंद्र' नाट्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सम्मानस्वरूप दोनों विद्वानों को २१ हजार रुपए की राशि, शॉल, श्रीफल और प्रशस्ति-पट्टिका भेंट की गई। संचालन श्रीमती मैथिली साठे ने किया तथा आभार श्रीमती रक्षा सिसोदिया ने व्यक्त किया। ☐

राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न

१७-१८ फरवरी को ओडिशा के ज्योतिविहार संबलपुर विश्वविद्यालय में द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन डॉ. हरिश्चंद्र शर्मा की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें श्री शिवनाथ पांडेय ने अपने विचार व्यक्त किए। विभिन्न सत्रों की अध्यक्षता सर्वश्री हेमेंद्र चांदालिया, रवींद्र मिश्र, प्रमिला मजेजी, डॉ.

पाल ने की। प्रतिवेदन डॉ. संजय सिंह ने प्रस्तुत किया एवं संचालन डॉ. दाशरथी बेहरा ने किया। समापन श्री कीर्ति प्रसाद गुप्त द्वारा किया गया। ☐

अखिल भारतीय राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न

२१ फरवरी को वारासिवनी में साहित्य ललित कला एवं रंगमंच के लिए समर्पित अखिल भारतीय संस्था संस्कार भारती के तत्त्वावधान में अजमेर में 'साहित्य सृजन से राष्ट्र अर्चन' विषय पर अखिल भारतीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ. तिलकराज ने की। मुख्य अतिथि श्री रविंद्र भारती एवं विशिष्ट अतिथि श्री राजबहादुर सिंह थे। इस अवसर पर श्री सुरेश बबलानी, महेंद्र सिंह एवं अन्य पदाधिकारियों ने अपने विचार व्यक्त किए। ☐

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न

२-३ फरवरी को साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली और केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के संयुक्त तत्त्वावधान में 'पूर्वोत्तर तथा उत्तरी लेखक सम्मेलन' का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक प्रो. नंद किशोर पांडेय ने की। इस अवसर पर प्रसिद्ध समीक्षक प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित ने अपने विचार व्यक्त किए। प्रथम सत्र में श्री नछत्तर की अध्यक्षता में सर्वश्री अपु भारद्वाज, उषा यादव, हावबम प्रियकुमार, अरविंद आशिया द्वारा कहानी पाठ किया गया। साथ ही सर्वश्री अशोक द्विवेदी, अनुभव तुलसी, राजेंद्र मिलन एवं शशि तिवारी ने भी विचार प्रकट किए। संचालन श्री देवेंद्र कुमार देवेश ने किया। द्वितीय सत्र में श्री सोम ठाकुर की अध्यक्षता में सर्वश्री जगदीश पीयूष, सुनील शर्मा, शशि तिवारी, आदर्श मिलन, स्वर्णजित सवि एवं बलराम शुक्ल द्वारा काव्य पाठ किया गया। प्रो. नंद किशोर पांडेय की अध्यक्षता में आयोजित दूसरी संगोष्ठी के मुख्य अतिथि डॉ. धर्मदेव तिवारी थे; सर्वश्री कन्हैयालाल भट्ट, लुईस हाउनार, मिलरानी जमातिया, वीना देववर्मा एवं त्रिभुवन नाथ शुक्ल ने अपने विचार व्यक्त किए।

एक सत्र में प्रो. त्रिभुवन नाथ शुक्ल के विशिष्ट आतिथ्य में सर्वश्री पी.के. शर्मा, मिलनरानी जमातिया व वीना देववर्मा ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन डॉ. राजवीर सिंह ने किया तथा धन्यवाद प्रो. परमलाल अहिरवार ने ज्ञापित किया। दूसरे दिन डॉ. एच. बिहारी सिंह की अध्यक्षता में 'पूर्वोत्तर की जनजातीय भाषाओं और हिंदी' पर विचार-विमर्श किया गया, जिसमें सर्वश्री देवेंद्र चौबे, महाश्वेता देवी, साफे अहमद किदवई ने अपने विचार व्यक्त किए। इस सत्र के समापन पर प्रो. चंद्रभान ख्याल की अध्यक्षता में सर्वश्री अनुभव तुलसी, अशोक द्विवेदी, अरुण देव, नजीर अहमद नजीर, गुंजनश्री व कमल रंगा ने काव्य पाठ किया। एक समानांतर संगोष्ठी प्रो. चंदा बैन की अध्यक्षता में आयोजित की गई, जिसमें कन्हैयालाल भट्ट, धुन्बुई जोलियांग, राजवली पाठक, राजवीर सिंह, रामलाल वर्मा, किशोर राय, परमलाल अहिरवार ने अपने विचार व्यक्त किया। संचालन एवं आभार डॉ. राजवीर सिंह ने किया। संयोजक डॉ. परमलाल अहिरवार थे। ☐

अमरावती सृजन पुरस्कार एवं सम्मान समारोह संपन्न

२८ फरवरी को बर्द्धवान रोड स्थित ऋषि भवन में सिलीगुड़ी से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका 'आपका तिस्ता-हिमालय' द्वारा अमरावती सृजन पुरस्कार एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें सर्वश्री राजेंद्र प्रसाद सिंह, देवेंद्रनाथ शुक्ल, शैलेंद्र चौहान ने अपने विचार व्यक्त किए। श्री शैलेंद्र चौहान को सर्वश्री अभिजित मजूमदार, भीखी प्रसाद 'वीरेंद्र' एवं बुद्धिनाथ मिश्र द्वारा सम्मानित किया गया। समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए श्री रतिराम शर्मा एवं श्री रामकुमार गोयल को श्री निधुभूषण दास द्वारा सम्मानित किया गया। डॉ. ओमप्रकाश पांडेय ने मानपत्र एवं श्री अशोक भट्टाचार्य ने उन्हें स्मृति चिह्न भेंट किया। अगले चरण में डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह द्वारा रचित मुंतजिर की आत्मकथा 'छाया दी' का एवं सुश्री रंजना श्रीवास्तव द्वारा 'आपका तिस्ता-हिमालय' के ७१वें अंक का विमोचन किया गया। इस अवसर पर सर्वश्री रामाश्रय सिंह, बुद्धिनाथ मिश्र, सुनील कुमार द्विवेदी, पूनम सिंह, अजय साव, सी.बी. कार्की, निधुभूषण दास, रामाश्रय सिंह एवं महावीर चाचान ने विचार व्यक्त किए। समापन श्री भीखी प्रसाद द्वारा किया गया। ☐

अंतरराष्ट्रीय रोमा सम्मेलन आयोजित

विगत दिनों भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद् द्वारा दिल्ली में अंतरराष्ट्रीय रोमा सम्मेलन व सांस्कृतिक उत्सव संपन्न हुआ। उद्घाटन केंद्रीय विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने किया। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के अध्यक्ष डॉ. लोकेश चंद्र तथा सर्बिया के अध्यक्ष, पूर्व मंत्री श्री योवन दमयानोविच ने अपने विचार व्यक्त किए। श्री योवन दमयानोविच द्वारा रोमा संस्कृति पर भारत के पहले डी.लिट्. डॉ. श्याम सिंह 'शशि' एवं अन्य २५ रोमा विद्वानों को सम्मानित किया। ☐

श्री अष्टभुजा शुक्ल सम्मानित

विगत दिनों नई दिल्ली में आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि केंद्रीय रेल मंत्री श्री सुरेश प्रभु ने श्री अष्टभुजा शुक्ल को 'श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफको साहित्य सम्मान' से सम्मानित किया। सम्मानस्वरूप उन्हें ११ लाख रुपए की राशि, प्रशस्ति-पत्र एवं शॉल भेंट की गई। इस अवसर पर सर्वश्री उदय शंकर, गिरिराज किशोर एवं के.एस. राजेंद्रन ने अपने विचार व्यक्त किए। ☐

व्यंग्यश्री सम्मान समारोह संपन्न

१३ फरवरी को दिल्ली के हिंदी भवन सभागार में पं. गोपालप्रसाद व्यास की जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में सर्वश्री विश्वनाथ त्रिपाठी, शेरजंग गर्ग, ज्ञान चतुर्वेदी, आलोक पुराणिक, गोविंद व्यास, रामनिवास लखोटिया, इंदिरा मोहन एवं हरीशंकर बर्मन द्वारा वरिष्ठ व्यंग्यकार श्री सुभाष चंदर को 'व्यंग्यश्री सम्मान' से सम्मानित किया गया। सम्मानस्वरूप उन्हें रजत श्रीफल, प्रशस्ति-पत्र, शॉल, पुष्पहार, वाग्देवी की प्रतिमा और एक लाख ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह रुपए की राशि से सम्मानित किया गया। ☐

पाटोत्सव ब्रजभाषा समारोह संपन्न

१-२ मार्च को नाथद्वारा में सुप्रसिद्ध शैक्षणिक एवं साहित्यिक संस्था द्वारा साहित्य मंडल अपने प्रेक्षागार में 'पाटोत्सव ब्रजभाषा समारोह' एवं 'राष्ट्रीय बाल साहित्य सम्मान समारोह' आयोजित किया गया। प्रथम दिवस के प्रथम सत्र में वाचनालय, पत्र-पत्रिकाएँ एवं संस्था प्रकाशन प्रदर्शनी लगाई गई। द्वितीय सत्र में कार्यक्रम के उद्घाटन के बाद तृतीय सत्र में सर्वश्री साधना शाह, दुर्गा शारदा चक्लम, हरकीरत हीर (गुवाहाटी), सुकीर्ति भटनागर, सलमा 'जमाल', ब्रह्मानंद, बाबूराम, भगवतीप्रसाद द्विवेदी,

ओमप्रकाश पांडेय 'निर्भय', भुवनेश्वर तिवारी, कमलेश चौधरी एवं गत वर्ष के शेष साहित्यकार को 'हिंदी भाषा भूषण' मानद उपाधि से; चतुर्थ सत्र में सर्वश्री चंद्रप्रकाश पोद्दार, अरविंद शर्मा, नरेंद्र परिहार, अली अब्बास, महेंद्र सिंह सिकरवार, जगदीशप्रसाद शर्मा, जितेंद्र चौहान, संजय जैन एवं गणेशलाल कुमावत को 'संपादक शिरोमणि' की मानद उपाधि से; पंचम सत्र में सर्वश्री लक्ष्मीनारायण तिवारी, रामसनेहीलाल 'यायावर', सुषमा शर्मा, कृष्णचंद्र गोस्वामी, दाऊदयाल गुप्ता एवं बाबूलाल गोस्वामी ने अपने आलेख पढ़े। षष्ठम सत्र में सर्वश्री विनोद दीक्षित, चंद्रप्रकाश शर्मा, ओंकारसिंह जायस, कुँवरपाल उपाध्याय 'भँवर', लक्ष्मीनारायण तिवारी, हेमेंद्र 'भारतीय', भगवतसिंह जादौन 'मयंक', लक्ष्मणसिंह चौधरी, नानकचंद्र शर्मा 'नवीन', जगरामसिंह सैनी, प्रवेंद्र पंडित एवं कमलेश 'कमल' को 'ब्रजभाषा विभूषण' की मानद उपाधि से; सप्तम सत्र में सर्वश्री राजेंद्रकृष्ण एवं माधुरी शर्मा को 'संगीत महामहोपाध्याय' एवं 'संगीत शिरोमणि' उपाधि से अभिनंदित किया गया। अष्टम सत्र में डॉ. महाश्वेता चतुर्वेदी एवं श्री नाथूलाल महावर 'मधुरम' को 'श्री गणेशवल्लभ राठी स्मृति सम्मान-२०१६' से सम्मानित किया गया। नवम सत्र में श्री राजीव कुमार सिंह को 'श्री उदितनारायण बरनवाल स्मृति सम्मान' एवं डॉ. बाबूलाल गोस्वामी को 'श्री रामशरण पीतलिया स्मृति सम्मान' से सम्मानित किया गया। द्वादश सत्र में ब्रजभाषा कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। दूसरे दिन पहले ही सत्र में 'राजकुमार जैन राजन फाउंडेशन' के तत्त्वावधान में ग्यारहवें 'बाल साहित्य सम्मान' के सत्र की अध्यक्षता श्री दाऊदयाल गुप्त ने की। मुख्य अतिथि श्री एस.बी. शर्मा एवं विशिष्ट अतिथि श्री ओम प्रकाश आमेरिया थे। श्री भगवतीलाल हीगड़ की अध्यक्षता एवं श्री अनिल गहलोत के मुख्य आतिथ्य एवं श्री गोविंद शर्मा के विशिष्ट आतिथ्य में बाल पुरस्कार वितरित किए गए। सम्मानस्वरूप सभी विद्वानों को एक हजार एक सौ रुपए की राशि भेंट की गई। तृतीय सत्र में पत्र-वाचन के बाद पंद्रह हजार रुपए की राशि का 'राष्ट्रकवि पं. सोहनलाल द्विवेदी बाल साहित्य सम्मान' श्रीमती पवित्रा अग्रवाल को; सर्वश्री पवन पहाड़िया को 'चंद्रसिंह बीरकाली राजस्थानी बाल साहित्य सम्मान'; कृष्णकुमार अष्ठाना को 'डॉ. राष्ट्रबंधु स्मृति वरिष्ठ बाल साहित्य सम्मान' एवं मोहम्मद अरशद खान को 'डॉ. श्री प्रसाद स्मृति युवा साहित्य सम्मान' से सम्मानित किया गया। दोपहर के बाद द्वितीय सत्र में 'समस्या पूर्ति' कार्यक्रम में सर्वश्री गोपीनाथ पारीक 'गोपेश', फतेहलाल गुर्जर 'अनोखा', दुर्गाशंकर यादव, गिरीश विद्रोही, नंदकिशोर गौरवा, प्रमोद सनाढ्य, जितेंद्र सनाढ्य एवं अशोक कुमार शर्मा 'अज्ञ' ने विचार व्यक्त किए। तृतीय सत्र में विभिन्न विद्यालयों के सर्वोच्च अंक प्राप्त करने पर प्रतिभा सम्मान 'विद्यार्थी रत्न' से सम्मानित किए गए। चतुर्थ सत्र में श्रीनाथद्वारा रत्न के 'पुरजन सम्मान' से सर्वश्री कन्हैयालाल व्यास, रामचंद्र शर्मा, बाबूलाल शर्मा, लक्ष्मीनारायण राजगुरु, ब्रजबिहारी पालीवाल, कन्हैयालाल सोनी, रमेशचंद्र नामधर एवं नाहरसिंह सिसोदिया को सम्मानित किया गया। पंचम सत्र का समापन डॉ. नगेंद्रकुमार मेहता द्वारा श्री हरिकांत पालीवाल को 'श्रीमती शशिकला मेहता स्मृति सम्मान' से सम्मानित कर संपन्न हुआ। □

काव्य गोष्ठी संपन्न

१२ मार्च को फतेहाबाद में कला साहित्य मंच की ओर से जाट धर्मशाला में श्री विनोद कुमार कड़वासरा की अध्यक्षता में काव्य गोष्ठी आयोजित की गई, जिसमें सर्वश्री ओमप्रकाश कादयान, सुदामा शास्त्री, सुरेश पंचारिया एवं प्रवीन कंबोज ने रचना पाठ किया। □

प्रविष्टियाँ आमंत्रित

श्री मदन मोहन ब्रज लोक समिति ने ब्रज साहित्य/ब्रज लोक कला के क्षेत्र में डॉ. हर्ष नंदिनी भाटिया सम्मान और हिंदी भाषा के क्षेत्र में डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया सम्मान वर्ष २०१६ के लिए देने का निर्णय किया है। विद्वान मनीषी अपनी गत २-३ वर्षों में प्रकाशित कृतियों की दो प्रतियाँ अपने संपूर्ण परिचय सहित पंजीकृत डाक से ३० अप्रैल, २०१६ तक श्री मदन मोहन ब्रज लोक समिति, १२, रत्नेशपुरम, मैरिस रोड, अलीगढ़-२०२००१ (उ.प्र.) पते पर भेज सकते हैं। □

'साहित्योत्सव-२०१६' संपन्न

१५-२० फरवरी को नई दिल्ली के फिक्की सभागार में छह दिवसीय 'साहित्योत्सव-२०१६' कार्यक्रम आयोजित किया गया। समारोह के तीसरे दिन 'हम अपने आपको फिर से देखें, आँखों का चश्मा हटाकर' विषय पर प्रसिद्ध गांधीवादी विचारक श्री चंद्रशेखर धर्माधिकारी ने व्याख्यान दिया। इस अवसर पर पुरस्कृत लेखकों के साथ 'लेखक सम्मिलन' और २४ भारतीय भाषाओं के युवा लेखकों के साथ 'युवा साहिती' कार्यक्रम का उद्घाटन व्याख्यान प्रख्यात भारतीय अंग्रेजी लेखिका सुश्री सुकृता पॉल कुमार ने दिया। चौथे दिन श्री विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की अध्यक्षता में 'गांधी, अंबेडकर, नेहरू : निरंतरता तथा अलगाव' विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। उद्घाटन सुश्री कपिला वात्स्यायन ने किया। विशिष्ट अतिथियों श्री कृष्ण कुमार एवं श्री मनोज दास ने अपने विचार व्यक्त किए। इस दिन एक अन्य कार्यक्रम 'आमने-सामने' में ७ पुरस्कृत लेखकों, जिनमें सर्वश्री अरुण खोपकर से कुमार केलकर, के.आर. मीरा से मीना टी. पिल्लै, कुल सैकिया से स्तुति गोस्वामी, के.वि. तिरुमलेश से विवेक शनबाग, साइरस मिस्त्री से अर्शिया सत्तार, वोल्गा से जे.एल. रेड्डी और रामदरश मिश्र से सुरेश ऋतुपर्ण ने बातचीत की। उद्घाटन श्री लक्ष्मीनंदन बोरा ने किया। पाँचवें दिन भारत की अलिखित भाषाओं पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन भाषाविद् सुश्री प्रसन्न पटनायक ने किया। श्री महेंद्र कुमार मिश्र ने अपने विचार व्यक्त किए। छठे दिन बच्चों के लिए 'आओ कहानी बुनें' तथा 'अनुवाद चेतना और भारत में भारतीय साहित्यिक परंपराएँ' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। विशिष्ट अतिथि प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी व श्री अवधेश कुमार सिंह ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का उद्घाटन प्रख्यात लेखक श्री प्रयाग शुक्ल ने किया। इसके बाद साहित्य अकादेमी द्वारा बच्चों के लिए प्रकाशित चार पुस्तकों का विमोचन किया गया। सृजनात्मक लेखन की कार्यशाला प्रख्यात हिंदी लेखक श्री राहुल सैनी द्वारा संचालित की गई तथा पेंटिंग और कार्टून कार्यशाला सर्वश्री एस.वी. रामाराव, अतनु रॉय एवं सुधीरनाथ द्वारा संचालित की गई। दो आयु वर्गों में 'स्वच्छ भारत और बढ़ता प्रदूषण' विषय पर हिंदी एवं अंग्रेजी में कविता लेखन प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। अंत में पुरस्कार वितरण समारोह संपन्न हुआ। □

श्री बालकवि बैरागी को 'वाणी सम्मान'

४ मार्च को नीमच में वाणी फाउंडेशन मेरठ द्वारा पूर्व राज्यसभा सदस्य

व साहित्यकार श्री बालकवि बैरागी को 'वाणी सम्मान' से सम्मानित करने की घोषणा की गई है। यह सम्मान उन्हें १९ जुलाई को कवि श्री हरिओम पंवार की अध्यक्षता में आयोजित स्व. विशंभर सहाय प्रेमी काव्य संध्या एवं सम्मान समारोह में दिया जाएगा। इस सम्मान के अंतर्गत एक लाख रुपए की राशि व स्मृति चिह्न से सम्मानित किया जाता है। ☐

'प्रेम, विवाह और खिटपिट' कृति लोकार्पित

२३ फरवरी को नई दिल्ली के हिंदी भवन में दिल्ली हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा आयोजित समारोह में श्रीमती पूनम जुनेजा के कहानी संग्रह 'प्रेम, विवाह और खिटपिट' का लोकार्पण श्री हर्षदीप मल्होत्रा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। मुख्य अतिथि गृहराज्य मंत्री श्री किरण रिजिजू तथा विशिष्ट अतिथि श्रीमती इंदिरा मोहन व श्री रवि शर्मा थे। इस अवसर पर मुख्य वक्ता श्री हरीश नवल ने अपने विचार व्यक्त किए एवं सर्वश्री कीर्ति काले, गजेंद्र सोलंकी व अनिल अग्रवंशी ने काव्य पाठ किया। ☐

लोकार्पण एवं संगोष्ठी संपन्न

विगत दिनों जनकपुरी (दिल्ली) में डॉ. ओमप्रकाश शर्मा 'प्रकाश' की सद्य:प्रकाशित हाइकू-काव्यकृति 'कण में कायनात' का लोकार्पण कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रो. रामदरश मिश्र एवं सर्वश्री सुंदरलाल कथूरिया, नरेंद्र मोहन, प्रताप सहगल, काशीराम शर्मा, मालती, मनजीत सिंह, पवन माथुर, राम मेहन, सतीश कुमार द्वारा किया गया। इस अवसर पर मंच पर आसीन सभी विद्वानों सहित सर्वश्री शशि सहगल, रमेश मिश्र एवं वीरेंद्र अग्रवाल ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन डॉ. जितेंद्र कालरा ने किया। आभार डॉ. ओम प्रकाश शर्मा ने व्यक्त किया तथा धन्यवाद श्री हरिराम द्विवेदी ने ज्ञापित किया। ☐

श्री मनु शर्मा पर केंद्रित 'सोच विचार' का लोकार्पण

५ मार्च को वाराणसी के श्रीविहारम् में श्री जितेंद्र नाथ मिश्र के संपादन में प्रकाशित पत्रिका 'सोच विचार' के मनीषी-कथाकार श्री मनु शर्मा पर केंद्रित अंक का लोकार्पण भारत सरकार के पर्यटन, संस्कृति एवं नागरिक उड्डयन राज्य मंत्री डॉ. महेश शर्मा के करकमलों से जगद्गुरु रामानंदाचार्य रामनरेशाचार्यजी महाराज के पावन सान्निध्य में संपन्न हुआ। कृष्ण, कर्ण, द्रोण, गांधारी, द्रौपदी आदि पर आत्मकथात्मक उपन्यासों से अपार प्रसिद्धि पाए श्री मनु शर्मा का नागरिक अभिनंदन साहित्यिक संघ, वाराणसी तथा वाराणसी की लगभग चालीस संस्थाओं द्वारा किया गया। ☐

दो कृतियाँ लोकार्पित

विगत दिनों नई दिल्ली में दिल्ली हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा डॉ. गोविंद व्यास की अध्यक्षता में श्रीमती शीला सक्सेना के कविता संग्रह 'प्रेम के रूप हजार' तथा श्री दीपक गोस्वामी के कविता संग्रह 'तुम' का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. बालस्वरूप राही, सर्वश्री शंभूनाथ पांडेय, हरिसिंह पाल, आचार्य रामदत्त मिश्र, महेश चंद्र शर्मा, जय सिंह आर्य, विनय विनम्र, बलजीत कौर 'तन्हा', सतीश सक्सेना, प्रियंका राय, जगदीश भारद्वाज, कृष्णकांत मधुर ने अपना रचना पाठ किया। ☐

'द गर्ल विद् अनशेड टियर्स' कृति लोकार्पित

११ मार्च को मुंबई में सामाजिक, सांस्कृतिक संस्था 'स्वजन' के तत्त्वाधान में गोवा की राज्यपाल तथा वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. मृदुला सिन्हा के मुख्य आतिथ्य में आयोजित सम्मानोत्सव में डॉ. सूर्यबाला की दस कहानियों के अंग्रेजी अनुवाद 'द गर्ल विद् अनशेड टियर्स' का लोकार्पण किया गया, जिसमें श्री करुण श्रीवास्तव ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर मैथिली की रचनाकार सुश्री शेफालिका वर्मा तथा विभिन्न क्षेत्रों की वरिष्ठ विभूतियों को सम्मानित किया गया। आभार श्री आशीष श्रीवास्तव ने व्यक्त किया। ☐

'आखर थोरे' कृति लोकार्पित

विगत दिनों मुंबई विश्वविद्यालय के मराठी भाषा भवन में महिला दिवस के कार्यक्रम में दिवंगत कवयित्री और कथाकार श्रीमती वीरबाला वर्मा के कविता संग्रह 'आखर थोरे' का लोकार्पण डॉ. पुष्पा भारती द्वारा किया गया। सुश्री सोमा घोष ने गीत प्रस्तुत किया। उक्त कविता संग्रह उनकी अंतिम इच्छा की पूर्ति के रूप में एक श्रद्धांजलि थी, जिसका संकलन और संपादन मुंबई विश्वविद्यालय के प्रवक्ता तथा कवि डॉ. हूबनाथ पांडेय ने किया। ☐

प्रविष्टियाँ आमंत्रित

मध्य प्रदेश तुलसी साहित्य अकादमी द्वारा दिए जानेवाले तुलसी सम्मान-२०१६ हेतु प्रतिष्ठित साहित्यकारों से प्रविष्टियाँ आमंत्रित हैं। समग्र लेखन के लिए तुलसी समग्र सम्मान तथा गीत, गजल, नवगीत, कहानी, लघुकथा, कविता, बाल साहित्य, उपन्यास तथा नाटक विधाओं की जनवरी २०११ से ३० मई, २०१६ के मध्य प्रकाशित कृतियों को आधार मानकर पुरस्कार प्रदान किए जाने का निर्णय चयन समिति द्वारा किया गया। साहित्यकार अपना जीवन परिचय, पासपोर्ट साइज दो रंगीन फोटो, प्रकाशित कृतियों की दो प्रतियाँ ३० जून, २०१६ तक मध्य प्रदेश तुलसी साहित्य अकादमी, सुंदरम बँगला, ५०, महाबली नगर, कोलार रोड, भोपाल पर भेज सकते हैं। ☐

साहित्यिक क्षति

कार्टूनिस्ट श्री सुधीर तैलंग नहीं रहे

६ फरवरी को प्रसिद्ध कार्टूनिस्ट श्री सुधीर तैलंग का निधन हो गया। वे कैंसर से पीड़ित थे। उनका जन्म २६ फरवरी, १९६० को राजस्थान के बीकानेर में हुआ था और उनका पहला कार्टून १९७० में दस साल की उम्र में एक अखबार में छपा था। उन्होंने इलस्ट्रेटिड वीकली ऑफ इंडिया, नवभारत टाइम्स, हिंदुस्तान टाइम्स, इंडियन एक्सप्रेस, टाइम्स ऑफ इंडिया, एशियन ऐज के लिए काम किया और उनकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुईं।

श्री ओ.एन.वी. कुरुप नहीं रहे

१३ फरवरी को प्रख्यात मलयालम कवि, गीतकार और पर्यावरणविद् श्री ओ.एन.वी. कुरुप का निधन हो गया। वे ८४ वर्ष के थे। मलयालम साहित्य में अपने बहुमूल्य योगदान के अलावा वे मलयालम फिल्म उद्योग और रंगमंच से जुड़े थे तथा केरल पीपुल्स आर्ट्स क्लब के कई नाटकों का हिस्सा रहे थे। उन्हें २००७ में 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' और २०११ में 'पद्मविभूषण' से सम्मानित किया गया।

साहित्य अमृत परिवार की ओर से दिवंगत आत्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि।